ISSN : 2395-5821

अंक 3, अक्टूबर 2016

कालजयी

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिकी

UPHIN45311

हिंदी जगत की शीर्ष
साहित्यिक पत्रिका
शाश्वत मूल्यों, वैश्विक सरोकार एव
मानवीय संवेदना की
संवाहक त्रैमासिकी

₹ 30/-

ऋतु गौड़, बनारस

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिकी

AIPC की प्रस्तुति
(Regd. No. 987)
www.aipc.weebly.com

कालजयी

www.kaljayee.weebly.com

UPHIN45311

ISSN : 2395-5821

अंक–3 : अक्टूबर 2016

हिंदी जगत की शीर्ष
साहित्यिक पत्रिका
शाश्वत मूल्यों, वैश्विक सरोकार एवं
मानवीय संवेदना की
संवाहक त्रैमासिकी

प्रधान संपादक :
डॉ. लारी आज़ाद
www.drlariazad.weebly.com
प्रबंध संपादक :
डॉ. रोशन आरा
संपादक मण्डल :
डॉ. आशा गुप्ता, जमशेदपुर
डॉ. वंदना श्रीवास्तव, लखनऊ
करूणा झा, नेपाल
प्रभा भार्गव, दिल्ली
डॉ. कमला माहेश्वरी 'कमल', बदायूँ
ज्योति नारायण, हैदराबाद
सुनीता खोखा, नोएडा
डॉ. अशोक बाचूलकर, आजरा
सीमा गुप्ता, गुड़गाँव
सरोजा मेटी, मुम्बई
सुनीता सुमन, ग़ाज़ियाबाद
इन्दु रश्मि, गुलबर्गा
संरक्षक मण्डल :
डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली', हिमाचल
बविता जैन, नलबाड़ी
डॉ. शक्तिबोध, दिल्ली
डॉ. सीमा चन्द्रन, कन्नूर
रुक्मिणी भण्डारी, काठमांडू
डॉ. सुप्रिया पी., कालीकट
डॉ. विजयलक्ष्मी कोसगी, गुलबर्गा
डॉ. नजमा मलिक, भरुच
डॉ. मधूलिका अग्रवाल, रायपुर
मनमोहन चन्द्र जैन, कोरबा
डॉ. के. पी. सुधीरा, कालीकट
तारा प्रकाश, मुज़फ्फ़रनगर
सुमन कामथ, हुबली
गोनोगती कुर्मी, तेजपुर
अंजु हतीबरुआ, तिनसुकिया
डॉ. अभिनेश शर्मा, अलीगढ़
महेश अग्रवाल, मुरादाबाद
ब्यूरो प्रमुख :
डॉ. संध्या पी० मेरिया, दमण
डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर, कोरबा
डॉ. कविता रायज़ादा, आगरा
किरनमोई हज़ारिका, डुमडुमा
प्रतिनिधि :
अनीता पंडा, शिलांग
डॉ. सुशीला ढाका, सीकर
डॉ. मनीषा जैन, छिंदवाड़ा
डॉ. सुमन शर्मा, भाव नगर
आराधना श्रीवास्तव, आगरा
आरती अंगडी, बेलगाँव
स्तम्भकार :
सुस्मिता दास, शिलांग
सुनन्दा एस. मुले, बेलगाँव
फाल्गुनी चक्रवर्ती, शिलांग
सरिता चतुर्वेदी, दिल्ली
डॉ. मोनिका शर्मा, अलीगढ़
साधना पाण्डेय, अलीगढ़

छायाकार : डॉ. ऋतु गौड़, बनारस

कला प्रतिनिधि : फ़रहत रज़ा, दिल्ली

विदेश प्रतिनिधि :
एलीसिया माकोव्काया, बेलारुस
इंदिरा ग़ाज़ियेवा, रुस
राज हीरामन, मॉरीशस

विधि सलाहकार: एड. असलम लारी

विश्वविद्यालय प्रतिनिधि : नूर सुफ़िया लारी

युवा प्रतिनिधि : चिन्मोई गोगोई, डिब्रूगढ़
संवाददाता :
इन्द्र कुमार दीक्षित,
इसहाक अली 'सुन्दर',
डॉ. प्रभा शर्मा,
सम्पादकीय कार्यालय :
ए–2, समी अपार्टमेंट,दोधपुर,
अलीगढ़ 202 001 (उ0प्र0)
दूरभाष–0571–2705555, 8791150515
ई–मेल – **kaljayeemagazine@gmail.com**

दिल्ली कैम्प कार्यालय :
सी–10, ग्रीन पार्क (मेन), नई दिल्ली–110 016
पूर्वांचल कैंप कार्यालय :
राशिदा तबस्सुम,
बिजली मीटर कार्यालय के समीप, निकट विजय सिनेमा,
देवरिया – 274 001

सभी पद मानद / अवैतनिक
(विवाद निपटारे का क्षेत्र अलीगढ़ न्यायिक क्षेत्र)

आजीवन सदस्यता : 1500 ₹. (डाक व्यय 50 0रु अतिरिक्त)
विदेश में : $ 200 (एयर मेल)
$ 150 (सी मेल)
एक अंक : ₹ 30

विज्ञापन दर :
मुख्य पृष्ठ कवर (इन्सेट) : ₹ 35000
पृष्ठ कवर : ₹ 30000
रंगीन पृष्ठ कवर 2 व 3 : ₹ 25000
रंगीन पृष्ठ 1 : ₹ 20000
½ : ₹ 15000
¼ : ₹ 10000
श्वेत–श्याम पृष्ठ 1 : ₹ 15000
½ : ₹ 10000
¼ : ₹ 5000

'कालजयी' में प्रकाशित सभी लेखों पर संपादक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है 'कालजयी' में प्रकाशित लेख व तस्वीरें 'कालजयी' की प्रॉपर्टी है, इसका कोई भी लेख, लेख का कोई अंश या तस्वीरें प्रकाशित करने से पहले 'कालजयी' से लिखित अनुमति लेना जरूरी है और 'कालजयी' में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित किसी भी प्रकार की जवाबदेही प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी प्रकार की जानकारी देने के लिए बाध्य नहीं है।
चेतावनी – 'कालजयी' में विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में तथ्यपूर्ण जानकारी देने की हमने पूरी सावधानी बरती है, फिर भी पाठकों को चेतावनी दी जाती है कि अपने चिकित्सक की सलाह से ही औषधि लें, क्योंकि शारीरिक शक्ति अलग–अलग होती है, जिससे दवा की मात्रा व्यक्ति की क्षमता के अनुसार निर्धारित करना जरूरी है।

प्रकाशक श्रीमती रोशन आरा द्वारा A–2, समी एपार्टमेंट, दोधपुर, अलीगढ़ से प्रकाशित तथा लिथो ऑफसेट प्रेस, अचल ताल, अलीगढ़–202001 से मुद्रित, संपादक – डॉ. एम.ए. लारी आज़ाद।

कालजयी

अंक 3 : अक्टूबर 2016

अन्तरराष्ट्रीय त्रैमासिकी

www.kaljayee.weebly.com

क्या कहाँ ?

कालजयी साहित्य :

रानी केतकी की कहानी : ईंशाअल्ला खाँ

भक्तकवि तुलसीदास

समालोचक श्यामसुंदर दास

विदेशी हिन्दी सेवी वारान्निकोव,

विदेशों से :

एलीसिया नाकोल्सकाया, बेलारुस, रपट

गोपाल बघेल 'मधु', कनाडा, कविता

अनीता कपूर, कैलीफोर्निया, कविता

सुषम बेदी, अमेरिका, रुक्मिणी 'पगली', नेपाल, कविता

पूजा गुप्ता, नेपाल, कविता (ज़ंजीर)

सुदूर दक्षिण से :

ज्योति नारायण, सिकन्द्राबाद, कविता

मीना खोंड, हैदराबाद, कविता

सुप्रिया पी., फजीला शाहनवाज़, स्वर्णज्योति (कविता)

कलग के अलगबरदारों से :

रमणिका गुप्ता 'कविता'

कुँवर बैचैन, कविता

मधुर नज्मी, राज़ल

व्यंग :

योगेन्द्र शर्मा: इति द्रोण–चाणक्य संवाद

कहानियाँ :

श्रद्धांजलि : प्रभा भार्गव

निबंध : मणिपुर को मीरा, देवी प्रसाद बागडोदिया

कश्मीर की कवयित्रियाँ

असमिया और हिन्दी का सम्बन्ध: रूनु बरुआ

वैदिक युग की महिलाएं: मुदिता चंद्रा

जीवन का उदभव, वैज्ञानिका की सोच, असलम लारी

बबिता जैन : इक्कीसवीं सदी की नारी

यात्रा संस्मरण :

बबिता जैन : भूटान

कविताएँ :

नलिनी नाजली, आशा गुप्ता शक्तिबोध, अभिनेष शर्मा, अनसूया अग्रवाल, सुनीता खोखा, सीमा गुप्ता, बुशरा रहमान, सुनीता सुमन, रापना मांगलिक, तारा प्रकाश, कमला बदायूनी, आराधना श्रीवास्तव, श्रुति सिन्हा, मनोषा जैन, गीता नेह, शैलबाला अग्रवाल, इन्द्र कुमार दीक्षित, सूर्य नारायण सूर्य, बृजमोहन अनारी, अकांक्षा अवस्थी, उदय प्रताप हयात, श्यामल सुमन, अरुण सज्जन, इसहाक तबीब, प्रेमा झा, तहव्वुर बदायूनी, महेश मित्र, रमबहादुर 'व्यथित'

स्थायी स्तम्भ :

खेल जगत : मारिया शेरापोवा : नूर सुफिया

चित्रपट जगत : मधुबाला

खानपान : अलरी, रोशन आर

समीक्षा : घाव नदी के

भंगिमा, छायांकन, चित्रांकन

गतिविधियाँ . सुदूर पूर्वोत्तर की पहाड़ियों में सोलहवीं ए.आई.पी.सी. जारों की सुनहरी दुनिया में ए.आई.पी.सी. : चन्द्रावती नागेश्वर धर्मनगरी में ए.आई.पी.सी., मैसूर – बंगलौर में ए.आई.पी.सी.

कालजयी परिवार

प्रिय डॉ आज़ाद

'कालजयी' पत्रिका का अक्टूबर अंक देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। इतने सुन्दर रंगीन चित्रों ने शुरू में ही मन मोह लिया। पत्रिका में विविध पठनीय और स्तरीय सामग्री संकलित करने के लिए बहुत बधाई। निश्चय ही कालजयी इस काल की एक साहित्य जगत की उपलब्धि के रूप में स्वीकार की जाएगी। आज ऐसी साहित्यिक पत्रिकाओं की बहुत आवश्यकता है.

पत्रिका में आपने मेरी कहानी (शंखनाद नवयुग का) को स्थान दिया है, उसके लिए आभारी हूँ.

आपको एक सूचना देना चाहती हूँ, दिनांक १४ सितम्बर २०१५ को मुझे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा वर्ष २०१४ का (प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण) सम्मान दिया गया है। यह सम्मान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी द्वारा दिया गया है. सम्मान में दो शाला प्रमाणपत्र तथा दो लाख की राशि दी गई है.

कालजयी की सतत सफलता के लिए अनेकों शुभ कामनाएं

डॉ० पुष्पा सक्सेना, यू.एस.ए

'कालजयी' का अक्टूबर अंक सराहनीय है, सामग्री पाठनीय है और दर्शनीय भी

मृदुला गर्ग, दिल्ली

स्नेही श्री डा. लारी आज़ाद जी, कालजयी का नया अंक मिला। धन्यवाद, 'कालजयी' वास्तव में एक कालजयी पत्रिका ही है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि इसमें शब्द की वह साधना और आराधना दिखाई देती है जो आकाश में गूंजती है। आकाश का गुण ही शब्द है। आकाश भी अनन्त है और शब्द भी अतः कालजयी तो सभी शब्द होते ही हैं. किन्तु शिवत्व से जुड़े सुन्दर–सुन्दर और माधुर्य से भरे–पूरे शब्द जब आकाश में गूंजते हैं तो समस्त सृष्टि को रस और आनंद मिलता है। आनंद की वर्षा होती है। सुख और समृद्धि की फसल लहलहाती है। ऐसे कालजयी शब्द सृष्टि की सम्पदा बन जाते हैं। आपकी कालजयी पत्रिका भी पत्रिका के संसार में कालजयी बन रही है।

पत्रिका की रचनाएं अपने आप में अनूठी, विचारोत्तेजक और भावपूर्ण हैं। साथ ही समाज को दिशा देने वाली भी हैं। पाठक के हृदय में सीधे उतरती हैं।

देश के लेखकों और लेखिकाओं के साथ ही विदेश में रहने वाले रचनाकारों को शामिल करके आपने इस पत्रिका को अंतर्राष्ट्रीय स्तर प्रदान किया है।

सम्पादकीय में आपने 'जाति हमारी भारतीय है' कहकर आज के समय में जो देश–विदेश में कहीं कहीं घृणा की भंवर घूम रही है उसमें से सच्चे और प्यार करने वाले नाविक को अपनी नौका को पार ले जाने का संकल्प दिखाई देता है। यह विभिन्नता में एकता स्थापित करने और अलग अलग तटों को मिलाने वाले सेतु बनाने के काम जैसा है। आपको बहुत बधाई।

कालजयी के कलेवर ने भी बहुत प्रभावित किया। अब यह पत्रिका केवल आपकी पत्रिका ही नहीं, मेरी भी है और हम सबकी है। शुभकामनाओं के साथ,

कुअर बेचैन, ग़ाज़ियाबाद

आज बहुत दिनों के बाद आँखों को आकृष्ट करने वाली कीमती कागज पर सुललित टाइप में छपी 'कालजयी' परिवार के मात्र तीन पुरूष मुखाकृतियों के साथ अनेक स्त्री छवियों को आगे करती जिनमे अधिकांश स्त्री रचनाकारों के ने चित्र है – इस पत्रिका 'कालजयी' के दो अंक सामने हैं। पूरे भारत में छपने वाली पत्रिकाओं में यह अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिकी पत्रिका सुदर्शन है हैं रचनात्मक धरातल पर भी सराहनीय है। डॉ. लारी आज़ाद के सम्पादन में प्रकाशित यह पत्रिका उनके सम्पादन कौशल का प्रतीक है। कुछ बातों को छोड़ दें तो यह पठनीय और प्रशंसनीय भी है। इसमें देश विदेश के रचनात्मक सौजन्य लगे हुए है। एक दृष्टि से अत्यंत सहिष्णु प्रसंग को यह पत्रिका उजागर करती है तथा विश्व राष्ट्रीयता के अंतर्गत पारस्परिक मानवीय सामाजिक रचनात्मक सम्बंध को एक नया रूप देती है। जमशेदपुर से भी कई स्त्री पुरूष रचनाकार इसमें सम्मिलित और सांक्रेय हैं।

'कालजयी' के दोनों ही अंकों का सबसे तरेण्य पक्ष है इनमें कालजयी साहित्य का शामिल किया जाना। निश्चय ही यह सम्पादक और सम्पादक मण्डल की साहित्यिक सांस्कृतिक निष्ठा और विचार की स्तरीयता का परिचायक है।

पहले अंक में चन्दधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था; आदिकवि अमीर खुसरो ओर समालोचक महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ डॉ. कामिल बुल्के और दक्षिण भारतीय प्रसिद्ध हिन्दी रचनाकार रांगेय राघव को प्रकाशित कर अपने विस्तृत साहित्य कर्म को उजागर किया है।

'कालजयी' के दूसरे अंकों में भी प्रेमचन्द की 'ईदगाह' कहानी के साथ प्रसिद्ध संत कवि कबीर और समालोचक रामचंद्र शुक्ल को प्रकाशित किया गया है। इस प्रकार पत्रिका ने मुख्य रूप से कविता, कहानी और समालोचना की विधा को कालजयी साहित्य में विशेष महत्व दिया है। इस पत्रिका में विदेशी रचनाकारों को भी भारतीय रचनाकारों के साथ उचित प्रतिनिधित्व मिला है।

कलम के अलम्बरदारों से शीर्षक क्रम के अंतर्गत प्रथम अंक में बेकल उत्साही, विष्णु सक्सेना के गीत, नीरज और कुंवर बेचैन की गजलें, रमणिका गुप्ता और शिव ओम अम्बर की कविता है और चन्द्रकान्ता की कहानी भी। दूसरे अंक में इसी शीर्षक के अंतर्गत पुनः बेकल उत्साही का गीत छपा है। इसके साथ रमणिका गुप्ता की भी आवृत्ति हुई है। बच्चन पाठक सलिल महावीर शरण जैन की कविता, मधुर नज्मी की गजल और मृदुला गर्ग का लेख भी प्रकाशित है। पत्रिका लगातार अपनी सोच का विस्तार कर रही है पर रचनाकारों की आवृत्ति रचनाओं के अकाल को तो नहीं ही दिखा रही है।

दक्षिण में कतिपय रचनाकारों के कविता कर्म की प्रस्तुति अधिक हुई है। इनमें भी ज्योति नारायण और सुप्रिया पट्टेरी की कविता को दोनों ही अंकों में छापा गया है। इस पत्रिका में साहित्य की अन्य विधाओं को भी स्थान दिया गया है जैसे व्यंग्य, निबंध आदि। कविता को कलम अलमबरदारों से अलग भी छापा गया है। अंक–9 में प्रकाशित कवियों में सलिल, इन्द्रकुमार दीक्षित, बुशरा रहमान, डॉ. आशा गुप्ता, मधुर नज्मी, सुस्मिता महापात्रा, प्रेमा झा, आरती काले, पदमा मिश्रा, माधवी कुलश्रेष्ठ, आदि की कवितायें व्यक्ति और समाज के दोनों पाटों को छूती हैं। दूसरे अंक में ज्योत्सना अस्थाना, संध्या सिन्हा, आनन्दवाला शर्मा, प्रभा मार्गव, डॉ. संध्या मेरिया, अभिनेश शर्मा, मनीषा जैन, रंजना, ऋता घोष, मंजू लामा, सरस दरबारी तथा ज्योति नारायण की कवितायें प्रभावित करती हैं। इस अंक में डॉ. प्रदीप शुक्ल का सामाजिक सरोकार एक बेहद मर्मस्पर्शी नवगीत छपा है। इससे अंक में सम्पन्नता आई है।

'कालजयी' के दूसरे अंक में प्रतिभा प्रसाद का व्यंग्य अत्यंत धारदार है। जूही समर्पिता और श्रुति सिन्हा की कहानियाँ बेहद रोचक और स्तरीय हैं। इसमें प्रकाशित कल्याणी कबीर, के. के सक्सैना, सरिता चतुर्वेदी, असलम लारी के निबंध समकालीन सामाजिक विचारों को छूते हैं। इस अंक में डॉ. आशा गुप्ता के चिकित्सकीय अनुभव का लाभ लेते हुए इस अंक में इनकी कविता की जगह आस्टियोपोरोसिस का सम्यक विवेचन कारण और समाधान प्रकाशित है।

पत्रिका की सफलता के लिए और उसके समाजोपयुक्त बनने के लिये कई स्तम्भ छापे गये हैं। इनमें चिकित्सा जगत, खेलजगत, चित्रपट, खानपान भी है, और अंत में साहित्यिक पुस्तकों की समीक्षा भी है कालजयी के रंगारंग शीर्षक पृष्ठ तथा भीतरी पृष्ठों पर बहुरंगी चित्र छवियों के साथ रचनाकारों के आकर्षक चित्र इसके सौंदर्य बोध को बढ़ाते हैं। रचनाओं में जिस तरह सामाजिक विसंगतियों के प्रति विद्रोह और व्यंग्य विद्रूप की अभिव्यक्ति हुई है उससे लगता है कि पत्रिका कुछ बिन्दुओं को त्याग दे तो वर नारी विमर्श का हिस्सा भी बन सकती है। कुछ कविता जिनमें प्रेम और रोमन की मुक्त बातें हुई हैं वे समकालीन जीवन संघर्ष से मेल नहीं खाती है पर युग युग से प्रताड़िता स्त्री की मिली संवेदना तो हो ही सकती है। नीरज की गजल और रमणिका गुप्ता तथा आशा गुप्ता की कविताऐं इस अंक की उपलब्धि है। अंक–2 में राम सनेही लाल शर्मा, नलिनी विभा 'नाजली' की गजल, ऋता घोष, आनन्द वाला शर्मा, ज्योत्सना अस्थाना की कवितायें प्रतिभा प्रसाद का व्यंग्या, जूही समर्पिता की कहानी और पदमा मिश्रा की लघुकथा पर अलग से चर्चा की जा सकती है।

दक्षिण में रचनाकारों में ज्योति नारायण और स्वर्ण ज्योति की कवितायें रेखांकित करने योग्य है। विदेश की रचनाभूमि से निकली प्रो. सरन घई, एलीशिया मार्कोव्सकाया द्वारा अनुवादित मार्क्सीम बोगदानोविच की कविता में रेखा राजवंशी की कविता, जया वर्मा और दिव्या माथुर की कहानी मन को छूती है। अंक–2 में लीलावती बंसल, अनीता कपूर, शैखा वार्ष्णेय की कविताऐं और अर्चना पैन्यूली, डॉ. पुष्पा सक्सैना की कहानियों में सामाजिक सरोकार की संवेदनशील अभिव्यक्ति है।

कुल मिलाकर 'कालजयी' के सम्पादन, प्रकाशन में किये गये श्रम और कौशल दीखते हैं। रचनाओं के चयन थोड़ी सावधानी रखें, रचनात्मक गुणवत्ता को मूल्य देने से पत्रिका का भविष्य उज्जवल होगा। इसके रंगारंग मुद्रण पाठकों को अवश्य ही आकृष्ट करेंगे।

डॉ. शांति सुमन, जमशेदपुर

सवा सौ करोड़ भारतीयों की सामाजिक संरचना में सदभाव–सौन्दर्य ऊन की बुनावट की तरह रचा बसा है जिसे दादरी काण्ड हो या बाबरी काण्ड, मिटा नहीं सकते, जब बटवारे के फसाद हों या गुजरात के बलवे इस महान देश की महान अजर अमर आत्मा को नहीं बाँट सके तो और भी साम्प्रदायिक सुनामियाँ आयेंगी और चली जायेंगी, माँ भारती के लाल आपस में प्यार का चिरतन गीत गाते चलते रहेंगे। सैंधव सभ्यता से लेकर आज तक हिमालय की बर्फीली वादियों से लेकर तीन महासागरों की लहरों को छूती कन्याकुमारी तक हिन्दू–मुस्लिम, गोरे–काले, सामिष–निरामिष, आर्य–अनार्य सभी एक परिवार की तरह जीते है। यूनानियों की महागाथाएं लुप्त हो गयीं, रोमनों की विश्वविजयें मिट गयीं, मंगोलों की अनहद सीमाएं खत्म हो गयीं, अरबों की सभ्यता का लोप हो गया, ग्रेट ब्रिटेन का सूरज डूब गया लेकिन भारत की अक्षय सहिष्णुता में इसे ढाई हजार साल से शान के साथ कालजयी रखा है।

भारत की औदार्य और सहिष्णुता की संस्कृति वेदों की ऋचाओं से जन्मी पुराणों–उपनिषदों के श्लोकों से बही, गीता–रामायण से उपजी और हमारी रंगों में समा गयी, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने निषाद को गले लगाया, भील–शबरी के झूठे बेर खाये, बानर–भालू–गिद्ध को गले लगाया, राक्षस–विभीषण को अपनाया, हम उसी रम के वारिस हैं। हमारे पुरखे युगपुरूष श्री कृष्ण ने आततायियों को सूई की नोक बराबर जगह के बदले महाभारत की महाविभीषिका को टाल देने का धरती पर शांति के लिए श्रेष्ठतम् प्रयास किया था। हमारे पूर्वज महामानव बुद्ध ने अम्रपाली जैसी गणिका, अंगुलिमाल जैसे डाकू और अनाथपिंडक जैसे जमाखोर तक पर अपनी करुणा की वर्षा की। तीर्थकर महावीर ने स्यादवाद (अनेकांतवाद) जैसे पृथ्वी के सहिष्णुता के सर्वश्रेष्ट दर्शन का प्रवर्तन किया। हमारे बाबा नानक ने तो उदारता को बाला–मरदाना के साथ जीवन्त जिया और सूफियों के दर पर तो आज भी हिन्दू–गुरिलग लाखों की तादाद में जाते हैं। सवा सौ करोड़ भारतीयों की रंगों में इन्ही पूर्वजों का खून दौड़ रहा है जो सारी धरती को अपनी माँ और स्वयं को पूरी पृथ्वी का पुत्र मानते हैं। सैंधव सभ्यता, द्रविण सभ्यता, आर्य सभ्यता की सम्पूर्ण संस्कृति में सनातन और युगयुगीन जो नींव का पत्थर है वह केवल 'सहिष्णुता' ही है।

इसी 'औदार्य' का प्रतिपादन आचार्य शंकर ने चारो पीठ स्थापित कर दिया, इसी गीत को मध्व, निम्बार्क, रामानुज, चैतन्य ने गाया, यही सहिष्णुता कबीर, बसवेश्वर की वाणी से निसृत हुई, यही विवेकानन्द और महात्मा गाँधी के जीवन का संदेश रहा। भारत का भूगोल, इतिहास, राजनीति, समाज, साहित्य सब सहिष्णुता की स्वतः मिसाल है। "सहिष्णुता" ही महाकवि इकबाल की वह 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी' है जो यूनान, मिस्र, रोमाँ के मिटने पर भी हमें शान से जिन्दा रखे है। मैं दार्शनिक वॉल्टेयर का समर्थक हूँ कि "हो सकता है तुम जो कह रहे हो इससे मैं कतई सहमत ना होऊँ, लेकिन तुम्हारे इसे कहने के अधिकार के लिए मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ"। सवा सौ करोड़ भारतीयों के समस्त सौहार्दपूर्ण–सद्भावी जीवनक्रम मे यदि गिनती के दस–बीस सिरफिरे देशद्रोही असहिष्णुता की बात करते हैं तो इससे महान भारतीय संस्कृति के मूलाधार "सहिष्णुता" पर आदिकाल से न तो आँच आयी है न कयामत तक आयेंगी। जय भारत, जय भारतीय संस्कृति, जय सहिष्णुता।।

–डॉ0 लारी आज़ाद

प्रिय बन्धुवर डॉ. लारी जी,

आपके द्वारा प्रेषित कालजयी अन्तर्राष्ट्रीय (त्रैमासिक) पत्रिका का विलक्षण विशिष्ट प्रवेशांक प्राप्त कर समात्मानुभूति के साथ कृतकृत्य हो उठा। मैं अपनी रचनाधर्मी व्यंजना से पूर्व स्वास्तिवचनी अभिव्यक्ति प्रेषित कर रहा हूँ–

कालजयी यह प्रकृति, संग चिर मानव भी है।
सहधर्मी संस्कृति कला भी कालजयी है।
कालजयी लेखनी आपकी, शश्वत अजर अमर हो।
अन्तर्राष्ट्रीय यह त्रैमासिकि नित नूतना सुघर हो।
प्रवेशांक की पूर्ण चन्द्रिका लहरों सँ करलव कर।
अनुदिन रचनाकारों का अभिनन्दन पाकर अनिजित स्वर।
बन प्रकाश का पुंज गगन भूमण्डल को नित चूमे।
इसें हर सहृदय पाठक का बरबस की मन झूमे।

डॉ. रामकृष्ण शर्मा, कानपुर

सम्मान्य डॉ० साहब, सादर नमन

कालजयी का आपके द्वारा कृपापूर्वक प्रेषित अक्टूबर अंक मिला। पत्रिका सभी दृष्टियों से उत्तम लगी। कागज, छपाई, भाषा और सौन्दर्य सभी कुछ रम्य और मनमोहक है। रचनाओं के चयन में आपने पर्याप्त सतर्कता बरती है। प्रवासी भारतीयों की रचना धर्मिता को पत्रिका में पर्याप्त स्थान मिला है। डॉ० शैलबाला अग्रवाल की कहानी लघु आकार की है परन्तु पारिवारिक मूल्यों को बचाने और पहचानने की सार्थक चेष्टा उसमें हैं, प्रेमधन के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल का संस्मरण इतिहास के एक पृष्ठ को जीवन्त करता है। डॉ० पुष्पा सक्सेना की कहानी नारी संघर्ष की ज्वलन्त कथा वन्दनी है। यह एक समाधान भी देती है। बहुरंगी चित्रावली भी आकर्षक है। पत्रिका हिन्दी साहित्य के अतीत व वर्तमान और स्वदेश और परदेश का अच्छा सन्चय करती है। यह पठनीय ही नही संग्रहणीय भी बन पड़ी है।

डॉ० रामस्नेही लाल शर्मा 'यायावर', फिरोज़ाबाद

आदरणीय डॉ० लारी साहब!

भागीरथ प्रयास से 'गागर में सागर' वाले मुहावरे को चरितार्थ करता हुआ आप द्वारा सम्पादित विदेशी साहित्यकारों की रचनाओं से सुसज्जित भावभरित 'कालजयी' का अंक–2 मिला, पढा।

आपकी पैनी लेखनी ने सम्पादकीय पृष्ट को पूरी गति से शक्तिमान कर पत्रिका को एक नया आयाम दिया है। विषय–वस्तु के चयन को आसमान दिया है। पाठकगण को नव–ज्ञान प्रदान किया है। पत्रिका के साज–सज्जा को एक नया परिधान दिया है।

पत्रिका के हर पृष्ट पर आपकी श्रम बूदें झलक रहीं हैं, जिसमें आपके साहित्यिक परिकल्पनाओं को एक नये आकार–प्रकार में साकार होते देखा जा सकता है। आने वाले समय में पत्रिका निरंतर फले–फूले इसका विस्तार और विस्तार होता रहे।

इस अनूठी, अतुल्यनीय, कालजयी, संग्रहणीय सारगर्भित, सोचयुक्त पत्रिका के सफल सम्पादन व प्रकाशन के लिये आपको बहुत–बहुत धन्यवाद

सूर्यनारायण गुप्त 'सूर्य' पथरहट (गौरीबाजार)

'कालजयी' पत्रिका का दूसरा अंक अक्टूबर 2015 मिला, मन प्रसन्न हो गया। साहित्याकाश में मानो एक और सूर्य निकल आया है। पत्रिका हाथ में लेते ही अहसास हुआ कि यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मानदंडो पर खरी उतरी है। कागज, मुद्रण एवं तस्वीरें नयनमोहक और उच्च स्तर की हैं। वैषय विविधता इसका प्रमुख आकर्षण है। छायांकन एवं चित्रांकन को स्थान देकर आपने इस पत्रिका को विशिष्ट बनाया है।

कथाकार की हैसियत से इस अंक से जुड़कर गर्वित महसूस कर रही हूँ। आशा है भविष्य में भी आपका–हमारा साथ बना रहेगा। पुनः शतशः बधाई।

सुधा गोयल 'नवीन', जमशेदपुर

कालजयी के हम सब हमसफर हैं, ये एक बेहतरीन पत्रिका है जिसमें सारी महिलाओं को एक सूत्र में बाँधने का जिम्मा लिया है, उन्हे एक मंच दिया अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उन्हें पोषित करने का इसकी सफलता के लिए सदा प्रार्थी हूँ और इससे बेहद प्यार करती हूँ। इसी के जरीये मुझे पता चला कि भारत की दूर दराज गांव की महिलाओं में भी इतनी काबिलियत है।

कालजयी के सभी कर्मरथियों को मेरा अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

गीता पुलियनकोट, कालीकट

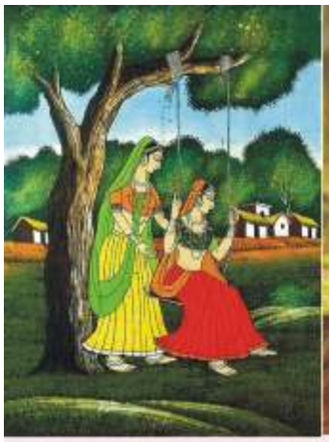

हिन्दी की पहली कहानी

रानी केतकी की कहानी

सैयद इंशा अल्ला खां

यह वह कहानी है कि जिसमें हेंदी छुट।
और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगडता हूं उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियां जातियां जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतल जो अपने उस खिलाडी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पडे और कडवा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बडे से बडे अगलों ने चक्खी है

देखने को दो आँखें दीं ओर सुनने को दो कान
नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।

मिट्टी के बसान को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड सके। सच हे, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनाने वाले को क्या सराहे और क्या कहें। यों जिसका जी चाहे, पडा बके। सिर से लगा पांव तक जितने रोंगटे हैं, जे सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियां खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूं उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिए यों कहा है– जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाताय और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लडके वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पडी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूं तीसों घडी।

डौल डाल एक अनोखी बात का एक दिन बैठे–बैठे यह बात अपने ध्यान में चढी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढे–लिखे, पुराने–धुराने, डाँग, बूढे धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुंह थुथाकर, नाक भी चढाकर आंखें फिराकर लगे कहने – यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुंझलाकर कहा– मैं कुछ ऐसा बढ–बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊं, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकलता? जिस ढब से होता, इस बखेडे को टालता। इस कहानी का कहने वाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव–भाव, राव–चाव और कूद–फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आपके ध्यान का घोडा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हडपन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकडी भूल जाए। टुक घोडे पर चढ के आगे आता हूं मैं करतब जो कुछ है, कर दिखाता हूं मैं।। उस चाहने वाले ने जो चाहा तो अभी। कहता जो कुछ हूं। कर दिखाता हूं मैं।। अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ चलता हूं और अपने फूल के पंखडी जैसे होंठों से किस–किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ–बाप और सब घर के लोग कुंवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जोवन की जोत में सूरज की एक स्त्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सीमसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर–घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोडे पर चढ के अठखेल और अल्हड पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड छाडकर घोडा फेंका। कोई घोडा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुंवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जै भाइयाँ, अँगडाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूंढने। इतने में कुछ एक अमराइयां देख पडी,

तो उधर चल निकलाय तो देखता है वो चालीस–पचास रंडियां एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पडी झूल रही हैं और सावन गातियां हैं। ज्यों ही उन्होंने उसको देखा – तू कौन? तू कौन? की चिंघाड सी पड गई। उन सभी में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

''कोई कहती थी यह उचक्का है।
कोई कहती थी एक पक्का है।''

वही झूलेवाली लाल जोडा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने–सुनने की बहुत सी नांह–नूह की और कहा – इस लग चलने को भला क्या कहते हैं! हक न धक, जो तुम झट से टहक पडे। यह न जाना, यह रंडियां अपने झूल रही हैं। अजी तुम तो इस रूप के साथ इस रव बेधडक चले आए हो, ठंडे ठंडे चले जाओ। तब कुंवर ने मसोस के मलीला खाके कहा – इतनी रुखाइयां न कीजिए। मैं सारे दिन का थका हुआ एक पेड की छांह में ओसका बचाव करके पडा रहूंगा। बडे तडके धुंधलके में उठकर जिधर को मुंह पडेगा चला जाऊंगा। कुछ किसी का लेता देता नहीं।

एक हिरनी के पीछे सब लोगों को छोड छाड कर घोडा फेंका था। कोई घोडा उसको पा सकता था? जब तलक उजाला रहा उसके ध्यान में था। जब अंधेरा छा गया और जी बहुत घबरा गया, इन अमराइयों का आसरा ढूंढ कर यहां चला आया हूं। कुछ रोकटोक तो इतनी न थी जो माथा ठनक जाता और रुका रहता सिर उठाए हां पता चला आया। क्या जानता था – यहां पदिनिनियां पडी झूलती पेंगे चढा रही हैं। पर यों बदी थी, बरसों मैं भी झूल करूंगा।''

यह बात सुनकर वह जो लाल जोडे वाली सबकी सिरधरी थी, उसने कहा – हाँ जी, बोलियां ठोलियां न मारो और इनको कह दो जहां जी चाहे, अपने पडे रहें, और जो कुछ खानेको मागें, इन्हें पहुंचा दो। घर आए को आज तक किसी ने मार नहीं डाला। इनके मुंहका डौल, गाल तमतमाए और होंठ पपडाए, और घोडे का हांफना, ओर जी का कांपना और ठंडी सांसें भरना, और निढाल हो गिरे पडना इनको सच्चा करता है। बात बनाई हुई और सचौटी की कोई छिपती नहीं। पर हमारे इनके बीच कुछ ओट कपडे लत्ते की कर दो।

इतना आसरा पाके सबसे परे जो कोने में पांच सात पौदे थे, उनकी छांव में कुंवर उदैभान ने अपना बिछौना किया और कुछ सिरहाने धरकर चाहता था कि सो रहे, पर नींद कोई चाहत की लगावट में आती थी? पडा पडा अपने जी से बातें कर रहा था। जब रात सांय–सांय बोलने लगी और साथ वालियां सब सो रहीं, रानी केतकी ने अपनी सहेली मदनबान को जगाकर यों कहा – अरी ओ! तूने कुछ सुना है? मेरा जी उस पर आ गया हैय और किसी डौल से थम नहीं सकता। तू सब मेरे भेदों को जानती है। अब होनी जो हो सो होय सिर रहता रहे, जाता जाय। मैं उसके पास जाती हूं। तू मेरे साथ चल। पर तेरे पांवों पडती हूं कोई सुनने न पाए। अरी यह मेरा जोडा मेरे और उसके बनाने वाले ने मिला दिया। मैं इसी जी में इस अमराइयों में आई थी। रानी केतकी मदनबान का हाथ पकडे हुए वहां आन पहुंची, जहां कुंवर उदैभान लेटे हुए कुछ–कुछ सोच में बड–बडा रहे थे। मदनबान आगे बढके कहने लगी – तुम्हें अकेला जानकर रानी

जी आप आई हैं। कुंवर उदैभान यह सुनकर उठ बैठे और यह कहा – क्यों न हो, जी को जी से मिलप है?

कुंवर और रानी दोनों चुपचाप बैठे पर मदनबान दोनों को गुदगुदा रही थी। होते होते रानी का वह पता खुला कि राजा जगतपरकास की बेटी है और उनकी मां रानी कामलता कहलाती है। उनको उनके मां बाप ने कह दिया है – एक महीने अमराइयों में जाकर झूल आया करो आज वही दिन थाय सो तुमसे मुठभेड हो गई। बहुत महाराजों के कुंवरों से बातें आई, पर किसी पर इनका ध्यान न चढा। तुम्हारे धन भाग जो तुम्हारे पास सबसे छुपके, मैं जो उनके लडकपन की गोइयां हूं। मुझे अपने साथ लेके आई है। अब तुम अपनी बीती कहानी कहो – तुम किस देस के कौन हो। उन्होंने कहा – मेरा बाप राजा सूरजभान और मां रानी लक्ष्मीबास हैं। आपस में जो गठजोड हो जाय तो कुछ अनोखी, अचरज और अचंभे की बात नहीं। यों ही आगे से होता चला आया है। जैसा मुँह वैसा थप्पड। जोड तोड टटोल लेते हैं। दोनों महाराजों को यह चितचाही बात अच्छी लगेगी पर हम तुम दोनों के जी का गठजोड चाहिए। इसी में मदनबान बोल उठी – सो तो हुआ अपनी अपनी अंगूठियां हेरफेर कर लो और आपस में लिखौती लिख दो। फिर कुछ हिचर–मिचर न रहे। कुंवर उदैभान ने अपनी अंगूठी रानी केतकी को पहना दी और रानी ने भी अपनी अंगूठी कुंवर की उंगली में डाल दी और एक धीमी सी चुटकी भी ले ली। इसमें मदनबाल बोली जो सच पूछो तो इतनी भी बहुत हुई। मेरे सिर चोट है। इतना बढ चलना अच्छा नहीं। अब उठ चलो और इनको सोने दोय और रोएं तो पडे रोने दो। बातचीत तो ठीक हो चुकी। पिछले पहर से रानी तो अपनी सहेलियों को लेके जिधर से आई थी, उधर को चली गई और कुंवर उदैभान अपने घोडे की पीठ लगाकर अपने लोगों से मिलके अपने घर पहुंचे।

कुंवर ने चुपके से यह कहला भेजा – अब मेरा कलेजा टुकडे–टुकडे हुए जाता है। दोनों महाराजाओं को आपस में लडने दो। किसी डौल से जो हो सके, तो मुझे अपने पास बुला लो। हम तुम मिलके किसी और देस निकल चलेंय होनी हो सो हो, सिर रहता रहे, जाता जाय। एक मालिन, जिसको फूलकली कर सब पुकारते थे, उसने उस कुंवर की चिट्ठी किसी फूल की पंखडी में लपेट लपेट कर रानी केतकी तक पहुंचा दी। रानी ने उस चिट्ठी को अपनी आंखों से लगाया और मालिन को एक थाल भरके मोती दिएय और उस चिट्ठी की पीठ पर अपने मुंह की पीक से यह लिखा –ऐ मेरे जी के ग्रहक, जो तू मुझे बोटी बोटी कर चील–कौवें को दे डाले, तो भी मेरी आंखों चैन और कलेजे सुख हो। पर यह बात भाग चलने की अच्छी नहीं।

इसमें एक बाप–दादे के चिट लग जाती हैय अब जब तक मां बाप जैसा कुछ होता चला आता है उसी डोल से बेटे–बेटी को किसो पर पटक न मारें और सिर से किसी के चेपक न दें, तब तक वह एक जो तो क्या, जो करोड जी जाते रहें तो कोई बात हैं रुचती नहीं। यह चिट्ठी जो बिस भरी कुंवर तक जा पहुंची, उस पर कई एक थाल सोने के हीरे, मोती, पुखराज के खचाखच भरे हुए निछावर करके लुटा देता है। और जितनी उसे बेचैनी थी, उससे चौगुनी पचगुनी हो जाती है और उस चिट्ठी को अपने उस गोरे डंड पर बांध लेता है। आना जोगी महेंदर गिर का कैलास पहाड पर से और कुंवर उदैभान और उसके मां–बाप को हिरनी हिरन कर डालना जगतपरकास अपने गुरू को जो कैलाश पहाड पर रहता था, लिख भेजता है– कुछ हमारी सहाय कीजिए। महाकठिन बिपताभार हम पर आ पडी है।

राजा सूरजभान को अब यहां तक वाव बें हक ने लिया है, जो उन्होंने हम से महाराजों से डौल किया है। सराहना जोगी जी के स्थान का कैलास पहाड जो एक डौल चाँदी का है, उस पर राजा जगतपरकास का गुरू, जिसको महेंदर गिर सब इंदरलोक के लोग कहते थे, ध्यान ज्ञान में कोई 90 लाख अतीतों के साथ ठाकुर के भजन में दिन रात लगा रहता था सोना, रूपा, तां बे, रांगे का बनाना तो क्या और गुटका मुंह में लेकर उड ना परे रहे, उसको और बातें इस इस ढब की ध्यान मे थीं जो कहने सुनने से बाहर है। मेंह सोने रूपे का बरसा देना और जिस रूप में चाहना हो जाना, सब कुछ उसके आगे खेल था। गाने बजाने में महादेव जी छूट सब उसके आगे कान पकडते थे। सरस्वती जिसकी सब लोग कहते थे, उनने भी कुछ कुछ गुनगुनाना उसी से सीखा था। उसके सामने छरू राग छत्तीस रागिनियां आठ पहर रूप बंदियों का सा धरे हुए उसकी सेवा में सदा हाथ जोडे खडी रहती थीं। और वहां अतीतों को गेर कहकर पुकारते थे–भैरोगिर, बिभासगिर, हिंडोलगिर, मेघनाथ, केदारनाथ, दीपकसेन, जोतिसरूप सारंगरूप। और अतीतिनें उस ढब से कहलाती थीं–गुजरी, टोडी, असावरी, गौरी, मालसिरी, बिलावली। जब चाहता, अधर में सिंघासन पर बैठकर उडाए फिरता था और नब्बे लाख अतीत गुटके अपने मुंह में लिए, गेरुए वस्तर

पहने, जटा बिखेरें उसके साथ होते थे। जिस घडी रानी केतकी के बाप की चिट्ठी एक बगला उसके घर पहुंचा देता है, गुरु महेंदर गिर एक चिग्घाड मारकर दल बादलों को ढलक देता है। बघंबर पर बैठे भभूत अपने मुंह से मल कुछ कुछ पढत करता हुआ बाण घोडे भी पीठ लगा और सब अतीत मृगछालों पर बैठे हुए गुटके मुंह में लिए हुए बोल उठे – गोरख जागा और मुंछदर जागाऔर मुंछदर भागा। एक आंख की झपक में वहां आ पहुंचता है जहां दोनों महाराजों में लडाई हो रही थी। पहले तो एक काली आंधी आईय फिर ओले बरसेट फिर टिड्डी आई। किसी को अपनी सुध न रही। राजा सूरजभान के जितने हाथी घोडे और जितने लोग और भीडभाड थी, कुछ न समझा कि क्या किधर गई और उन्हें कौन उठा ले गया। राजा जगत परकास के लोगों पर और रानी केतकी के लोगों पर क्योडे की बूंदों की नन्हीं–नन्हीं फुहार सी पडने लगी।

जब यह सब कुछ हो चुका, तो गुरुजी ने अतीतियों से कहा – उदैभान, सूरजभान, लछमीबास इन तीनों को हिरनी हिरन बना के किसी बन में छोड दोय और जो उनके साथी हों, उन सभों को तोड फोड दो। जैसा गुरुजी ने कहा झटपट वही किया। विपत का मारा कुंवर उदैभान और उसका बाप वह राजा सूरजभान और उनकी मां लछमीबास हिरन हिरनी बन गए। हरी घास कई बरस तक चरते रहेय और उस भीड भाड का तो कुछ थल बेडा न मिला, किधर गए और कहा थे बस यहा की यही रहने दो। फिर सुनो। अब रानी केतकी के बाप महाराजा जगतपरकास की सुनिए। उनके घर का घर गुरु जी के पांव पर गिर और सबने सिर झुकाकर कहा – महाराज, यह आपने बडा काम किया। हम सबको रख लिया। जो आप न पहुंचते तो क्या रहा था। सबने मर मिटने की ठान ली थी।

महाराज ने कहा – भभूत तो क्या मुझे अपना जी भी उससे प्यारा नहीं। मुझे उसके एक पहर के बहल जाने पर एक जी तो क्या जो करोर जी हों तो दे डालें। रानी केतकी को डिबिया में से थोडा सा भभूत दिया। कई दिन तलक भी आंख मिचौवल अपने माँ–बाप के सामने सहेलियों के साथ खेलती सबको हँसाती रही जो सौ सौ थाल मोतियों के निछावर हुआ किए, क्या कहूँ, एक चुहल थी जो कहिए तो करोडों पोथियों में ज्यों की त्यों न आ सके। रानी केतकी का चाहत से बेकल होना और मदन बान का साथ देने से नहीं करना।

एक रात रानी केतकी उसी ध्यान में मदनबान से यों बोल उठी–अब मैं निगोडी लाज से कुट करती हूँ, तू मेरा साथ दे। मदनबान ने कहा–क्यों कर? रानी केतकी ने वह भभूत का लेना उसे बताया और यह सुनाया यह सब आँख–मिचौवल के झाई झप्पे मैंने इसी दिन के लिये कर रखे थे। मदनबान बोली–मेरा कलेजा थरथराने लगा। अरी यह माना जो तुम अपनी आँखों में उस भभूत का अंजन कर लोगी और मेरे भी लगा दोगी तो हमें तुम्हे कोई न देखेगा। और हम तुम सबको देखेंगी। पर ऐसी हम कहाँ जी चली हैं। जो बिन साथ जोबन लिए बन–बन में पडी भटका करें और हिरनों की सींगों पर दोनों हाथ डालकर लटका करें, और जिसके लिए यह सब कुछ है, सो वह कहाँ? और होय तो क्या जाने जो यह रानी केतकी है और यह मदनबान निगोडी नोची खसोटी उजडी उनकी सहेली है। चूल्हे और भाड में जाय यह चाहत जिसके लिए आपकी माँ–बाप को राज–पाट सुख नींद लाज छोड कर नदियों के कछारों में फिरना पडे, सो भी बेडौल। जो वह अपने रूप में होते तो भला थोडा बहुत आसरा था। ना जी यह तो हमसे न हो सकेगा। जो महाराज जगतपरकास और महारानी कामलता का हम जान–बूझकर घर उजाडें और इनकी जो इकलौती लाडली बेटी है, उसको भगा ले जायें और जहाँ तहाँ उसे भटकावें और बनासपत्ति खिलावें और अपने घोडें को हिलावें। जब तुम्हारे और उसके माँ बाप में लडाई हो रही थी और उनने उस मालिन के हाथ तुम्हें लिख भेजा था जो मुझे अपने पास बुला लो, महाराजों को आपस में लडने दो, जो होनी हो सो होय हम तुम मिलके किसी देश को निकल चलेंय उस दिन समझीं। तब तो वह ताव भाव दिखाया। अब जो वह कुँवर उदैभान और उसके माँ–बाप तीनों जी हिरनी हिरन

बन गए। क्या जाने किधर होंगे। उनके ध्यान पर इतनी कर बैठिए जो किसी ने तुम्हारे घराने में न की, अच्छो नहीं। इस बात पर पानी डाल दोय नहीं तो बहुत पछताओगी और अपना किया पाओगी। मुझसे कुछ न हो सकेगा। तुम्हारी जो कुछ अच्छी बात होती, तो मेरे मुँह से जीते जें न निकलता। पर यह बात मेरे पेट में नहीं पच सकती। तुम अभी अल्हड हो। तुमने अभी कुछ देखा नहीं। जो ऐसी बात पर सचमुच ढलाव देखूँगी तो तुम्हारे बाप से कहकर यह भभूत जो बह गया निगोड़ा भूत मुछंदर का पूत अवधूत दे गया है, हाथ मुरकवाकर छिनवा लूँगी। रानी केतकी ने यह रूखाइयाँ मदनबान की सुन हँ सकर टाल दिया और कहा–जिसका जी हाथ में न हो, उसे ऐसी लाखों सूझती हैय पर कहने और करने में बहुत सा फेर है। भला यह कोई अँधेर है जो माँ बाप, राजपाट, लाज छोड कर हिरन के पीछे दौडती करछालें मारती फिरूँ। पर अरी तू तो बडी बावली चिड़िया है जो यह बात सच जानी और मुझसे लडने लगी। रानी केतकी का भभूत लगाकर बाहर निकल जाना और सब छोटे बडों का तिलमिलाना दस पन्द्रह दिन पीछे एक दिन रानी केतकी बिन कहे मदनबान के वह भभूत आँखों में लगा के घर से बाहर निकल गई। कुछ कहने में आता नहीं, जो माँ–बाप पर हुई। सबने यह बात ठहराई, गुरूजी ने कुछ समझकर रानी केतकी को अपने पास बुला लिया होगा।

महाराज जगतपरकास और महारानी कामलता राजपाट उस वियोग में छोड छाड के पहाड की चोटी पर जा बैठे और किसी को अपने आँखों में से राज थामने को छोड गए। बहुत दिनों पीछे एक दिन महारानी ने महाराज जगतपरकास से कहा–रानी केतकी का कुछ भेद जानती होगी तो मदनबान जानती होगी। उसे बुलाकर तो पूँछो। महाराज ने उसे बुलाकर पूछा तो मदनबान ने सब बातें खोलियाँ। रानी केतकी के माँ बाप ने कहा–अरी मदनबान, जो तू भी उसके साथ होती तो हमारा जी भरता। अब तो वह तुझे ले जाये तो कुछ इचर पचर न कीजियो, उसको साथ ही लीजियो। जितना भभूत है, तू अपने पास रख। हम कहाँ इस राख को चूल्हे में डालेंगे। गुरूजी ने तो दोनों राज का खोज खोया–कुँवर उदैभान और उसके माँ–बाप दोनों अलग हो रहे। जगतपरकास और कामलता को यों तलपट किया। भभूत न होत तो ये बातें काहे को सामने आती। मदनबान भी उनके ढूँढने को निकली। अंजन लगाए हुए रानी केतकी रानी केतकी कहती हुई पडी फिरती थी।

फुनगे से लगा जड तलक जितने झाड झंखाडों में पत्ते और पत्ती बँधी थीं, उनपर रूपहरी सुनहरी डाँक गोंद लगाकर चिपका दिया और सबों को कह दिया जो सही पगडी और बागे बिन कोई किसी डौल किसी रूप से फिर चले नहीं। और जितने गवैए, बजवैए, भांड–भगतिए रहस धारी और संगीत पर नाचने वाले थे, सबको कह दिया जिस जिस गाँव में जहाँ हों अपनी अपनी ठिकानों से निकलकर अच्छे अच्छे बिछौने बिछाकर गाते नाचते घूम मचाते कूदते रहा करें। ढूँढना गोसाई महेंदर गिर का कुँवर उदैभान और उसके माँ बाप को, न पाना और बहुत तलमलाना यहाँ की बात और चुहलें जो कुछ है, सो यहीं रहने दो। अब आगे यह सुनो। जोगी महेंदर और उसके 90 लाख जतियों ने सारे बन के बन छान मारे, पर कहीं कुँवर उदैभान और उसके माँ–बाप का ठिकाना न लगा। तब उन्होंने राजा इंदर को चिट्ठी लिख भेजी। उस चिट्ठी में यह लिखा हुआ था–इन तीनों जनों को हिरनी हिरन कर डाला था। अब उनको ढूँढता फिरता हूँ। कहीं नहीं मिलते और मेरी जितनी सकत थी, अपनी सी बहुत कर चुका हूं। अब मेरे मुंह से निकला कुँवर उदैभान मेरा बेटा मैं उसका बाप और ससुराल में सब ब्याह का ठाट हो रहा है। अब मुझपर विपत्ति गाढी पडी जो तुमसे हो सके, करो। राजा इंदर चिट्ठी का देखते ही गुरू महेंदर को देखने को सब इंद्रासन समेट कर आ पहुँचे और कहा–जैसा आपका बेटा वैसा मेरा बेटा। आपके साथ मैं सारे इंद्रलोक को समेटकर कुँवर उदैभान को ब्याहने चढूँगा। गोसाइं महेंदर गिर ने राजा इंद से कहा–हमारी आपकी एक ही बात है, पर कुछ ऐसा सुझाइए जिससे कुँवर उदैभान हाथ आ जावे।

राजा इंदर ने कहा–जितने गवैए और गायनें हैं, उन सबको साथ लेकर हम और आप सारे बनों में फिरा करें। कहीं न कहीं ठिकाना लग जाएगा। गुरू ने कहा–अच्छा। हिरन हिरनी का खेल बिगडना और कुँवर उदैभान और उसके माँ बाप का नए सिरे से रूप पकडना एक रात राजा इंदर और गोसाई महेंदर गिर निखरी हुई चाँदनी में बैठे राग सुन रहे थे, करोडों हिरन राग के ध्यान में चौकडी भूल आस पास सर झुलाए खडे थे। इसी में राजा इंदर ने कहा–इन सब हिरनों पर पढ के मेरी सकत गुरू को भगत फूरे मंत्र ईश्वरोवाच पढ के एक छींटा पानी का दो। क्या जाने वह पानी कैसा था। छींटों के साथ ही कुँवर उदैभान और उसके माँ बाप तीनों जनें हिरनों का रूप छोड कर जैसे थे वैसे हो गए। गोसाइं महेंदर गिर और राजा इंदर ने उन तीनों को गले लगाया और बडी आवभगत से अपने पास बैठाया और वही पानी घडा अपने लोगों को देकर वहाँ भेजवाया जहाँ सिर मुडवाते ही ओले पडे थे। राजा इदर के लोगों ने जो पानी की छींटें वहाँ ईश्वरोवाच पढ के दिए तो जो मरे थे सब उठ खडे हुएय और जो अधमुए भाग बचे थो, सब सिमट आए। राजा इंदर और महेंदर गिर कुँवर उदैभान और राज सूरजभान और रानी लक्ष्मीबास को लेकर एक उड न–खटोले पर बैठकर बडे धूमधाम से उनको उनके राज पर बिठाकर ब्याह का ठाट करने लगे। पसेरियन हीरे–मोती उन सब पर से निछावर हुए।

राजा सूरजभान और कुँवर उदैभान और रानी लछमीबास चितचाही असीस पाकर फूली न समाई और अपने सो राज को कह दिया–जेवर भोरे के मुंह खोल दो। जिस जिस को जो जो उकत सूझे, बोल दो। आज के दिन का सा कौन सा दिन होगा। हमारी आँखों की पुतलियों से जिससे चैन हैं, उस लाडले इकलौते का ब्याह और हम तीनों का हिरनों के रूप से निकलकर फिर राज पर बैठना। पहले तो यह चाहिए जिन जिन की बेटियाँ बिन ब्याहियाँ हों, उन सब को उतना कर दो जो अपनी जिस चाव चीज से चाहें अपनी गुडियाँ सँवार के उठावें और तब तक जीतो रहें सब की सब हमारे यहाँ से खाया पकाया रींधा करें। और सब राज भर की बेटियाँ सदा सुहागनें बनी रहे और सूहे रातें छुट कभी कोई कुछ न पहना करें और सोने रूपे के केवाड गंगाजमुनी सब घरों में लग जाएँ और सब कोठों के माथे पर केसर और चंदन के टीके लगे हों। और जितने पहाड हमारे देश में हों, उतने ही पहाड सोने रूपे के आमने सामने खडे हो जाएँ और सब डाँगों की चोटियाँ मोतियों की माँग ताँगे भर जाएँग और फूलों के गहने और हैं धनवार से सब झाड पहाड लदे फँदे रहेंय और इस राज से लगा उस राज तक अधर में छत सी बाँध दो। और चप्पा चप्पा कहीं ऐसा न रहे जहाँ भीड भडक्का धूम धडक्का न हो जाय। फूल बहुत सारे बहा दो जो नदियाँ जैसे सचमुच फूल की बहियाँ हैं यह समझा जाय। और यह डौल कर दो, जिधर से दुल्हा को ब्याहने चढे सब लाड ली और हीरे पन्ने पोखराज की उमड में इधर और उधर कबैल की टट्टियाँ बन जायें और क्यारियाँ सी हो जायें जिनके बीचो बीच से हो निकलें। और कोई डाँग और पहाडी तली का चढाव उतार ऐसा दिखाई न दे जिसकी गोद पंखुरियों से भरी हुई न हों

इस धूमधाम के साथ कुँवर उदैभान सेहरा बाँधे दूल्हन के घर तक आ पहुँचा और जो रीतें उनके घराने में चली आई थीं, होने लगियाँ। मदनबान रानी केतकी से ठठोली करके बोली–लीजिए, अब सुख समेटिए, भर भर झोली। सिर निहुराए, क्या बैठी हो, आओ न टुक हम तुम मिल के झरोखों से उन्हें झाँकें। रानी केतकी ने कहा–न री, ऐसी नीच बातें न कर। हमें ऐसी क्या पडी जो इस घडी ऐरी झेल कर रेल पेल ऐसी उठें और तेल फुलेल भरी हुई उनके झाँकने को जा खडी हों। बदनबान उसकी इस रूखाई को उड नझाई की बातों में डालकर बोली– बोलचाल मदनबान की अपनी बोली के दोनों में– यों तो देखो वाछडे जी वा छडे जी वा छडे। हम से जो आने लगी हैं आप यों मुहरे कडे।। छान मारे बन के बन थे आपने जिनके लिये। वह हिरन जीवन के मद में हैं बने दूल्हा खडे।। तुम न जाओ देखने को जो उन्हें क्या बात है। ले चलेगी आपको हम हैं इसी धुन पर अडे। है कहावत जी को भावै और यों मुडिया हिले। झांकने के ध्यान में उनके हैं सब छोटे बडे।। साँस ठंडी भरके रानी केतकी बोली कि सच। सब तो अच्छा कुछ हुआ पर अब बखेडे में पडे।। वारी फेरी होना मदनबान का रानी केतकी पर और उसकी बास सूँघना और उनींदे पन से ऊंघना उस घडी मदनबान को रानी केतकी का बादले का जूडा और भीना भोनापन और अँखडियों का लजाना और बिखर बिखरा जाना भला लग गया, तो रानी केतकी की बास सूँघने लगी और अपनी आँखों को ऐसा कर लिया जैसे कोई ऊँघने लगता है। सिर से लग पाँव तक वारी फेरी होके तलवे सुहलाने लगी। तब रानी केतकी झट एक धीमी सी सिसकी लचके के साथ ले उठी रु मदनबान बोली–मेरे हाथ के टहोके से, वहीं

पांव का छाला दुख गया होगा जो हिरनों की ढूँढने में पड गया था। इसी दुरूख की चुटकी से रानी केतकी ने मसोस कर कहा–काटा अडा तो अडा, छाला पडा तो पडा, पर निगोडी तू क्यों मेरी बनछाला हुई।सराहना रानी केतकी के जोबन का केतकी का भला लगना लिखने पढने से बाहर है। वह दोनों भैवों का खिंचावट और पुतलियों में लाज की सनावट और नुकीली पलकों की रूँ धावट हँसी की लगावट और दंतडियों में मिस्सी की उन्नाहट और इतनी सी बात पर रूकावट है। नाक और त्योरी का चढा लेना, सहेलियों को गालियाँ देना और चल निकलना और हिरनों के रूप में कुलांचे मारकर परे उछलना कुछ कहने में नहीं आता। सराहना कुँवर जी के जोबन का कुँवर उदैभान के अच्छेपन का कुछ हाल लिखना किससे हो सके। हाय रे उनके उभार के दिनों का सुहानापन, चाल ढाल का अच्छन बच्छन, उठती हुई कोंपल की काली फबन और मुखडे का गदराया हुआ जोबन जैसे बडे तडके धुंधले के हरे भरे पहाडों की गोद से सूरज की किरनें निकल आती हैं। यही रूप था। उनकी भीगी मसों से रस टपका पडता था। अपनी परछाँई देखकर अकडता जहाँ जहाँ छाँव थी, उसका डौल ठीक ठीक उनके पाँव तले जैसे धूप थी। दूल्हा का सिंहासन पर बैठना दूल्हा उदैभान सिंहासन पर बैठा और इधर उधर राजा इंदर और जोगी महेंदर गिर जम गए और दूल्हा का बाप अपने बेटे के पीछे माला लिये कुछ गुनगुनाने लगा। और नाच लगा होने और अधर में जो उड न खटोले राजा इंदर के अखाडे के थे। सब उसी रूप से छत बाँधे थिरका किए। दोनों महारानियाँ समधिन बन के आपस में मिलियाँ चलियाँ और देखने दाखने को कोठों पर चन्दन के किवाडों के आड तले आ बैठियाँ। सर्वांग संगीत भेंड ताल रहस हँसी होने लगी। जितनी राग रागिनियाँ थीं, ईमन कल्यान, सुध कल्यान झिंझोटी, कन्हाडा, खम्माच, सोहनी, परज, बिहाग, सोरठ, कालंगडा, भैरवी, गीत, ललित भैरौ रूप पकडे हुए सचमुच के जैसे गाने वाले होते हैं उसी रूप में अपने अपने समय पर गाने लगे और गाने लगियाँ। उस नाच का जो ताव भाव रचावट के साथ हो, किसका मुंह जो कह सके। जितने महाराजा जगतपरकास के सुखचैन के घर थे, माधो बिलास, रसधाम कृष्ण निवास, मच्छी भवन, चंद भवन सबके सब लपे लपेटे और सच्ची मोतियों की झालरें अपनी अपनी गाँठ में समेटे हुए एक भेस के साथ मतवालों के बैठनेवालों के मुँह चूम रहे थे। पर कुंवर जी का रूप क्या कहूं। कुछ कहने में नहीं आता। न खाना, न पीना, न मग चलना, न किसी से कुछ कहना, न सुनना। जिस स्थान में थे उसी में गुथे रहना और घडी–घडी कुछ सोच सोच कर सिर धुनना। होते–होते लोगों में इस बात का चरचा फैल गई। किसी किसी ने महाराज और महारानी से कहा – कुछ दाल में काला है। वह कुंवर बुरे तेवर और बेडौल आंखें दिखाई देती हैं। घर से बाहर पांव नहीं धरना। घरवालियां जो किसी डौल से बहलातियां हैं तो और कुछ नहीं करना, ठंडी ठंडी सांसें भरता है। और बहुत किसी ने छेडा तो छपरखट पर जाके अपना मुंह लपेट के आठ आठ आंसू पडा रोता है। यह सुनते ही कुंवर उदैभान के माँ–बाप दोनों दौड आए। गले लगाया, मुंह चूम पांव पर बेटे के गिर पडे हाथ जोडे और कहा – जो अपने जी की बात है सो कहते क्यों नहीं? क्या दुखडा है जो पडे–पडे कहराते हो? राज–पाट जिसको चाहो दे डालो। कहो तो क्या चाहते हो? तुम्हारा जी क्यों नहीं लगता? भला वह क्या है जो नहीं हो सकता? मुंह से बोलो जी को खोलो। जो कुछ कहने से सोच करते हों, अभी लिख भेजो। जो कुछ लिखोगे, ज्यों की त्यों करने में आएगी। जो तुम कहो कुंए में गिर पडो, तो हम दोनों अभी गिर पडते हैं। कहो – सिर काट डालो, तो सिर अपने अभी काट डालते हैं। कुंवर उदैभान, जो बोलते ही न थे, लिख भेजने का आसरा पाकर इतना बोले – अच्छा आप सिधारिए, मैं लिख भेजता हूं। पर मेरे उस लिखे को मेरे मुंह परकिसी ढब से न लाना। इसीलिए मैं मारे लाज के मुखपाट होके पडा था और आपसे कुछ न कहन था। यह सुनकर दोनों महाराज और महारानी अपने स्थान को सिधारे। तब कुंवर ने यह लिख भेजा – अब जो मेरा जी होंठों पर आ गया और किसी डौल न रहा गया और आपने मुझे सौ–सौ रूप से खोल और बहुत सा टटोला, तब तो लाज छोड के हाथ जोड के मुह फाड के घिघिया के यह लिखता हू– चाह के हाथों किसी को सुख नहीं। है भला वह कौन जिसको दुख नहीं।। उस दिन जो मैं हरियाली देखने को गया था एक हिरनी मेरे सामने कनौतियां उठाए आ गई। उसके पीछे मैंने घोडा बगछुट फेंका। जब तक उजाला रहा, उसकी धुन में बहका किया। जब सूरज डूबा मेरा जी बहुत ऊबा। सुहानी सी अमराइयां ताड के मैं उनमें गया, तो उन अमराइयों का पत्ता–पत्ता मेरे जी का गाहक हुआ। वहां का यह सौंहिला है। कुछ रंडियां झूला डाले झूल रही थीं। उनकी सिरधरी कोई रानी केतकी महाराज जगतपरकास की बेटी हैं। उन्होंने यह अंगूठी अपनी मुझे दी और मेरी अंगूठी उन्होंने ले ली और लिखौट भी लिख दी। सो यह अंगूठी लिखौट समेत मेरे लिखे हुए के साथ पहुंचती है। अब आप पढ लीजिए। जिसमें बेटे का जी रह जाय, सो कीजिए। महाराज और महारानी ने अपने बेटे के लिखे हुए पर सोने के पानी से यों लिखा – हम दोनों ने इस अंगूठी और लिखौट को अपनी आंखों से मला। अब तुम इतने कुछ कुढो पचो मत। जो रानी केतकी के मां बाप तुम्हारी बात मानते हैं, तो हमारे समधी और समधिन हैं। दोनों राज एक हो जाएंगे। और जो कुछ नाह – नूह ठहरेगी तो जिस डौल से बन आवेगा, ढाल तलवार के बल तुम्हारी दुल्हन हम तुमसे मिला देंगे। आज से उदास मत रहा करो। खेलो, कूदो, बोलो चालो, आनंदें करो। अच्छी घडी– शुभ मुहूरत सोच के तुम्हारी ससुराल में किसी ब्राह्मन को भेजते हैंय जो बात चीत चाही ठीक कर लावे और शुभ घडी शुभ मुहूरत देख के रानी केतकी के मां–बाप के पास भेजा। ब्राह्मन जो शुभ मुहूरत देखकर हडबडी से गया था, उस पर बुरी घडी पडी। सुनते ही रानी केतकी के मां–बाप ने कहा – हमारे उनके नाता नहीं होने का।

उनके बाप–दादे हमारे बाप दादे के आगे सदा हाथ जोडकर बातें किया करते थे और दो टुक जो तेवरी चढी देखते थे, बहुत डरते थे। क्या हुआ, जो अब वह बढ गए, ऊंचे पर चढ गए। जिनके माथे हम न बाएं पांव के अंगूठे से टीका लगावें, वह महाराजों का राजा हो जावे। किसी का मुंह जो यहबात हमारे मुंह पर लावे! ब्राह्मण ने जल–भुन के कहा – अगले भी बिचारे ऐसे ही कुछ हुए हैं। राजा सूरजभान भी भरी सभा में कहते थे – हममें उनमें कुछ गोत का तो मेल नहीं। यह कुंवर की हठ से कुछ हमारी नहीं चलती। नहीं तो ऐसी ओछी बातें कब हमारे मुंह से निकलती। यह सुनते ही उन महाराज ने ब्राह्मन के सिर पर फूलों की चंगेर फेंक मारी और कहा – जो ब्राह्मण की हत्या का धडका न होता तो तुझको अभी चक्की में दलवा डालता। और अपने लोगों से कहा– इसको ले जाओ और ऊपर एक अंधेरी कोठरी में मूंद रक्खो। जो इस ब्राह्मन पर बीती सो सब उदैभान ने सुनी। सुनते ही लडने के लिए अपना ठाठ बांध के भादों के दल बादल जैसे घिर आते हैं चढ आया। जब दोनों महाराजों में लडाई होने लगी, रानी केतकी सावन–भादों के रूप रोने लगीय और दोनों के जी में यह आ गई – यह कैसी चाहत जिसमें लोहू बरसने लगा और अच्छी बातों को जी तरसने लगा।

इन पापियों से कुछ न चलेगी, यह जानते थे। राजपाट हमारा अब निछावर करके जिसको चाहिए, दे डालिएय राज हम से नहीं थम सकता। सूरजभान के हाथ से आपने बचाया। अब कोई उनका चचा चंद्रभान चढ आवेगा तो क्योंकर बचना होगा? अपने आप में तो सकत नहीं। फिर ऐसे राज का फिट्टे मुंह कहां तक आपको सताया करें। जोगी महेंदर गिर ने यह सुनकर कहा – तुम हमारे बेटा बेटी हो, अनंदे करो, दनदनाओ, सुख चैन से रहो। अब वह कौन है जो तुम्हें आंख भरकर और ढब से देख सके। यह बघंबर और यह भभूत हमने तुमको दिया। जो कुछ ऐसी गाढ पडे तो इसमें से एक रोंगटा तोड आग में फूंक दीजियो। वह रोंगटा फुकने न पावेगा जो बात की बात में हम आ पहुंचेंगे। रहा भभूत, सो इसीलिए है जो कोई इसे अंजन करे, वह सबको देखें और उसे कोई न देखें, जो चाहे सो करे। जाना गुरुजी का राजा के घर गुरु महेंदर गिर के पांव पूजे और धनधन महाराज कहे। उनसे तो कुछ छिपाव न था। महाराज जगतपरकास उनको मुर्छल करते हुए अपनी रानियों के पास ले गए। सोने रूपे के फूल गोद भर–भर सबने निछावर किए और माथे रगडे। उन्होंने सबकी पीठें ठोंकी।

रानीकेतकी ने भी गुरुजी को दंडवत कीय पर जी में बहुत सी गुरु जी को गालियां दी। गुरुजी सात दिन सात रात यहां रहकर जगतपरकास को सिंघासन पर बैठाकर अपने बंधवर पर बैठ उसी डौल से कैलाश पर आ धमके और राजा जगत परकास अपने अगले ढब से राज करने लगा। रानी केतकी का मदनबान के आगे रोना और पिछली बतों का ध्यान कर जान से हाथ धोना।

दोहरा

(अपनी बोली की धुन में)

रानी को बहुत सी बेकली थी। ? कब सूझती कुछ बुरी भली थी।।
चुपके–चुपके कराहती थी। जीना अपना न चाहती थी।।
कहती थी कभी अरी मदनबान। हैं आठ पर मुझे वही ध्यान।।
या प्यास किसे किसे भला भूख। देखू वही फिर हरे हरे रुख।।
टपके का डर है अब यह कहिए। चाहत का घर है अब यह कहिए।।
अमराइयों में उनका वह उतरना। और रात का सांय सांय करना।।
और चुपके से उठके मेरा जाना। और तेरा वह चाह का जताना।।
उनकी वह उतार अंगूठी लेनी। और अपनी अंगूठी उनको देनी।।
आंखों में मेरे वह फिर रही है। जी का जो रूप था वही है।।
क्योंकर उन्हें भूलू क्या करू मैं। मां बाप से कब तक डरू मैं।।

अब मैंने सुना है ऐ मदनबान। बन बन के हिरन हुए उदयभान।। चरते होंगे हरी हरी दूब। कुछ तू भी पसीज सोच में डूब।। मैं अपनी गई हूं चौकडी भूल। मत मुझको सुंघा यह डहडहे फूल।। फूलों को उठाके यहां से ले जा। सौ टुकडे हुआ मेरा कलेजा।। बिखरे जी को न कर इकट्ठा। एक घास का ला के रख दे गट्ठा।। हरियाली उसी की देख लूं मैं। कुछ और तो तुझको क्या कहूं मैं।। इन आंखों में है फडक हिरन की। पलकें हुई जैसे घासपन की।। जब देखिए डबडबा रही हैं। ओसें आंसू की छा रही हैं।। यह बात जो जी में गड गई है। एक ओस–सी मुझ पे पड गई है। इसी डौल जब अकेली होती तो मदनबान के साथ ऐसे कुछ मोती पिरोती। रानी केतकी का चाहत से बेकल होना और मदनबान का साथ देने से नाहीं करना और लेना उसी भभूत का, जो गुरुजी दे गए थे, आँख मिचौबल के बहाने अपनी मां रानी कामलता से। एक रात रानी केतकी ने अपनी मां रानी कामलता को भुलावे में डालकर यों कहा और पूछा – गुरुजी गुसाई महेंदर गिर ने जो भभूत मेरे बाप को दिया है, वह कहां रक्खा है और उससे क्या होता है? रानी कामलता बोल उठी – आंख मिचौबल खेलने के लिए चाहती हू। जब अपनी सहेलियों के साथ खेलू और चोर बनूं तो मुझको कोई पकड न सके। महारानी ने कहा – वह खेलने के लिए नहीं है। ऐसे लटके किसी बुरे दिन के संभलने को डाल रखते हैं। क्या जाने कोई घडी कैसी है, कैसी नहीं। रानी केतकी अपनी मां की इस बात पर अपना मुंह थुथा कर उठ गई और दिन भर खाना न खाया। महाराज ने जो बुलाया तो कहा मुझे रूच नहीं। तब रानी कामलता बोल उठी – अजी तुमने सुना भी, बेटी तुम्हारी आंख मिचौबल खेलने के लिए वह भभूत गुरुजी का दिया मांगती थी। मैंने न दिया और कहा, लडकी यह लडकपन की बातें अच्छी नहीं। किसी बुरे दिन के लिए गुरुजी गए हैं। इसी पर मुझसे रूठी है। बहुतेरा बहलाती है, मानती नहीं।

राजा इंदर का कुँवर उदैभान का साथ करना राजा इंदर ने कह दिया, वह रंडियें चुलबुलियाँ जो अपने मद में उड चलियाँ हैं, उनसे कह दो–सोलहो सिंगार, बारा गूँधमोती पिरो अपने अचरज और अचंभे के उड न खटोलों का इस राज से लेकर उस राज तक अधर में छत बाँध दो। कुछ इस रूप से उड चलो जो उडन–खटोलियों की क्यारियाँ और फुलवारियाँ सैंकडों कोस तक हो जायें। और अधर ही अधर मृदंग, बीन, जलतरंग, मुँहचग, घुँगरू, तबले घंटताल और सैकडों इस ढब के अनोखे बाजे बजते आएँ। और उन क्यारियों के बीच में हीरे, पुखराज, अनबेधे मोतियों के झाड और लाल पटों की भीड भाड की झमझमाहट दिखाई दे और इन्हीं लाल पटों में से हथफूल, फूलझडियाँ, जाही जुही, कदम, गेंदा, चमेली इस ढब से छूटने लगें तो देखने वालों को छातियों के किवाड खुल जायें। और पटाखे जो उछल उछल फूटें, उनमें हँसती सुपारी और बोलती करोती ढल पडे। और जब तुम सबको हँसी आवे, तो चाहिए उस हँसी से मोतियों की लडियाँ झडें जो सबके सब उनको चुन चुनके राजे हो जायें। डोमनियें के जो रूप में सारंगियाँ छेड छेड सोहलें गाओ। दोनों हाथ हिलाके उंगलियाँ बचाओ। जो किसी ने न सुनो हो, वह ताव भाव वह चाव दिखाओय ठुड्डियाँ गिनगिनाओ, नाक भँवे तान तान भाव बताओय कोई छुटकर न रह जाओ। ऐसा चाव लाखों बरस में होता है। जो जो राजा इंदर ने अपने मुँह से निकाला था, आँख की झपक के साथ वही होने लगा। और जो कुछ उन दोनों महराजों ने कह दिया था, सब कुछ उसी रूप से ठीक ठीक हो गया। जिस ब्याह को यह कुछ फैलावट और जनावट और रचावट ऊपर तले इस जमघट के सथ होगी, और कुछ फैलावा क्या कुछ होगा, यही ध्यान कर लो। ठाटो करना गोसाई महेंदर गिर का जब कुँवर उदैभान को वे इस रूप से ब्याहने चढे और वह ब्राह्मन जो अँधेरी कोठरी से मुँदा हुआ था, उसको भी साथ ले लिया और बहुत से हाथ जोडे और कहा–ब्राह्मन देवता हमारे कहने सुनने पर न जाओ। तुम्हारी जो रीत चली आई है, बताते चलो। एक उडन खटोले पर वह भी रीत बता के साथ हो लिया। राजा इंदर और गोसाई महेंदर गिर ऐरावत हाथी ही पर झूलते झालते देखते भालते चले जाते थे। राजा सूरजभान दुल्हा के घोडे के साथ माला जपता हुआ पैदल था। इसी में एक सन्नाटा हुआ। सब घबरा गए। उस सन्नाटे में से जो वह 90 लाख अतीत थे, अब जोगी से बने हुए सब माले मोतियों की लडियों की गले में डाले हुए और गातियाँ उस ढब की बाँधे हुए मिरिगछालों और बघंबरों पर आ ठहर गए। लोगों के जियों में जितनी उमगें छा रही थी, वह चौगुनी पचगुनी हो गई। सुखपाल और चडोल और रथों पर जितनी रानियाँ थीं, महारानी लछमीदास के पीछे चली आतियाँ थीं। सब को गुदगुदियाँ सी होने लगीं इसी में भरथरी का सवाँग आया। कहीं जोगी जातियाँ आ खडे हुए। कहीं कहीं गोरख जागे कहीं मुछंदारनाथ भागे। कहीं मच्छ कच्छ बराह संमुख हुए, कहीं परसुराम, कहीं बामन रूप, कहीं हरनाकुस और नरसिंह, कहीं राम लछमन सीता सामने आई, कहीं रावन और लंका का बखेडा सारे का सारा सामने दिखाई देने लगा। कहीं कन्हैया जी की जनम अष्टमी होना और वसुदेव का गोकुल ले जाना और उनका बढ चलना, गाए चरानी और मुरली बजानी और गोपियों से धूमें मचानी और राधिका रहस और कुब्जा का बस कर लेना, वही करील की कुंजे, बसीबट, चीरघाट, वृंदावन, सेवाकुंज, बरसाने में रहना और कन्हैया से जो जो हुआ था, सब का सब ज्यों की त्यों आँखों में आना और द्वारका जाना और वहाँ सोने का घर बनाना, इधर बिरिज को न आना और सोलह सौ गोपियों का तलमलाना सामने आ गया। उन गोपियों में से ऊधो का हाथ पकड कर एक गोपी के इस कहने ने सबको रूला दिया जो इस ढब से बोल के उनसे रूँधे हुए जी को खोले थी। चौचुक्का जब छांडि करील को कुँज्न को हरि द्वारिका जीउ माँ जाय बसो। कलधौत के धाम बनाए घने महाजन के महाराज भये। तज मोर मुकुट अरू कामरिया कछु औरहि नाते जाड लिए। धरे रूप नए किए नेह नए और गइया चरावन भूल गए। अच्छापन घाटों का कोई क्या कह सके, जितने घाट दोनों राज की नदियों में थे, पक्के चाँदी के थक्के से होकर लोगों को हक्का बक्का कर रहे थे। निवाडे, भौलिए, बजरे, लचके, मोरपंखी, स्यामसुदर, रामसुदर, और जितनी ढब की नावे थी, सुनहरी रूपहरी, सजी सजाई कसी कसाई और सौ सौ लचकें खातियें, आतियाँ, जातियाँ, लहरातियाँ, फिरातियाँ थीं। उन सभी पर खचाखच कंचनियाँ, रामजन्यियाँ, डोमिन्यियाँ भरी हुई अपने अपने करतबों में नाचती गाती बजाती कूदती फाँदती घूमें मचातियाँ अँगडातियाँ जम्हातियाँ उँगलियाँ नचातियाँ और ढुली पड तियाँ थीं और कोई नाव ऐसी न थी जो साने रूपे के पत्तरों से मढी हुई और सवारी से भरी हुई न हो। और बहुत सी नावों पर हिंडोले भी उसी ढब के थे। उन पर गायनें बैठी झुलती हुई सोहनी, केदार, बागेसरी, कान्हडों में गा रही थीं। दल बादल ऐसे नेवाडों के सब झीलों में छा रहे थे आ पहुँचना कुँवर उदैभान का ब्याह के ठाट के साथ दूल्हन की ड्योढी पर बीचों बीच सब घरों के एक आरसी धाम बना था जिसकी छत और किवाड और आंगन में आरसी छुट कहीं लकडी, ईट, पत्थर की पुट एक उँगली के पोर बराबर न लगी थी। चाँदनी सा जोडा पहने जब रात घडी एक रह गई थी। तब रानी केतकी सी दुल्हन को उसी आरसी भवन में बैठकर दूल्हा को बुला भेजा। कुँवर उदैभान कन्हैया सा बना हुआ सिर पर मुकुट धरे सेहरा बाँधे उसी तडावे और जमघट के साथ चाँद सा मुखडा लिए जा पहुँचा। जिस जिस ढब में ब्राह्मन और पंडित बहते गए और जो जो महाराजों में रीतें होती चली आई थी, उसी डौल से उसी रूप से भँवरी गँटजोडा हो लिया। अब उदैभान और रानी केतकी दोनों मिले। घास के जो फूल कुम्हालाए हुए थे फिर खिले।। चैन होता ही न था जिस एक को उस एक बिन। रहने सहने सो लगे आपस में अपने रात दिन।। ऐ खिलाडी यह बहुत सा कुछ नहीं थोडा हुआ। आन कर आपस में जो दोनो का, गठजोडा हुआ। चाह के डूबे हुए ऐ मेरे दाता सब तिरें। दिन फिरे जैसे इन्हों के वैसे दिन अपने फिर।। वह उड नखटोलीवालियाँ जो अधर में छत सी बाँधे हुए थिरक रही थी, भर भर झोलियाँ और मुठ्ठियाँ हीरे और मोतियाँ से निछावर करने के लिए उतर आइयाँ और उडन–खटोले अधर में ज्यों के त्यों छत बाँधे हुए खडे रहे। और वह दूल्हा दूल्हन पर से सात सात फेरे वारी फेर होने में पिस गइयाँ। सभों को एक चुपकी सी लग गई। राजा इंदर ने दूल्हन को मुँह दिखाई में एक हीरे का एक डाल छपरखट और एक पेडी पुखराज की दी और एक परजात का पौधा जिसमें जो फल चाहो सो मिले, दूल्हा दूल्हन के सामने लगा दिया। और एक कामधेनू गाय की पठिया बछिया भी उसके पीछे बाँध दी और इक्कीस लौंडिया उन्हीं उडन–खटोलेवालियों में से चुनकर अच्छी से अच्छी

सुथरी से सुथरी गाती बजातियाँ सीतियाँ पिरोतियाँ और सुघर ने सुघर सौंपी और उन्हें कह दिया–रानी केतकी छूट उनके दूल्हा से कुछ बातचीत न रखना, नहीं तो सब की सब पत्थर की मूरत हो जाओगी और अपना किया पाओगी। और गोसाई महेंदर गिर ने बावन तोले पाख रत्ती जो उसकी इक्कीस चुटकी आगे रक्खी और कहा–यह भी एक खेल है। जब चाहिए, बहुत सा ताँबा गलाके एक इतनी सी चुटकी छोड दीजैप कंचन हो जायेगा। और जोगी जी ने सभी से यह कह दिया–जो लोग उनके ब्याह में जाते हैं, उनके घरों में चालीस दिन रात सोने की नदियों के रूप में मनि बरसे। जब तक जिएँ, किसी बात को फिर न तरसें। 9 लाख 99 गायें सोने रूपे की सिंगौरियों की, जड जडाऊ गहना पहने हुए, घुँघरू छमछमातियाँ महतों को दान हुई और सात बरस का पैसा सारे राज को छोड दिया गया। बाईस सौ हाथी और छत्तीस सौ ऊँट रूपयों के तोडे लादे हुए लुटा दिए। कोई उस भीड भाड में दोनों राज का रहने वाला ऐसा न रहा जिसको घोडा, जोड, रूपयों का तोडा, जडाऊ कपडों के जोडे न मिले हों। और मदनबान छुट दूल्हा दूल्हन के पास किसी का हियाव न था जो बिना बुलाये चली जाए। बिना बुलाए दौडी आए तो वही और हँसाए तो वही हँसाए। रानी केतकी के छेडने के लिए उनके कुँवर उदैभान को कुँवर क्योडा जी कहके पुकारती थी और ऐसी बातों को सौ सौ रूप से सँवारती थी।

'दोहरा

घर बसा जिस रात उन्हीं का तब मदनबान उसी घडी
कह गई दूल्हा दुल्हन से ऐसी सौ बातें कडी
जी लगाकर केवडे से केतकी का जी खिला
सच है इन दोनों जियों को अब किसी की क्या पडी
क्या न आई लाज कुछ अपने पराए की अजी।
थी अभी उस बात की ऐसी भला क्या हडबडी।।
मुसकरा के तब दुल्हन ने अपने घूँघट से कहा।
मोगरा सा हो कोई खोले जो तेरी गुलछडी
जी में आता है तेरे होठों को मलवा लूँ अभी।
बल बे ऐं रंडी तेरे दाँतों की मिस्सी की घडी।। ■

बहुत दिनों पीछे कहीं रानी केतकी भी हिरनों की दहाडों में उदैभान उदैभान चिघाडती हुई आ निकली। एक ने एक को ताडकर पुकारा–अपनी तनी आँखें नीची डालो। एक डबरे पर बैठकर दोनों की मुतभेड हुई। गले लग के ऐसी रोइयाँ जो पहाडों में कूक सी पड गई। दोहरा छा गई ठंडी साँस झाडों में। पड गई कूक सी पहाडों में। दोनों जनियाँ एक अच्छी सी छांव को ताडकर आ बैठियाँ और अपनी अपनी दोहराने लगीं। बातचीत रानी केतकी की मदनबान के साथ रानी केतकी ने अपनी बीती सब कही और मदनबान वही अगला झींकना झीका की और उनके माँ–बाप ने जो उनके लिये जोग साधा था, जो वियोग लिया था, सब कहा। जब यह सब कुछ हो चुकी, तब फिर हँसने लगी। रानी केतकी उसके हंसने पर रूककर कहने लगी–

दोहरा

हम नहीं हँसाने से रूकते, जिसका जी चाहे हँसे। हैं वही अपनी कहावत आ फँसे जी आ फँसे।। अब तो सारा अपने पीछे झगडा झाँटा लग गया। पाँव का क्या दूँढती हाजी में काँटा लग गया।। पर मदनबान से कुछ रानी केतकी के आँसू पुँछते चले। उन्ने यह बात कही–जो तुम कहीं ठहरो तो मैं तुम्हारे उन उजडे हुए माँ–बाप को ले आऊँ और उन्हीं से इस बात को ठहराऊँ। गोसाई महेंदर गिर जिसकी यह सब करतूत है, वह भी इन्हीं दोनों उजडे हुओं की मुट्ठी में हैं। अब भी जो मेरा कहा तुम्हारे ध्यान चढें, तो गए हुए दिन फिर सकते हैं। पर तुम्हारे कुछ भावे नहीं, हम क्या पडी बकती है। मैं इस पर बीड उठाती हूँ। बहुत दिनों पीछे रानी केतकी ने इस पर अच्छा कहा और मदनबान को अपने माँ–बाप के पास भेजा और चिट्ठी अपने हाथों से लिख भेजी जो आपसे हो सके तो उस जोगी से ठहरा के आवें। मदनबान का महाराज और महारानी के पास फिर आना चितचाही बात सुनना मदनबान रानी केतकी को अकेला छोड कर राजा जगतपरकास और रानी कामलता जिस पहाड पर बैठी थीं, झट से आदेश करके आ खडी हुई और कहने लगी–लीजे आप राज कीजे, आपके घर नए सिर से बसा और अच्छे दिन आये। रानी केतकी का एक बाल भी बाँका नहीं हुआ। उन्हीं के हाथों की लिखी चिट्ठी लाई हूँ, आप पढ लीजिए। आगे जो जी चाहे सो कीजिए। महाराज ने उस बघंबर में एक रोंगटा तोड कर आग पर रख के फूँक दिया। बात की बात में गोसाई महेंदर गिर आ पहुँचा और जो कुछ नया सवांग जोगी–जागिन का आया, आँखों देखाय सबको छाती लगाया और कहा– बघंबर इसीलिये तो मैं सौंप गया था कि जो तुम पर कुछ हो तो इसका एक बाल फूँक दीजियो। तुम्हारी यह बात हो गई। अब तक क्या कर रहे थे और किन नींदों में सोते थे? पर तुम क्या करो यह खिलाडी जो रूप चाहे सो दिखावे, जो नाच चाहे सो नचावे। भभूत लडको को क्या देना था। हिरनी हिरन उदैभान और सूरजभान उसके बाप और लछमीबास उनको माँ को मैंने किया था। फिर उन तीनों को जैसा का तैसा करना कोई बडी बात न थी। अच्छा, हुई सो हुई। अब उठ चलो, अपने राज पर विराजो और ब्याह को ठाट करो। अब तुम अपनी बेटी को समेटो, कुँवर उदैभान को मैंने अपना बेटा किया और उसको लेके मैं ब्याहने चढूँगा। महाराज यह सुनते ही अपनी गद्दी पर आ बैठे और उसी घडी यह कह दिया सारी छतों और कोठों को गोटे से मढो और सोने और रूपे के सुनहरे सेहरे सब झाड पहाडों पर बाँध दो और पेडों में मोती की लडियाँ बाँध दो और कह दो, चालीस दिन रात तक जिस घर में नाच आठ पहर न रहेगा, उस घर वाले से मैं रूठा रहूँगा, और छरू महिने कोई चलने वाला कहीं न ठहरे। रात दिन चला जावे। इस हेर फेर में वह राज था। सब कहीं यही डौल धा। जाना महाराज, महारानी और गुसाई महेंदर गिर का रानी केतकी के लिये फिर महाराज और महारानी और महेंदर गिर मदनबान के साथ जहाँ रानी केतकी चुपचाप सुन खींचे हुए बैठी हुई थीं, चुप चुपाते वहाँ आन पहुँचे। गुरूजी ने रानी केतकी को अपने गोद में लेकर कुँवर उदैभान का चढावा दिया और कहा–तुम अपने माँ–बाप के साथ अपने घर सिधारो। अब मैं बेटे उदैभान को लिये हुए आता हूं। गुरूजी गोसाई जिनको दंडित है, सो तो वह सिधारते हैं। आगे जो होगी सो कहने में आवेंगी–यहाँ पर धूमधाम और फैलावा अब ध्यान कीजिये।

महाराज जगतपरकास ने अपने सारे देश में कह दिया–यह पुकार दे जो यह न करेगा उसकी बुरी गत होवेगी। गाँव गाँव में अपने सागने छिपोले बना बना के सूहे कपडे उन पर लगा के मोट धनुष की और गोखरू, रूपहले सुनहरे की किरनें और डाँक टाँक टाँक रक्खो और जितने बड पीपल नए पुराने जहाँ जहाँ गर हों, उनके फूल के सेहरे बडे–बडे ऐसे जिसमें सिर से लगा पैदा तलक पहुँचे बाँधो। चौतुक्का पौदों ने रंगा के सूहे जोडे पहने। सब पाँण मे डालियों ने तोडे पहने।। बूटे बूटे ने फूल फूल के गहने पहने। जो बहुत न थे तो थोडे–थोडे पहने।। जितने डहडहे और हरियावल फल पात थे, सब ने अपने हाथ में रहचही मेहंदी की रचावट के साथ जितनी सजावट में समा सके, कर लिये और जहाँ जहाँ नयी ब्याही दुलहिने नन्ही नन्ही फलियों की ओर सुहागिनें नई नई कलियों के जोडे पंरदुलियों के पहने हुए थीं। सब ने अपनी गोद सुहाग और प्यार के फूल और फलों से भरी और तीन बरस का पैसा सारे उस रजा के राज भर में जो लोग दिया करते थे जिस ढंग से हो सकता था खेती बारी करके, हल जोत के और कपडा लत्ता बेंचकर सो सब उनको छोड दिया और कहा जो अपने अपने घरों में बनाव की ठाट करें। और जितने राज भर में कुएँ थे, खँड सालों की खँडसालें उनमें उडेल गई और सारे बानों और पहाड तलियाँ में लाल पटों की झमझमाहट रातों को दिखाई देने लगी। और जितनी झीलें थीं उनमें कुसुन और टेसू और हरसिंगार पड़ गया और केसर भी थोड़ी थोड़ी घोले में आ गई। ■■■

कालजयी काव्यधारा :

भक्त कवि तुलसीदास

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में राम भक्ति का परमोज्ज्वल प्रकाश विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी की वाणी द्वारा स्फुरित हुआ। उनकी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा ने भाषाकाव्य की सारी प्रचलित पद्धतियों के बीच अपना चमत्कार दिखाया। सारांश यह कि रामभक्ति का वह परम विशद साहित्यिक संदर्भ इन्हीं भक्तिशिरोमणी द्वारा संगठित हुआ जिससे हिंदी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरंभ हुआ।

शिवसिंहसरोज में गोस्वामी जी के एक शिष्य बेनीमाधवदासकृत 'गोसाईचरित्र' का उल्लेख है। इस ग्रंथ का कहीं पता न था। पर कुछ दिन हुए सहसा यह अयोध्या से निकल पड़ा। अयोध्या में एक अत्यंत निपुण दल है जो लुप्त पुस्तकों और रचनाओं को समय–समय पर प्रकट करता है। कभी नंददासकृत तुलसी की वंदना पद प्रकट होता है जिसमें नंददास कहते हैं–

श्रीमत्तुलसीदास स्वगुरू भ्राता पद बंदे।
° ° °
नंददास के हृदय नयन को खोलेउ सोई।।

कबीर सूरदास जी द्वारा तुलसीदास की स्तुति का यह पद प्रकाशित होता है।

धन्य भाग्य मम संत सिरोमनि चरन कमल तकि आयउँ।
दया दृष्टि तें गग विरि हेरेउ, तत्त्व स्वरूप लखायो।
कर्म उपासना ज्ञान जनित भ्रम संसय सूल नसायो।।

इस पद के अनुसार सूरदास का 'कर्मउपासनाज्ञानजनितभ्रम' बल्लभाचार्य जी ने नहीं तुलसीदास जी ने दूर किया था। सूरदास जी तुलसीदास जी से अवस्था में बहुत बड़े थे और उनसे पहले प्रसिद्ध भक्त हो गये थे, यह सब लोग जानते हैं।

ये दोनों पद 'गोसाईचरित्र' के मेल में हैं, अतः मैं इन सबका उद्गम एक ही समझता हूँ, गोसाईचरित्र' में वर्णित बहुत–सी बातें इतिहास के सर्वथा विरुद्ध पड़ती हैं, यह बात माताप्रसाद गुप्त अपने कई लेखों में दिखा चुके हैं। रामानन्द जी की शिष्यपरंपरा के अनुसार देखें तो भी तुलसीदास के गुरु का नाम नरहर्यानंद के गुरु का नाम अनंतानंद (प्रिय शिष्य अनंतानंद हते। नरहर्यानंद सुनाम छते) असगत ठहरता है अनंतानंद और नरहर्यानंद दोनों ही रामानन्द जी के बारह शिष्यों में थे। नरहरिदास को अलबत्ता कुछ लोग अनंतानंद का शिष्य कहते हैं, पर भक्तमाल के अनुसार वे अनंतानंद के शिष्य श्रीरंग के शिष्य थे। गिरनार में योगाभ्यासी सिद्ध रहा करते हैं, 'तपसी शाखा' की यह बात भी गोसाईचरित्र में आ गई है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि तिथि, वार आदि ज्योतिष की गणना से सब कुछ ठीक मिलाकर तथा तुलसी के संबन्ध में चली आती हुई सारी जनश्रुतियां का समन्वय करके सावधानी के साथ इसकी रचना घोषित कर रही है। यह है 'सत्यं शिवं सुन्दरम्'। देखिए–

देखिन तिरषित दृष्टि तें सब जने, कीन्ही सही संकरम्।
दिव्यापर सो लिख्यो, पढै धुनि सुने, सत्यं,शिवं, सुन्दरम्।।

यह पदावली अँगरेजी समीक्षा क्षेत्र में प्रचलित 'द ट्रूथ, द गुड एंड ब्यूटीफूल' का अनुवाद है जिसका प्रचार पहले पहल ब्रह्म समाज में, फिर बँगला और हिन्दी की आधुनिक समीक्षाओं में हुआ, यह हम अपने काव्य में 'रहस्यवाद' के भीतर दिखा चुके हैं।

यह बात अवश्य है कि 'गोसाईचरित्र' में जो वृत्त दिये गये हैं, वे अधिकतर वे ही हैं जो परंपरा से प्रसिद्ध चले आ रहे हैं।

गोस्वामी जी का एक और जीवन–चरित्र, जिसकी सूचना 'मर्यादा' पत्रिका की ज्येष्ट 1961 की संख्या में श्रीयुत इंद्रदेव नारायण जी ने दी थी, उनके एक दूसरे शिष्य महात्मा रघुवरदास जी का लिखा 'तुलसीदासचरित' कहा जाता है। यह कहाँ तक प्रामाणिक है, नहीं कहा जा सकता। दोनों चरितों के वृत्तातों में परस्पर बहुत कुछ विरोध है। बाबा बेनीमाधवदास के अनुसार गोस्वामी जी के पिता जमुना के किनारे दुबेपुरवा नामक गाँव के दूबे और मुखिया थे और पूर्वज पत्यौजा ग्राम से वहाँ आये थे। पर बाबा रघुवरदास के 'तुलसीचरित' में लिखा है कि सरवार में मझौली से तेईस कोस पर कसया ग्राम में गोस्वामी जी के प्रपितामह परशुराम मिश्र– जो गाना के मिश्र थे–रहते थे। वे तीर्थाटन करते–करते चित्रकूट पहुचे और। उसी ओर राजापुर में बस गये। उनके पुत्र शंकर मिश्र हुए शंकर मिश्र के रुद्रनाथ मिश्र के मुरारी मिश्र हुए जिनके पुत्र तुलसीदास जो अगे चलकर भक्त चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास जी हुए।

दोनों चरितों में गोस्वामी जी का जन्म संवत 1554 दिया हुआ है बाबा बेनीमाधवदास की पुस्तक में तो श्रावण शुक्ल सप्तमी तिथि भी दी हुइ है। पर इस सवत् को ग्रहण करने में तुलसीदास जी की आयु 126–127 वर्ष आती है। जो पुनीत आचरण के महात्माओं के लिए असंभव तो नहीं कही जा सकती। शिवसिंहसरोज में लिखा है कि गोस्वामी जी संवत 1583 के लगभग उत्पन्न हुए थे। मिरजापुर के प्रसिद्ध रामभक्त और रामायणी पंडित रामगुलाम द्विवेदी भक्तों की जनश्रुति के अनुसार इनका जन्म संवत् 1589 मानते थे। इसी सबसे पिछले संवत् को ही डॉ ग्रियर्सन ने स्वीकार किया है। इनका सरयूपारी ब्राह्मण होना तो दोनों चरितों में पाया जाता है और सर्वमान्य है। 'तुलसी परासर गोत दुबे पतिऔजा के' यह वाक्य प्रसिद्ध चला आता है और पं. रामगुलाम ने भी इसका समर्थन किया है। उक्त प्रसिद्धि के अनुसार गोस्वामी जी के पिता का नाम आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। माता के नाम के प्रमाण में रहीम का यह दोहा कहा जाता है–

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, सब चाहति अस होय।
गोद लिये हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।।

तुलसीदास जी ने कवितावली में कहा है कि 'मात पिता जग जाइ तज्यौ बिधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई।' इसी प्रकार विनयपत्रिका में भी ये वाक्य हैं–'जनक जननी तज्यौ जनमि, करम बिनु बिधिहु सृज्यौ अवडेरे' तथा तनुजन्यो कुटिल कीट ज्यों, तज्यों मातु पिता हूँ।' इन वचनों के अनुसार यह जनश्रुति चल पड़ी कि गोस्वामी अभुक्तमूल में उत्पन्न हुए थे, इससे उनके माता–पिता ने उन्हें त्याग दिया था। उक्त जनश्रुति के अनुसार गोसाईचरित्र में लिखा है कि गोस्वामी जी जब उत्पन्न हुए तब पाँच वर्ष के बालक के समान थे और उन्हें पूरे दाँत भी थे। वे रोये नहीं, केवल 'राम' शब्द उनके मुँह से सुनाई पड़ा। बालक को राक्षस समझ पिता ने उसकी उपेक्षा की। पर माता ने उसकी रक्षा के लिए उद्विग्न होकर उसे अपनी एक दासी मुनिया को पालने–पोसने के लिए दे दिया और वह उसे लेकर अपनी ससुराल चली गई। पाँच वर्ष बाद जब मुनिया भी मर गई तब राजापुर में बालक के पिता के पास संवाद भेजा गया, पर उन्होंने बालक को लेना स्वीकार न किया। किसी प्रकार बालक का निर्वाह कुछ दिन हुआ। अंत में बाबा नरहरिदास ने उसे अपने पास रख लिया और कुछ शिक्षा–दीक्षा दी। इन्ही गुरु से गोस्वामीजी कथा सुना करते थे। उन्हीं अपने गुरु नरहरिदास के साथ गोस्वामी जी काशी में आकर पंचगंगा घाट पर स्वामी रामानंद जी के स्थान पर रहने लगे। वहाँ पर एक परम विद्वान महात्मा शेषसनातन जी रहते थे जिन्होंने तुलसीदास जी को वेद–वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण आदि में प्रवीण कर दिया। 15 वर्ष तक अध्ययन करके गोस्वामी जी फिर अपनी जन्मभूमि राजापुर लौटे; पर वहाँ इनके परिवार में कोई नहीं रह गया था और घर भी गिर गया था।

यमुना पार के एक गाम में रहने वाले भारद्वाजगोत्री एक ब्राह्मण यमद्वितीया को राजापुर में स्नान करने आये। उन्होंने तुलसीदास जी की विद्या, विनय और शील पर मुग्ध होकर अपनी कन्या ब्याह दी। इसी पत्नी के उपदेश से गोस्वामी जी का विरक्त होना और भक्ति की सिद्धि प्राप्त करना प्रसिद्ध है। तुलसीदास जी अपनी इस पत्नी पर इतने अनुरक्त थे कि एक बार उसके मायके चले जाने पर वे बढ़ी नदी पार करके उससे जाकर मिले। स्त्री ने उस समय ये दोहे कहे–

लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ।।
अस्थि–चर्ममय देह मम तामे जैसी प्रीत।
तैसो जौ श्रीराम महँ होति न तौ भवभीत।।

यह बात तुलसीदास जी को ऐसी लगी कि वे तुरंत काशी आकर विरक्त हो गये। इस वृत्तांत को प्रियादास जी ने भक्तमाल की अपनी टीका में दिया है और 'तुलसीचरित' और 'गोसाईचरित' में भी इसका उल्लेख है।

गोस्वामी जी घर छोड़ने पर कुछ दिन काशी में, फिर काशी से अयोध्या

जाकर रहे। उसके पीछे तीर्थयात्रा करने निकले और जगन्नाथपुरी, रामेश्वर, द्वारका होते हुए बदरिकाश्रम गये। वहाँ से ये कैलाश और मानसरोवर तक निकल गये। अंत में चित्रकूट आकर ये बहुत दिनों तक रहे जहाँ अनेक संतो से इनकी भेंट हुई। इसके अनंतर संवत् 1631 में अयोध्या जाकर इन्होंने रामचरितमानस का आरंभ किया और उसे 2 वर्ष 7 महीने में समाप्त किया। रामायण का कुछ अंश किष्किंधाकांड, काशी में रचा गया। रामायण समाप्त होने पर ये अधिकतर काशी में रहा करते थे। वहाँ अनेक शास्त्रज्ञ विद्वान इनसे आकर मिला करते थे क्योंकि इनकी प्रसिद्ध सारे देश में हो चुकी थी। ये अपने समय के सबसे बड़े भक्त और महात्मा माने जाते थे। कहते हैं कि उस समय के प्रसिद्ध विद्वान मधुसूदन सरस्वती से इनसे बाद हुआ था जिससें प्रसन्न होकर इनकी स्तुति में यह श्लोक उन्होंने कहा था–

आनंदकानने कश्चिज्जंगमस्तुलसीतरुः।
कवितामंजरी यस्य रामभ्रमर भूषिता।।

गोस्वामी के मित्रों और स्नेहियों में नवाब अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराज मानसिंह, नाभा जी और सरस्वती आदि कहे जाते हैं। 'रहीम' से इनमें समय–समय पर दोहो में लिखा–पढ़ी हुआ करती थी। काशी में इनके सबसे बड़े स्नेही और भक्त भदैनी के एक भूमिहार जमींदार टोडर थे जिनकी मृत्यु होने पर इन्होंने कई दोहे कहे हैं–

चार गाँव को ठाकुरो मन को महामहीप।
तुलसी या कलिकाल में अथए टोडर दीप।।
तुलसी रामसनेह को सिर पर भारी भारु।
रामधाम टोडर गए, तुलसी भए असोच।।
जियबो मीत पुनीत, बिनु यहै जानि संकोच।।

गोस्वामी जी की मृत्यु के संबन्ध में लोग यह दोहा कहा करते हैं

संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।

पर बाबा बेनीमाधवदास की पुस्तक में दूसरी पंक्ति इस प्रकार है या कर दी गई है–

श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर।

यह ठीक तिथि है क्योंकि टोडर के वंशज अब तक इसी को गोस्वामी जी के नाम सीधा दिया करते हैं।

'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकर खेत' को लेकर लोग गोस्वमी जी का जन्मस्थल ढूँढने एटा के सोरों नामक स्थान तक सीधे पश्चिम दौड़े हैं। पहले पहल उस ओर इशारा स्व. लाला सीताराम ने (राजापुर के) अयोध्याकांड के स्वसंपादित संस्करण की भूमिका में दिया था। उसके बहुत दिन पीछे उसी इशारे पर दौड़ लगी और अनेक प्रकार के कल्पित प्रमाण सोरों को जन्मस्थान सिद्ध करने के लिए तैयार किये गये। सारे उपद्रव की जड़ है 'सूकर खेत' जो भ्रम में सोरों समझ लिया गया। 'सूकर क्षेत्र' गोंडे के जिले में सरजू के किनारे एक पवित्र तीर्थ है, जहाँ आसपास के कई जिलों के लोग स्नान करने जाते है और मेला लगता है।

जिन्हें भाषा की परख है उन्हें यह देखते देर न लगेगी कि तुलसीदास जी की भाषा में ऐसे शब्द, जो स्थान विशेष के बाहर नहीं बोले जाते हैं, केवल दो स्थानों के हैं–चित्रकूट के आसपास के और अयोध्या के आसपास के। किसी कवि की रचना में यदि किसी स्थानविशेष के भीतर ही बोले जाने वाले अनेक शब्द मिलें तो उस स्थान विशेष से कवि का निवास संबंध मानना चाहिए। इस दृष्टि से देखने पर यह बात मन में बैठ जाती है कि तुलसीदास जी का जन्म राजापुर में हुआ जहाँ उनकी कुमार अवस्था बीती। सरवरिया होने के कारण उनके कुल के तथा संबंधी अयोध्या, गोंडा, बस्ती के आसपास थे, जहाँ उनका आना–जाना बराबर रहा करता था। विरक्त होने पर ये अयोध्या में ही रहने लगे थे। रामचरितमानस में आये कुछ शब्द और प्रयोग नीचे दिये जाते हैं जो अयोध्या के आसपास ही (बस्ती, गोंडे आदि कुछ भागो में) बोले जाते हैं–

नाहुर = विष। सरौं = कसरत फहराना या फरहराना= प्रफुल्लचित होना (सरौं करहिं पायक फहराई)। फुर = सच। अनभल ताकना = बुरा मानना (जेहि राउर अति अनभल ताका)। राउर, राउरेहि = आपको (भलउ कहत दुख रउरेहि लागा)। रमा लहीं = रमा ले पाया (प्रथम पुरूष स्त्री, बहुवचन, उभरि जनम ते पाए न ते परतोष उमा रमा लही)। कूटि = दिल्लगी, उपहास।

इसी प्रकार ये शब्द चित्रकूट के आसपास तथा बघेलखंड में ही (जहाँ की भाषा पूरबी हिन्दी या अवधी ही है), बोले जाते हैं।

कुराय = वे गड्डे जो करैल पोली जमीन में बरसात के कारण जगह–जगह पड़ जाते हैं (काँच कुराय लपेटन ठावहिं ठाँव बझाऊ रे। –विनय)।

सुआर = सूपकार, रसोईया।

ये शब्द और प्रयोग इस बात का पता देते है कि किन–किन स्थानों की बोली गोस्वामी जी की अपनी थी। आधुनिक काल के पहले साहित्य या काव्य की सर्वमान्य व्यापक भाषा ब्रज रही है, यह तो निश्चित है। भाषाकाव्य के परिचय के लिए प्रायः सारे उत्तर भारत के लोग बराबर इसका अभ्यास करते थे और अभ्यास द्वारा सुंदर रचना भी करते थे। ब्रजभाषा मे रीतिग्रंथ लिखने वाले चिंतामणि, भूषण, मतिराम, दास इत्यादि अधिकतर कवि अवध के थे और ब्रजभाषा के सर्वमान्य कवि माने जाते हैं। दास जी ने तो स्पष्ट व्यवस्था ही दी है कि 'ब्रजभाषा हेतु भाषा में रचना करने वाले जितने कवि हुए हैं सब अवध या पूरब के थे। किसी पछाहीं कवि ने कभी पूरबी हिन्दी या अवधी पर ऐसा अधिकार प्राप्त नहीं किया के उसमें रचना कर सके जो बराबर सोरों की पछाहीं बोली (ब्रज) बोलता आया होगा वह 'जानकीमंगल' और 'पार्वतीमंगल' की–सी ठेठ अवधी लिखेगा, 'मानस' ऐसे महाकाव्य की रचना अवधी में करेगा और व्याकरण के ऐसे देशबद्ध प्रयोग करेगा जैसे ऊपर दिखाये गये हैं ? भाषा के विचार में व्याकरण के रूपों का मुख्यतः विचार होता है।

भक्त लोग अपने को जन्मजन्मांतर से अनेक आराध्य इष्टदेव का सेवक मानते हैं। इसी भावना के अनुसार तुलसी और सूर दोनों के कथाप्रसंग के भीतर अपने को गुप्त या प्रकट रूप में राम और कृष्ण के समीप तक पहुँचाया है। जिस स्थल पर ऐसा हुआ है वहीं कवि के निवासस्थान का पूरा संकेत भी हैं। 'रामचरितमानस' के अयोध्याकांड में वह स्थल देखिए जहाँ प्रयाग से चित्रकूट जाते हुए राम जमुना पार करते हैं और भरद्वाज के द्वारा साथ लगाये हुए शिष्यों को विदा करते है। राम सीता तट पर के लोगों से बातचीत कर ही रहे हैं कि–

तेहि अवसर एक तापस आवा। तेजपुंज लघु बयस सुहावा।।
कवि अलषित गति वेष बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी।।
सजल नयन तन पुलक निज इष्ट देउ पहिचानि।
परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि।।

यह तापस एकाएक आता हैं। कब जाता हैं, कौन है, इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं है। बात यह है के इस ढग से कवि ने उपने को ही तापस रूप में राम के पास पहुँचाया है और ठीक उसी प्रदेश में जहाँ के निवासी थे, अर्थात राजापुर के पास।

सूरदास ने भी भक्तो की इस पद्धति का अवलम्बन किया है। यह तो निर्विवाद है कि बल्लभाचार्य जी से दीक्षा लेने के उपरांत सूरदास जी गोवर्द्धन पर श्री नाथ जी के मंदिर में कीर्तन किया करते थे। अपने सूरसागर के दशम स्कंध के आरंभ में सूरदास ने श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए अपने ढाढी के रूप में नंद द्वार पर पहुँचाया हैं –

नंद जू! मेरे मन आनंद भयो, हौं गोवर्द्धन तें आयो।
तुम्हारे पुत्र भयो मैं सुनि कै अति आतुर उठि धायो।।
* * *
जब तुम मदनमोहन करि टेरौ, यह सुनि के घर जाऊँ।
हौं तौ तेरे घर को ढाढ़ी, सूरदास मेरो नाऊँ।।

सबका सारांश यह है कि तुलसीदास का जन्मस्थान राजापुर, जो प्रसिद्ध चला आता है वही ठीक है।

एक बात की ओर ध्यान जाता है। तुलसीदास जी रामानंद संप्रदाय की बैरागी परंपरा में नहीं जान पड़ते। उक्त संप्रदाय के अंतर्गत जितनी परंपराएँ मानी जाती है। उनमें तुलसीदास का नाम कहीं नहीं है। रामानद परंपरा में सम्मिलित करने के लिए उन्हे नरहरिदास का शिष्य बताकर जो परंपरा मिलायी गयी है वह कल्पित प्रतीत होती है। वे रामोपासक वैष्णव अवश्य थे, प स्मार्त वैष्णव थे।

गोस्वामी के प्रदुर्भाव को हिंदी काव्य क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए। हिंदी काव्य की शक्ति का पूर्ण प्रसार इनकी रचनाओं में ही पहले पहल दिखाई पड़ा। बीरगाथाकाल के कवि अपने संकुचित क्षेत्र में काव्यभाषा के पुराने रूप को लेकर एक विशेष शैली की परंपरा निभाते आ रहे थे। चलते रूप को समाश्रय मिलने लगा। कबीरदास ने चलती बोली में अपनी वाणी कही। पर वह बोली बेठेकाने की थी। उसका कोई नियत रूप न था। शौरसैनर , अपभ्रश या नागर अपभ्रश का जो सामान्य रूप साहित्य के लिय स्वीकृत था उससे

कबीर का लगाव न था। उन्होंने नाथपंथियों की 'सधुक्कड़ी भाषा' का व्यवहार किया था इससे कबीर का लगाव राजस्थानी और पंजाबी का मेल था। इसका कारण यह था कि बोली पंजाबी या खड़ी हो गयी थी और निर्गुणपंथी साधुओं का लक्ष्य मुसलमानों पर भी प्रभाव डालने का था। अत उनकी भाषा में अरबी और फारसी के शब्दों का भी मनमाना प्रयोग मिलता है उनका कोई साहित्य लक्ष्य न था और वे पढ़े–लिखें लोगों से दूर–ही–दूर अपना उपदेश सुनाया करते थे।

साहित्य की भाष में, जो वीरगाथा काल के कवियों के हाथ में बहुत कुछ पुराने रूप में ही रही, प्रचलित भाषा के संयोग से नया जीवन सगुणोपासक कवियों द्वारा प्राप्त हुआ। भक्त सूरदास जी ब्रज की चलती भाषा को परंपरा से चली आती हुई काव्यभाषा के बीच पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करके साहित्यिक भाषा को लोकव्यवहार के मेल में लायें। उन्होंने परंपरा से चली आती काव्यभाषा का तिरस्कार न करके उसे एक नया चलता रूप दिया। सूरसागर को ध्यानपूर्वक देखने से उसमें क्रियाओं के कुछ पुराने रूप कुछ सर्वनाम (जैसे जासू–तासू, जेहि–तेहि) तथा कुछ प्राकृत शब्द पाये जाएँगे। सारांश यह कि वे परंपरागत काव्यभाषा को बिलकुल अलग करके एकबारगी नयी चलती बोली लेकर नहीं चलें। भाषा का एक शिष्ट सामान्य रूप उन्होंने रखा जिसका व्यवहार आगे चलकर बराबर कविता में होता आया। यह तो हुई ब्रज भाषा की बात। इसके साथ ही पूरबी बोली या अवधी भी साहित्य निर्माण की ओर अग्रसर हो चुकी थी। जैसा के पहले कहा जा चुका है, अवधी की सबसे पुरानी रचना ईश्वरदास की 'सत्यवती कथा' है। आगे चलकर 'प्रेममार्गी शाखा' के मुसलमान कवियों ने अपनी कहानियों के लिए अवधी भाषा ही चुनी। इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने समय में काव्यभाषा के दो रूप प्रचलित पाये– एक ब्रज और दूसरी अवधी। दोनों मे उन्होंने समान अधिकार के साथ रचनाएँ कीं।

भाषा पद्य के स्वरूप को लेते हैं तो गोस्वामी जी के सामने कई शैलियाँ प्रचलित थी जिनमें से मुख्य ये हैं– (क) वीरगाथा काल की छप्पय पद्धति (ख) विद्यापति और सूरदास की गीत पद्धति, (ग) गंग आदि भाटों की कवित्त–सवैया पद्धति, (घ) कबीरदास की नीति संबंधी बानी की दोहा पद्धति जो अपभ्रंश से चली आती थी और (ड) ईश्वरदास के दोहे, चौपाईवाली प्रबंध पद्धति। इस प्रकार काव्यभाषा के दो रूप और रचना की पाँच मुख्य शैलियाँ साहित्य क्षेत्र में गोस्वामी जी को मिली। तुलसीदास जी के रचनाविधान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के बल से सबके सौंदर्य की पराकाष्ठा अपनी दिव्य वाणी दिखाकर साहित्यक्षेत्र में प्रथम पद के अधिकारी हुए। हिंदी कविता के प्रेमी मात्र जानते हैं कि उनका ब्रज और अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। ब्रजभाषा का जो माधुर्य हम सूरसागर में पाते है वही माधुर्य और भी संस्कृत रूप में हम गीतावली और कृष्णगीतावली में पाते हैं। ठेठ अवधी की जो मिठास हमें जायसी की पद्मावत में मिलती है वही जानकीमंगल, पार्वतीमंगल, बरवैरामायण और रामललानहछू में हम पाते है। यह सूचित करने की आवश्यता नहीं कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रज भाषा पर।

प्रचलित रचना शैलियों पर उनका इसी प्रकार का पूर्ण अधिकार हम पाते है।

(क) वीरगाथाकाल की छप्पय पद्धति पर इनकी रचना थोड़ी है। पर उनकी निपुणता पूर्ण रूप से प्रदर्शित करती है; जैसे–

कतहुँ विटप भूधर उपारि परसेन बरक्खत।
कतहुँ बाजि सो बाजि मर्दि गजराज करक्खत।।
चरन चोट चटकन चकोट अरि उर सिर बज्जत।
बिकट कटक बिद्दरत वीर वारिद जिमि गज्जत।।
लगूंर लपेटत पटकि भट,'जयति राम जय' उच्चरत
तुलसीत पवननंदन अटल जुद्ध क्रुद्ध कौतुक करत।।
डिगति उर्वि अति गुर्वि सर्व पब्बै समुद्र सर।
ब्याल बधिर तेहि काल , बिकल दिगपाल चराचर।।
दिग्गयंद लरखरत परत दसकंठ मुक्ख भर।
सुरविमान हिममानु, संघटित होत परस्पर।
चौके विरंचि संकर सहित, कोल कमठ अहि कलमल्यौ।
ब्रह्मांड खंड कियो चंडधुनि, जबहिं राम सिवधनु दल्यौ।।

(ख) विद्यापति और सूरदास की गीत पद्धति पर इन्होंने बहुत विस्तृत और बड़ी सुंदर रचना की है। सूरदास जी की रचना में संस्कृत की 'कोमलकांत पदावली' और अनुप्रासों की वह विचित्र योजना नहीं है जो गोस्वामी जी की रचना में है। दोनों भक्त शिरोमणियों की रचना में भेद ध्यान देने योग्य है और इस पर ध्यान अवश्य जाता है। गोस्वामी जी की रचना अधिक संस्कृतगर्भित है। पर इसका यह अभिप्राय नहीं है कि इनके पदो में शुद्ध देशभाषा का माधुर्य नहीं है। इन्होंने दोनों प्रकार की मधुरता का बहुत ही अनूठा मिश्रण किया है। विनयपत्रिका के प्रारंभिक स्तोत्रों मे जो संस्कृत पदविन्यास है उसमें गीतगोविन्द के पदविन्यास से कहीं कर्कश देखने योग्य है। हृदय के त्रिविध भावों की व्यंजना गीतावली के मधुर पदों में देखने में आता है। कौशल्या के सामने भरत अपनी आत्मग्लानि की व्यंजना किन शब्दों में करते हैं देखिये–

जौ हौं मातुमते महँ ह्वैहौं।
तौ जननी जग में या मुख ही कहाँ कालिमा ध्वैहौं?
ज्यौं हौं आजु होत सुचि सपथनि, कौन मानिहै साँची?
महिमा मृगी कौन सुकृती की खल बच बिसिषन्ह बाँची?

इसी प्रकार चित्रकूट में राम के सम्मुख जाते हुए भरत की दशा का भी सुंदर चित्रण है–

बिलोके दूरि तें दोउ बीर।
मन अगहुँड़ तन पुलक सिथिल भयो, नयन नलिन भरे नीर।
गड़त गोड़ मनो सकुच पंक महँ, कढ़त प्रेमबल धीर।।

'गीतावली' की रचना गोस्वमी जी ने सूरदास जी के अनुकरण पर की है। बाललीला के कई एक पद ज्यों के त्यों सूरसागर में भी मिलते हैं, केवल 'राम' श्याम का अंतर है। लंकाकांड तक तो कथा की अनेकरूपता के अनुसार मार्मिक स्थलों का जो चुनाव हुआ है वह तुलसी के सर्वथा अनुरूप है। पर उत्तराखंड में जाकर सूर पद्धति के अतिशय अनुकरण के कारण उनका गंभीर व्यक्तित्व तिरोहित सा हो गया है। जिस रूप में राम को उन्होंने सर्वत्र लिया है, उनका भी ध्यान उन्हें नहीं रह गया। 'सूरदास' में जिस प्रकार गोपियों के साथ श्रीकृष्ण हिंडोला झूलते है, होली खेलते हैं, वही करते राम भी दिखाये गये हैं। इतना अवश्य है कि सीता की सखियों और पुरनारियों का राम की ओर पूज्य भाव ही प्रकट होता है। राम की नखशिख शोभा का अलंकृत वर्णन भी सूर की शैली पर बहुत– से पदों में लगातार चला है। सरयूतट के इस आनन्दोत्सव को आगे चलकर रसिक लोग क्या रूप देंगे इसका ख्याल गोस्वामी जी को न रहा।

(ग) गंग आदि भाटों की कवित्त, सवैया पद्धति पर भी इसी प्रकार सारा रामचरित गोस्वामी जी कह गये हैं जिसमें नाना रसो का सन्निवेश अत्यंत विशद रूप में और अत्यंत पुष्ट और स्वच्छ भाषा में मिलता है। नाना रसमयी रामकथा तुलसीदास जी ने अनेक प्रकार की रचनाओ मे कही है। कवितावली में रसानुकूल शब्दयोजना बड़ी सुंदर है जो तुलसीदास जी ऐसी कोमल भाषा का व्यवहार करते है।

राम को रूप निहारत जानकि, कंकन के नग की परछाहीं।
याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही, पल टारति नहीं।।
° ° °
गोरो गरूर गुमान भरो, यह, कौसिक, छोटो सो ढोटो है काको?
° ° °
जल को गये लक्खन, हैं लरिका, परिखौ, पिय छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बसारि करौं, अरु पाँय पखारिहौं भूभुरि डाढ़े।।

वे ही वीर और भयानक के प्रसंग में ऐसी शब्दावली का व्यवहार करते है।

प्रबल प्रचंड बरिबंड बाहुदंड बीर,
धाए जातुधान, हनुमान लियो घेरिकै।
महाबल पुंज कुंजरारि क्यों गरजि भट,
जहाँ तहाँ पटके लंगूर फेरि फेरिकै।
मारे लात, तोरे गात, भागे जात हाहा खात
कहैं तुलसीस 'राखि राम की सौं' टेरिकै।
ठहर ठहर परे, कहरि कहरि उठै,
हहरि हहरि हर सिद्ध हँसे हेरिकै।।
बालधी बिसाल बिकराल ज्वाल लाल मानौ,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है।
कैधौं व्योम वीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
बीररस बीर तरवारि सी उघारी है।

(घ) नीति के उपदेश की भक्ति पद्धति पर बहुत–दोहे रामचरितमानस और दोहावली में मिलेंगे जिनमें बड़ी मार्मिकता से और कहीं–कहीं बड़े रचनाकौशल

से व्यवहार की बातें कही गयी हैं और भक्तिप्रेम की मर्यादा दिखाई गयी है–

रीझि आपनी बूझि पर, खीझ विचार विहीन।
ते उपदेस न मानहीं, मोह महोदधि मीन।
लोगन भलो मनाव जो, भलो होन की आस।
करत गगन को गेंडुआ, सो सठ तुलसीदास।
की तोहि लागहि राम प्रिय, की तु राम प्रिय होहि।।
दुई महँ रूचै जो सुगम सोई, कीवे तुलसी तोहि।

(ङ) जिस प्रकार चौपाई, दोहे के क्रम से जायसी ने अपना पद्मावत नाम का प्रबंधकाव्य लिखा उसी क्रम पर गोस्वामी जी ने परम प्रसिद्ध काव्य रामचरितमानस, जो लोगों के हृदय का हार बनता चला आता है, रचा। भाषा वही अवधी है, केवल पदविन्यास का भेद है। गोस्वामी जी शास्त्रपरंपरागत विद्वान् थे अतः उनकी शब्दयोजना साहित्यिक और संस्कृतगर्भित है। गोस्वामी जी की रचना में संस्कृत की कोमल पदावली का भी बहुत ही मनोहर मिश्रण है। नीचे दी हुई कुछ चौपाईयों की भाषा का भेद स्पष्ट देखा जा सकता है–

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरुज परिवारू।।
सुकृत संभु तनु बिभूति। मंजुल मंगल मोद प्रसूती।।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनीं। किए तिलक गुन गन बस करनीं।।

सारांश यह कि हिंदी काव्य की सब प्रकार की रचनाशैली के ऊपर गोस्वमी जी ने अपना ऊँचा आसन प्रतिष्ठित किया है। यह उच्चता और किसी को प्राप्त नहीं। अपने दृष्टिविस्तार के कारण ही तुलसीदास जी उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मन्दिर में पूर्ण प्रेमप्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं। भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते हैं तो इन्हीं महानुभाव को। और कवि जीवन का कोई एक पक्ष लेकर चले है।– जैसे, वीरकाल के कवि उत्साह को, भक्तिकाल के दूसरे कवि प्रेम और ज्ञान को, अलंकारकाल के कवि दांपत्य प्रणय या श्रृंगार को। पर इनकी वाणी की पहुँच मनुष्य के सारे भावों और व्यवहारों तक है। एक ओर तो वह व्यक्तिगत साधना के मार्ग में विरागपूर्ण शुद्ध भगवद्भक्ति का उपदेश करती है, दूसरी ओर लोकपक्ष में आकर पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों का सौंदर्य दिखाकर मुग्ध करती है। व्यक्तिगत साधना के साथ–ही–साथ लोकधर्म की अत्यंत उज्ज्वल छटा वर्तमान है।

निर्गुण धारा के संतो की वानी नें किस प्रकार लोकधर्म की अवहेलना छिपी हुई थी। सगुण धारा की भारतीय पद्धति के भक्तों में कबीर, दादू आदि के लोकधर्म विरोधी स्वरूप को यदि किसी ने पहचाना तो गोस्वमी जी ने। उन्होंने देखा कि उनके वचनों से जनता की चित्तवृत्ति में ऐसे घोर विकार की आंशका है जिससे समाज विश्रृंखल हो जायेगा, उसकी मर्यादा नष्ट हो जायगी। जिस समाज से ज्ञानसंपन्न शास्त्रज्ञ विद्वानों, अन्याय अत्याचार के दमन में तत्पर वीरों, पारिवारिक कर्तव्यो का पालन करने वाले उच्चाशय व्यक्तियों पतिपरायणा सतियों, पितृभक्ति के कारण प्रजा का पुत्रवत् पालन करने वाले शासकों आदि के प्रति श्रद्धा और प्रेम का भाव उठ जायेगा उसका कल्याण कदापि नहीं हो सकता।

गोस्वामी जी को निर्गुणपंथियों की बानी में लोकधर्म की अपेक्षा का भाव स्पष्ट दिखाई पड़ा। साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि बहुत से अनधिकारी और अशिक्षित वेदांत के कुछ चलन शब्दों को लेकर, बिना उनका तात्पर्य समझे, यों ही 'ज्ञानी' बने हुए मुर्ख जनता को लौकिक कर्तव्यों से विचलित करना चाहते हैं और मुर्खतामिश्रित अहंकार की वृद्धि कर रहे हैं। इसी दशा को लक्ष्य करके उन्होंने इस प्रकार के वचन कहे है–

श्रुति सम्मत हरिभक्ति पथ संजुत विरति विवेक।
नहि परिहरहिं विमोहबस कल्पहि पंथ अनेक।।
साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखान।
भगति निरूपहिं भगत कलि निंदहीं वेद पुरान।।
बादहिं शूद्र द्विजन सन हम तुमते कछु घाटि।
जानहिं ब्रह्म सो बिप्रवर आखें देखावहीं डाटि।।

इसी प्रकार योगमार्ग से भक्तिमार्ग का पार्थक्य गोस्वामी जी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में बताया है योगमार्ग ईश्वर को अंतस्थ मानकर अनेक प्रकार की अंतस्साधनाओं में प्रवृत्त करता हैं। सगुण भक्तमार्गी ईश्वर को भीतर और बाहर सर्वत्र मानकर उनकी कथा का दर्शन खुले हुए व्यक्त जगत् के बीच करता है। वह ईश्वर मनुष्य के क्षुद्र घट के भीतर ही नहीं मानता। इसी से गोस्वमी जी कहते हैं–

अंतर्जामिहु तें बड़े बाहिरजामि हैं राम, जो नाम लिए तें।
पैज परे प्रहलादहु को प्रकटे प्रभु पाहन तें, न हिए ते।।

'घट के भीतर' कहने से गुह्य या रहस्य की धारणा फैलती है जो भक्ति के सीधे स्वाभाविक मार्ग में बाधा डालती है। घट के भीतर साक्षात्कार करने की बातें कहने वाले प्रायः अपने को गूढ़ रहस्यदर्शी प्रकट करने के लिए सीधी–सादी बात को भी रूपक बाँधकर और टेढ़ी पहेली बनाकर कहा करते हैं। पर इस प्रकार के दुराव–छिपाव की प्रवृति को गोस्वामी जी भक्ति का विरोधी मानते हैं। सरलता या सीधेपन को वे भक्ति का नित्य लक्षण कहते हैं–मन की सरलता, वचन की सरलता और कर्म की सरलता, तीनों की–

सूधे मन, सूधे सचन, सूधी सब करतूति।
तुलसी सूधी सकल विधि, रघुवर प्रेम प्रसूति।।

वे भक्ति के मार्ग को ऐसा नहीं मानते जिसे 'लखै कोई बिरलै'। वे उसे ऐसे सीधा–सादा स्वाभाविक मार्ग बताते हैं जो सबके सामने दिखाई पड़ता है। वह संसार में सबके लिए ऐसा ही सुलभ है जैसे अन्न और जल–

निगम अगम, साहब सुगम, राम साँचिलि चाह।
अंबु असन अवलोकियत, सुलभ सबहि माँह।

अभिप्राय यह कि जिस हृदय से भक्ति की जाती है वह सबके पास है। हृदय की जिस पद्धति से भक्ति की जाती है वह भी वही है जिससे नाता–पिता, पुत्र कलत्र का प्रेम किया जाता है। इसी से गोस्वामी जी कहते हैं कि–

यहि जग महँ जहँ लगि या तन की प्रीति प्रतीति सगाई।
सो सब तुलसीदास प्रभु ही सों होहु सिमिट इक ठाई।।

नाथपंथी रमते जोगियों के प्रभाव से जनता अंधी भेड़ बनी हुई। तरह–तरह की करामातों को साधुता का चिन्ह मानने लगी थी और ईश्वरोन्मुख साधना को कुछ बिरले रहस्यदर्शी लोगों का ही काम समझने लगी थी। जो हृदय सबके पास होता है वही अपनी स्वाभाविक वृत्तियों द्वारा भगवान की ओर लगाया जा सकता है, इस बात पर परदा सा डाल दिया गया था। इससे हृदय रहते भी भक्ति का सच्चा स्वाभाविक मार्ग लोग देख पाते थे। यह पहले कहा जा चुका है कि नाथपंथ का हठयोग मार्ग हृदयपक्ष शून्य है। रागात्मिक वृत्ति से उसका कोई लगाव नहीं। अतः रमते जोगियों की रहस्यभरी बानियाँ सुनते–सुनते जनता के हृदय में भक्ति की सच्ची भावना दब गई थी, उठने ही नहीं पाती थी। लोक की दशा को लक्ष्य करके गोस्वामी जी को कहना पड़ा था कि–

गोरख जगायों जोग, भगति भगायो लोग।

गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है, उसकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती है। सब पक्षों के साथ उसका सामंजस्य है। न उसका कर्म या धर्म से विरोध है, न ज्ञान से। धर्म जो उसका नित्यलक्षण है। तुलसी की भक्ति को धर्म और ज्ञान दोनों की रसानुभूति कह सकते है। योग का भी उसमें समन्वय है, पर उतने ही का जितना ध्यान के लिए, चित्त को एकाग्र करने के लिये आवश्यक है।

प्राचीन भारतीय भक्तिमार्ग के भीतर भी उन्होंने बहुत–सी बढ़ती बुराईयों को रोकने का प्रयास किया। शैवों और वैष्णवों के बीच बढ़ते हुए विद्वेष को उन्होंनें अपनी सामंस्य व्यवस्था द्वारा बहुत कुछ रोका जिसके कारण उत्तरी भारत में यह वैसा भयंकर रूप न धारण कर सका जैसा उसने दक्षिण में किया। यहीं तक नहीं, जिस प्रकार उन्होंने लोकधर्म और भक्तिसाधना को एक में सम्मिलित करके दिखाया उसी प्रकार कर्म, ज्ञान और उपासना के बीच भी सामंजस्य उपस्थित किया। 'मानस' के बालकांड में संत समाज का जो लंबा रूपक है वह इस बात को स्पष्ट रूप में सामने लाता है। भक्ति की चरम सीमा पर पहुँचकर भी लोकपक्ष उन्होंने नहीं छोड़ा। लोकसंग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अंग था। कृष्णोपासक भक्तों में इस अंग की कमी थी। उनके बीच उपास्य और उपासक के संबंधों की ही गूढ़ातिगूढ़ व्यंजना हुई। दूसरे प्रकार के लोकव्यापक नाना संबधो के कल्याणकारी सौंदर्य की प्रतिष्ठा नहीं हुई। यही कारण है कि इनकी भक्तिरसभरी वाणी जैसी मंगलकारिणी मानी गई वैसी और किसी की नहीं। आज राजा से रंक तक के घर में गोस्वामी जी का रामचरितमानस विराज रहा है और प्रत्येक प्रसंग पर इनकी चौपाइयाँ कही जाती है।

अपनी सगुणोपासना का निरूपण गोस्वामी जी ने कई ढंग से किया है। रामचरितमानस में नाम और रूप दोनो को ईश्वर की उपाधि कहकर वे उन्हें उसकी अभिव्यक्ति मानते है–

नाम रूप दुइ ईस उपाधि। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।।
नाम रूप गते अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानि।।
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी।।

दोहावली में भक्ति की सुगमता बड़े ही मार्मिक ढंग से गोस्वामी जी ने इस दोहे के द्वारा सूचित की है –

की तोहि लागंहि रान प्रिय, की तुम रामप्रिय होहि।
दुई महँ रुचै जो सुगम होई, कीवे तुलसी तोहि।।

इसी प्रकार रामचरितमानस उत्तरकांड में उन्होने ज्ञान की अपेक्षा भक्ति को कहीं अधिक सुसाध्य और आशुफलदायिनी कहा है।

रचनाकौशल, प्रबंधपटुता, सहृदयता इत्यादि सब गुणों का समाहार हमें रामचरितमानस में मिलता है। पहली बात जिस पर ध्यान जाता है, वह है, कथाकाव्य के सब अवयवों का उचित समीकरण। कथाकाव्य सा प्रबंधकाव्य के भीतर इतिवृत्त, वस्तु व्यापार–वर्णन, भावव्यजंना और संवाद, ये अवयव होते हैं। न तो अयोध्या पुरी की शोभा, बाललीला, नखशिख, जनक की वाटिका, अभिषेकोत्सव इत्यादि के वर्णन बहुत लबें होने पाये हैं, न पात्रों के संवाद, न प्रेम, शोक आदि भावों की व्यंजना। इतिवृत्त की श्रृखलां भी कहीं से टूटती नहीं है।

दूसरी बात है कथा के मार्मिक स्थलों की पहचान। अधिक विस्तार हमें ऐसे ही प्रसंगो का मिलता है जो मनुष्य मात्र के हृदय को स्पर्श करने वाले हैं– जैसे, जनक की वाटिका में राम–सीता का परस्पर दर्शन, राम–वन–गमन, दशरथ मरण, भरत की आत्मग्लानि, वन के मार्ग में स्त्री पुरुषों की सहानुभूति, युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति लगना इत्यादि।

तीसरी बात है प्रसंगानुकूल भाषा। रसों के कोमल, कठोर पदों की योजना तो निर्दिष्ट रूढ़ि ही है। उसके अतिरिक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस बात का भी ध्यान रखा है कि किस स्थल पर विद्वानों या शिक्षितों की संस्कृतमिश्रित भाषा रखनी चाहिए और किस स्थल पर ठेठ बोली। घरेलू प्रसंग समझकर कैकेयी और मंथरा के संवाद में उन्होंने ठेठ बोली और स्त्रियों में विशेष चलते प्रयोगों का व्यवहार किया हैं। अनुप्रास की ओर प्रवृति तो सब रचनाओं में स्पष्ट लक्षित होती है।

चौथी बात है श्रृंगार की शिष्ट मर्यादा के भीतर बहुत ही व्यंजक वर्णन ।

जिस धूमधाम से 'मानस' की प्रस्तावना चली है उसे देखते ही ग्रंथ के महत्व का आभास मिल जाता है। उससे साफ झलकत है कि तुलसीदास जी अपने ही तक दृष्टि रखने वाले भक्त न थे, संसार को भी दृष्टि फैलाकर देखने वाले चारों ओर दृष्टि को दौडाकर उसके अनेक रूपात्मक स्वरूप को उन्होंने सामने रखा है। फिर उसके भले–बुरे पक्षो की विषमता देख–दिखाकर अपने मन का यह कहकर समाधान किया है –

सुधा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू।

इसी प्रस्तावना के भीतर तुलसी ने अपनी उपासना के अनुकूल विशिष्टाद्वैत सिद्धांत का आभास भी यह कहकर दिया है–

सियारामनय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी।।

जगत् को केवल राममय न कहकर उन्होने 'सियाराममय' कहा है। सीता प्रकृतिस्वरूपा हैं और राम ब्रह्म हैं प्रकृति अचित् पक्ष और ब्रह्म चित् पक्ष। अत पारमार्थिक सत्ता चिदचिद्विशिष्ट है, यह स्पष्ट झलकता है। चित् और अचित् वस्तुतः एक ही है। इसका निर्देश उन्होने–

गिर अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न।
बंदौ सीताराम पद जिनहि परम प्रिय खिन्न।।

कहकर किया है।

'रामचरितमानस' के भीतर कहीं–कहीं घटनाओं के थोड़े ही हेर–फेर तथा स्वकल्पित संवादों के समावेशों के अतिरिक्त अपनी ओर से छोटी–मोटी घटनाओं या प्रसंगों की नयी कल्पना तुलसीदास जी ने नहीं की है। 'मानस' में उनका ऐसा न करना तो उनके उद्देश्य के अनुसार बहुत ठीक है। राम के प्रामाणिक चरित द्वारा वे जीवन भर बना रहने वाला प्रभाव उत्पन्न करना चाहते थे, और काव्यों के समान केवल अल्पस्थायी रसानुभूति मात्र नहीं। ये प्रसंग तो केवल तुलसी द्वारा कल्पित हैं यह धारणा उन प्रसंगों का कोई स्थायी प्रभाव श्रोताओं या पाठकों पर न जमने देतीं। पर गीतावली तो प्रबंध काव्य न थी। उसमें तो सूर के अनुकरण पर वस्तु–व्यापार–वर्णन का बहुत विस्तार है। उसके भीतर छोटे–छोटे नूतन प्रसंगों की उद्भावना का पूरा अवकाश था, फिर भी कल्पित घटनात्मक प्रसंग नहीं लाये जाते। इससे यही प्रतीत होता है कि उनकी प्रतिभा अधिकतर उपलब्ध प्रसंगो को लेकर चलने वाली थी, नये नये प्रसंगो की उद्भावना करने वाली नहीं उनकी कल्पना वस्तुस्थिति को ज्यों–की त्यों लेकर उसके मार्मिक स्वरूपों के उद्घाटन में प्रवृत्त होती थी। गोपियों के छकाने वाली कृष्णलीला के अंतर्गत छोटी–मोटी कथा के रूपों में कुछ दूर तक मनोरंजक और कुतूहलप्रद ढंग से चलने वाली नाना प्रसंगो की जो नवीन उद्भावना सूरसागर में पायी जाती है वह तुलसी के किसी ग्रंथ में नहीं मिलती।

'रामचरितमानस' में तुलसी केवल कवि रूप में ही नहीं, उपदेशक के रूप में भी सामने आते हैं। उपदेश उन्होंने किसी–न किसी पात्र मुख से कराये हैं, इससे काव्यदृष्टि से यह कहा जा सकता है कि वे उपदेश पात्र के स्वाभावचित्रण के साधनरूप हैं। पर बात यह नहीं है। वे उपदेश उपदेश के लिए ही हैं। गोस्वामी जी के रचे बारह ग्रंथ प्रसिद्ध हैं जिनके पाँच बड़े और सात छोटे हैं। दोहावली, कवित्तरामायण, गीतावली, रामचरितमानस, विनयपत्रिका, बड़े ग्रंथ है तथा रामललानहछू, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल, बरवैरामायण, वैराग्यसंदीपनी, कृष्णगीतवली और रामाज्ञाप्रश्नावली छोटे। पं. रामगुलाम द्विवेदी ने जो एक प्रसिद्ध भक्त और रामायणी हो गये हैं, इन्हीं बारह ग्रंथो को गोस्वामी जी कृत माना हैं पर शिवसिंहसरोज में दस और ग्रंथो के नाम गिनाये गये हैं, यथा–रामसतसई, संकटमोचन, हनुमद्बाहुक, रामशलाका छंदावली, छप्पय रामायण, कड़खा रामायण, रोला रामायण, झूलना रामायण और कुण्डलिया रामायण। इनमें से कई एक तो मिलते ही नहीं। हनुमद्बाहुक को पं. रामगुलाम जी ने कवितावली के ही अंतर्गत लिया है। रामसतसई में सात सौ से कुछ अधिक दोहें हैं जिनमें से डेढ़ सौ के लगभग दोहावली के ही हैं। अधिकांश दोहे उसमें कुतूहलवर्धक, चातुर्य लिऐ हुए और क्लिष्ट हैं। यद्यपि दोहावली में भी कुछ दोहे इस ढंग के हैं, पर गोस्वामीजी, ऐसे गंभीर, सहृदय और कलामर्मज्ञ महापुरूष के ऐसे पद्यों का इतना बड़ा ढेर लगाना समझ में नहीं आता। जो हो, बाबा बेनीमाधवदास के नाम पर प्रणीत चरित में भी रामसतसई का उल्लेख हुआ है।

कुछ ग्रथों के निर्माण के संबध में जो जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं, उनका उल्लेख भी यहाँ आवश्यक है। कहते हैं कि बरवा रामायण गोस्वामी जी ने अपने स्नेही मित्र अब्दुर्रहीम खानखाना के कहने पर उनके बरवा (बरवै नायिकाभेद) को देखकर बनाया था। कृष्णगीतावली वृंदावन की यात्रा के अवसर पर बनी कही जाती हैं पर बाबा बेनीमाधवदास के 'गोसाईचरित' के अनुसार रामगीतावली और कृष्णगीतावली दोनों ग्रथ चित्रकूट में उस समय के कुछ पीछे लिखे गये जब सूरदास जी उनसे मिलने नहीं गये थे। गोस्वामी जी के एक मित्र पं. गंगाराम ज्योतिषी काशी में प्रह्लाद घाट पर रहते थे। रामाज्ञाप्रश्न उन्हीं के अनुरोध से बना माना जाता है। हनुमानबाहुक से तो प्रत्यक्ष है कि बाहुओं में असह्य पीड़ा उठने के समय रचा गया था। विनयपत्रिका के बनने का कारण यह कहा जाता है कि जब गोस्वामी जी ने काशी में रामभक्ति की गहरी धूम मचाई तब एक दिन कालिकाल तुलसीदास जी को प्रत्यक्ष आकर धमकाने लगा और उन्होंने राम के दरबार में रखने के लिए वह पत्रिका या अर्जी लिखी।

गोस्वामी जी की सर्वांगपूर्ण काव्यकुशलता परिचय आरंभ में ही दिया जा चुका है। उनकी साहित्यमर्मज्ञता भावुकता और गंभीरता के संबंध में इतना और जान लेना भी आवश्यक है कि उन्होंने रचनानैपुण्य का भद्दा प्रदर्शन कहीं नहीं किया है और न शब्दचमत्कार आदि के खेलवाड़ो में वे फँसे है। अलंकारो की है कि योजना उन्होंने ऐसे मार्मिक ढंग से की है कि वे सर्वत्र भावों या तथ्यों की व्यजंना को प्रस्फुटित करते हुए पाये जाते हैं, अपनी अलग चमक–दमक दिखाते हुए नहीं। कहीं–कहीं लंबे–लंबे सांग रूपक बाँधने में अवश्य उन्होंने एक भद्दी परंपरा का अनुकरण किया है। दोहावली के कुछ दोहों के अतिरिक्त और सर्वत्र भाषा का प्रयोग उन्होंने भावो और विचारों को स्पष्ट रूप में रखने के लिए किया है, कारीगरी दिखाने के लिए नहीं। उनकी–सी भाषा की सफाई और किसी कवि में नहीं। सूरदास में ऐसे वाक्य मिलते हैं जो विचारधारा आगे बढाने में कुछ योग देते पाये जाते, केवल पादपूत्यर्थ ही लाये हुए जान पड़ते हैं। इसी प्रकार तुकांत के लिए शब्द भी तोड़े गये हैं पर गोस्वामी जी की काव्यरचना अत्यंत प्रौढ़ और सुव्यवस्थित है, एक भी शब्द फालतू नहीं। खेद है कि भाषा की यह सफाई पीछे होने वाले बहुत कम कवियों में रह गयी। सब रसों की सम्यक् व्यजंना उन्होने की है, पर मर्यादा का उल्लंघन कहीं नहीं किया है। प्रेम और श्रृंगार का ऐसा वर्णन जो बिना किसी लज्जा और संकोच के सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है हम निस्संकोच कह सकते हैं कि यह एक कवि ही हिंदी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।

(साभार : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कृत 'हिंदी सहित्य का इतिहास')

■■■

कालजयी पंरपराः

समालोचक बाबू श्यामसुन्दर दास

– डॉ. फ़ातमा ज़ेहरा

जिस आलोचना के छिटपुट संकेत हमें राधाकृष्ण दास और सुधाकर द्विवेदी में दिखाई दिये थे, उनके विकास की दृष्टी से श्यामसुन्दर दास उल्लेखनीय हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य के पठन – पाठन के साथ–साथ आलोचक के रूप में भी उनका विशेष महत्व हैं। उनके द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना को एक विशिष्ट कार्य के रूप में देखा जा सकता है। इनका जन्म सन् 1876 ई. में काशी में हुआ था। आर्थिक सुविधाओं के आभाव के कारण ये बी.ए. तक ही शिक्षा ग्रहण कर सके और पढाई छोड़कर चंद्रप्रभा प्रेस में नौकरी करने लगे। बाद में अनेक स्थानों पर नौकरी करते हुए अंत में महामना मदनमोहन मालवीय जी के अनुरोध पर काशी विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य का इतिहास आदि विषयों से संबंधित पुस्तकों की रचना कर इन्होने हिंदी साहित्य में अनुभव किये जाने वाले अभाव की पूर्ति की।

अभावों की शीघ्रतिशीघ्र पूर्ति को लक्ष्य में रखकर नियोजित ढंग से होने वाले निर्माण कार्य में व्यापकता, वैविध्य और स्थूल उपयोगिता का दृष्टिकोण ही प्रधान होता है। श्यामसुन्दर दास के सामने भी यही दृष्टिकोण था। व्यक्ति का मूल्य युग की सापेक्षता में ही आँका जाना चाहिए। इनकी बुद्धि विमल, दृष्टि साफ, हृदय उदार और दृष्टिकोण समन्वयवादी था। साहित्य और भाषा सभी के संघटन में इन्होंने औचित्य और सांमजस्य का ध्यान रखा है। यहाँ तब कि ये आलोचना में भी सांमजस्य को लेकर चले हैं। इसलिए इनकी आलोचना पद्धति में ऐतिहासिक व्याख्या, विवेचना, तुलना, निष्कर्ष, निर्णय आदि अनेक तत्त्व सन्निहित हैं। अंग्रेजी साहित्य के ज्ञाता होने के कारण इन्होंने अंग्रेजी साहित्य का आधार लेकर अनुसंधान, भाषा–विज्ञान, साहित्यालोचन, कवि समीक्षा और नाट्यशास्त्र जैसे गूढ़ और गंभीर विषयों पर हिंदी में कार्य किया।

'श्यामसुन्दर दास' ने 'साहित्यालोचन' में साहित्य, कविता गद्य, काव्य, दृश्यकाव्य, रस, शैली, और साहित्य की आलोचना से संबंधित पाश्चात्य लेखकों के विचारों को बहुत क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया, वे केवल सामग्री का संकलन ही नही करते, संकलन तो वह है, उसके पक्ष–विपक्ष में अपना अभिमत भी प्रकट करते हैं। साहित्य के मुल्यांकन में वे कवियों के जीवन – वृत्त और व्यक्तित्व को भी अपेक्षित महत्त्व देते हैं। साहित्य के युगीन संदर्भों की उपेक्षा किए बिना भी वे उसकी' जातीय परम्परा पर बल देते हैं। साहित्य की इस परम्परा को ही वे 'जातीय भाव' कहकर प्रस्तुत करते हैं। इस परम्परा को वे सामाजिक विकास की स्थितियों के बीच ही समझाने पर बल देते है

'विभिन्न ग्रन्थावलियों' की भूमिकाएँ और मौलिक पुस्तकों के अतिरिक्त बाबू श्यामसुन्दर दास ने बहुत बड़ी संख्या में सहित्य और लेखकों से संबंधित खोजपूर्ण आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखे। उनके द्वारा लिखे निबन्धों की संख्या ही विपुल नहीं हैं उनका वैविध्य और विस्तार भी आश्चर्यजनक है। इन्होने शुद्ध साहित्यिक हिंदी का प्रयोग किया तथा विदेशी शब्दों को भी हिंदी के साँचें में ढाल दिया। इनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम और प्रचलित तद्भव शब्दों की अधिकता है। इनकी भाषा में क्लिष्टता एवं जटिलता भी नहीं है। बल्कि सर्वत्र सुगठित और सुलझी हुई है। श्यामसुन्दर दास ने शैली को भाषा का व्यक्तिगत प्रयोग माना, अतः शैली विषयक उनका मंतव्य भाषा विवेचना के प्रसंग में आया है। वैसे तो इनकी व्याख्यात्मक, विचारात्मक और गवेषणात्मक आदि तीन शैलियाँ है, किन्तु ये मूलतः व्यास शैली के ही लेखक रहे। लम्बे समय तक बीमार रहने के कारण सन् 1945 ई में इनका स्वर्गवास हो गया।

हिन्दी के महान विदेशी साधक :

मानस मर्मज्ञ अलेक्सान्द्र वारान्निकोव

रूसी भाषा में रामचरित मानस के अनुवाद का श्रेय अकादमीशियन अलेक्सेइ पत्रोवेच वारान्निकोव (9.3.1890–4.9.1962) को है। "राम के शौर्यमय कार्यों का सागर" शीर्षक ही वारनिकोव के मनोभाव को व्यक्त करता है। एक हजार चौदह पृष्ठों के इस बृहत् ग्रंथ में मानस पद्यबद्ध अनुवाद किया गया है।

वारान्निकोव के सुपुत्र डॉ प0 अ0 वारान्निकोव ने प0 बनारसीदास चतुर्वेदी के आग्रह से अपने पिताजी का जीवनचरित काफी खोजबीन के साथ लिखा है जिसमें उनके बाल्यकाल का काफी मनोरंजक शैली में विवरण दिया गया है। पता नहीं कितनी बार वह इस संसार से जाते जाते बचे। इतने गरीब घर के थे कि बर्फीली नदी को कतिनाई से पार करते थे पर पढ़ने–लिखने में मेधावी थे। उन्होनें श्रम करके जो परीक्षा उत्तीर्ण की उसका उल्लेख जंलोतोनोशा के शहरी म्यूजियम में प्रतीक रूप में (सन् 1905) सुरक्षित है।

यूक्रेन निवासी वारान्निकोव आगे परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने गये और अनेक भाषाओं के ज्ञाता हो गये। मानस का पद्यानुवाद उन्होने किसी अज्ञात प्रेरणा से द्वितीय विश्वयुद्ध में सन् 1936 ई0 में प्रारम्भ किया जो सन् 1948 में समाप्त हुआ। संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह अनुवाद श्रम और संघर्ष का प्रतीक रहा जिसकी एक लाख प्रतियां देखते–देखते ही बिक गईं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी को भेंट करने के लिए एक प्रति बड़ी मुश्किल से प्राप्त हुई। एशियाई सम्मेलन, दिल्ली में (सन् 1946) उनको निमंत्रित किया गया था पर अस्वस्थता के कारण सम्मिलित नहीं हो सके। गंभीर रूप से अस्वस्थ होने पर भी अनुवाद कार्य निरंतर चलता रहा। द्वितीय विश्वयुद्ध में सोवियत सरकार ने सुरक्षा की दृष्टि से उन्हे कजाकिस्तान भेज दिया था। बाद में वह लेलिनग्राद लौट आए। साहित्य की बहुमूल्य सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको सोवियत संघ के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया गया। अकादमी के सदस्य चुने गए। मानस के अतिरिक्त उन्होने अनेक कृतियों का अनुवाद किया जिसमें "प्रेमसागर" उल्लेखनीय है।

मानस के अनुवाद के संबंध में उनके पुत्र डॉ0 ग्योत्र वारान्निकोव की टिप्पणी महत्वपूर्ण है–

" अपने पिता के पत्रों को पढ़कर ही मैं अनुमान लगा सका हूँ कि इस अनुवाद की दिशा में वह किस प्रकार काम करते थे। वह कोई सामान्य समय नहीं था। द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था तमाम कठिनाईयों के बावजूद रामचरित मानस के अनुवाद का काम चलता रहा। यह काम एक ऐसे व्यक्ति ने किया था जिसका स्वास्थ्य गंभीर बीमारी से जर्जर हो चुका था। लेकिन, समस्त सोवियत जनता की तरह उनका भी यह विश्वास था कि उनका अनुवाद प्रकाशित होगा और वह सोवियत तथा भारतीय दोनों जनगणों को लाभान्वित करेगा।"

अनुवाद की भाषा पर उनकी टिप्पणी देखें :

" एक अनुवाद के रूप में उनके सामने यह कठिनाई थी कि भारतीय शब्दों के पर्यायवाची शब्द यूरोपीय भाषाओं में अनुपलब्ध थे। ऐसी स्थिति में केवल आंशिक रूप से भारतीय धारणाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का प्रयोग करके, उन्होने भारतीय शब्दों को प्रस्तुत किया और उनका अभिप्राय पाद टिप्पणियों में स्पष्ट किया रामायण का रूसी भाषा में अनुवाद कितना व्यापक कार्य था इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि मानस की अनुक्रमणिका की बडे आकार के 37 पृष्ठों तक पहुँचती है। इसमें वास्तव में भारतीय पौराणिक कथाओं तथा संस्कृत के शब्द संगृहीत है"

इस ऐतिहासिक महत्त्व के ग्रंथ के प्रकाशक सोवियत संघ के रेडियो ने विशेष कार्यक्रम किया जो महापंडित राहुल सांकृत्यायन के साक्षात्कार पर आधारित था।

रामचरित मानस का (श्री वारान्निकोव ने) अनुवाद टीका से प्रस्तुत नहीं की वरन् गंभीर अनुसंधान का कार्य भी किया। यही इस ग्रंथ की भूमिका के रूप में दिया गया है जिसका अनुवाद लखनऊ विश्वविद्यालय

के प्रो0 केसरी नारायण शुक्ल ने मानस की इसी भूमिका–" तुलसीदास और उनका युग" रूप में किया और विद्या मंदिर, लखनऊ से सन् 1955 में प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ में अनेक दृष्टियों से तुलसीदास और मानस पर विचार किया गया–

– तुलसीदास का युग
– तुलसीदास और उनकी कारयित्री प्रतिभा
– तुलसीदास की रामायण की प्रबंधात्मकता
– तुलसीदास की कविता का विशिष्ट स्वरूप
– तुलसीदास के दार्शनिक विचार
– तुलसीदास के विचार
– तुलसीदास के सामाजिक एवं नैतिक कथन
– तुलसी कृत रामायण–ऐतिहासिक स्तंभ के रूप में
– अनुवाद के स्वरूप के विषय में

संक्षेप में, मानस पर विचार करते हुए वारान्निकोव ने युग, संस्कृति, भाव तथा कलापक्ष, भाषाशैली आदि पर विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

छंद के विशिष्ट प्रकार्य को मौलिक रूप में समझाने का प्रयास किया गया है। चौपाई में काव्य की मुख्य कथा चलती है। दोहा या सोरठा कहानी को आरम्भ करता है या चौपाइयों के विस्तृत निष्कर्ष को व्यक्त करता है।

अनुवाद विषय पर उनके विचार देखें–

" भाषा और शैली की विशेषताएँ अनुवाद के कार्य को कठिन बना देती हैं। काव्य के शक्तिशाली संस्कृतमय या तत्सम प्रधान अंश की अभिव्यक्ति के लिए शैलीगत साधन के रूप में 'स्लाववाद' और प्राचीन (आर्ष) प्रयोग (Archaism) का विस्तारपूर्वक व्यापक उपयोग किया गया है। अनुवाद में भारतीय वृत्तों को रूसी छंदो में अधिकाधिक निकट स्वरूप देने का प्रयत्न किया गया है। युक्तिरूप में रूसी अनुवाद में प्रत्येक पंक्ति में मौलिक के उच्चारण की मात्राओं के अनुरूप ही संख्या रखी गई है। अनुवाद में भी यतिभंग को स्थान नहीं दिया गया है। अनुवाद में छंद के विविध अंशों को अलग करने के लिए खडी लकीर (।) द्वारा प्राचीन भारतीय पद्धति को ज्यों का त्यों रखा गया है। अनुवाद में भारतीय चित्र विधान की उच्च मौलिकता को सुरक्षित रखने की ओर ध्यान दिया गया है। अनुवाद में मौलिक, काव्य के सभी चित्र सुरक्षित है। अनुवाद के पाठ में एक भी योरोपीय चित्र नहीं आने पाया है। जटिल चित्रो के निकटतम अर्थ टिप्पणियों की व्याख्या में (Underline) दे दिया गया है। अनुवाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित संस्करण से किया गया है।

संक्षेप में रूसी अनुवाद सर्वांगीण है। राम कथा के मर्मज्ञ विद्वान डॉ0 कामिल बुल्के ने इसकी समीक्षा आलोचना (17) में लिखी है। बाद में, उत्तरधिकारी और परिवार के सदस्य के विचार बनारसी दास चतुर्वेदी के ग्रंथ रूस की साहित्यिक यात्रा में देखे.

" सबसे पहले उन्होंने एक गदय अनुवाद तैयार किया और तत्पश्चात घोर परिश्रम करके उसे पद्य रूप दे दिया । उन्होंने मूल ग्रंथों के विचार चित्रमयता, छंद और कलात्मकता आदि सभी विशेषताओं को ठीक–ठीक और काँटे की तौल जैसे सही–सही रखने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि जनतांत्रिक विचार तुलसीदास के काव्य में ओत प्रोत है।

ग्रंथ प्रकाशित होने पर सोवियत जनता ने पुस्तक को उच्चमान और सत्कार दिया। यह महान् कार्य भारतीय जनता और संस्कृति के प्रति उनके प्रेम का प्रतीक है। प्राक्कथन का अंतिम वाक्य है" मुझे आशा है कि यह कृति दोनों देशों के सांस्कृतिक नैकट्य में सहायता देगी।"

इस निकटता का सूचक है–रूस मे होने वाली रामलीला जो गत पच्चीस वर्षो से हो रही है। भारतीय संकल्पनाओं और पौराणिक संदर्भो का रूसी में लिप्यांतरण किया गया और टिप्पणी में समझाया गया है जैसे –

नीति नीति – परम तत्व को निश्चित रूप से किसी एक नाम अथवा विशेषण के द्वारा परिभाषित करना संभव नहीं है
पवन कुमार – हनुमान का नाम।
जासु हृदय आगार– हनुमान को राम का परमभक्त माना जाता है।
रोहिणी– पुराणों के अनुसार रोहिणी दक्ष प्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की प्रिय भार्या है।

विदेशी पाठकों के लिए आहुति, सिंदूर, चातक, भक्ति, माया, मोक्ष जैसे शब्दों को विस्तृत टिप्पणी से ही समझाया जा संकता है।

इस अनुवाद कार्य की विस्तृत अनुक्रमणिका बनाने का कार्य अनुवादक के सुपुत्र पौत्र वारान्निकोव को है।

रूसी भाषा के विशेषज्ञ डॉ हेमचंद्र पांडे ने इसी रूसी अनुवाद की समीक्षा करते हुए अपने व्यक्त किए है :

'परन्तु वास्तव में यह निरा शाब्दिक अनुवाद नहीं है। केवल अर्थ के आधार पर शब्दों को लक्ष्य भाषा में ज्यों का त्यों रख देने का काव्यार्थ नष्ट हो जाता है। इसलिए अनुवाद करते समय उन्हें सँवरना पड़ता है। वारान्निकोव ने यह काम बखूबी किया है। उनका यह प्रयास इसलिए विशेष रूप से सराहनीय है क्योंकि इतनी सीमाओं मे बँधकर भी उन्होंने अर्थ की हानि नहीं होने दी है।" व्याख्याएँ रामचरित मानस को उचित परिप्रेक्ष्य में पढ़ने के लिए आधार प्रदान करती है, जिनकी सहायता से रूसी पाठक इस ग्रंथ का उचित मूल्याकन कर सकता है। इस प्रकार वह धीरे–धीरे रामायण की कथा के मर्म को ग्रहण करने लगता है। उसे भी भक्ति–रस का आस्वादन प्राप्त होता है। प्रत्येक (रूसी) पाठक को इस बात का ध्यान रखना होगा कि वह काव्य के साथ–साथ भारतीय संस्कृति में पगे ग्रंथ को पढ़ रहा है।

इस महान् कृति की अकादमिक वारान्निकोव को " आर्डर आफ लेनिन" के सम्मान से विभूषित किया गया है।

नेति नेति का हिल द्वारा अनुवाद "Not thus, Not thus" दिया गया है। डा0 सुधेश ने सुझाया है कि इसका अनुवाद 'No end, No end' होना चाहिए।

मानस: भक्ति और सामाजिक यथार्थ की कविता

अलेक्सान्द्र वारान्निकोव

दार्शनिक और भक्त का जो प्रमुख भेद है वह दोनो की साधना–पद्धति का भेद है, जिसे काकभुशुण्डि और लोमश ऋषि के सम्वाद और ज्ञानदीप तथा भक्तिचिंता– मणि के रूपक द्वारा बताया गया है। ज्ञानी का सहारा तर्क है और भक्त का अनुभूति। भक्त ज्ञान को अमान्य नहीं ठहरता, फिर भी उसको जानने मात्र से तृप्ति नही होती, उसे तो हृदय मे उसकी अनुभूति चाहिए कवि ने निगम पत्रिका में उसे बड़ी स्पष्टता के साथ व्यक्त किया है कि केवल कथन मात्र या ज्ञानमात्र माया से मुक्त करने में समर्थ नहीं है। यह उसी प्रकार का है, जिस प्रकार दीपक की बात करने से घर का अंधेरा नहीं दूर होता

वाक्य–ज्ञान–अत्यन्त निपुन, भव पार न पावै कोई
निसी गृह मध्य दीप की बातन्ह, तम निवृत नहीं होई।

इसी प्रकार भोजन का बखान करने से भूख नहीं मिटती। सच्ची तृप्ति का अनुभव तो उसी को होता है जो कि भोजन करता है चाहे वह उस विषय में कुछ भी न कहे, कुछ भी न बोले–

षट रस बहु प्रकर भोजन, कोई दिन अरु रैनि बखाने
बिनु बोले संतोष जनित सुख, खाई सोई पै जाने।

भक्त इसी प्रकार का है ; वह कहता नहीं फिर भी भोजन की तृप्ति सुख का अनुभव उसी को हो रहा है। लोमश ऋषि के निर्गुण के प्रतिपादन को काक–भुशुण्डि ने इसीलिए नही अपनाया क्योंकि उससे उनके हृदय की भूख नहीं मिट रही, हृदय को तृप्ती नहीं हो रही थी । वे जिससे पूछते थे, वह यही कह देता था कि ईश्वर सर्व भूतमय अहई : किंतु इतने से इनको संतोष न हुआ–

जेहि यूछहु सोइ मुनि अस कहई। ईश्वर सर्व भूत मय अहई।।
निर्गुन मत नहिं मोहि सुहई। सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई।।

आचरण और अनुभूति पर अधिक आग्रह के कारण ही भक्त ज्ञान के सिद्धान्त कथन मात्र को अधिक महत्व नहीं देता ।

भक्त ज्ञान को इसलिए भी महत्त्व नहीं देता कि वह जानता है कि ज्ञान 'कहत कठिन समुझत कठिन, साधत कठिन विवेक' । तुलसी दास जी

ने ज्ञान की कठिनता और भक्ति की सुगमता का ऐसा सुन्दर वर्णन किया है कि उस सम्बन्ध में कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है। ज्ञान की ओर भक्त इसलिये भी अधिक प्रयत्नशील नहीं होते कि उसमें अहं की भावना का कुछ न कुछ लेश हो ही जाता है। साधना के मार्ग में भक्त के सबसे बड़े शत्रु अहं और दम्भ के भाव है। इसी से वह अपने कर्तव्य और अपनी शक्ति पर गर्व न कर, भक्ति मार्ग की सच्ची सहायिका निरलम्बत, अनन्यता और भगवत्कृपा का ही सहारा लेता है। नरद और शाण्डिल्य के भक्ति- सूत्रों में पहल सूत्र ही इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है कि मनुष्य की अपनी साधना और प्रयत्न से नहीं, प्रत्युत भगवत्कृपा से ही सब कुछ होता है, भगवत्कृपा से ही भ्रम का नाश होता है।

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई, जदपि असत्य देत दुख अहई।।
जौं सपने सिर काटइ कोई। बिनु जागे न दूरि दुख होई।।
जासु कृपा अस भ्रम मिट जाई । गिरिजा सोई कृपाल रघुराई।।

ज्ञानोदय भी भगवत्कृपा से होता है। राम की कृपा के बिना उसकी प्रभुता को नहीं जाना जा सकता है-

राम कृपा बिनु सुनु खगराइ। जानि न जाइ राम प्रभुताई।।

और सच्चा ज्ञान उसी भक्त को प्राप्त होता है जिस पर प्रभु की कृपा होती है। ब्रह्म को जानकर वह ब्रह्म हो जाता है।

सोई जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहि तुम्हहि होई जाई।।
तुम्हरी कृपा तुम्हहि रघुनन्दन। जानहिं भगत भगत उर चन्दन।।

भक्त पर कवि ने इसलिए विशेष आग्रह दिखाया हैं कि कवि के मतानुसार ज्ञान मुक्ति के अधीन है और भक्ति स्वतन्त्र है। ज्ञान का चरम लक्ष्य मुक्ति भी भक्त को भक्ति की साधना के बीच स्वतः प्राप्त हो जाती है। यद्यपि वह न इस ओर प्रयत्नशील होता है और न इसे चाहता ही है-

राम भगति सोइ मुक्ति गुसाईं। अनइच्छित आवइ बरियाई।।
अस विचारि हरि भगत सयाने। मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने।।

तुलसी दर्शन शास्त्र में निष्णात होते हुये भी दार्शनिक नहीं है। उन्होंने रामचरित मानस का प्रणयन किसी दर्शनिक मतवाद की प्रतिष्ठा के लिए न कर राम भक्ति के प्रचार के लिऐ किया था। उनका लक्ष्य दर्शन या ज्ञान न था वरन् भक्ति थी।

तुलसीदास ने ज्ञान की अपेक्षा भक्ति पर जो विशेष आग्रह दिखाया है उसमें उनकी व्यक्तिगत रुचि ही कारण नहीं है भक्ति उस युग की पुकार थी और समाज की परम आवश्यकता थी। जिस प्रकार भक्ति का आधार दर्शन पर टिका है, उसी प्रकार उसका सामाजिक पक्ष भी है।

भक्ति का सामाजिक पक्ष उसके दो महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों में स्पष्ट हो जाता है। भक्ति के क्षेत्र में समानता के अधिकार की घोषणा सभी भक्त और आचार्यों ने की है। ईश्वर के समक्ष धनी व गरीब सब बराबर है। न कोई ऊचाँ है, और नही कोई नीच। राम को केवल भक्ति का सम्बन्ध ही मान्य है- 'मानउं एक भगति का नाता"। भक्तिहीन कुलीन व्यक्ति जलशून्य मेघ के समान है! यह उक्ति तो भक्ति-क्षेत्र में अत्यंत प्रचलित है-"जात पात पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई"। भक्ति के सिद्धान्त ने इस प्रकार समाज में प्रचलित भेदभाव को कम करने का प्रयत्न किया।

समानता के सिद्धान्त की घोषणा के साथ विद्वेष की निन्दा भी स्पष्ट शब्दों में की गई है। जिस प्रकार व्यक्ति को विद्वेष से विरत किया गया, उसी प्रकार समाज में प्रतिष्ठित अनेक धर्मों में देवताओं में विद्वेष को बुरा बताया गया। किसी भी देवी-देवताओं की निन्दा को वैष्णव भक्ति ने अक्षम्य कहा है। स्वंय तुलसीदास ने शिव और राम दोनों के प्रति पूज्य भाव को प्रदर्शित किया। शिव की सेवा से ही राम के चरणों में अविरल भक्ति होती है। इस प्रकार भक्ति के इन दोनों सिद्धान्तों द्वारा भी बहुत बड़ कार्य हुआ। सनातनता के सिद्धांतों ने सामाजिक भेदभाव को कम किया और धर्मों के प्रति समदृष्टि के प्रचार ने धार्मिक उदारता और सामाजिक सामंजस्य के भाव को दृढता का ध्यान रखा। उस युग में प्रचलित अनेक पंथो की निन्दा उन्होंने इसलिए की कि वे समाज के समीकरण की शक्ति को क्षीण कर समाज को शिथिल बना रहे थे। तुलसी को समाज का ध्यान बराबर रहा।

हिन्दू समाज का आधार वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था और प्रतिष्ठा है। मध्ययुगीन हिन्दू समाज में किस प्रकर अस्तव्यस्तता और अनुशासनहीनता फैल रही थी, लोग किस प्रकार अपने निश्चित कर्तव्यों से विमुख हो रहे थे इसका तुलसीदास ने मानस में कलियुग के वर्णन के बीच स्पष्ट उल्लेख किया है। वहीं पर उन्होने बताया है कि शूद्र किस प्रकार अपने को ब्रह्मवेत्ता कहकर ब्राह्मणों की भर्त्सना कर रहे हैं। कवि की दृष्टि में यह सामाजिक अनुशासनहीनता है।

बादहिं शूद्र द्विज सन हम तुमतें कछु घाटि।
जानें ब्रह्म सो विप्रवर आंखि दिखावहि डाटि।।

इसी प्रकार कवि का कहना है कि जो लंपट और सयाने है, वह अपने को अभेदवादी कहते हैं-

पर-तिय-लम्पट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने।।
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर। देखा मै चरित्र कलियुग कर।।

इन शब्दों में कवि ने अद्वैतवाद के सामाजिक कुपरिणामों की ओर इंगित किया है और बताया है कि इसकी मिथ्या भावना किस प्रकार समाज में अव्यवस्था उत्पन्न कर उसे शिथिल बनाती है। समाज की दृढ़ता के लिये ही कवि ने ज्ञान की अपेक्षा भक्ति पर अधिक जोर दिया है।

भक्ति का जो व्यक्तिपरक पक्ष है, वह भी चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण कर समाज की नींव को पुष्ट ही करता है।

निरवलम्बता उनमें सच्चे दैन्य और विनती का संचार करती है और भक्ति के सबसे बड़े शत्रु-दम्भ और अहंभाव से उनकी रक्षा करती है। दम्भ और अंह लोप से भक्त उस जीवन की ओर प्रवृत्त होते है, जिसे तुलसीदास सच्ची "रहनें" समझते है। इसी प्रकार अनन्यता भक्त में उस दृढ़ विश्वास की सृष्टि करती है जिसके सहारे भक्त कठिन से कठिन परीक्षा में भी सफल होता है। अनन्यता मन को प्रभु की ओर केन्द्रित कर देती है जिससे मन की चंचलता दूर होती जाती है और वह किसी दूसरे से कोई आशा नहीं रखता है। मानस में तुलसीदास ने राम के मुख से कहलाया है कि जो मेरा दास कहलाकर भी किसी मनुष्य से आशा रखे तो उसके विश्वास के लिए क्या कहा जाए।

मोर दास कहाइ नर आशा। करइ त कहहु कहा बिश्वासा।।

चातक अनन्य प्रेमी का प्रतीक है और भरत अनन्य भक्त है। भक्ति के उपकरण इस प्रकार ऐसे व्यक्तित्व का सृजन करते है जिसमें विनती के साथ दृढ़ता और निर्भीकता रहती है, जो न भय से त्रस्त होता है और न लालच से खरीदा जा सकता है, जिसमें 'बयरु न बिग्रह आस न त्रासा" जो खरी परीक्षा में भी अपने उच्च लक्ष्य को नही छोड़ता। भक्त का जीवन आर्दशनिष्ठ जीवन हो जाता है।

किन्तु तुलसीदास इसके आगे भी कुछ कहते है जो भक्ति के उच्च व्यक्तिपरक आचरण को सामाजिक बना देता है। उन्होंने कई स्थलों पर कहा है कि सबसे बड़ा धर्म अहिंसा और परोपकार है, सबसे बड़ा पाप परपीड़न है। परपीड़न से विरत होने में समाज की रक्षा, और परोपकार में समाज के कल्याण की भावना छिपी है।

परम धरम श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गिरिशा।।
परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

जिस प्रकार अहिंसा और परोपकार मे समाज की भावना छिपी हुई है उसी प्रकार सत्तों के जो लक्षण बताए गए हैं, उनके उच्च जीवन की जो विशेषताएं बताई गई है उनमें भी समाज के कल्याण की भावना छिपी हुई है। " पर दुख दुख सुख सुख देखे पर, " कोमल चित दीनन्ह पर दाया ," "शीतलता समता मइत्री" आदि में सामाजिक पक्ष भी निहित है। भक्त का जीवन इस प्रकार उच्च दैनिक जीवन का निदर्शन बन जाता है जिससे समाज का कल्याण होता है और जिसका समाज अनुकरण करता है।

तुलसी का यह महत्वपूर्ण कार्य मेरी दृष्टि से ओझल न रहा। मानस रचना के समकाल में तुलसी के देशवासी, विजेताओं द्वारा धूल- धूसरित थे और उन्होंने (तुलसी ने) अपने काव्य के द्वारा अपने देश की रक्षा के लिए अपूर्व मार्ग दर्शन की चेष्टी की। कहना न होगा कि रक्षा का यह अपूर्व मार्ग भक्ति का ही मर्ग था। इसी भक्तिपथ का अनुसरण कर जनता अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकी। यह भक्ति दो-चार इने-गिने व्यक्तियों के लिए न थी उपासना के क्षेत्र में इसने समानता के सिद्धांत की घोषणा की और इसने समग्र देश को आप्लावित कर दिया । सारे देश ने इसे अपना लिया। तुलसी की वीणा ने ही इस भक्ति को प्रत्येक हृदय में प्रतिष्ठित कर दिया । सारे देश ने इसे हृदयंगम कर लिया । इस प्रकार तुलसी ने अपने काव्य में

प्रतिपादित भक्ति के द्वारा जनता का पुनरुत्थान किया। इस कवि की पीयूष वाणी को सुनकर ही जनता जीवेत रह सकी, तुलसी की वाणी सुनकर ही यहाँ की जनता को जनार्दन के आश्रय का अटल विश्वास हो गया।

तुलसी का "स्वान्त : सुखाय" का उदघोष भी कवियों के आत्म स्वांतत्र्य की ही बात कह रहा है। इसतें स्वतंत्रता के साथ हृदय की सत्यानुभूति या सच्चाई क सिद्धांत भी प्रतिपादित है। "स्वान्तः सुखाय" से यहीं तात्पर्य है कि कवि अपने अन्तस् या मन के सुख के लिय गाता है या उसे गाना चाहिए। जिसमें उसे सुख मिलता है या जिसमें उसका मन रमता है उसी को अपने उदगारो का विषय बनाना चहिए, इस प्रकार यह कवि की अनुभूति की ईमानदारो गा सच्चाई की बात ठहरती है। यह तो स्पष्ट ही है कि जिस वस्तु–विषय या भाव में कवि का मन लीन नहीं होता, उससे उसें सुख नहीं मिलता या उसकी तृप्ती नही होती, वह उच्च काव्य का आधार नहीं बन सकता । इस प्रकार उच्च काव्य की सृष्टि के हेतु ही स्वान्त सुखाय का सिद्धान्त महत्वपूर्ण हो जता है। अर्थात उत्कृष्ट काव्य के लिय आवश्यक है कि कवे वस्तु–चयन के सम्बन्ध में स्वतंत्र रहे और वह काव्य–वस्तु कवि के मन के अनूरूप हो। दूसरे शब्दों में, काव्य रचना कवि के अपने अन्तस (स्वन्तः) सें समृद्ध है,उसे फैशन या फरमाइश के रूप में प्रस्तुत करना ठीक नहीं । कवि के पास केवल एक ही शक्ति है और वह इसी से बंधा है। भावाभिव्यक्ति के व्यापार में कवि को केवल शब्द और अर्थ का ही सहारा है वह इनसे बाहर नहीं जा सकता और न किसी अन्य माध्यम का अवलम्ब प्राप्त कर सकता है। कवि की मति को शब्दार्थ के घेरे में बंधकर उसका उसी प्रकार अनुसरण करना पड़ता है, जिस प्रकार नट को ताल के अनूरूप ही नाचना पड़ता है और वह ताल से बाहर नहीं जा सकता। तुलसी के मतानुसार कवि को केवल शब्दार्थ का ही सच्चा बल है–"अरथ आखरबल सांचा" ।

तुलसी के सम्बन्ध में स्वान्तः सुखाय को पूर्णतया एकान्तिक कहकर समाज के इष्ट सा श्रेयस से सर्वथा पृथक नहीं किया जा सकता; तुलसी ने ऐसा नही किया है। तुलसी का 'स्व" सकुचित नही है उसके सुख मे सबका सच्चा सुख निहित हैं । कने इस प्रकार के जीवन गा रहनि की कई स्थलों पर कामना कर चुका है कि दूसरों के सुख से सुखी और दुख से दुखी हो, अर्थात् उसके हृदय का जनहृदय से साधारणशील हो जाये। अपने को बंधनों में न बंधता हुआ भी कवि काव्य की प्रक्रिया तथा काव्य की आवश्यकताओं से अवगत है। "स्वातः सुखाय" या अपने अन्तस के सुख की बात कहता हुअ भी वह अपनें में ही मगन रहने वाल जीव नही है, क्योंकि वह कवि है, कवि होने के नाते वह जानता है कि काव्य की सार्थकता तभी है, जबकि उसकी अपनी बात सबके हृदय की बात बन जाए, उसका काव्य जन–मन में उन्हीं भावों का प्रेषक और उदबोधक या उदभावक बन जाए जो कि कवि के अन्तस् में है। कवि इस प्रकार काव्य का जो सानाजिक पक्ष है या उसकी जो सामाजिकता हैं, उससे भलीभांति परेचित है। काव्य व्यक्ति की निजी कृति होते हुए भी सम्पूर्ण नहीं है, उसे श्रोता, पाठक या दर्शक की अपेक्षा है। उसे श्रोता, पाठक या दर्शक के हृदय तक पहुँचाना या हृदयंगम करन भी आवश्यक है। ऐसा होने पर ही (कवि तथा) काव्य की पूर्ण सार्थकता है। सृजन के क्षणों में काव्य कवि की चीज है, सृष्टि हो जाने पर वह समाज की सम्पति हो जाती है और कवि के न चाहते हुए भी कवि के समाज (श्रोता, पाठक या दर्शक) का उस पर अधिकार हो जाता है और समाज काव्य के सम्बंध में कतिपय माँगे पेश करने लगता है। इसमें सर्वप्रथम और अत्यंत महत्वपूर्ण मांग यह है कि कवि के हृदय में जो भाव जागे हैं उनको कवि पारस्परिक विनिमय के सर्वोच्च सामाजिक साधन भाषा द्वारा सामाजिकों के हृदयों तक पहुँच सके। " प्रेषणीयता" का सिद्धांत इस प्रकार काव्य का अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत बन जाता है। प्रेषणीयता का यह सिद्धात ही काव्य का सामजिक पक्ष है। तुलसी ने प्रेषणीयता के महत्वपूर्ण सिद्धांत को "मनिमानिक मुकुता छवि" के द्वारा प्रतिपादित किया है।

उनकी सफलता और लोकप्रेयता का रहस्य एक अन्य तत्व में भी छिपा है। इसे हम कवि की व्यापक दृष्टि, सहानुभूति या उसकी मानवीयता कह सकते हैं। चित्रण में कवि चाहे यथार्थवादी न हो, फिर भी वह यथार्थ प्रेमी अवश्य है। इसी प्रकार उनकी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि यद्यपि मानव हृदय के गहरे, विषम एवं अंधकारपूर्ण कक्ष का कोना–कोना झांककर उसका दृश्य हमारे सामने रख देती है। फिर भी वह मनुष्य की हँसी नहीं उडाती, उसे सहानुभूति के साथ ऊपर उठाती है। संसार को माया भ्रम समझता हुआ भी वह इस भ्रम का यथा तथ्य चित्रण करता है। और तब मनुष्य को इसके मुक्त होने का उपदेश देता है। इसी से कवे ने संसार के कष्ट और कष्टों में पड़े हुए मनुष्य का सहानुभूति के साथ चित्रण किया है, और पारमार्थिक रूप में भ्रम होने पर भी उसकी पीड़ा को हल्की बताकर उससे विमुख नहीं हुआ। तुलसी ने वस्तुस्थिति का, जो विषमता है संसार मे जो कष्ट पीड़ा और चुभन है, उसका पूरा पूरा चित्र प्रस्तुत किया है। कवि की रचनाओं में प्रकारान्तर से उसका ऐहिक और आध्यात्मिक जीवन ही चित्रित हुआ है। तुलसी ने जीवन में जिन कष्टों को झेला उन्ही को उसके कवि ने कलात्मक अभिव्यक्ति दी। इसी से तुलसी के इन चित्रों में सत्य की शक्ति और स्वाभाविकता का रंग है, यथार्थता का संबंध है। इसका एक प्रमाण दरिद्रता (के कष्टों) संबंधी कवि का कथन है। कवि स्पष्ट कहता है कि इस संसार में दरिद्रता से बढ़कर कोई दुःख नहीं है– " नहिं दरिद्र सम दुख जग माही"।

दरिद्रता के संबंध में कवि की ऐसी प्रभावपूर्ण उक्तियां उसके जीवनानुभव से संबद्ध है। चूँकि कवि दाने–दाने के लिए बिलबिला चुका था, सबके आगे दांत काढ़ चुका था, मानमर्यादा की भावना छोड़कर सभी के आगे पेट खोल चुका था और किसी ने उसके मुह में धूल भी न डाली, किसी ने "संभाषन" भी न किया इसी से तुलसीदास दरेद्रता को संसार का सबसे बडा कष्ट कहते हैं। इस कथन का महत्व इसलिए और भी बढ जाता है कि तुलसी जब महात्मा बन गये अर्थात अपनी साधना द्वारा जब संसार के भ्रम पूर्ण रूप को समझ गए तब भी उन्होंने अपने इन कटु अनुभवों पर पर्दा नहीं डाला क्योंकि वे जानते थे कि केवल वे ही जगे हैं और मनुष्यों की अधिक संख्या संसार के दुःस्वप्न में पड़ी कष्ट भोग रही है। जब तक ये मनुष्य न जगें तब तक मिथ्या होते हुए भी ये कष्ट उनके लिए सच हैं।

कवि को जीवन के ऊँच नीच का बड़ा व्यापक और गहरा अनुभव था। उसने दुःख और सुख दोनों के दिन देखें थे। भिखमंगो से लेकर बड़े–बडे राजा महाराजाओं से भी घनिष्टता थी। विद्वानो से लेकर अपढ मूर्ख तक से उसका पाला पड़ चुका था। अनेक गात्राओं के बीच वह अनेक प्रदेश और विविध स्वभाव के मनुष्यों से परिचित हो चुका था। इन सबका निचोड़ उसके काव्य में प्रतिबिम्बित हुआ। फलत इस कवि के यथार्थ चित्रों में लागो को अपने ही जीवन की झाँकी मिली, और चित्रों की सर्वांगीणता ने काव्य को और भी अधिक ग्राह्य बना दिया।

यथार्थ के साथ कवि ने जिस आदर्श का चित्र उपस्थित किया, उसमें उसकी जनता के प्रति व्यापक सहानुभूति भी प्रस्फुटित हुई। वह जनता को कष्टो से छुटकारा पाने का मार्ग बताता है उसके उदगारों ने जनता के हृदय में आशा का संचार किया । भक्ति के उपदेशों ने जनता को उच्च जीवन का आश्वासन दिया और जनता ने कवि को आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार कपि उनक पथ–प्रदर्शक बन गया। तुलसी को जनता का विश्वास प्राप्त हो गया।

इस प्रकार यथार्थता, उच्चादर्श, सर्वांगीणता तथा मानवीयता ने (रसात्मकता से समन्वित होकर) तुलसीदास को धनी–निर्धन, ज्ञानी–आज्ञानी, ऊँच–नीच सभी के हृदय में सदा के लिये प्रतिष्ठित कर दिया। उनका आसन अटल है और इनकी लोकप्रियता अमर है

पूर्वोत्तर से –

मणिपुर की मीरा – बिम्बावती मंजरी

– देवीप्रसाद बागडोदिया, डिब्रूगढ़

भक्ति के स्वर्णिम दौर में महान भक्त कवयित्री मीराबाई की श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम भक्ति अपने विविध रूपों में समस्त भारत में प्रकट हुई है। मध्य युग की भक्ति की यह धारा भारतीय महाद्वीप के इस छोर से उस छोर तक बह गई और देखते ही देखते देश को इस नए रूप में बदल दिया । मीरा बाई गर्व से कहती हैं कि,

म्हारा री गिरधर गोपाल दूसरा णा कूयाँ
दूसरा णा कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ।।

मीरा कृष्ण को अपना प्रियतम मानती हैं। जिस तरह राधाजी के साथ कृष्ण का नाम आता हैं उनसे भी कहीं आगे मीरा अपने प्रियतम श्री कृष्ण के विराट स्वरूप में मिल जाना चाहती है। श्रीकृष्ण से अलग सत्ता अपनी नही मान जी। वे कृष्ण मय हो जाना चाहती हैं।

मीराबाई जिस तरह राजघराने से आनेवाली उच्चकुल की भक्त थी, फिर भी जाति भेद, सामन्ती–गैर सामन्ती भेद भाव से ऊपर उठकर उन्होने कृष्ण भक्ति का द्वार सभी भक्तों के लिए खोल दिया । उसी तरह उत्तर–पूर्व में मणिपुर के महाराज जय सिंह की पुत्री महाराजकुमारी बिम्बावती मंजरी की कथा जीवंत रूप में मिलती है। राजकुमारी बिम्बावती मंजरी को मणिपुर की मीराबाई भी कहा जाता है। दोनों में कालभेद को छोड़कर काफी समानताएँ मिलती हैं। दोनो राजपरिवार से आई हुई हैं दोनों कृष्ण की प्रेम भक्ति में सराबोर होकर उन्हे अपना प्रियतम मानती हैं। जातिभेद, सामन्ती सोच से अलग दोनों श्री कृष्ण के प्रेम में मगन होकर उन्हें ही अपना प्रियतम मानती हैं। बिम्बावती प्रतिक्षा करती है–

दासी हवे एह मने। आशा दिलाय नोमा स्थाने।
श्री चरण भरसा करिया, यदि कृपा ना करिले,
नवदिपे पदतले, मरिबेह गरल भखिया।

अर्थात, मेरे मनमें आपकी दासी बनने की प्रबल भावना हैं आपने आश्वासन भी दिया है। मैने आपके ही श्री चरणों में भरोसा भी कर लिया है। यदि आपने कृपा नहीं की, तो मैं नवद्वीप में आपके पदताल में विषपान करके प्राण त्याग दूँगी।

मीराबाई भी प्रियतम श्री कृष्ण के लिए महाराणा के भेजे विष को पान कर अपनी भक्ति की पराकाष्ठा को ही प्रदर्शित किया था। मीरा कहती हैं–

माई म्हाँ गोविन्द गुण गाण
राजा रुठ्याँ नगरी त्यागा, हरि रुठ्या कठ जाणा।
राणा भेज्या विख रो प्यालो चरणामृत पी जाणा।
काला नाग पिटारयाँ भेज्या, सालगराम पिछाणा।
मीरा गिरधर प्रेम दिवाणी, साँवल्या वर पाणा।।

बिम्बावती को राधा कृष्ण भक्ति विरासत में प्राप्त हुई। बचपन से ही वह कृष्ण भक्ति मे लीन थी । वह बचपन से ही राधा–कृष्ण मन्दिर में पूजा–अर्चना और सेवा करती थी। ज्यो–ज्यो वह बडी होती गई, उनकी भक्ति–भावना भी और बढती गई। वह गोविन्दजी को ही अपना सब कुछ मानती थी और उनके वियोग में रात दिन रोती रहती थी । वह केवल वही वस्तु खाती जो पहले गोविन्दजी को समर्पित की गई हो।

बिम्बावती मंजरी का कृष्ण–प्रेम बढ़ता ही गया। दिन–रात वह पूजा आरती में लगी रहती थी। बच्चों के साथ खेलने के बजाय वह पूजा अर्चना के लिय फूल–चुनती, अपने आराध्य देव कृष्ण के लिए मालाएँ बनाती और वह मन्दिर में घुस जाती थी। जब पूजारी लोगों ने उसका रात में मन्दिर में जाना रोक दिया तो वह रात भर कृष्ण–प्रेम के गीत बनाती और गाती नाचती रहती।

मणिपुर में इम्फाल स्थित श्री श्री गोविन्दजी का मन्दिर विख्यात है। इसका निर्माण महाराज जयसिंह ने करवाया था। इस गोविन्दजी की मूर्ति के साथ राजेश्वरी राधाजी की मूर्ति बिम्बावती मंजरी का प्रतिरूप है।वह अद्भुद सुन्दरी थी। जब वह युवती हुई तो उसकी सुन्दरता के कारण पडोसी राज्यों के राजकुमारों ने विवाह के प्रस्ताव रखें। किन्तु बिम्बावती ने कहा कि मेरे तो सब कुछ गोविन्दजी है। मैं किसी से विवाह नहीं कर सकती। वह आजन्म अविवाहित ही रही और कृष्ण–भक्ति मे मग्न रही।

बिम्बावती मंजरी के कृष्ण–प्रेम को देखकर लोगों ने उन्हे "सिजा लाइरोबी" अर्थात "देव प्रिया" नाम दे दिया। अब उन्हे बिम्बावती मंजरी के बजाय सिजा लाइरोबी नाम से ही जाना जाता है। प्रेम–दिवानी बिम्बावती को 'मणिपुरी मीरा' कहा जाता है। वह कृष्ण–प्रेम के कारण मध्यकालीन नारी भक्तो में और कवयित्रियों में विशेष स्थान बना गई है।

महाराज भाग्यचन्द्र ने 1779 ई में प्रथम महारास का आयोजन किया तो बिम्बावती ने राधा की भूमिका बहुत ही कुशलतापूर्वक निभायी। इन्होनें अपनी सखियों के साथ रासलीला खेली।

मणिपुरी रासलीला के नाम से विश्वविख्यात शास्त्रीय नृत्य बन गया। बिम्बावती मंजरी का नाम मणिपुरी रास नृत्य के सन्दर्भ में श्रद्धापूर्वक लिया जाता हैं और भविष्य में भी लिया जाता रहेगा।

बिम्बावती ने हृदय में श्री गोविन्दजी को बसा लिया था कि उसका जन्म गोविन्दजी के लिए ही हुआ है। वह सदा नवद्वीप श्रीधाम की यात्रा के विषय में सोचती रहती थी। किन्तु मन में संशय था कि कहीं वहाँ जाने पर उसको प्रियतम कृष्ण अपनायेगा या नहीं। इसी संशय के कारण वह दिन रात रोती रहती । अन्त में गोविन्दजी ने कहा कि मैं तुम्हे दर्शन दूगा। बिम्बावती द्वारा रचित अत्यन्त प्रसिद्ध यह प्रार्थना है–

के बोल करूणामय ये अवतार।। हा हा श्री गौरांग विधु रसराज।।
मोय केहनु ना होयलो दया। नन्द सुत प्रधन्या शिला मुखक जयमृदु बंशीधारी।।
जीव निस्तार हेतु नोदिया बिहारे। मोय कोनु नार होयलो दया।

अर्थात हे करुणामय, हे अवतार। आपकी मुझ पर दया क्यों नहीं हो रही हैं? हे नन्दसुत। आप सर्वोपरि है आप ओठो पर मृदु वंशी धारण करते हैं, आपने जीवों के निस्तार हेतु नदियों मे अवतार लिया । आप मुझ पर दया क्यों नहीं करते है?

सन् 1795 में बिम्बावती की नवद्वीप धाम यात्रा की इच्छा पूरी हुई। नवद्वीप से वह श्री पात खेतरी में धार्मिक मेला देखने गई और वहाँ से राधाकुण्ड (वृन्दावन) गई। राधाकुंड मे एक तमालवृक्ष के नीचे, उन्होने रात्रि को समाधि ले ली। राधा कुण्ड में बिम्बावती की समाधि है, आज भी वहाँ मणिपुर से तीर्थाटन करने वृन्दावन जाने वाले यात्री श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हैं। उत्तर मध्यकाल के वैष्णव–भक्ति साहित्य के इतिहास में बिम्बावती का नाम अमर रहेगा। मातृभाषा मणिपुरी होते हुए भी आपने सधुक्कडी भाषा में पद रचना की। उनके पद भक्ति साहित्य की अनुपम निधि है।

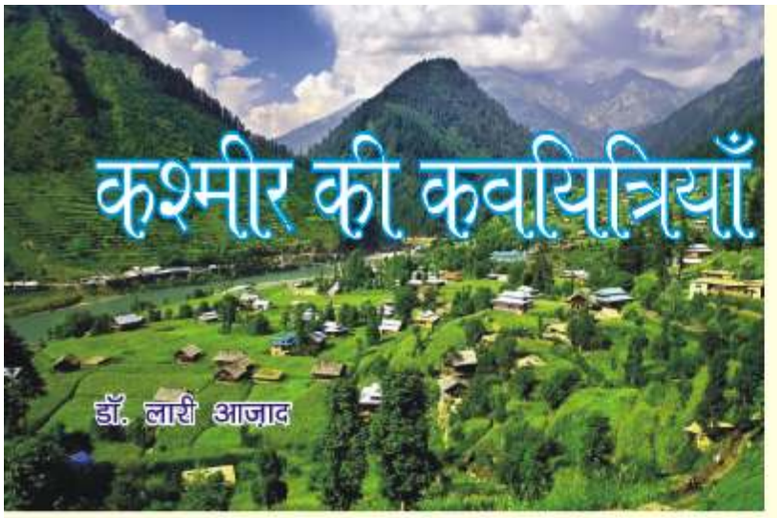

कश्मीर की कवयित्रियाँ

डॉ. लारी आज़ाद

कश्मीर में संस्कृत, फारसी, कश्मीरी, डोंगरी और उर्दू में काव्य कृतियाँ लिखी गयीं। छठवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दियों में रचित साहित्य 'प्राचीन कश्मीरी' में है। अधुनिक कश्मीरी में लिखा हुआ साहित्य चौदहवीं शताब्दी से उपलब्ध है। चौदहवीं शताब्दी कश्मीर के इतिहास मे महत्त्वपूर्ण है। इस शताब्दी के पूर्व में कश्मीर के राजा की हत्या कर दी गई थी, रानी ने आत्महत्या की थी और नया राजा गद्दी पर बैठ गया था। शैव कश्मीर एक नयी संस्कृति से संघर्ष करने पर बाध्य हो गया था। परिणाम स्वरूप राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, आदि क्षेत्रों में परिवर्तन के साथ–साथ ब्राह्मणों की भाषा–संस्कृत भी अपदस्थ हो गई थी और राजतन्त्र में इसका स्थान फारसी ने ले लिया था। अफरा–तफरी के इस माहौल में कश्मीरी में रचा गया साहित्य आम जनता के लिए वरदान भी था और सुलभ भी, जिसे समझने के लिए उसे किसी पण्डित या मौलवी व्याख्याकार की आवश्यकता नहीं थी। कश्मीरी की प्रमुख कवयित्रियाँ थी :

ललद्यद / लल्ला आरिफा (ललेश्वरी) : (1334–84 ई०)

1320 ई० के लगभग श्रीनगर के एक गाँव में जन्मी लल्ला इस राजनीतिक उथल–पुथल और तेजी से हो रहे इस्लामीकरण की प्रत्यक्षदर्शी थी। पास के ही एक गाँव में ब्याही लल्ला को, उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के कारण, ससुराल में बहुत यातनाएँ दी जाती थीं। उसके सास और पति उसे तरह–तरह से प्रताड़ित करते थे। तंग आकर उसने घर त्याग दिया और गुरु सिद्ध श्रीकण्ठ की शिष्या हो गई। सिद्ध श्रीकण्ठ कश्मीर–शैवमत और योग में निपुण थे। उनकी दीक्षा में लल्ला योगिनी, वेदान्तिन, आरिफा, माता लल्लेश्वरी या ललद्यद (द्यद यानी दादी / नानी) कहलाई

लल्ला ने कश्मीर शैवमत, त्रिक तथा योग का गहन अध्ययन किया एव इस दर्शन और साधना से जुड़े अनुभवों को कश्मीरी में, वाखों (पद्य) में, वचनबद्ध किया। इन वाखों की दार्शनिक गहनता, भाषा और माधुर्य कश्मीरी साहित्य के इतिहास में अब भी सर्वोच्च है।

शैवमत के एकेश्वरवाद पर बल देने के कारण उस समय के फारसी सैयद मुसलमानों ने लल्ला को आदर से 'आरिफा' का दर्जा दिया। लल्ला का ईश्वर सर्वशक्तिमान है जो मानव जाति का मित्र है। वह हर दिशा, हर कण में विद्यमान है तथा उसे पाने के लिए किसी धार्मिक स्थल की आवश्यकता नहीं है। न ही फूलों, न धूप–दीप की :

देव फिर पूजा कैसी आज?
तू ही पवन, गगन, भूतल तू, तू ही दिन तू रात
तू ही अर्घ्य–पुष्प–जल चन्दन, सब कुछ तू ही तात।
व्यर्थ आरती! व्यर्थ ये पूजा के सब साज
देव फिर पूजा कैसी आज?

(शशिशेखर तोषखानो द्वारा अनूदित)

लल्ला के अनुसार शिव को गहन योग साधना से प्राप्त किया जा सकता है.

प्रेम की ओखली में हृदय कूटा
प्रकृति पवित्र की पवन से।
जलायो भूनी स्वयं चूसी
शंकर पाया उसी से।।

एक और स्थान पर वे कहती हैं

पैरों का माँस वीथियों में चिपका
एक ही ने एक ही का रास्ता दिखाया।
जो ये सुनते हैं, वे दीवाने क्यों नहीं होते
लली ने शतों में से एक ही बात समझी।।

लल्ला नये शासकों की कार्यशैली तथा पण्डितों की रूढ़िवादिता, दोनों से परेशान थीं। अशान्ति की इस स्थिति को देखकर लला कराह उठीं :

बुद्धिमान को भूख से मरते देखा
जैसे पतझड़ में पेड़ से पत्ते गिरते हों
एक मासूम को रसोइये की हत्या करते देखा
मैं लला श्वास रुकने की प्रतीक्षा में हूँ।

शिव की अमरता में दृढ़ विश्वास रखने वाली लल्ला कह उठीं :

हम ही थे, हम ही होंगे
हम ही ने चिरकाल से दौर किये
सूर्योदय और अस्त का कभी अन्त नहीं होगा
शिव को उपासना कभी समाप्त नहीं होगी।

लल्ला ने उस समय के धार्मिक संघर्ष को खत्म करने की राह में समन्वय, सहअस्तित्व तथा मानववाद को पेश किया, जिसे उनके शिष्य नुन्द ऋषि (या) शेख–उल–आलम ने आगे बढ़ाया। इसी से सूफीवाद के लिए ज़मीन तैयार हुई, जो आगे चलकर कश्मीर को एक अलग सांस्कृतिक पहचान देने में सफल हुआ।

लल्ला के जीवन काल में ही सभी सीमाएँ मंगोल मूल के सिकन्दर ने लांघ दीं। इस कार्य में उसके मन्त्री सुह भट्ट उसका पथ प्रदर्शक था। सुह भट्ट कुछ ही समय पहले इस्लाम में शामिल हो गया था। सिकन्दर ने पूरे कश्मीर में धर्म प्रचार किया। अधिकतर लोग इस्लाम में शामिल हो गए थे या कुछ लोग घाटी से बाहर भाग गए थे।सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके पुत्र जैन–उल–आबदीन ने 15वीं शती के मध्य में अन्य प्रदेशों में जा बसे पण्डितों को वापस बुला लिया। लल्ला और उनके शिष्य शेख उल आलम (जिनकी ज़ियारत चरारे–शरीफ में है), का दर्शन और नीति जैन–उल–आबदीन का मार्ग दर्शक बना, जिसके फलस्वरूप कश्मीर में कुछ समय तक फिर से शान्ति का वातावरण बन सका।

कश्मीर के मानस पर लल्ला का गहरा प्रभाव रहा, इसी नाते उनके जीवन तथा आध्यात्मिक शक्ति को लेकर अनेक लोक–मिथक प्रचलित हैं। उनकी शक्ति, योग–साधना, दूरदर्शिता और दर्शन उनके वाखों में विद्यमान हैं। वे कश्मीरी साहित्य की शिखर व्यक्तित्व तो हैं ही, उत्तर भारतीय भक्ति साहित्य की अग्रणी भी हैं।

जून / हब्बा खातून:

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक किसान लड़की 'जून अर्थात 'चन्द्रमा'; ने कश्मीरी में पहली बार नारी–पुरुष की प्रेम–अग्नि तथा विरह–पीड़ा को सामान्य जनभाषा में, संगीतात्मक और लयात्मक पद्य में प्रस्तुत किया। जून ही मधुर गीत गाती थी। उस समय की रीति के अनुसार छोटी आयु में ही उसका विवाह एक गँवार किसान से हुआ, जो उसे, उसकी मधुर वाणी और प्रतिभ के कारण, प्रताणित किया करता था। शायद उसी काल में जून ने गाया होगा :

ससुराल में कुछ भी ठीक नहीं है
कोई उपाय करो नायके वालों!
पानी का घड़ा लाने घर से निकली
घड़ा टूट गया मायके वालों!
या तो घड़े के बदले घड़ा दे दो
नहीं तो घड़े के पैसे दो मायके वालों!!

किसी दिन जून खेतो में काम करते–करते मधुर सुरों में कोई दर्द–भरा गीत गा रही थी कि तभी वहाँ से युवराज यूसुफ चक गुजरा। जून का गीत सुनकर वह उस पर मर मिटा। जून के पति को उसे तलाक देने का हुक्म दिया और जून युवराज के महल में 'हब्बा खातून' के नाम से रहने लगी। महल में उसने फारसी और संगीत का प्रशिक्षण लिया।

यूसुफ चक सन् 1587 तक कश्मीर का राजा रहा। बादशाह अकबर ने कश्मीर पर आक्रमण कर कश्मीर के अन्तिम सुल्तान यूसुफ चक को कैदी बनाकर पटना में रखा। हब्बा खातून वादियों में भटकती प्रियतम के विरह में गीत गाती रहीं। हब्बा खातून के महल जीवन के लगभग 20 वर्ष अत्यन्त आनन्द से बीते, परन्तु उसके बाद वह विरह की अग्नि में जलती रही जिसे उसने अपनी कविता में प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया :

तेरे प्रेम की अग्नि में मैं जल रही हूँ
मैं केवल तुझे चाहती हूँ, तेरे सपने देखती हूँ
मेरे बादामी–नयन रक्त के आँसू बहा रहे हैं
प्रियतम, तुम क्यों नहीं आते?

उस युग की कविताओं में हब्बा खातून की अभिव्यक्ति में प्रौढ़ता है, उसकी दर्द भरी चीखें दिल को छू लेती हैं और उसकी पुकार में असीम करुणा है। उसकी कविताएँ साधारण नारी के मन को छू जाती हैं, जो इन्हें एकान्त में या अपनी सखियों के संग गुनगुनाती हैं :

मुझे नींद की एक झपकी भी नहीं आई है
तुम निश्चिन्त हो, यही मेरे हृदय का
दुख और दर्द है
केवल तुम ही मेरी हृदय–पीड़ा को
शान्त कर सकते हो
प्रियतम, तुम मेरी उपेक्षा क्यों कर रहे हो?

महल में इतने साल रहने के बावजूद हब्बा खातून राजनीति से अनभिज्ञ रहीं। राजनीति ने क्या करवट ली थी, उससे समाज और सामाजिक संस्थाओं पर क्या प्रभाव पड़ा था, उसे इस सबसे कोई लेना–देना नहीं था। वह अपने प्रियतम से मिलने को बेकरार थी। उसका प्रियतम उसके लिए जीवन का अर्थ था। उनकी कविता आज भी ग्रामीण तथा निम्न–मध्यवर्गीय महिलाएँ बड़े मनोयोग से गाती हैं। हब्बा खातून कश्मीरी रोमानी कविता की अग्रणी हैं। उन्हें 'बुलबुल–ए–कश्मीर' कहा जाता है।

संत रूपा भवानी / रो 'पद्यद :
(1625—1721 ई०)

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में श्रीनगर के एक शैव, माधव जू दर के घर में जन्मी रूपा का आध्यात्मिक निर्देशन उसके पिता के ही घर से ही आरम्भ हुआ था। बाल्यकाल में ही रूपा का विवाह हब्बाकदल के हीरानन्द सप्रू से कर दिया गया। जहाँ पर इस बाल–वधू को तरह–तरह की यातनाएँ और ताने सहने पड़े। उसके सास और पति उस पर अत्याचार करते थे। उससे मुक्ति के लिए रूपा ने घर त्याग दिया और सूफियों सन्तों की शरण में चली गई, बारह साल उसने चश्मा साहिबी में तपस्या की फिर मन्नागाम व उत्तशन में रही। वे लार के कलन्दर शाह सादिक के पास रहते हुए अन्त में वासकुर पहुँचीं। अन्तिम क्षणों में वे वापस पिता के घर लौट गयी। उसने वेदान्त और कश्मीर शैवमत का गहन अध्ययन किया। लल्ला की कविताओं ने उसे अत्यधिक प्रभावित किया और उसने लल्लेश्वरी को ही अपना गुरु मान लिया :

लला नामक लल पर गुरु
ललेश्वर की शरण में आई हूँ।

संत रूपा ने सामान्य जन की भाषा का प्रयोग न कर ग्यारहवीं सदी की प्राचीन कश्मीरी में काव्य–रचना की। इस नाते उसकी भाषा प्राचीन होने के साथ–साथ जटिल और द्वयर्थक एवं रहस्यात्मक भी है। रूपा नौ दशकों तक जीवित रही तथा अपने जीवन काल में ही 'सन्त रूपा भवानी' कहलायीं। माघ मास के कृष्णपक्ष की सप्तमी उनके आदर में 'साहिबी सप्तमी' के नाम से मनाई जाती है। उसे देवी शारिका का अवतार तक कहा जाता है।

रूपा एक समाज–सुधारक थीं। उन्होंने पशुबलि, मदिरापान, बहुविवाह–प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों का परित्याग करने तथा एक मानवतावादी दृष्टिकोण को जीवन में अपनाने के लिए आम जन को प्रेरित किया। वाह्याडम्बर का उसने खण्डन किया : 'चंटा बायान क्रियनाद बुज़े, दिवान शंकरस ग्वड़'.................. अहिंसा को उसने सर्वोपरिमाना 'युवदीव सुरयि मनय अत्य, भाव प्रथि जुवस, तसज़ सीवकस मालि अथि आय

तिमय छिय मनुष्य नतअ केंह द्राय गुपन यिमन सुमन पान आदान मशिथ गव।'

अरनिमाल :

1757 ई. में अहमदशाह अब्दाली ने कश्मीर पर नियन्त्रण कर लिया। पर्दा प्रथा, बाल–विवाह और औरतों को घर की चार–दीवारी में बन्द रहना पड़ता था। नारी स्वतन्त्रता पर चौदहवीं शताब्दी से ही अंकुश लगा था, परन्तु अफगान–शासन काल में उसका जैसे अस्तित्व ही समाप्त हो गया था। अठारहवीं शती के उत्तरार्द्ध मे मुंशी भवानीदास काचरू अपनी बुद्धिमत्ता के कारण राजदरबार में एक महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन हुआ। वह फ़ारसी का प्रखर विद्वान तथा कवि था। भवानीदास का विवाह बाल्यकाल में ही अरनिमाल नाम की बालिका से हुआ था। राजदरबार में पदवी प्राप्त करने के पश्चात् वह अपनी विवाहिता को भूल गया। यौवन को नष्ट होते देख अरनिमाल का हृदय सिहर उठा और वह विरह–पीड़ा के करुणा–भरे गीत गा उठी :

मैं सावन की जुही पीली पड़ गई हूँ
वह कब आएगा
उसका सुन्दर चेहरा मैं कब देखूँगी।

कहा जाता है कि वह चरखे पर सूत/रेशम/ऊन कातते–कातते गुनगुनाती थी। उसके गीत चरखे को भी सम्बोधित हैं :

चौं–चौं मत कर मेरे चरखे
मैं तुझे तेल में भिगो दूँगी।

हर पल वह अपने प्रियतम के कदमों की आहट सुनने को बेकरार थी, जिसमें चरखे की चौं–चौं विघ्न डालती थी। उसका प्रियतम ही उसका ईश्वर था, जिसकी प्रतीक्षा में उसने जीवन बिता दिया :

तुम्हारे पाँव मेरे आँगन को कब छुएँगे
मैं उन्हें अपने सिर पर रखूँगी, तुम आओ।
कभी मैं एक सुन्दर युवती थी
और अब अपने यौवन में ही फीकी पड़ गई हूँ
तुम आओ।

कहा जाता है कि जब उसकी मृत्यु हुई, तभी भवानीदास उससे मिलने के लिए चल पड़ा था।

बिमला रैना :

समकालीन कवयित्री बिमला का विवाह लगभग छियालिस साल पहले तब हुआ, जब वे नवीं कक्षा की विद्यार्थी थीं। उनका सुखमय वैवाहिक जीवन उन्हें ईश्वर–प्रेम की ओर आकर्षित करता रहा और उन्होंने लल्ला की भाँति 'वाख' कहना आरम्भ किया। कुछ वर्ष पूर्व तक वे अपने आध्यात्मिक अनुभव को अपने तक ही सीमित रखना चाहती थीं, वरन् उनके पति और शुभ–चिन्तकों के प्रोत्साहन से उन्होंने अपना पहला कविता संकलन 'र्‍यशमाल्युन म्योन' अर्थात् 'ऋषि मायका मेरा' छपवाया जिसमें उनके आध्यात्मिक अनुभव प्रकट हुए हैं :

अपना मन दूध मान अपनी बुद्धि धौना मान
चित्त को गूंथ, ध्यान में रह
इसे वायु की रस्सी कर, एक समान घूम
विघ्न में मत पड़, तभी मक्खन अच्छा आएगा!

पारिवारिक सुख और प्रोत्साहन उन्हें लल्ला और रूपा भवानी से भिन्न अनुभवों का परिचायक बनाते हैं :

जो नारि पति को शिवरूप मान ले
पत्नी को वह शक्तिरूप मान ले
विघ्न, अधन, स्वास्थ्य, बुद्धि वहाँ कभी कम नहीं होंगे।
यही ईश्वर को अर्पित फूल, दीप और धूप हैं।

रैना की भक्ति, घर, परिवार को केन्द्र में रखकर आगे बढ़ती है। ईश्वर को पाने के लिए न घर–परिवार त्यागने की आवश्यकता है, न ही मन्दिर, फूल आदि की। सघन साधना, पूर्ण विश्वास और शुद्ध आचरण ही ईश्वर को पाने का पथ है :

बीच सहरा में कलाई थाम
कान में कहा
मन स्थिर कर
तभी, मिट्टी के इस वन में बसन्त आया।

रैना किसी दर्शन या 'वाद' का सूक्ष्म विश्लेषण, विवेचन नहीं करती

है। वे ईश्वर को अपने अन्दर अनुभव करने की प्रक्रिया को प्रस्तुत करती है जिसमें आत्म सयम और ध्यान–साधना सबसे ऊपर हैं :

हे मन! स्थिर रह
खामोश बैठ, दिखावा मत कर
उसके ध्यान में रह, उसे मन में छिपा
वीरान भी कुलवारी बनेगा।

नसीम शफ़ायी :

नवीन शिक्षित नसीम शफ़ायी कश्मीरी की प्रथम कवयित्री हैं जिराकी कविता में स्त्री–विमर्श को प्रमुखता से उकेरा गया है। उनकी भाषा सशक्त और स्पष्ट है। वे पुरुष–प्रधान समाज में नारी की दयनीय, शोचनीय, उपेक्षित स्थिति को ऐसे पेश करती हैं कि मन पिघलने लगता है। बचपन से बुढ़ापे तक नारी उपेक्षा और अनादर की शिकार रहती है। नसीम लिखती है :

गहरी नींद में पर आँखें अधखुलीं
यह मासूम सौन्दर्य मुझे भयभीत करता है
जब यह किसी दिन कहीं परदेश जायेगी
वहाँ लोग जाने कैसे होंगे
क्या वे इसे प्रेम से जगाएँगे
कहीं वे इसकी यह नींद ही न छीन लें।

स्त्री उत्पीड़न के ऐसे उदाहरणों से कवयित्री पुरुष को झकझोरती है। नसीम नारी से समबन्धित पुरुष द्वारा निर्मित मिथकों में आन्तरिक विरोधाभास पेश करती हैं :

मुझे सार्वभौम सौन्दर्य कहा ना
अब हर झगड़े का कारण भी कहोगे?
जिसे चाहते हो, तुम्हें उसी की कसम
बताओ मुझे किस कारण दोषी कहते हो?

धार्मिक विश्वास कि नारी पुरुष की पसली से फूटी है इसका हवाला देकर वे ईश्वर को पुकारती है

न पिता, न माता, न मित्र, न सहयोगी
मेरा जन्म ही टेढ़ा,
मेरा भाग्य उलझा हुआ
जिसे तुमने सोच–विचार कर गढ़ा
मैं उसी की पसली से फूटी बेचारी मैं ।

इसी विश्वास के आधार पर पुरुष को सोचने पर मजबूर करती है:

मैं पैदा नहीं हुई, मैंने पूरी दुनिया को जन्म दिया
जो कुछ तूने चाहा, मैंने कभी विवाह किया क्या?
अपने हाथ में कलम और कागज़ ले
तूने जितना लिखा, क्या–क्या बखान किये
पर मैं तरसती रही कि तू मेरा प्रश्न सुनेगा
और उस प्रश्न का उत्तर भेजेगा।

नसीन कश्मीर में आतंकवाद से उत्पन्न त्रासदी से पीड़ित है। उसे जीवन और मृत्यु के बीच की खाई समाप्त होती दिख रही है। हर तरफ भय और सन्देह का आलम है। कोई किसी पर विश्वास नही कर पा रहा है। अमानुषता और अन्धकार का इससे भयंकर दृष्य और क्या हो सकता है :

यह भी आकाश की कोई चाल है क्या
न कहीं प्रकाश, न धूप, न समय की चेतना
अन्दर–ही–अन्दर रात्रि प्रकाश से भयभीत है
दिन काँप रहा है कि शाम हो रही है।

शफ़ायी की कविताओं में एक स्वाभाविक लय है। वे अन्य कवयित्रियों से अलग नव–सृजन में लीन हैं। डोगरी की प्रसिद्ध कवयित्री पद्मा सचदेव को कौन नहीं जानता ? आधुनिक कवयित्रियों मे उर्दू की सय्यदा नसरीन नक्काश और शबनम अशायी को भी प्रमुख स्थान प्राप्त है।

संयोग से ये तीनों ए.आई.पी.सी. की प्रबल धारा की जाज्वल्यमान नक्षत्र भी हैं।

ग़ज़ल

बलिर्न विभा 'नाज़ली', हिमाचल

काश ! हिन्दु न मुसलमा होता,
सिर्फ इक प्यारा सा इन्सां होता।

धर्म के नाम पे न होते ये फ़साद,
फ़ित्ना–ो–शर का न तूफ़ा होता।

ज़ीरत रह जाती न मक़्तल बन कर,
प्यार का बाग़ न वीरां होता।

शह्र की रूह न होती घायल,
इतना खूंखार न इन्सां होता।

ज़िन्दगी बनती न वीरान खंडर,
खून इन्सां का न अरज़ां होता।

अमन के फूल महकते हर सू,
हर नगर एक गुलिस्तां होता।

इस तरह बनता न हैवान बशर,
दीन पर अमन न कुरबां होता।

ज़िन्दगी सब्र–ो–सुकूं से कटती,
कोई बेघर न परीशां होता।

दौर तख़रीब का है 'नाज़ली' काश!
कोई ता'मीर का सामां होता।

गफ़लत की नीद से उठो, बेदर हो जाओ,
खत्रों का दौर है ये, ख़बरदार हो जाओ।

जंजीर थो जो कट गई हैं दस्त–ो–पा आज़ाद,
बेख़ौफ़ आगे बढ़ने को तैयार हो जाओ।

है गुलशन–ए–हिन्दोस्तां पुरखों की अमानत,
तहज़ीब के तुम इस की निगहदार हो जाओ।

गीता का फ़लसफा हो कि कुरआन की तांलीम,
अपनाओ उसे,साहिबे–किरदार हो जाओ।

आता है नज़र चर सू ख़तरात का तूफ़ां,
तुम एकता के बल से भंवर पार हो जाओ।

मज़हब से रखो अपनी सियासत को तुम आज़ाद,
ऐ 'नाज़ली' वतन के वफ़ादार हो जाओ।

विदेश से :

ज़ंजीर

पूजा गुप्ता, नेपाल

देखा है मैंने खामोशियों के समुन्द्र में डूबी हुइ सी एक तस्वीर,
दर्द के पन्नों को उलटती पलटती एक टूटी हुई सी तकदीर।
आक्रोश से भरी थी जिसकी निगाहें,
अन्दर से धधक रही थी पर ले रही थी ठण्डी–ठण्डी आहें।
छुपाने की कोशिश कर रही थी,
पर उसके जज्बात उसपर थे हाबी।
कभी ऊपर देखती कभी नीचे देखती
कभी खुद को कोसती, कभी हाथों के निहारती थी लकीर,
देखा है मैनें खामोशियों के समुन्द्र में डूबी हुइ सी एक तस्वीर,
कभी बुदबुदाती कभी चुप हो जाती,
कभी जाने कहाँ खो जाती,
होश आने पर झुठी मुस्कान मुस्कराती,
वो लाख छुपा रही थी,
पर उसके चेहरे पर साफ दिख रही थी उसकी पीर,
देखा है मैंने खामोशियों के समुन्द्र में डूबी हुइ एक तस्वीर,
दूसरों से ज्यादा उसको खुद से थी शिकायते,
कभी झटपटाती, कभी शांत हो जाती,
कभी दिवानों की तरह खुद से करती थी बातें,
आते जाते हर चेहरे में,
जाने किसको ढुंढा करती थी,
उलट पलट कर देखती पर मायूसी ही हाथ लगती थी,
उड़ना चाह रही थी,
पर सिर्फ फड–फडा कर रह जाती थी,
जाने कौन सी मजबूरी ने,
उसके पांवों में बांध रखी थी ज़ंजीर।।

अलाव

– अनिता कपूर, कैलिफ़ोर्निया

तुमसे अलग होकर
घर लौटने तक
मन के अलाव पर
आज फिर एक नयी कविता पकी है
अकेलेपन की आँच से
समझ नही पाती
तुमसे तुम्हारे लिए मिलूँ
या एक और
नयी कविता के लिए ?

डूब कर हस्ती मिटा

इं. गोपाल बघेल 'मधुर', कनाडा

डूब कर हस्ती मिटा हर पल में,
बैठ किश्ती में चरण रज तल में;
मिटाता मुश्किलों की वो बारिश,
हटाता घटा की हरेक तड़पन ।
वर्ष कितनों की रहो जो अकड़न,
तर्ज कितनी में मिली जो भटकन,
खुलासा हुई नहीं जो चितवन,
दर्द अपनों के लिये जो धडकन।
किसी ने समझी कहाँ बूझी कहाँ,
हटके अपने से अभी देखी कहाँ;
भूख चाहत की मिटी कब थी यहाँ,
बात राहत की अभी आई कहाँ ।
जुस्तजू होती रहीं ढलती रहीं,
गुफ़्तगू दिल से कभी होती नहीं;
गुबार निकले कभी गूढ़ किये,
गुप्त दरवाज़े कभी खोला किये ।
झाँका हम उसको किये अपने हिये,
झरोखे देखे कितने तड़पे जिये;
सिलसिला समझे 'मधु, मन मन में;
खिलखिला खोये तभी प्रभु पथ में।

चार धाम

-सुषम बेदी, यू.एस.ए.

मेरी एक बूढ़ी मां है,
एक बीमार पत्नी
एक जवान बेटी
और एक नन्ही सी नातिन।
इन्हीं के बीच
बिखरा है सारा सुख–दुख
इन्हीं के बीच
बिखरा है सारा सुख–दुख।
इन्हीं के बीच
होती है
रोजमर्रा की दौड़धूप, भागदौड़, काम–धंधे।
अस्पताल, घर, दफ्तर।
या घर दफ्तर, अस्पताल।
यही है मेरा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
मेरा पुरुषार्थ
यही है
मेरे चारों धाम!

विदेश से :

अधूरी रातें क्यूँ हैं?

–रुक्मिणी 'पगली', काठमाण्डू

हर तरफ नमी सी क्यों है?
जिंदगी में कमी सी क्यों है?
कुछ कहने को अल्फाज़ कम हैं
छोटी सी जिंदगी में
लम्बी सी रातें क्यों हैं?
हंसूं तो हंसी कम पड़ जाती है
आंखें भर आती हैं,
दिल सिसकता रह जाता है।
एहसासों के महफिल में
बेमानी मिजाज क्यों है?
तन्हाइयों में भी इक शोर सा,
तड़पते दिल का आभास क्यों है?
खुशियां ढूंढती हूं हर तरफ
पर मिलती रूस्वाईयां क्यों हैं?
शोर है हर तरफ
मेरा ही दिल खामोश क्यों है?
हंसती हूं पर सॉसे सिकती क्यों है?
आधी अधूरी रातें क्यों है?
आधी अधूरी बातें क्यों हैं?
खामोश जज्बातें क्यों हैं?
मन के बगीचे मे फूल क्यों नहीं खिलते?
साथ होकर भी अहसास क्यों नहीं मिलते?
दिल का हरेक कमरा खाली क्यों है?
सिमटी हुई सॉसों के बिखरे आस क्यों है?
जिंदगी तू फिर भी खास क्यों है?

अवसान सूरज का

अंग्रेजी में 'सनसेट'
हिन्दी में 'अवसान'
और बोली भाषा में 'डूबते सूरज' का
अर्थ एक ही है
फिर
अवसान देखने को ही क्यों होते हैं
हम इतने/आतुर
इतने लालायित
क्या मृत्यु इतनी खूबसूरत और
मृत्यु–क्षण इतना सुन्दर है ?

रमणिका गुप्ता
दिल्ली

क़लम के अलमबरदारों से–

डॉ. कुँवर बेचैन, गाज़ियाबाद

ग़ज़ल

जो नींद में देखा है वो ख्वाब जला देगा,
आँखों को ये अश्कों का सैलाब जला देगा।
तेज़ाब–सी नफरत को वो साथ में रखती है,
दुनेया को, यही उसका तेजाब जला देगा।
इस बार मछरों से डर इतना नहीं, जितना,
डर ये है मछलियों के तालाब जला देगा।
हकदार नहीं हैं जो सर उनको झुकाते हो,
अब तुमको अदीबो ये आदाब जला देगा।
जो हद से हुई बाहर तो बांध बधेंगे ही,
नदियों को नहीं तो ये सैलाब जला देगा।
कितने ही लुटेरों की नजरें हैं 'कुँअर' उस पर,
क्या मोती इसी डर से निज आब जला देगा।

नींद आई तो कहीं पर भी बसेरा कर लिया

नींद आई तो कहीं पर भी बसेरा कर लिया,
बिजली के तारों पे भी चिड़ियों ने डेरा कर लिया।
आईना लेकर मैं उनके पास बस पहुंचा ही था,
कुछ बड़े लोगों ने चेहरों पर अंधेरा कर लिया।
आप ही बतलाइए दुनिया में क्य है आपका,
आपने आपस में क्यूँ फिर तेरा–मेरा कर लिया।
काम करने थे मुझे वो रात थी तो क्या हुआ,
मैंने अपनी आँख खोली और सवेरा कर लिया।
छोटी–छोटी मछलियों को मारने के वास्ते,
हर बड़ी मछली ने खुद को ही मछेरा कर लिया।
ये पता करने को काम आया हूँ क्या औरों के मैं,
रोज सोते वक़्त मन में एक फेर कर लिया।
डाल ना पाया गले में हार तो उसने 'कुँअर',
लेके बाँहों में मुझे बाँहों का घेरा कर लिया।

ग़ज़ल

डॉ मधुर नज़्मी, मऊ

देखता हूँ मैं जिसको है वही मुसीबत में–
कट रही है अब सबकी जिन्दगी मुसीबत में।
'गोपियों' के चेहरों पर हैं उदासियाँ छाई–
आजकल है 'कान्हा' की बाँसुरी मुसीबत में।
बे–अदब अदीबों की साजिशों के कारण ही–
काव्य–मंच की कविता घिर गयी मुसीबत में
पापियों के पापों को धो रही है सदियों से–
ग़म लिये ज़माने का है नदी मुसीबत में।
हम फरेब खाकर भी सब्र करके जी लेंगे–
जिन्दगी न आ जाये आपकी मुसीबत मे
हर तरफ़ फ़ज़ाओं में ज़हर घुल गये हैं अब–
जिन्दगी हर इक शय की आ गयी मुसीबत में।
रहज़नी का खौफ़ इनको अब सताता रहता है–
रहबरों की है जैसे रहबरी मुसीबत में–।
सच की आबरू रखना अब बहुत ही मुश्किल है,
आजकल है मुंसिफ़ की मुंसिफ़ मुसीबत में–।
ऐ मधुर'कलम वाले रोशनी बिखेर दे
लाख इनको ले आये तीरगी मुसीबत में–।

सुदूर दक्षिण से –

तहें

–स्वर्णज्योति, पांडीचेरी

हमने बड़े जतन से
सभी की तह लगा कर
अलमारी के सबसे ऊपर
खाने में दिए थे भर
कि कभी फुरसत में
देख लेंगे खोल कर .....

पर नादानी में
यह भूल ही गए कि
अलमारी तो रोज ही है खुलती
और रोज ही सारी तहें गिरकर
जाती हैं बिखर
और उन्हें समेटने में
दिन जाता है गुजर.....
उन यादों की तहों को जिन्हें
तह लगा कर
अलमारी में रखे थे
सबसे ऊपर सबसे ऊपर।

मीना खोंड, हैदराबाद

उड़ान

हम चल रहे थे साथ–साथ
कदन से कदम मिलाकर
वो निकल गये आगे।
और हम ?
आकाश की तरफ
उड़ान लेते रहते।

नीला संमदर

नीला संमदर
नीला आकाश
आकाश की नीलाई
संमदर में समाई।

विशाल संनदर
विशाल आकाश
विशालता की कशिश कहीं
संमदर में समाई
मै और मेरी तन्हाई
मुझे याद आई।

ठंडी

ठडी हवा होले से चुपके से
मदभरी नशीली
बदन को हल्की सी छू गई।
नगमा प्यार का सुनाकर
दिल को छू कर
जिंदगी दे गयी।

मैं देख रही थी
मै सोच रही थी
मेरा आस्तित्व सभालती हुई
संसार में मैं समाई।
मै और मेरी तन्हाई
मुझे याद आयी।

अस्तित्व का आधार

सृष्टी में श्रृंगार का जो है स्तवन
हम उसी सौन्दर्य का हैं श्वस्न।
नभ सा पौरूष है जहाँ टिकता
हम उसी रति का हैं उपवन।।
सृष्टी में .....

मर्यादा त्याग का लेकर बंधन
तुझे दिया मुक्त ये सारा गगन
हम आधार तुम्हारे आस्तित्व के हैं
मत समझना इसे कोरा दर्पण
विस्तार तुम्हारा होकर भी
क्यों विचलित रहा तू नील गगन।।
सृष्टी में .....

हमने ही खिलाया जीवन सुमन
अपने अंक समेट स्वय हो अर्पण,
हम देकर भी है मौन रहे–
तुम देकर करते हो नर्त्तन
न स्पर्धा, न अभियन कोई
हम भी हैं तुम्हों से सम्पूर्ण।।
सृष्टी में .....

धरती
यह रहस्य सृजन का है प्रेम मिलन,
हम एक–दूजे के पूरक हैं–
फिर भेद क्यों इतना विस्मय गहन,
कई रूप यहाँ तुमने बदले–
हम भी संग–संग रहे नित नूतन।।
सृष्टी में .....

पौरूष प्रकृति रचती–सृष्टि
तो गाथा गाता व्योम भुवन
है काल गति पल छिन क्षण–क्षण
अब बन जा तू भी शिव–मोहन
इस हलचल में सार्थकता है
आओ दोनों करो हम मन मंथन।।
सृष्टी में श्रृंगार का जो है स्तवन।
हम उसी सौन्दर्य का हैं श्वस्न।।

ज्योति नारायण
सिकन्द्राबाद

सुदूर दक्षिण से -

डॉ. सुप्रिया पी., कासरगोड़ (केरल)

टी वी और बीवी

किसने बनाई हाय ये टी वी
कि भूल गए पति अपनी ही बीवी।
हाथों में रिमोट की हो जब गर्मी
भूल बैठे बीवी की नरम हाथों की गर्मी।
स्टार डिस्कवरी चैनलों का, एच बी ओ, शोर
घंटो तक कभी न करे उन्हे बोर।
बीवी से करनी हो तो बातचीत
तो बिस्तर पर हो जाओ चित्त।
अंग्रेजी सितारों के गोरे चिकने चेहरे
पति की आँखें उन्हीं पर है ठहरे!
हाय जिसने भी बनाई ये टी वी!!
क्या उसकी नहीं थी कोई बीवी!!!

फ़साना

दबीं चाहतों का फ़साना
है आज सबको सुनाना
बहती नदी के साथ बहना
झूमते खलिहान के साथ झूमना
मटी की सौंधी सुगंध में खोना
फूलों की खिलती कली सा महकना
सवेरे की खिलती धूप में सेकना।।

अवतार

-डॉ० फ़ज़ीला शहनवाज़,
मल्लापुरम्

तुम मान जाओ
विशेष हो तुम
तुम नहीं साधारण
असाधारण हो तुम
तुम वीर
तुम बलिदानी
जब-जब सुनी मैंने
तुम्हारी कहानी
तुम बन गए प्रेरणा
तुम ही सर्वशक्तिशाली
तुम्हारी राहनशक्ति
आकर्षित करती है।
तुम्हारे कर्म
प्रेरित करते हैं।
तुम्हारी मुस्कान-
रहस्यमयी!
विसर्जित कर देती,
मेरा तनाव
मेरा दुख।
तुम्हारी उपस्थिति,
शक्ति देती है।
तुम्हारा अस्तित्व
शक्तित्व की परिभाषा है।
तुम हो यहाँ तो-
खुशियाँ बिखर जाती है।
तुम सपनों जैसे,
आज साकार हो।
ईश्वर का भेजा-
कोई विशेष अवतार हो।
आज मान जाओ,
तुम आम नहीं हो
अस्तित्व विशेष है तुम्हारा
तुम साधारण नहीं हो,
अहम हो तुम
विशेष ही रहोगे।
मानो या न मानो
स्वयं को पहचानो
या न पहचानो
मैं मान गयी हूँ,
तुमको पहचान गई हूँ।
तुम वही हो,
जिसको भेजा ईश्वर ने,
मुस्कुराने को,
गुनगुनाने को।
करने मुझे प्रेरित
देने मुझे शक्ति,
इस विशेष अवतार की,
करती हूँ मैं भक्ति!!!

आरती काले, बंगलौर

बेगाने होते रिश्ते

नयो सदी की नयी बात
पत्थर के भगवान थे
अब पत्थर दिल इन्सान।
अब तो अपना खून भी करने लगा कमाल
बोझ समझकर बुजुर्गों को
घर से रहा निकाल।
बहू कहे अब सास से
घर में मेरा राज।
पानी आँखों का भरा
मरी शर्म हया और लाज।
बहन पराई हो गयी
अब साली खासमखास।
भाई सगे भी करते नहीं
इक दूजे पर विश्वास।
फैला है पाखण्ड का
अन्धकार सब ओर
पूजा पाठ का करे दिखावा
मचा-मचा कर शोर।
मन्दिरों में रोज लगवाते देखो छप्पन भोग
न जाने कितने भूखे मर जाते
फुटपाथों पर रोज।
धरम-करम के नाम पर
दिन भर होते पाप
भण्डारा करवाते रहें, पायें जयजयकार
पर घर जाओ देखो
वहाँ माँ-बाप बैठे इनके भूखे और लाचार।

दोहे :

नारी यदि होती नहीं!

-भीमप्रसाद प्रजापति
देवरिया

भ्रूण हत्या जो नर करे करता है वो पाप।
नारी यदि होती नहीं, ना होते हम आप।।
नरायन को राह बता, खूब सजायी देह।
कष्ट में रह कर भी वो, पूत जनायी देह।।
बेटो थी एक पन्ना भी, सुनी होगी त्याग।
अपने हाथों लीख दी, एक राजा के भाग।।
दरद दबाकर सो गयी, दे अपनी पहचान।
सीमा पर लड़ती रही, बनकर वीर जवान।।
नारी भरम न जानिए होती है गुणवान।
वंशन रही सहेजती, खान-पान पकवान।।

श्रद्धांजली

प्रभा भार्गव, दिल्ली

आसमान को आज बादलों ने घेरा था। हल्की हल्की बारिश की बूदें भी धरती को नम कर रही थी। दिवाकर अपने ऑफिस की खिड़की पर खड़ा सोच रहा था, कि जब भी थोड़ी गर्मी बढ़ती है तो प्रकृति अपना मिजाज बदल लेती है और इन हल्की हल्की फुहारों से पेड़ पौधे, जीव जन्तु सबको राहत मिल जाती है। सुहाने मौसम के बावजूद दिवाकर का मन आज बहुत ही बैचेन था, उसका मन काम करने में नहीं लग रहा था। लेकिन बॉस के कड़े रूख की वजह से वो घर भी नहीं जा सकता था। एक अनजाना सा भय उसे अन्दर ही अन्दर खाये जा रहा था कि काम की भागदौड़ में शायद वो बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाया। इसलिए आज वो कशमकश में हैं। बेटे की पढ़ाई में उसने न जाने कितना पैसा लगा दिया. कभी ट्यूशन के लिए भेजना तो कभी महंगी किताबे ला कर देना पर बेटा आदित्य जो कि लापरवाह होता जा रहा था, उसको लेकर दिवाकर हर समय परेशान रहता था। पत्नी वसुधा को कहता तो वह झुंझला कर कहती, क्या बात है सारा दिन मेरे बेटे के पीछे लगे रहते हो, खुद ने कौन सा तीर चलाया, जो उसे खरी खोटी सुनाते रहते हो. दिवाकर अपना मन मसोस कर रह जाता करे तो करे क्या? आदित्य उसकी कोई बात नहीं सुनता था और सारे दिन गली के बच्चों के साथ धमाल मस्ती करता रहता था। उसे उसने कितना समझाया, कि बेटा ये वक्त दोबारा नहीं आयेगा। पढाई में मन लगा लो फिर सारी उम्र आराम से गुजरेगी। पड़ोस के गुप्ताजी के बेटे को ही देखो, कितने अच्छे नम्बर लाता है। पर आदित्य पर उसकी बात का कोई असर नहीं पड़ता था। वह पढता तो पास होने मात्र के लिए। हर रोज की शिकायतें आने लगी के आज उससे झगड़ा हो गया, तो आज किसी और से दिवाकर इसी सोच में डूबा हुआ था कि चपरासी की आवाज आई साहब! साहब, सब लोग चले गए हैं ऑफिस बन्द होने का वक्त है।' दिवाकर तो न जाने कब से यूं ही विचलित सा खिड़की से झाकता रहा था। उसके कानों में अपने बाबूजी के स्वर गूँज रहें थे। वो हमेशा दिवाकर को समझाते हुए कहते रहें है, जो वक्त का सम्मान नही करते वक्त उनको धिक्कारता है' उसने सोचा हाँ आज मैनें भी तो वक्त की कीमत नहीं पहचानी वरना मैं भी आज किसी अच्छे ओहदे पर होता पर इंसान किसी के अनुभव से कुछ सीखे इससे पहले उसका अंह उसको टक्कर देने लगता है। वो अपनी स्वयं का अनुभव ही सर्वश्रेष्ठ मानता है। दिवाकर भी अब अपने अनुभव से ही सीख रहा था। बाबूजी की याद आते ही दिवाकर को जैसे बिजली सी स्फूर्ति आ गई उसे लगा कि आज मुझे बाबूजी से बहुत सी बातों की सलाह लेनी है। हालात कुछ भी खास अच्छे नहीं थे। पत्नी हर समय बिमारी से ग्रस्त रहती, डॉक्टर ने कहा 'भाई अब इनको आराम की जरूरत है घर का ज्यादा काम ये नही कर पा रही तो कोई सहायक नौकरानी रख लो।' दिवाकर चाह कर भी हर वक्त पत्नी का ध्यान नहीं रख पाता था। बेटा पैसे की कीमत नहीं समझता था। बेटी जो अब सयानी हो गई है। उसके विवाह का समय आ गया था दिवाकर ने तो कई साल से बेटी के विवाह के लिए लड़का नजर में रखा था। पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। या यूं कहें कि जब एक मुसीबत आती है तो वो अकेली नहीं होती उसके साथ कई परेशानियाँ भी पांव फैलाती हैं। तभी अचानक दिवाकर को एक झटका सा लगा उसे लगा कि किसी ने जानबूझ कर उसके ख्यालों पर वार किया है। उसे लगा कि सड़क पर एक सफेद चादर सी बिछी हैं अरे ये तो ओले पड़ने लगे, दिवाकर बुदबुदाया वो अपनी मेज कि तरफ बढ़ा, कुछ फाइलें समेटी कुछ इधर–उधर रखने लगा। दिवाकर ने जैसे ही अपना टिफिन उठाया उसे याद आया अरे आज तो मैंने खाना ही नही खाया, वास्तव में आज दिवाकर को भूख नहीं लगी थी। अब उसे लगा के वो जल्दी से घर पहुँच जायें और बाबूजी की गोद में सिर रखकर राहत की सांस ले। ओले थमने लगे थे बारिश भी लगभग बन्द हो गई थी। दिवाकर अपने कमरे से बाहर निकला तो देखा चपरासी कुर्सी पर बैठा ऊँघ रहा है। उसने कहा अरे भई नन्दु, तुम अभी तक यहीं हो घर क्यूं नहीं गये। उसने बड़ी नम्रता से कहा 'साहब! आप का इंतजार कर रहा था ऑफिस बन्द करना है।' दिवाकर को अन्दर ही अन्दर शर्म महसूस हुई कि मेरे कारण ये भला आदमी अभी तक यहाँ बैठा है और एक मैं हूँ जो अपनी ही दुनिया में खोया हूँ दिवाकर को लगा कि मेरी परेशानियों का असर दूसरों पर होता है, तो यह बहुत ही निन्दनीय है। अब दिवाकर तेज कदमों से सड़क की ओर बढ़ा। चलते–चलते वो फिर विचारों की जदोजहद में फंसता जा रहा था। आज उसे ऑफिस से घर का रास्ता मानो मीलों का फासला लग रहा था। आज बहुत समय के बाद वो फिर बच्चा बनना चाहता था। वो बच्चा जो कभी अपने बाबूजी को दुनिया का सबसे शक्तिशाली पापा मानता था और संसार का सबसे ज्ञानी और धनवान मानता था, सभी बच्चों के सामने अपने बाबूजी के गुणगान करना मानों उसकी आदत बन गई थी, तब दिवाकर 6–7 साल का होगा। बाबूजी की उंगली पकड़ कर दूर तक चला जाता था। तो कभी दौड़ लगाते हुए उन्हें पकड़ने को कहता। स्कूल की प्रतियोगिता में भाग लेता तो बाबूजी उसे गोद में उठा लेते और वो भी सोचता कि मेरे बाबूजी जैसा व्यक्तित्व सारे विश्व में नहीं है। माँ से तो घर पर ही लाड़ प्यार होता था उसे माँ का खाना खिलाना और बाहों में जकड़ कर सुलाना बहुत ही भाता था। उसे याद है कि जब कभी वो बिना खाये सो जाता तो माँ उसके सिर के नीचे हाथ रखकर उसे एक–एक निवाला खिलाती थी. दिवाकर की आँखों में आसू आ गये, और बड़बड़ाया और ये सोचते ही वह मन्द मन्द मुस्काने लगा, तब मेरी नींद खुलती थी तब भी चुपके से आँखे बन्द किये माँ के हाथ से निवाला खाता रहता था, वो सुख जीवन का अमूल्य खजाना था। दिवाकर सोचता रहा आखिर हम बड़े क्यूँ हो जाते हैं। अपने फैसले अपने तक सीमित रह जाते है। जब पानी सर से ऊपर हो जाता है तभी हमें बीतें पलों की अहमियत का अहसास होता हैं। काश मेरे बेटे को ये अहसास समय रहते हो जाऐ, मेरी तरह वो किसी दुविधा में ना फसें। अब दिवाकर घर के नजदीक पहुँच चुका था उसने देखा घर के बाहर कुछ लोग खड़े है, आपस मे बाते कर रहे हैं। दिवाकर को लगा जैसे आस–पड़ोस में किसी का झगड़ा हो गया होगा और लोग बाद में गपशप कर रहें है। अक्सर इस तरह झगड़े होते रहते थें और आपसी झगड़े खत्म होने के बद लोग अपनी–अपनी राय देते हुए टाइम पास करते रहते हैं। जैसे–जैसे वो आगे बढ़ा कदम एकाएक थम से गये, अरे भीड़ तो उसके घर के पास जमा है। आज फिर कोई मुसीबत सर उठायें खड़ी है। अभी वो सोच ही रहा था कि आगे बढ़े या फिर यहीं से वापस चला जाऐ, कुछ देर किसी पार्क में ही बैठ जाए। वो साहस नहीं जुटा पा रहा था. आऐ दिन नई–नई समस्याओं का सामना करते–करते थक चुका था, चन्द मिनटों में न जाने उसने क्या क्या सोच लिया था, क्या उसके बेटे आदित्य ने कोई नया बखेड़ा खड़ा कर दिया था या फिर उसकी बेटी न कोई गलत कदम उठा लिया। निधी वैसे तो अच्छी लड़की है पढाई में भी ठीक–ठाक थी पर आजकल थोड़ी मनमानी करने लगी थी। वो किसी लड़के के प्रेम मे पड़ गई थी, लड़का विनीत, हाँ वो उसके ही कालेज में पढता था मौहल्ले वाले बाते बनाने लगे थे, यदा–कदा वो निधी को घर

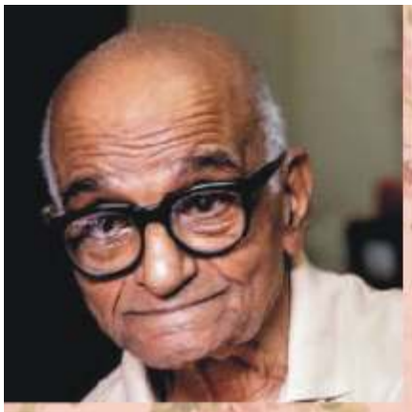

छोड़ने आता थे । वैसे भी जरा सी चिंगारी कहीं दिखे तो हवा देने वालो की कमी नहीं हैं, वो जैसे तैसे बात कमजोर रस्सी की तरह खींच देते हैं। लाख समझाने के बाद निधी को यह बात समझ नहीं आ रही थी कि वह लड़का हमारी जात का नहीं था, उसके और हमारे परिवार और मान्यताओं मे फर्क हैं पर आज की नई पीढ़ी के पास हर सवाल का जवाब होता है। उनके हिसाब से प्यार करने से पहले जात–पात तो नहीं पूछी जाती। हाँ परिवार अच्छा है। क्या हुआ जो हमारी जात का नहीं हैं मैं किसी ओर से शादी नहीं कर सकती। उसकी माँ ने भी उससे बहुत कुछ कहा कभी प्यार से कभी डाट–डपट कर। सारा मौहल्ला दबी जबान से आरोप प्रतिआरोप लगायें जा रहा था। दिमाग तीव्र गति से एक के बाद एक वाक्ये दोहराये जा रहा था तभी किसी ने उसके कन्धे पर हाथ रखा और उसने पीछे मुडकर देखा, गोपाल जो उसका सबसे अच्छा दोस्त और पड़ोसी था अक्सर अपने मन की बातें दिवाकर गोपाल से ही करत था गोपाल तो मानों फूट ही पड़ा था वो दिवाकर के गले लग गया और फूट–फूट कर रोने लगा। क्या हुआ गोपाल बता तो, बता दे मेरे यार क्या हुआ। दिवाकर लगातार बोले जा रहा था और गोपाल के आंसू थमने का नाम नहीं ले रहें थे, कुछ देर बाद उसने एक गहरी सांस ली और दिवाकर के सामने खड़ा हो पाया, वो सिसक कर बोला, दिवाकर बाबूजी–बाबूजी। दिवाकर ने कहा हाँ हाँ बाबूजी पर क्या हुआ। बाबूजी अब इस दुनिया में नही रहे। दिवाकर के शरीर में काटो तो खून नहीं वो स्तब्ध सा गोपाल को देखे जा रहा था। उसका सिर घूम रहा था होठ जैसे सिल दिये हों आंखे पथराई सी एक टक गोपाल को देखे जा रही थी । गोपाल ने उसे झकझोरा दिवाकर, दिवाकर मेरे भाई होश में आ। और धीरे–धीरे उसें अन्दर लेकर गया। जैसे ही दिवाकर आँगन की दहलीज पर पहुँचा उसके होश उड़ गये। उसने कभी सपनों में भी नहीं सोचा था कि कभी ऐसा भी दिन आयेगा जब उसे अपने बाबूजी को इस तरह अचानक छोड कर जते हुऐ देखना पड़ेगा । वो एक टक पिता को जमीन पर निर्जीव पड़ा देख रहा था। आज अपने आप को असहाय महसूस कर रहा था। माँ को तो उसने पहले ही खो दिया उसे याद है। जब माँ उसे छोड़ कर गई थी तो वो एक महीने तक चारपाई से नहीं उठ पाया था। माँ का सदमा उसे अन्दर तक झकझोर गया था। माँ अपने खट्टे–मीठे सारे अनुभव उसके साथ बांटती थी और वो भी अपने आप को माँ के आंचल में सुरक्षित सा महसूस करता था। माँ के करीब होते होते ना जाने कब वो बाबूजी के कुछ दूर होता गया, उसे पता ही न लगा। उसे युवा होते–होते पिता की सारी बातें उपदेश लगने लगी थी। जब भी वो कालेज के लड़कों के साथ कहीं बाहर जाता तो पिताजी उससे कहते देख अपना ध्यान जरूर रखना, किसी से झगड़ा न हो, समय पर खाना और सोना, अच्छे लड़को के साथ जा रहे हो ना ? मुझे कोई शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। फिर चलते–चलते कुछ नरम लब्जों में कहते देख पहुँचते ही फोन करना मत भूलना और हाँ जहाँ भी रूको वहाँ का फोन नं. जरूर देना। हाँ बाबूजी हाँ, दिवाकर उकताहट मे बोलता, अब मैं जाऊं, दिवाकर बड़बड़ाता हुआ दरवाजे से बाहर निकलता है कि अब तक मुझे बच्चा समझते हैं। बस जब देखो तब समझाते रहते है। मैने किसी के पापा को तरह इस कहते हुए नहीं सुना, मेरे सारे दोस्त हर महीने कहीं न कहीं घूमने जाते हैं मुझे तो बड़ी मुश्किल से इजाजत मिलती हैं और उस पर से खर्च का दबाव और ना जाने कितने खर्चो का लेखा जोखा दे देते है। बस इन्ही बातों से दिवाकर कहीं भी जाने का प्रोग्राम बनाकर माँ को ही बताता था और फिर माँ किसी तरह से पिता को समझा बुझा कर उन्हे राजी कर लेती थी। पर माँ के जाने के बाद अपने फैसले अपने आप ही लेने लगा था ,शायद ये दिवाकर का अहं ही था जो उसे अपने पिता की बातें न मानने को मजबूर करता था। आज दिवाकर बड़ा हो चुका था अब उसे अपने पिता की बातें धीरे–धीरे ठीक लगने लगी थी लेकिन ये तो दिवाकर के ऊपर कुठाराघात हो गया अब वो समझाने लगा था कि घर के खर्चे एक आमदनी में कैसे पूरे करने पड़ते हैं और उसपर जब कोई अतिरिक्त खर्च आ जाए तो कितना मुश्किल हो जाता है। आज दिवाकर भी बच्चो के अनाप शनाप खर्चे झेल नही पा रहा है और मानसिक परेशानी से जूझ रहा है। वो स्वयं को बाबूजी की जगह खड़ा पा रहा था। दिन रात की मेहनत के बाद घर चलाना और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाऐं रखना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

स्तब्ध सा खड़ा दिवाकर एक दम जोर–जोर से रोने लगा। वो बाबूजी को झकझोर रहा था, बाबूजी, बाबूजी, उठो, उठो बाबूजी मुझे आप की जरूरत है। आप इस तरह अपने बेटे से नाराज नहीं हो सकते। वो लगातार बोले जा रहा था। आंखे थमने का नाम नहीं ले रहीं थी। लग रहा था कि बादलों ने दिवाकर की आँखें में ही डेरा डाल लिया हो। दिमाग में बिजलियां कौंध रही थी और उसके आसुओं का सैलाब वहाँ इक्कठे हुऐ लोगो को भिगो रहा था। गोपाल भी उसे नही सम्भाल पा रहा था तभी कुछ पड़ौसी आगे बढ़े ,दिवाकर । बेटे चुप हो जा, अब इस घर को तुम्हें ही सम्भलना है। कोई बोल रहा था, भई जब तक घर में बडें, होते हैं तो बेफिक्री रहती है, अब पता लगेगा जब कहीं जाना हो तो ताला पडेगा दरवाजे पे। बड़ी मुश्किल से दिवाकर को शान्त किया गया तभी सामने ही आदित्य को देख कर दिवाकर की आंखें भी डबडबाने लगी। उसने आदित्य को गले लगाया जैसे मौन हो उसे सम्भाल रहा था. कि तू अभी वक्त रहते सम्भल जा। समय बीतता जा रहा था हुजुम जुटता जा रहा था । दिवाकर ने पिता का अन्तिम संस्कार कर दिया था, वापस आकर वो बाबूजी के कमरे में चला गया। अन्दर से बन्द कर उनकी आराम कुर्सी पर बैठ गया। उसे बड़ा सुकून मिल रहा था। उसे लगा कि उनकी गोद में आ बैठा हूँ काश बाबूजी मुझे थोड़ा और समय दे देते या मैं कुछ वक्त की भाषा समझ लेता । अब मुझे अपने बच्चों के फैसले खुद ही लेने होगें। उसने आँखें बन्द की और सोंचा अगर बाबूजी से सलाह लेता तो वो क्या कहते, एकाएक विचारों की लड़ियाँ खुलती गई आज वो अपनी तरह नहीं बल्कि बाबूजी की तरह सोच रहा था उसने सोचा वो निधी पर दबाव नहीं बनायेगा, उसकी शादी उसके पसन्द के लड़के से ही कर देगा, कल ही वह लडके वालों से मेलकर सब तय कर लेगा। आदित्य को भी बैठ कर समझायेगें और घर के फैसलों में उसको शामिल करेंगें, अगर जरूरी हुआ तो दिवाकर आदित्य को हॉस्टल भेजेगा। दिवाकर लगातार सोचे जा रहा था। उसने सोचा वो अधिक काम करेगा और बिमार पत्नी को और अपने बच्चों को साथ लेकर चलेगा। एकदम दिवाकर की आंख खुली कि बाहर से कोई दरवाजा खटखटा रहा था । जैसे ही दरवाजा खोला तो देखा कि उसकी पत्नी आदित्य और निधी खड़े थें उसे जैसे ऊर्जा मिल गई हो, उसने परिवार को एक साथ देखा उसे एक राहत मिली। अब दिवाकर ने सोचा मैं इस घर–संसार को बाबूजी का आर्शीवाद के रूप में सम्भाल लूँगा उसने सबको गले लगा लिया, सभी की आंखो में आसू थे और मौन भाषा आँसुओं के रूप में बह रही थी अब सब ठीक होगा हम मिलकर बाबूजी का सपना पूरा करेगें वो सपना जो बाबूजी ताउम्र देखते रहे कि सब एक दूसरे की प्रतिष्ठा बनाये रखें, इस मकान को घर बनाकर रखें । यही बाबूजी के लिए सच्ची श्रद्धांजली थी। बेटे आदित्य ने कभी भी अपने पापा को इस तरह नही देखा था। हमेशा पिता–पुत्र के रिश्तों में विरोधाभव ही झलकता था। पर आज दिवाकर को लगा कि उसका बेटा एक ही दिन में कितना बडा हो गया है वो रोते–रोते दिवाकर को दिलासा दे रहा है। पापा हम सब साथ हैं ना आप चिन्ता मत करो सब ठीक होगा। दिवाकर को खुशी के साथ ग्लानि भी हो रही थी, काश! मैं भी इसी तरह वक्त रहते बाबूजी को ये सुख दे पाता तो शायद मैं सच्ची श्रद्धांजली देने का हकदार होता।

गीत लय

डॉ आशा गुप्ता,
जमशेदपुर

तुम बनो कान्हा मनभावन
मैं अधरों पे शोभित बाँसुरी
तुम लय ताल सखे
मैं राधिका गीत लय की।
बरखा की छमछम बूँदों
छलछल बहता हृदय सरल,
प्रकृति के इस उपवन में
खिलखिलाता पुष्प,
सुरभित पवन।
कोयल की कुहू ,
भ्रमरों का गुंजन
नाचे मयूर संतरगी मन।
तुम बनो कान्हा मनभावन
मैं अधरों पे बाँसुरी.....।
जीवन की जटिल ग्रंथियाँ
सुलझाएं तन से मन से
कुछ सुर रहे उस कालचक्र में
नुपूर बजे छुम छन नन।
तुम बनो कान्हा मनभावन
मैं अधरों पे शोभित बाँसुरी.....।
चिर काल से आश है व्याकुल
भ्रमित यहाँ मानव सकल
हृदय द्रवित, तृष्णा प्रबल
मान्वता, पैठी व्यथा,
मर्म अटल।
रागिनी स्नेह सुमधुर जो छिड़े
मृदुल भाव जो जग जावे
चंदन हृदय जग प्राणी का
सत्यम शिवम् की हो अनुभूति
पल जो अभिनन्दन हो जावे।
मैं संवेदनाओ की नदिया
संगम सागर से हो जावे।
तन पारिजात, मन पावन हो
जीवन लक्ष्य जो मिल जावे।
तुम बनो कान्हा मनभावन
मैं अधरों पे शोभित बाँसुरी.....।

ग़ज़ल

सीमा गुप्ता, गुड़गाँव

प्यार का दर्द भी काम आएगा दवा बनकर,
आप आ जएँ अगर काश मसीहा बनकर।
तुम मिरे साथ जो होते तो बहारें होतीं,
चीखते फिरते न सहराओं की सदा बनकर।
मैंने हसरत से निगाहों को उठा रक्खा है,
तुम नजर आओ तो महताब की जिया बनकर।
मैं तुझे दिल में बुरा कहना अगर चाहूँ भी,
लफ्ज़ होंटों पे चले आएंगे दुआ बनकर।
मैं किसी शाख पे करती हूँ नशेमन तामीर,
तुम भी गुलशन में रहो खुशबुओ सबा बनकर।
मुन्तज़िर बैठी हूँ इक उम्र से तश्ना 'सीमा',
सहने –दिल पे वो न बरसा कभी घटा बनकर।

धूप ने जाल यूँ बिछाया है,
दूर तक रास्तों में साया है।
हम तेरे नाज़ भी उठा लेंगे,
उम्र भर बोझ ही उठाया है।
तेरी भाषा नहीं तेरी अपनी,
किसने आखिर तुझे पढ़ाया है।
नाग सोचा किये है इन्सा ने,
जहर इतना कहाँ से पाया है।
उसकी बातें जो मीठी–मीठी थीं,
जायका अब समझ में आया है।
जिसकी खातिर मैं जी रही 'सीमा'
वो भी मेरा नहीं पराया है।

मुहब्बत के चश्में

– सुनीता खोखा, नोएडा

सुनो.....
तुम्हारी बनाई हुई सरहदें
मेरे मीठे गीतों को
कैद नहीं कर पाएंगी.....
मैं
खुश्बू में लिपटे हुए
नग्में लिखती हूं
उनके लिए
ये नफ़रत की दीवारें बहुत छोटी हैं।
तुम
सत्ता की भूख से बेहाल
कत्लो–ग़ारत फैलाते हो
नस्लों को नशे में डूबो
बारुद बोते हो
हवाओं को खौफजदा कर
चाहते हो तुम
कि – जुबानों पर लग जाएं ताले
कलम हो जाए तुम्हारी बन्धक
पर भूल जाते हो ये
कि – शबनम की बूंदे हुक्म नहीं बजातीं
परिन्दे गुलामी नहीं करते
बारिशे हुक्मरानों के ईशारे नहीं समझतीं
कोई शहनशाह नही चुरा सका
तितलियों के परो से रंग
चांदनी बेधड़क बरसती है
महल व झोपड़ी में एक संग
सुनो

बोटियों की तरह
बच्चियों का सौदा कर
आबरु का नाम ले
बहनों पर पहरे धर
कमसिन हाथों में बन्दूक थमा
भाई को भाई से लड़ा
तुम लाख अन्धेरे फैलाओ.....
मैं ..... डरूगी नहीं
मैं ..... जन्मती रही हूं
जन्मती रहूगी
ऐसी औलाद.....
जो हमेशा यकीन रखेगी
अमनो–चैन में
जो हमेश मानेगी ये–
कि वक्त की टहनी पर
उगेंगे ऐसे लम्हे
जहां हसंगे बच्चे खिलखिलाकर
पाजेब के घुंघरूओं की आवाज
दबा लेगी फौजी बूटों की टपटप को
जानते हो.....
अनन्त प्रकाशपुंजो को
सृजती मैं
तुम्हानी वर्जनाओं को
सिर्फ और सिर्फ
इसलिए सहती आई हूँ
क्यों
मैं जानती हूँ कि
'मैं'
इस धरती पर
हूँ ही इसलिए
कि खिलते रहे प्यार के फूल
और
सूखने न पाएं
मुहब्बत के चश्में।

बाती

डॉ. अभिनेष शर्मा,
अलीगढ़

नेह के इन्तजार में
स्नेह की बाती जली
जब भी दीप जला तब
बेचारी बाती ही जली
चाह हृदय में एक रही
राह सब रोशन रहे
दम भर इस आस में
बन प्रतीक्षा बाती जली
उदास सारी उर की राहें
भीगी नेह की ओस से
निरश सी यह निगाहें
झुकीं आँसुओं के बोझ से
तुम को शायद दूर कर दे
यह उजालों की किरण
मगर रात भर दीप के
नाम पर बाती जली
कल कहीं जब चर्चा होगा
दीप मुस्कुराएगा यहीं
राख बन कर राह में
रह जायेगी बाती यहीं
कौन जाने वो उमंगें
जो राख बनकर बिखरीं
यहीं
कह रहे बस यही लो
दीप की बाती जली।

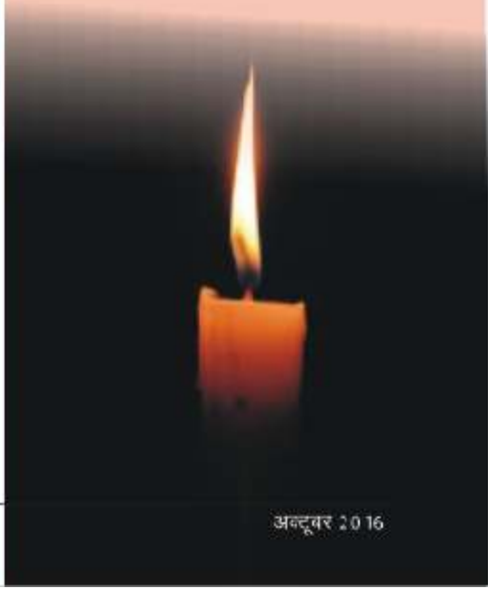

दोहे :

सूना सूना घर

– डॉ कमला माहेश्वरी
'कमल', बदायूँ

सूना–सूना घर–ऊँगन, सूना हृदय जहाँन।
इक तुम बिन निःशेष पिय, हिय अवसादिक गान।।
धीरहु धीर न धरत अब, कहाँ गुहारूँ जाय।
आग लगी या हिया मे, कौन सरस दे राय।।
भुज–माल छीनी झपट, अश्रु–माल दे हाथ।
निष्ठुर विधि ने कर दिया छिन्न–भिन्न पिय साथ।।
पति "बृजमोहन" नम था, मैं "कमला" थी वाम।
फिर विधि तुमको क्यों दिया, तोड़ युगल छवि धाम।।
कित खोजूँ को बुझ लूँ? सखा गये जहँ छोड़।
तम बिन बीहड सा लगे, जीवन का हर मोड़।।
सात जन्म के सँग की, सँह लई चिति लाय।
बीच भँवर जोगी बने, भंग रंग कर हाय।।
किया दान नदिया दिया, जाओ पिय निज राह।
हिया फट, नभ रो गया, कह न प्रीति की चाह।।
पहले बाहर थे बसे, अब दिल गए समाय।
रोम–रोम में रम रहे, सजन बिना ही काय।।
अर्घ्यंजलि पिय दे रही, निज असुँअन की धार।
जहाँ रहो तुम खुश रहो, मिलें सुखद आगार।।

'कालजयी' की सम्पादक डॉ० कमला 'कमल बदायूँनी' के जीवनसाथी श्री बृजमोहन लाल माहेश्वरी जी 26 मार्च 2016 को बिछड़ गये। उनके वियोग में रची तीन रचनायें।

हिया में बैठ कर

हिया में बैठ कर मुझसे, लिखाते हो कहानी क्यों?
निकल कर क्यों नहीं बाहर, दिखाते हो निशानी क्यों?
विभू के पास पहुँचे हो, मिलें होगे, वहाँ पर तो
मिलन कैसा रहा बोलो, बताते ना जुबानी क्यों?
यहाँ तो गूँज थी स्वर में, वहाँ भी गूँजता होगा
पता ना सच बताओ तो, बने ऐसे हिमानी क्यों?
रवानी थी जवानी में, बहुत तेरे भी आशिक थे,
बताते थे सभी को तो, हमीं से फिर छिपानी क्यों?
बने आलोक सम्वाही, हमें क्यों छोड़ जाते हो
"कमल" को संग ले लेते, बनाते हो विरानी क्यों?

पाकर पिया के प्यार को, कृत–कृत्य हो गये
जन्मान्तरों के पुण्य मनु, अभिजित्य हो गये।
रँग कर पिया की प्रीति में, दुनियाँ सिमट गयी
अन्तर तलक अनुरक्त हो, हम भृत्य हो गये।
किस विधि विमुख हो रूठ यूँ, शिवलय विलय हुए
आई दया ना रंच भी तुम नित्य हो गये।
कैसे रहूँ बता तो दो, कैसे जिऊँ–मरूँ
आकर तनिक निहारो तो, निःशक्त्य हो गये।
बन्धन बँधे वैधव्य के, जग–रीति ने दिये
मंगलमयी हर कृत्य हित, अस्पृश्य हो गये।
सुधियाँ सताती हैं हमें, कर–कर अधीर हैं
लगता यही है रिक्त–घट, सातत्य हो गये।
देखूँ जिधर भी उधर ही, दिखते मुझे जहाँ
फिर भी 'कमल' अधिकार सब, अधिपत्य हो गये।

ग़ज़ल

अपना समझ जिसे दर्द बया की,
तो अनेकों तरह के बहाने को देखा।
मुहब्बत की ऐसी मिसालें मिलीं की,
मतलब से ही दिल लगाने को देखा।
उपर से मुलम्मा भीतर–भीतर नश्तर,
आमद, आमदनी व कमाने को देखा।
जहन्नुम में दुनिया चली जाये लेकिन,
अपने को जन्नत में जाने को देखा।
'अनारी' की तरह जो जीते हैं जग में,
उन्हें मुश्किलों में फँसाने को देखा।

बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'
बलिया

गिरगिट

अरूण कुमार चौबे
देवरिया

एक गिरगिट दिशा भटक गया
दूसरे लॉन में जाकर अटक गया
यहाँ दिनभर मैं ही घबरा गया
यहाँ कोई बड़ा गिरगिट रहता है
जो दिन भर हजारो रंग बदलता है
एक और गिरगिट टहलते हुए आ गया
भटके हुए को असलियत बता गया
यह एक नेता का मकान है
उन्हीं का ये लान है।

कवि सम्मेलन

रात के दो बजे थे
सोये हुऐ कवि अब
मंच पर सजे थे
एक व्यक्ति दिखाई दिया
बरबस पूछ लिया
क्या कवि सम्मेलन
शुरु नही हुआ
खीजकर बोला
हुआ–हुआ–हुआ
मेरे लिए तुम
ईश्वर से मांगो दुआ
मैं टैन्टवाला हूँ।

मैं हूँ अपना मूर्तिकार

– डॉ. हरिविलास चौधरी 'शक्तिबोध', दिल्ली

मैं पूछ रहा अपने मन से, जीवन की संध्या में आकर,
जाना है अब किस ओर कहाँ! अपने को इस गति में पाकर।
लाकर गति में निज चिंतन को, मैं क्या सोचूं निज जीवन हित,
अपना भूला विसरा–जोवन, या नव–कल के उल्लास अमित।
नित रहूं नियति के संग बैठ, या रच लाऊँ विश्वास नवल,
मन–मुदित रहूँ अपनेपन में, या चाहूं जन–जन का मंगल।
पल–पल जीकर इस जीवन को मैं किस प्रकार साकार करूँ,
बीती सुर–राग सुनाऊँ नैं, या नित नवीन आधार धरूँ।
अब वरूँ कौन जीवन–पथ को, जिससे पाऊँ मैं सुख अपार,
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार।

मेरा चिंतन आशावादी, आशा के दीप जलाऊँगा,
इस जीवन के दुर्गम पथ पर, मैं चल कर तमस हटाऊँगा।
अपने हित में सुख लाऊँगा, सबके ही हित का चिंतन कर,
दृढ़ भाव लिये अंतर्मन में, सब जीव–जगत के हित सुखकर।
निज डगर रहेगी उनके सँग, जिनका मुझपर उपकार विपुल,
जिनसे मैं अपना तन पाया, जिनसे मैं पाया प्यार अतुल।
जीवन–कुल हित मैं गाऊँगा, जिनसे मैं लाया निज सुर–स्वर,
उनकी गति संग मैं पाऊंगा नवजीवन, त्यजकर तन नश्वर।
लेखनी सहित निज कर से मैं, निज गुरुपन का लेकर पुकार,
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचारा।
निज धरा हेतु मैं गाऊँगा, लेकर कुछ आशामय सुर स्वर,
जिस पर है मनुज जिया जीवन, पाकर रज–कण से तन नश्वर।
हो रहा अमर वह इस भव में, पथ पर रचकर आशा अनंत,
उस भव की गाथा गाऊँगा, गूजूँगा क्षिति संग, दिग–दिगंत।
हो अंत नहीं इस धरणी का, इसके हित संयम होगा नित,
निज आशाओं को सीमित कर, पाऊँगा इसका प्यार अमित।
आधार हमारे हित यह है, अपने हित में इसके कण–कण,
कर्तव्य हमारा यह होगा, यह रहे हमारा शुचि दर्पण।
प्रण अपना होगा यह सदैव, हम संग हो वसुधा निर्विकार,
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार।

वसुधा के गीत सुनाऊँगा, लेकर इसका आतुर पुकार,
निर्मलता इसकी सिमट रही, तन–मन का दुख लेकर अपार।
इसकी बहार है क्षीण हुयी, हरियाली किससे रूठ रही?
है पात–पात सब मुरझाये, तन में वसंत है कहीं नहीं।
हैं नहीं वही जिनसे सुर लय हम पाते थे नित, जीवन में,
कोयल की मीठी मधुर तान, मृग–कुल संग सुंदर से वन में।
तन में वसुधा के पीड़ा है, झर–निर्झर नदियाँ व्यथित आज,
इनकी धारा को दूषित कर, निश्चित पड़ा अपना समाज
आवाज़ हमारा यह होगा, हम लायेंगे भू पर बहार,
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार

मानव मैं हूँ अपने तन से, इतिहास हमारा आशामय
सागर से चल कर हिमगिरि तक आया हूँ मैं होकर तन्मय
जो समय कठिन थे पीछे हैं, उनके हित करना है चिंतन
पथ के संगी अपने सहचर, जिनके संग बीते हैं जीवन
तन अपना उनके हित हो तो, अपना भी इसमें है मंगल,
सब जीव हमारे हित ही हैं, उनहीं के संग थे जीवन पल
हैं जीव सकल परिवार एक, कल्याण सभी का एक संग
करके मानव सुख पायेगा, लायेगा जीवन में तरंग
बहु रंग धरा पर आयेगा, यह है जीवन कुल की गुहार
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार

यह चेतन तन, मानव–कुल का, जीवन–कुल का है द्रुत विकास,
जाने को यह, अनंत नभ में, पाया इसमें अनुपम निकास
इतिहास सकल जीवन पथ का, सब जीव–जगत से है प्रयुक्त,
आशाओं को कर से बाँधे, दुश्चिंतन से होकर विमुक्त
संयुक्त किये चेतना सकल, मानव इस भव का है दर्पण,
जीवन–कुल की संपदा विपुल, मानव चिंतन हित है अर्पण
प्रण के संग मानव उद्यत है, संग में लेकर चेतना सकल,
नित नये क्षितिज को पाने को, रखने को निज भविष्य उज्जवल
निर्मल भावों के सथ मनुज, मानवता को देगा संवार,
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार

धरती पर यह मानव जीवन, भावों से बंधकर है आया,
शिशुपन से लेकर गुरुपन तक, अनुराग विविध विधि है पाया,
लाया है यह इस जीवन संग, बाँधे बंधन के राग विपुल
मां की ममता, करुणा के संग, लेकर निज गृह का प्यार अतुल,
संकुल जोवन इसके संग था, नित रहा प्रगति संग यह पथ पर,
बाधयें आयीं थीं मग मे, पर बीत गयीं, वे थी नश्वर
सुन्दर अब इसका है भविष्य, आयाम सुखद हैं, हैं अपार,
बंधकर निज कुल को बाहों में, जीवन में पायेगा निखार
हैं द्वार खुले आशाओं हित, पाकर अपने कुल का दुलार
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार

मानव का सुंदर तन पकर, लाऊंगा भव को चिंतन में,
जीवन–कुल हित अनुराग, त्याग, लेकर अपने अंतर्मन में
मन में मृदुभाव रचाऊँगा, भव के समस्त रचनाओं हित,
सूक्ष्माति सूक्ष्म, सब वृहदकाय, मेरे चिंतन मे होंगे नित,
मृदुराग अमित, जीवन कुल हित, दिखलाऊँगा मैं निज प्रण में,
लाऊँगा इनके मूर्त रूप, निज दिनचर्या के प्रकरण में
कण–कण में भव के, पाऊँगा, निज मानव–कुल की छवि, गरिमा,
इनके सँग मिल कर गाऊँगा, इनके ही गुण, वैभव, महिमा
प्रतिमा मेरी इनसे होगी, मैं ही हूँ अपना मूर्तिकार,
जीवन की ढलती संध्या में, उठ आये मन में कुछ विचार
मेरा चिंतन आशावादी मैं ही हूँ अपना मूर्तिकार

कचोटती यादें

–बबिता जैन, नलबाड़ी

कुछ खट्टी कुछ मीठी बातें
चटक मटक सी प्यारी रातें
बचपन में लिखे
डायरी के पन्नों
के वे शब्द
आज आ गए
दिवाली की सफाई
के दौरान नजर
मन हो बैठा बावला
कई पुराने पन्ने पलट गए
एक साथ
वो भी
जिन पर वक्त के साथ
जम गया था
धूल का पहाड़
दर्द की पीड़ा थी बेमिसाल
इतनी धूल को रौंद कर
बाहर आई गादें
कचोट गई मन को
बचपन में जिन रिश्तों
के बिना जीना था
दो पल के लिए भी भारी
आज
वर्षों बाद
उनकी याद भी आई
तो
एक बहाने से.....
आज जो है
हमारे अजीज
जी नहीं सकते
जिनके बिना

एक पल
कल क्या
वो भी हो जायेंगे बेगाने?
क्या याद आयेंगे वो भी
फिर किसी बहाने?
अगर यही है जिंदगी .....
तो फिर क्यों इतना
क्लेश पालें ?
हर किसी को अपना
क्यों ना हम खास बना लें?
फिर किसी खास को
भूलने का अफसोस
भी नहीं होगा .....
कोई आम ही फिर अपना तो खास होगा
.....

कर देती इनकार

सुनीता 'सुमन', बेगूसराय

कब होता होगा तुझे
रौंदने वालों से प्यार ,
किन्तु हर बार अपनी नियति मान
रौंदाने हेतु हो जाती है तैयार ,
कब देखा किसी नें तेरा रुदन
कब सुना किसी ने तेरा चित्कार ,
नुस्कुराया काँटों में भी पलकर
अपने तोड़े जाने पर भी न किया इनकार !!
एक बार बस एक बार
काश...कि ,
साहस कर, कर देती इनकार
नियति को भी कर देती पलटवार
किसी को भी न देती
खुद को तोड़ने या
रौंदने का अधिकार
तो सम्पूर्ण सृष्टि हीं
आज कर रही होती
तेरी जय–जयकार.....!!

ग़ज़ल

–श्रुति सिन्हा, आगरा

भूख के और प्यास के मंज़र।
गेह के बल हैं विकास के मंज़र।।

धुँध ही धुँध जब निगाहों में।
दूर लगते हैं पास के मंज़र।।

तन पर परिधान इस तरह से कुछ।
उरियाँ–उरियाँ लिबास के मंज़र।।

शीरनीं गुम हो गई ज़ुबानों की।
कड़वे–कड़वे विकास के मंज़र।।

साँप सूघें हुए से लगते हैं।
'श्रुति' होशोहवास के मंज़र।।

अज़्म हर बार, चुटकुले निकले।
ख़्वाब पानी के बुलबुले निकले।।

चौथड़ों–कौचड़ों के पाले हुए थे।
सब के सब दूध के धुले निकले।।

रोशनी और हो गई कली।
धुंध के और सिलसिले निकले।।

ज़िनसे उम्मीद थी दिलेरी की।
वो तो दिलदार दिलजले निकले।।

ढूँढने पानियों के नक़्शे।
'श्रुति' सहरा में क़ाफ़िले निकले।।

लौट आ मेरे बचपन

तारा प्रकाश, मुज़फ़्फरनगर

जो जाके ना आए,
वो बचपन देखा
जो आके ना जाए
वो बुढापा देखा।
सच कहूँ
जिंदगी का यही सच
अब देख रही हूँ मैं भी
और
जिंदगी के कदम
दिन–प्रतिदिन
बढ़ते जा रहे हैं
अंतिम मंजिल की तरफ
जिसे कहते हैं सभी
मृत्यु!
बचपन,
प्यारा बचपन
मेरा भोला–भोला बचपन
बहुत याद आता है मुझें
बार बार!
उस बचपन में
चिंताओं के अंबार नहीं थे
थी तो बस
लाजवाब बेफिक्री
खूब खेलना
कभी हँसना
तो कभी रोना
जरा–जरा सी बात पर
,रुठना जमकर
और फिर
तुरत–फुरत
खुश हो जाना।
अब तो मेरा ये अंहकार
जरा–सी बात पर
जहर भर देता है
मेरी सोच मे,
और
अपनों की ही बातें
कुरेद कुरेद जाती है
जख्म
जो
तड़पाते हैं बहुत रात–दिन!
अहकार का विषैला साँप
अपनों से भी मुझे
कर देता है दूर
और जाने कब ईर्ष्या, द्वेष अं
प्रतिहिंसा
अनजाने डेरा जमा लेते हैं
मन पर मेरे
ममता कहती है मुझसे–
अरी पगली!
अपने ही तो हैं
भूल जा
रुठ मत, मान जा,
तभी अहं का नाग फुंकारता है,
नहीं–नहीं, तेरा अपमान हुआ है
बदला लें,
मत बैठ चुप होकर,
और तब
रातों बेचैन होकर
करवट बदलती हूँ।
तब
कहती हूँ बेजार होकर मैं–
लौट आ, मेरे बचपन
लौट आ!
मुझें फिर से
बच्चा बना दे।

पीड़ा तू क्यों इतनी सुन्दर!

डॉ. मनीषा जैन, छिंदवाड़ा

पीड़ा तू क्यों इतनी सुन्दर
एक तेरे स्पर्श मात्र से
मुझे प्रेम का मिला समुन्दर
कल तक जो मेरे सुख सागर में
बेगाने से आकर मिलते थे
आज तेरे मिल जाने भर से
गले लगाकर संग चलते हैं
कितनी दौलत मिली आज जब
तूने नज़र भर मुझको देखा
कितना बेदर्द था सोने का सुख
जिसने छल कर दे दिया धोखा
अपनापन बस तेरे ही अंदर
जितना जीवन हँसते बीता
उतना ही हृदय हुआ रीता
जब छू ली पीड़ा की परछाई
जीवन ने ली नूतन अंगड़ाई
जब शूल हृदयी को बींध रहा
पीड़ा का जाल हुलसता था
सुख में जो दूर हुए अपने
उन सबका प्रेम छलकता था
कैसी चाहत के साथ हुई तू इतनी सुंदर!

तोड़ी मैंने परम्पराएं

– गीता विश्वकर्मा 'नेह', कोरबा

आज युगों की व्यथा भुलाकर,
थोड़ी सी मुस्कान के लिए
तोड़ी मैंने परम्पराएं।

दिया खुला आंगन बिटियों को खुशियां खिलकर मुस्काएं
खोल दिया पिंजरे सा बंधन, किया स्वतंत्र आएं–जाएं
आज बरांती छटा दिलाकर, थोड़े से गुरकान के लिए
गूंथी मैंने लघु मालाएं।

रोज़ बिसुरते रिश्ते नाते, भावुकता के हृदय पीर को,
सूखे–सूखे दृग के रूखे, उद्वेगों से रूके नीर के,
आज प्रेम रस का सिंचन कर, थोड़े से संवेग के लिए
खोली मन की सब कुण्ठाएं।

पथ में आज अकेले सब हैं, ठौर नहीं अपनेपन का,
आतंकित हैं गन ही गन में, नहीं भरोसा जन गन का
आज प्रिया विष, सुख अर्पण कर छोटे से अनुबंध केलिए
मानवता हित ली पीडाएं।

शब्दांकुर

गहराइयों से जूझता हुआ शब्द
जब पृथ्वी के स्तर पर
तन्हा सा अँकुआता है।
घेर लेते है तब
किरणों के बवाल
हवाएँ पूछती हैं
शब्द का मायाजाल
बारिश उकेरती है
उसके होने का सच
सारी व्यवस्थाओं में स्वाभिमान होकर
शब्द पनपाता है अपनी भंगिमाएँ
कुछ पर्याय, कुछ समानार्थी
और विरोधियों का अर्थ

ताकि
साबित कर सके अपने होने का सच।
अंततः जूझता शब्दांकुर कब कहीं
वटवृक्ष होकर
अनेकार्थी हो जाता है।
शब्दकोश में अपनी
सत्ता जमाने के लिए।

'कालजयी' की हुँकार

–रंजना झा, सीतामढ़ी

कभी किसी काल में,
वर्जित थी मेरे लिए
वेद की ऋचाएँ।
और तब मैं,
बन गई थी
गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा।
जब तुम्हारे
शक्ति के अहंकार से
नष्ट हो रही थी सृष्टि
मैं ही तो बनी थी
काली, कपाली और दुर्गा।
जब तुमने
समेटना चाहा
हमारी संवदेनाओं की दूरियाँ
लाँघकर सरहदें
मैं ही तो हुई थी
मदर टेरेसा।
फिर जब काटना, चाहा
मेरी नर्म मुलायम पाँखें
सीमित करना चाहा
मेरा आकाश
जाके चाँद–तारों में
मैं ही तो बसी थी
बनके कल्पना चावला।
और आज
तुमने लगाये हैं पहरे
हमारे जन्मने पर
हँसने पर, रोने पर
हमारी कामना, ऐषणा
हँसी और खुशी पर।
छीन लेना चाहते हो
मुझसे मेरी
अभिव्यक्ति का अधिकार।
पर मैं कहाँ रहूँगी मौन
नहीं मानूँगी हार।
और इसीलिए
सहस्त्रों मुख से
मैं हो गई हूँ मुखर
और बन गई हूँ
आज
'कालजयी' की हुँकार।

भारत ही मशाल उठायेगा

वैश्विक क्रांति सफल होगी
अब वांछित कल आयेगा
लोक हितग्राही स्पष्ट भाव ही
सुख समृद्धि लायेगा।
तमाम चुनौतियाँ नत मस्तक है
दृढ़ संकल्पों के आगे
नीति विचार सामाजिकता में
मूल्य निष्ठता है आगे।
विश्वव्यापी समस्याओं का
अंत समय अब आयेगा
समग्र चिन्तन समाधान ही
उज्जवल पथ दर्शायेगा
अपसंस्कृति, अनीति, अज्ञ का
अंधकार मिट जायेगा।
सम्यक दृष्टि सनातना ही
सुख शान्ति का द्योतक है
विश्वबधुत्व की प्रबल प्रेरणा से
जनमानस प्रेरित है।
राष्ट्रों में वचारिक सहमति
सुख समृद्धि लाती है।
सत्य अहिंसा और प्रेम की
पावन ज्योति जलानी है।
त्याग तपस्या क्षमाशीलता
का परचम लहरायेंगे
विश्वमंच पर एकत्रित हो
उत्साव सादा मनायेंगे।
युग प्रवर्तक आर्यवृती हम
हम युग के आराधक हैं
सदा पक्षधर रहे शांति के
सेवक हैं हम साधक हैं।
निश्चित है भारत ही एक दिन
क्रांति मशाल उठायेगा
तब विश्वव्यापी समस्याओं का
अंधकार मिट जायेगा।

– आराधना श्रीवास्तव, आगरा

तलाश घर की

–डॉ. अनसूया अग्रवाल, महासमुंद

मैं मोम की पुत्तलिका नहीं
मैं कोमल और चिकनी नहीं
है असीम ताप
और प्रखर ज्वाला मुझमें
पर तेरा दुलार
ठंडा ठहराव है
इस निरवधि काल मे
मुझे तलाश है घर की
पर
कविताओं का घर
कहानियों का घर
शब्दों का पारदर्शी घर नहीं
मुझे घर चाहिए
घर
आश्रय नहीं
स्थायीत्व चाहिए
शरण नहीं
जहाँ अपनी
अंतश्चेतना और शक्ति संजोकर
संकल्पबद्ध हो सकूं
पल–पल मैं
मुझको तलाश है घर की, घर की।

ग़ज़ल

–डॉ0 इसहाक़ तबीब, बदायूँ

धोखे ही खाता रहता है यह भोला इंसान सदा,
छलते रहते हैं पग–पग पर जीवन के व्यवधान सदा।

रखते हैं जो दूर हृदय से अति घातक अभिमान सदा,
रूप में अच्छे प्राणी के वे पाते हैं सम्मान सदा।

कर लो विकसित बोध को अपने शिक्षा से तुम हे साथी,
देता है सम्मान जगत में, अपना–अपना ज्ञान सदा।

सृष्टा को क्यों ढूँढ़ रहे हो, दुनिया में तुम इधर–उधर,
सृष्टा तो रहता है सब के, अंतस में विद्यमान सदा।

तीव्र लगन हो दस्तक में तो खुल जाते हैं द्वार सभी,
खोला करते गाँठें मन की अत्युत्तम अभिधान सदा।

द्वार भवन का बनवाओ तो, बनवाना कुछ ऊँचा तुम,
रह जाएंगे बाहर वरना आदमकद इंसान सदा।

कोशिश में तम फैलाने की हैं अब भी कुछ लोग तबीब,
दिखता है सूरज सा फिर भी अपना हिन्दुस्तान सदा।

असमिया और हिंदी का संबंध

जन्म 1955 : डी.सी.बी. गर्ल्स कॉलेज, जोरहट से अंग्रेजी में बी.ए.(ऑनर्स), 1980 से पी.डब्लू.डी.असम में कार्यरत, अब अवकाश प्राप्त; रेडक्रॉस की आजीवन सदस्या, लॉयन्स क्लब की अध्यक्षा। यूरोप, आस्ट्रेलिया, जापान, अमेरिका, दक्षिण एशिया का भ्रमण। प्रकाशित पुस्तकें; श्रद्धार्थ, परछाई, खाइये–खिलाइये, गणतंत्र संवाद, गुलस्ता, प्रेमोर प्रहेलिका, आप्यायन।

– रूनू बरुवा,
जोरहाट

हिंदी और असमिया भाषा एक ही माता की दो संताने हैं। इसलिए इनका संबंध भी सहोदर भाई–बहनों की तरह ही है । सहोदर भाई–बहनों में झगड़ा अथवा मनमुटाव होना स्वाभाविक है परंतु इससे रक्त संबंध टूट नहीं जाता। आज हम देखते हैं कि कहीं हिंदीभाषी के नाम से तो कहीं असमिया भाषी के नाम से आपसी सबंधों में कड़वाहट पैदा हो रही है। इसका प्रमुख कारण है लोगों में इन दोनों भाषाओं के आपसी संबंध और उत्पत्ति के श्रोत के विषय में अज्ञानता। भाषा मन के भावों को प्रदर्शित करने का अति सरल माध्यम है। जो भाषा अन्य भाषओं के उन शब्दों को ग्रहण करती है, जो उसकी भाषा में न हो, वो भाषा समृद्धि और लोकप्रियता पाती है। परंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि अपनी भाषा या बोली को विकृत किया जाए या उसकी अवहेलना की जाय। भाषा ही एक जाति की पहचान है, उसका गौरव है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। हर प्रांत को जोड़ने का इसे श्रेय प्राप्त है। सहज, सरल भाषा होने के कारण तथा हर रंग में घुल जाने की क्षमता रखने के कारण जिस प्रकार भी बोली जाए, भले हो व्याकरण गलत हो, उच्चारण गलत हो, परंतु इसे हर कोई समझ ही लेता है।

उदाहरण के लिए असमिया में च का उच्चारण स होने से चाचा सासा हो जाता है। चम्मच सामूस हो जाता है। एक सामूस दवा ले लो – यह समझना कठिन नहीं है। व्याकरण का पूर्ण ज्ञान न होने के कारण स्त्रीलिंग और पुलिंग का व्यवहार भी गलत होता है। जैसे चाची आता है, मौसी जाता है, मां खाना खाएगा ..... इत्यादि। परंतु सहोदर जिस प्रकार एक–दूसरे की समझ लेते है, पहचान लेते हैं, उसी प्रकार यह दोनों भाषाएं एक–दूसरे को पहचान लेती हैं। समय के साथ इतिहास बदलता है। एक संस्कृति दूसरी संस्कृति से मिलती है, प्रभाव डालती है। कभी युद्ध में जय–पराजय, कभी विज्ञजनों के ज्ञान के आदान–प्रदान के माध्यम से तो कभी विवाह के संपर्कों के कारण अलग–अलग संस्कृतियों का आपस में मिलाप होता है। परंतु तात्पर्यपूर्ण बात यह है कि अपनी पहचान खोए बिना एक जाति, एक संस्कृति दूसरी जाति से उसकी भाषा और संस्कृति से क्या–क्या चीज अपनाती है। कहते हैं, हंस दूध और पानी के मिलावट के बाद भी सिर्फ दूध ही अपनी चोच से पी लेता है और पानी को छोड़ देता है। उसी प्रकार एक भाषा और संस्कृति दूसरी भाषा और संस्कृति से अगर सिर्फ उत्कृष्ट ज्ञान और व्यवहार को अपनाये तो वह भाषा और संस्कृति और ज्यादा समृद्धशाली और प्रभावशाली होगी। आज के युग में आप देखेंगे की हिंदीभाषियों का असमिया भाषा के ज्ञान का क्षेत्र वृहद होता जा रहा है।

रुपकुंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाला ने हिन्दीभाषी होने के बावजूद असमिया साहित्य को एक नयी ऊंचाई दी, एक नयी दिशा दी। उनके गीत आज असमिया जन–जीवन में अपना एक विशेष्ट स्थान बना चुके हैं। उनका संगीत ज्योति संगीत के रुप में असमिया संगीत जगत में अमरत्व प्राप्त कर चुका है। उनका योगदान असमिया साहित्य में भी अमर रहेगा। आज जरुरत है तो इस बात की जो असमिया लोग हिंदी सीखते हैं और इस भाषा को इस प्रांत में सम्मान तथा चर्चा का विषय बनाने में प्रयत्नशील हैं, उन्हें इसका समुचित श्रेय मिलना चाहिए। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि जिस प्रकार की हिन्दी कार्यशाला, तेजपुर के रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरडीओ), जो रक्षा मंत्रालय (डिफेंस मिनिस्ट्री) के अंतर्गत है, हरसाल आयोजित करता है, वह बड़ा ही प्रशंसनीय कदम है। असम के अलग अलग प्रांतों में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों की आवश्यकता है। हिंदी का दायरा बड़ा है। इसके माध्यम से हम अपनी भाषा संस्कृति अर्थात असमिया भाषा और संस्कृति को हिंदी साहित्य से जोड़कर दोनों साहित्यों के अनुवाद के माध्यम से पूरे देश में लोकप्रिय बना सकते है।

श्रीमंत शंकरदेव असम की पहचान हैं। असम की आत्मा है, परंतु इनके विषय में दूसरे प्रांतों में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। इसका मुख्य कारण है कि इनके साहित्य और कला का अनुवाद और प्रचार–प्रसार अभी तक पूरी तरह से नहीं हो सका है। इनका भारत भ्रमण करना और हिंदू धर्म से संबंधित अपार ज्ञान का होना, असमिया साहित्य और कला, रहन–सहन आचरण के लिए वरदान स्वरुप हुआ। उन्होंने वैष्णव धर्म का प्रचार एवं प्रसार काव्य, गीत, नाट भाओना, नृत्य आदि के माध्यम से पूरे असम में किया।

साहित्य अकादमी विजेता डॉ. विमल फूकन की अंग्रेजी में लिखी पुस्तक "श्रीमन्त शंकरदेव वैष्णव संत ऑफ आसाम" श्रीमन्त शकरदेव की जीवनी तथा उनके कार्यों पर अवलोकन करती है। काश! ऐसी पुस्तक हिन्दी में होती या फिर श्रीमन्त शंकरदेव के साहित्य का हिन्दी में अनुवाद होता। अब यह एक अलग विषय है कि क्यों नहीं होता। लिखने वाले अगर मिल भी जाए तो प्रकाशक नहीं मिलते। लेखकों, अनुवादकों को उत्साहित करने के लिए व्यापक चेष्टा का अभाव है। खैर श्रीमन्त शंकरदेव जी ने ब्रजावली का प्रयोग अपने पदों में, गीतों में किया है। ब्रज की बोली हिन्दी का ही एक रूप है। श्रीमन्त शकरदेव की "कीर्तन घोषा" और माधवदेव की "नामघोषा" इनकी अमर कृतियां हैं। संस्कृत का ज्ञाता होने के बावजूद उन्होंने "बरगीत" और "अंकीया नाट", असमिया ब्रजावली में लिखा। असम की कला संस्कृति में वृंदावनी वस्त्र का भी एक अनूठा योगदान रहा है। यह श्रीमन्त शंकरदेव जी की ही सृष्टि व रचना है। कोचबिहार के राजकीय दरबार में श्रीमन्त शंकरदेव का आना–जाना था। राजकुंवर चिलाराय को वह वृंदावन में कृष्ण के लीला के विषय में बताया करते थे। राजकुंवर सुन–सुनकर रोमांचित होते थे और इसे अनुभव करने के लिए उन्होंने श्रीमन्त शंकरदेव जी के होंठों को सूंघने की इच्छा प्रकट की। तब श्रीमन्त शंकरदेव जी ने बरपेटा के पास तातीकुची के बुनकरों से चालीस गज लंबे कपड़े पर वृंदावन में हुई कृष्णलीला की झांकियों को बुनवाया। अपनी निगरानी और निर्देशन में उन्होंने बुनकरों से अपनी पसंद की झांकियों में अलग–अलग रंग के धागों को चुनकर बुनवाया। इस कपडे को तैयार होने में एक वर्ष का समय लगा। इस झांकियों वाले कपड़े का नाम पड़ा "वृंदावनी वस्त्र" है। समय के साथ यह वस्त्र कहीं लुप्त हो गया। चार सौ साल बाद यह वस्त्र दुबारा आविष्कार हुआ। सन् 1904 में ब्रितानी सेना के एक अफसर को यह तिब्बत के एक विहार (मोनेस्टरी) में मिला और वह इसे तिब्बत से ब्रिटेन ले गया।

85 सालों तक यह ब्रिटेन के म्यूजियम में तिब्बत के मोनेस्टरी से लायी गयी सिल्क (रेशम) के नाम से रही। यह असम से तिब्बत कैसे और क्यों पहुंचा, यह एक रहस्य ही है। फिर भी समझा जाता है कि उन दिनों लेन–देन का प्रचलन था और तिब्बत के साथ असम का लेन–देन वाला संपर्क था। बहुत संभव है कि इसी प्रथा के चलते यह वस्त्र तिब्बत के विहार में पहुंच गया। सन् 1992 में शोधकर्ताओं ने इस वस्त्र पर बुने गये कृष्ण के चित्र तथा रंगों के गाध्यम से निश्चित किया कि वह वृंदावनी वस्त्र ही था। अन्यथा बौद्ध विहार में हिन्दू धर्म की कलाकृति का कोई औचित्य न था।

असमिया भाषा, कला, संस्कृति को श्रीमन्त शंकरदेव ने एक नया आयाम दिया। हिन्दी जो संस्कृत से निकली, ब्रज, मैथिली आदि कितनी ही

भाषाओं के अपना चुकी है. वह श्रीनन्त शंकरदेव के द्वारा इस्तेमाल किये भाषा एवं साहित्य से जुडी है। कबीर के दोहे, नानक की वाणी, चैतन्य की भक्ति और श्रीमन्त शंकरदेव की विचार धारा एक ही वृक्ष पर अलग–अलग डाली पर खिलते पुष्प हैं। असमिया भाषा और हिंदी के संबंध को जानने के लिए असमिया भाषा के विषय में जानना जरुरी है। प्रचीन भारतीय आर्य भाषा से असमिया भाषा का उद्‌भव हुआ। यह भाषा कई स्तरों से गुजरकर दसवीं–एकादशवीं सदी में कामरूप में प्रतिष्ट हुई और फेर इसने अपना एक निजी रुप ले लिया।

वैदिक सत्कृत और लौकिक सस्कृत का मिश्रित रुप लेकर समय के साथ सरल होकर चारों दिशाओं में चार धारा में बह निकली। उत्तर में पैशाची प्राकृत, पश्चिम में शौरसेनी प्राकृत, दक्षिण में महाराष्ट्रीय प्राकृत और पूर्व में मगधी नाम लेकर मध्य भारतीय आर्य भाषा ने रास्ते में मिले विभिन्न जनगोष्टियों की भाषा से चुनिंदा शब्दों को अपनाकर, नयी जगह पर नयी भाषा की सृष्टि कर नव–भारतीय आर्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। उत्तर–पूर्व दिशा से अग्रसर हुई मगधी प्राकृत अंतिम स्तर में मगधी अपभ्रंश के रुप में कामरूप में प्रविष्ट हुइ। मिथिला में मैथिली, उड्रीसा में उड़िया, बंग में बंगाली और कामरूप में आकर इसने कामरुपी प्राकृत का नाम पाया। वृहत्तर कामरूप चारों पीट अर्थात कामपीठ, रत्नपीठ सुवर्णपीठ, सोमारपीठ के अंतर्गत यह क्षेत्र आता है। असम के अलावा भी तब उत्तर बंग के कोचबिहार और बांग्लादेश के अंदरूनी स्थानों में जैसे मैमनसिंह, सिलहट आदि में कामरूपी अपभ्रंश प्रचलित था।

सातवी सदी में चीन से व्हेनसांग जब कामरूप आया तो उसने पाया कि मध्यभारत अर्थात मगध क्षेत्र की भाषा और असम की भाषा में बहुत कम अंतर था। इन दोनों भाषाओं के अंतर और सादृश्य को मगधी प्राकृत और इस बड़े अंचल के अपभ्रंश प्राकृत से जोडा जा सकता है। उत्तर–पूर्व भारत में चर्य्या गीत व दोहों को साहित्यिक मर्यादा मिली थी, उसी प्रकार असम की कृतियों, जैसे लोहित्य पद, काल पद, भूसक पद आदि ने चर्य्या पदों को समृद्ध किया। समय के साथ बाद में राजनीतिक, सामाजिक, भौगोलिक आदि विभिन्न कारणों से कामरूपी अपभ्रंश से उत्पन्न हुई असमिया भाषा की परिसीमा संकुचित होने के साथ उसके लक्षणों में भी परिवर्तन आया।

वैदिक साहित्य के बाद लौकिक साहित्य स्वरूप अपभ्रंश साहित्य को तीन आंचलिक रूप में बांटा गया है पूर्व, पश्चिम और दक्षिणी अपभ्रंश। पश्चिम अंचल के अपभ्रंश से निकली हिंदी और गुजराती भाषा की सृष्टि हुई हिन्दी के साथ ही पाया गया है कि गुजराती शब्दों का भी असमिया भाषा के शब्दों के साथ बहुत सनानता है।

कृष्ण महिमा को प्रकाशित और प्रचारित करने के लिए साहित्यिकों ने जिस ब्रजबोली का इस्तेमाल किया, वह साधारण लोगों द्वारा आसानी से समझ आने वाली भाषा थी। मिथिला उस समय में संस्कृत पंडितों के रहने का एकमात्र स्थान था। संस्कृत के विद्यार्थियों का इस कारण मिथिला में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाना आवश्यक होता था। इस समय मिथिला भाषा को दूसरे साहित्यिक भाषा के रूप में ग्रहण करने के साथ मैथिली कवि विद्यापति का अनुकरण कर साहित्यिक और कवियों ने इस भाषा को व्यवहार में लाना शुरू किया। उस समय नव वैष्णव धर्म के प्रधान केन्द्रस्थल के रूप में मिथिला में एक सर्वमान्य भाषा की सृष्टि हुई। कामरूप के पंडित भी उस जगह भ्रमण करने के लिए गये और बाद में विद्यापति के द्वारा व्यवहार में लायी गयी भाषा को कृष्ण के जन्मस्थान की भाषा के रूप में माना और अपनी भषा में मिला कर जिस काव्य की सृष्टि की, उसका ब्रजबोली के नाम से नामकरण किया गया। यह भाषा ब्रजबोली के नाम से जानी जाने लगी। श्रीमन्त शंकरदेव की रचनाओं में इस भाषा का व्यवहार जनमानस में ब्रजधाम की भषा के रूप में लोकप्रियता पाने में सक्षम हुई

असमिया स्क्रिप्ट ब्राह्मी स्क्रिप्ट से ली गयी है। 5वीं और 9वीं सदी में पाये गये शिलालेख और ताम्र पत्रो से इसके बारे में पता चलता है। कामरुप की धारा के साथ असमिया भाषा अनेक रंग और रूप को अपना कर धनी होती गयी और वर्तमान रूप में पहुंची। इसके साहित्य और हिंदी के साहित्य का मेल सदियों पुराना है और इस बात को इन दो भाषाओं के इतिहास को अध्ययन करने से जाना जा सकता है। एक–दूसरे के साहित्य को समझने का आधार जितना बोलचाल में सहज प्रतीत होता है, उतना लेखनी में नहीं कारण अक्षरों की और उच्चारण की भिन्नता है परंतु अगर असमिया और हिन्दी दोनों को पढ़ना–लिखाना आता हो तो दोनों भाषाओं की समानता स्पष्ट हो जाती है। पानी, जल, भाग्य, माता, पिता, भाई, पत्नी, पति, स्त्री, स्वामी, पुष्प, फूल, वृक्ष, स्वर्ग, नर्क, जन्म, मृत्यु, प्रभु, दास, भगवान, देवी देवता, स्थान, ग्रहण, तिरस्कार आदि अनगिनत शब्द हैं, जो दोनो भाषाओं में व्यवहार किये जाते हैं।

संस्कृत से देवनागरी और प्राकृत से हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इस उत्पत्ति का कोई निर्दिष्ट समय नहीं रहा। दूसरी सदी में ब्रज, अवधी और अन्त में खडी बोली के रूप में इसका परिवर्तन हुआ। हजारों सालों के बाद भी यह बोलियां अभी भी एक बडी आबादी में प्रचलित हैं।

दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य में फारसी को राजभाषा का स्थान मिला था। खडी बोली में तब ढेरों फारसी और अरबी शब्दों का प्रवेश हुआ। इस तरह उस समय हिंदी भाषा की उत्पत्ति हुई। हिन्दवी, हिन्दी और उर्दू की मातृभाषा है। इन शासकों ने फारसी शब्द और अक्षरों के इस्तेमाल से हिन्दवी का दरबार में प्रयोग किया और इसे उर्दू का नाम दिया। हिन्दी और उर्दू में ज्यादा अंतर नही था। अंतर था तो सिर्फ अक्षरों का। आजादी के बाद लोगों ने हिन्दी से उर्दू के प्रभाव को हटाने के लिए संस्कृत शब्दों का उर्दू की जगह इस्तेमाल करना शुरू किया। इसे शुद्ध हिन्दी कहा गया।

हिन्दवी की सृष्टि अवधी, ब्रजभाषा के और फारसी तथा अरबी के सम्मिश्रण से हुई। बाद में हिन्दी एवं उर्दू हिन्दवी से निकले प्रचलित हिंदी, जो रोजमर्रा जीवन और कार्यों में इस्तेमाल की जाती है, वह सिर्फ संस्कृत ही नहीं बल्कि अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्दों से प्रभावित है। असमिया भाषा ने भी ब्रिटिश और मुगलों के संस्पर्श में आने के बाद फारसी, अरबी और अंग्रेजी शब्दों का अपनी भाषा में स्थान दिया है। परन्तु जिस प्रकार हिन्दी भाषा में हिन्दी शब्दों का अभाव नहीं है, उसी तरह असमिया भाषा में भी असमिया शब्दों का अभाव नहीं है। हिन्दी के विद्वत पंडितों ने अपने काव्य गीत, साहित्य में जिस प्रकार से शुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया है, उसी प्रकार असमिया भाषा का भी शुद्धता के साथ प्रयोग दोनों भाषाओं की निकटता को ही दर्शाता है। उदाहरण के लिए असमिया साहित्य के "बकुल वन" के कवि के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीय आनन्द चन्द्र बरुवा रचित कविता "जय ओंकार महावाणी" को अगर हिन्दी उच्चारण से पढ़ा जाए तो हिन्दीभाषी इसे बड़ी सरलता से समझ सकते हैं. कारण संस्कृत से उद्‌भव शब्द दोनों भाषओं में एक से हैं।

जय ओंकार महावाणी

जय ओंकार महावाणी
ज्ञान विकास रूप तत्व स्वरूप
ओंकार महावाणी
जय ओंकार महावाणी
असीम अनन्त अति
उर्द्ध उर्द्ध गति
महिमामंडित
महामोह खडित
जय ओंकार महावाणी
विश्व विलीन हो ओंकार ध्वनि लै
(में)
बर्तिले (फैला) चराचर
धन्य मानि
जय ओंकार महावाणी।

एक और उदाहरण देखिए, इन्हीं की ही रचित कविता है–:

श्री श्री शिव चतुर्दशी

देव–देव महादेव
नीलकंठविषहर
पतित पावन आर्त तारण
प्रलय कारण महादेव
डमड़ डमड़ बाजे डमरु

तुमि महादेव कल्पतरु
शांत शिव जगज्जीव
सर्वभूत नाथ तुमि महादेव।

श्रीमन्त शंकरदेव रचित "गुणमाला" के प्रथम अध्याय से घोषा का एक उदाहरण प्रस्तुत करती हूँ ; आप स्वयं असमिया और हिन्दी की निकटता की महसूस करेंगे।

घोषा
राम निरंजन पातक भंजन
पद
नमो नारायण संसार कारण।
भक्त तारण लोक्षार चरण।
तुमि निरंजन पातक भंजन।
दानव गंजन गोपिका रंजन।।
वेदांत गायक बंसी बायक।
जगत नायक मुकुति दायक।।
भक्तर (का) ऋद्धि करा सर्व सिद्धि।
विधातारो (का भी) विधि, दीन दयानिधि।।
भक्ति रोचन दुःख संकोचन।
पातक मोचन कमल लोचन।
दैत्य अन्तकारी गोवर्धनधारी।
भव भय हारी तुमि हि मुरारी।।
कालिकों दमिला पुतना शुषिला।
देव को तुषिला ब्रज की भुषिला।।
केशी वत्स वक समस्त दैत्यक।
लगायला चमक डराइला यमक।।
तुमि बारम्बार हुआ अवतार।
पृथ्वीर भार खंडिला अपार।।
इन्द्र को दमिला ब्रह्मायो नामेला।
ननत भ्रमिला गोपिको क्रिड़िला।।
तजु गुण नाम धर्म अनुपाम।
मोक्ष अर्थ काम साधा प्रभु राम।।

ऐसे उदाहरण अनगिनत हैं। भाषा के मेल के अलावा भी इन दोनों भाषाइयों के रहन–सहन और पूजा–पर्व की समानता भी इनके निकट संबंधों को मजबूत करती है। औरतों में मेहंदी (असमिया में जेतुका कहते हैं) लगाने की प्रथा, विवाहित महिलाओं में सिंदूर, चूड़ी, गहने, सर पर आंचल अर्थात घूंघट का प्रचलन आदि। पुरुषों का धोती, कुर्ता पहनना। विवाह, पूजन आदि में होम–यज्ञ का होना, उबटन का लगाना (जो हल्दी और दाल से बनायी जाती है) बड़ों को प्रणाम करना, आदर–सत्कार, व्रत, कथा–पाठ आदि सबकुछ प्रायः एक से ही हैं। संक्रांति का पर्व असम में "बिहू" के नाम से जाना जाता है। कृषि–प्रधान राज्य होने के कारण बिहू का यहां बहुत महत्व है। भगवान विष्णु, कृष्ण, राम, शिव, गणेश, हनुमान, लक्ष्मी, दूर्गा, काली, कामाख्या, पार्वती, गौरी आदि प्रायः सब देवी देवताओं को यहाँ बड़ी महत्व और श्रद्ध प्राप्त है, जेतनो उन्हें हिन्दी भाषियों के संस्कारों में प्राप्त है। पौराणिक काल से असम भारत से जुड़ा रहा है। महाभारत में हम इसका प्रमाण पाते हैं। तेजपुर जो शोणितपुर के नाम से जाना जाता था, वहाँ की ऊषा–अनिरुद्ध की गाथा आज भी जीवित है। बाण राजा की पुत्री ऊषा और द्वाराकाधीश श्रीकृष्ण के पोते अनिरुद्ध के प्रेम ने भारत के दो छोर पर स्थित दो राज्यों को प्रेम–सूत्र में बांधा। दोनो भाषा और दोनों संस्कृतियों की निकटता और समानता पर कोई दाग न लगायें, वार न करें, इसके लिये हमारा इस विषय पर ज्ञान का होना अति आवश्यक है। अपनी नींव जानेंगे, तभी उसे सुदृढ करने का प्रयास करेंगें क्योंकि बिना अपनी पहचान और संबंधों के कोई जाति दीर्घायु नहो हो सकती। दो भाषा और दो संस्कृतियों का मेल–मिलाप न सिर्फ दो जातियों के लिए, बल्कि पूरे राष्ट्र की मजबूती के लिए जरूरी है। हिन्दी और असमिया भाषा–संस्कृति का बहुत पुराना संबंध है, बस इस पर जमी धूल को हटाने की जरुरत है।

हाइकु

सूर्य नारायण गुप्त 'सूर्य', देवरिया

अमृत दे के
मैं खुश हूँ रिश्तों का
जहर ले के।

००

दर्दीला टिला
जीवन–पथ पर
सदा ही मिला।

००

आज बेगाने
मुझे सुना रहे हैं
वफ़ा के गाने।

००

मुझे बचाओ
भ्रूण बच्ची बोली माँ
गले लगाओ।

००

माँ का आँचल
पा के हो गया मेरा
मन निर्मल।

००

निलाम हुई
अरमानों की डोली
दो टक बोली।

००

गोरी शर्माये
चढ़ते ही सावन
साजन आये।

००

माँ–बाप जैसा
ईश्वर भी नहीं है
उन सा वैसा।

दूध नहाई
तारों की चुनरी ले
चाँदनी आई।

००

फूलों के झूले
हरे–भरे पहाड़
मन को छू लें।

००

पा गया ठाँव
पहाड़ के उपर
छोटा सा गाँव।

००

ओस की बूंदें
दूब पे हवा के संग
उछलें कूदें।

००

कैसी लाचरी
सूख गई धरा से
नेह की क्यारी।

००

चाँदनी छाई
पर्वतों की चोटी पे
वो मुस्कुराई।

००

चाँदनी बोली
घर पे गिरा दी मैं
चाँदी की झोली।

००

खिला कमल
उमड़ा उस पर
भौंरों का दल।

ग़ज़ल

बीत गया सो बीत गया
अन्धकार को चीर रश्मि
नया सबेरा जीत गया।।
देखो खिला यहाँ उपवन है
गन्ध बाँटता मन्दपवन है।
उठ करके ऊँचाई चूमो
देता यह संदेश गगन है।।
आपाधापी के जीवन में
जो ठहरा वह रीत गया।। बीत गया–
जहाँ खड़े हो पहले उससे
कुछ आगे बढ़ना सीखो,
ठेठ पुरातन सोच बदलकर,
नये बिम्ब गढ़ना सीखो,
गाओ नये तराने छेड़ो,
सुरसंगीत नया ।। बीत गया–
चक्रवात कितने आयेंगे,
सही डगर से भटकायेंगे,
पर न डिगे यदि कदम तुम्हारा
बाल न बाँका कर पायेंगे।।
पथन छोड़ना गाते जाना
तरुणाई का गीत नया।। बीत गया–

इन्द्र कुमार दीक्षित
देवरिया

स्त्री विमर्श–

वैदिक युग की महिलाएँ

– डॉ० मुदिता चन्द्रा, जमशेदपुर

भारतीय समाज में धर्म जीवन के सत्य के रूप में स्वीकारा गया है। धर्म के अभाव में भारतीय समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस देश की संस्कृति को ऊँचाइयों तक पहुँचाने में धर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय समाज में धर्म की परम्परा आज से नहीं अनादिकाल से चली आ रही है। समाज के संगठन और विकास में धर्म का अप्रतिम योगदान रहा है। भारतीय जीवन के जितने भी प्रमुख कर्त्तव्य हैं, वे सभी धर्म पर आधारित हैं। भारतीय संस्कृति का यह विश्वास है कि –

"धर्म एवं हतो–हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित"

धर्म का जो नाश करेगा, धर्म उसका नाश कर देगा।

पर जो धर्म की रक्षा करेगा, धर्म उसकी रक्षा करेगा।'

धर्म वही है जो जीवन मूल्यों को जोड़ने की बात करे। आज दुनिया में धर्म की भले ही अलग–अलग शाखाएं हों, लेकिन वास्तविक सत्ता एक ही स्थान पर केन्द्रित है। गाँधी जी के अनुसार "धर्म एक ऐसा आधार है, जो हमें सत्य से परिचित कराता है। मनुष्य के मन को स्वच्छ करता है। धर्म हमें एक दूसरे के प्रति प्रेम व शांति देता है। धर्म हमें वीरता, सहिष्णुता, आज्ञाकारिता, साहस, अहिंसा आदि की शिक्षा देता है।"

हिन्दू महिला सदा से ही धर्मपरायण रही है। उसका धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास, प्रेम व लगाव रहा है। स्त्री पुरूष का आधा अंग मानी गई है। इसलिए तो वह अर्द्धांगिनी कहलाती है। आज स्त्री भले ही बेबस, लाचार या शोषण का शिकार लग रही हो परन्तु सच तो यह है कि हिन्दू संस्कृति में स्त्रियों को पुरूष के समान ही अधिकार प्राप्त थे। कोई भी धार्मिक कार्य स्त्री के बगैर नहीं होता था। इसलिए वह धर्मपत्नी कहलाती थी। नारी के बिना घर का कोई अस्तित्व ही नहीं समझा जाता था। इसलिए तो कहा गया है

गृहणी गृहमुच्यते'

अर्थात नारी ही घर है।

संसार में जितनी भी उत्तम विभूतियाँ हैं, उनको भारतीय संस्कृति में स्त्री का रूप दिया गया है। लक्ष्मी, सरस्वती, वाणी, विद्या, प्रतिभा, बुद्धि, नीति, प्रीति, कीर्ति, शोभा आदि सब स्त्री का रूप हैं। मनु के अनुसार –

"उपाध्यायात दशाचार्य, आचार्याणां शतं पिता।

सहस्त्रंतु पितृणं माता गौरवणति स्त्रियते।।"

अर्थात – "दश उपाध्यायों में एक आचार्य बड़ा है, सौ आचार्य से पिता बड़ा है, और पिता से माता गौरव में हजारों गुना बड़ी है।"

भारतीय संस्कृति के उन्मेष काल में नारी की प्रतिष्ठा को पुरूष के समानान्तर स्वीकारा गया था। पूर्व वैदिक काल की सामाजिक धार्मिक व्यवस्था में ऐसे संकेत प्राप्त होते हैं कि इस काल में नारियों की प्रतिष्ठित सामाजिक स्थिति थी। बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन में उन्हें पुरूषों के समान ही अधिकार प्राप्त था। वे धार्मिक अनुष्ठानों में पुरूष के साथ सक्रिय सहभागी हुआ करती थी। वैदिक साहित्य में भी पुरूष और नारी को एक दूसरे का पूरक स्वीकारा गया है। वैदिक वांग्मय में 'प्रजापति वाक्' 'अग्निसोमा' 'द्यावा पृथवी' तथा 'रोषा–वृषा' जैसे शब्द युगल स्वरूप उपलब्ध हैं। प्रत्येक देवता के साथ जुड़ी उसकी दैवीय शक्ति की कल्पना की गई है। 'ऋग्वेद' में वर्णित 'ज्ञ' पद दैवीय नारी सत्ताओं, शक्तियों का समूह है। वेदों में मंत्र द्रष्टा, ऋषिकाओं के रूप में भी प्रसिद्ध महिमामयी एवं विदुषी नारियाँ अपने सद्गुणों से प्रतिष्ठित हैं। धन की देवी 'लक्ष्मी', विद्या की देवी 'सरस्वती', तथा शक्ति की देवी 'दुर्गा' की ही भांति इन्द्राणी, अदिति, भारती वाक रोमश, उषा, इला, विश्वतारा, लोपामुद्रा इत्यादि अनेक वैदिक देवियाँ अनेक मंत्रों की अधिष्ठात्री हैं। इन्हें कहीं 'देवमाता' कहीं 'कन्या' तो कहीं भौतिक शक्तियों की संचालिका कहा गया है। पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में नारी का अपूर्व योगदान रहा है, नारी के इन विभिन्न रूपों का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। एक कुशल गृहस्थ नारी, सशक्त आध्यात्मिक नारी भी है। जिसके द्वारा समय–समय पर आध्यात्मिक उपदेश दिए गये हैं। अनुष्ठान, तप, यज्ञ, हवन इत्यादि धार्मिक कार्यों को नारी ने पूर्ण मनोयोग के साथ किया है।

यूँ तो जीवन का कोई भी पक्ष इस युग की नारी के योगदान से अछूता नहीं रहा है।

आम्भृण ऋषि की पुत्री 'वाग्म्भृणी देवी' सूक्त ऋषिका हैं। अन्न जल की दात्री एवं हर्ष प्रदायिनी मित्र व वरूण को धारण करने वाली धनदात्री, ज्ञानवती, प्राणिव्यापिनी उपदेशिका तथा आकाशजननी विश्व की प्रमुख प्राकृतिक एवं भौतिक शक्तियों की संचालिका 'वाग्देवी' ही है।

सर्वशक्तिमयी, विश्व हितैषिणी, सर्व ग्राहिणी और स्वाधीन वैदिक देवियों में अदिति का सर्वाधिक वर्णन है। विश्व का अटल अचल आधार ईश्वर का मातृरूप 'अदिति' ही है। यही अदिति विश्व सृष्टि की मूर्ति दिखाई देती है। लोक के सोम की तुलना 'अदिति' के दूध से की गई है। ऋग्वेद के एक सूक्त की दृष्टा 'अदिति दाक्षायणी' है। अदिति के गर्भ से इन्द्र ने जन्म लिया है इसलिए इन्द्र 'आदितेय' भी कहलाते हैं।

'इन्द्राणी' इन्द्र की पत्नी और ऋग्वेद के एक सूक्त की ऋषिका है। इन्द्राणी द्वारा एक पत्नी की प्रशंसा तथा सपत्नी की बुराई की गई है। इन्द्राणी मानती है कि बहु पत्नी विवाह स्त्रियों के लिए बहुत कष्टकर है। शांतिपूर्ण गृहस्थाश्रम के लिए एक पत्नी ही अनिवार्य है। ऋषिका इन्द्राणी सपत्नी मर्दना के उपाय बताते हुए पति को आकर्षित करने पर बल देती हुई कहती है – "मैंने उस अत्यन्त गुणवती, लतारूपणी औषधि को खोज लिया है, जिसके द्वारा सपत्नी को क्लेश दिया जाता है तथा पति को आकर्षित किया जाता है।"

इन्द्राणी का दूसरा नाम सोलामी शची है। शची पुलोमन राजा की कन्या तथा एक वैदिक सूक्त की सृष्टा है। शचि एक शक्तिशाली देवी है। जिसमें शत्रुओं को मार डालने, स्त्रियों के दर्प–चूर्ण करने तथा सपत्नियों पर विजय पाने की शक्ति है। देवी शची ही भगवती आधारशक्ति की एक कला मानी गई है। ये स्वयंवर की अधिष्ठात्री देवी हैं। प्राचीन काल में स्वयंवर के समय देवी शची का आवाहन तथा विधिवत पूजन किया जाता था।

लक्षीवान ऋषि की कन्या ब्रहमवादिनी – घोषा ने सूक्तों की रचना की, जिसके माध्यम से उन्होंने भारतीय नारियों को आवश्यक कर्तव्यों की शिक्षा देते हुए सकल गृहस्थ जीवन का मंत्र बताया है। 'घोषा' सभी मंत्रों के माध्यम से यह कामना करती है कि पति अक्षय कल्याण राशि से समृद्ध हों एवं लोक कल्याण तथा पंच महायज्ञों के अनुष्ठान के लिए तत्पर रहें। कर्त्तव्य पालन के लिए सदबुद्धि की कामना घोषा करती है। यह स्पष्ट करता है कि वैदिक युग की नारियाँ पति का विश्वास और शक्ति बनने की अभिलाषी थीं।

वैदिक मंत्र की दृष्टा सूर्य पुत्री 'सूर्या सावित्री' द्वारा रचित सूक्त में विवाह का वर्णन है। ऋग्वेद में इसे 'लोकेतृकन्या' कहा गया है। सूर्या सावित्री द्वारा रचित सूक्त में जहाँ एक ओर पति गृह की श्री सम्पन्नता की कामना की गई है वहीं दूसरी ओर पति गृह के श्री के लिए भी आराधना है।

जिस प्रकार राजमाता अपनी प्रजा के प्रति रक्षा भाव का निर्वाह करती है तथा सुविचार सुनीति सुव्यवस्था एवं सुशासन के द्वारा प्रजा को मंत्र मुग्ध कर वश में रखती है, उसी प्रकार नव विवाहित को पतिगृह में सुव्यवस्था तथा सुव्यवहार द्वारा विपत्ति के समय अपने परिवार की रक्षा कर अपने गुणों से सभी परिवार जनों को अपने वश में करने का इस सूक्त में आह्वान है।

(शेष पृष्ठ 42 पर)

– डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर, कोरबा

अस्मिता के लिये रोज़ लड़ती लड़कियाँ

ये जो जिंदगी है जीने के लिये है। जब जीना है, तो हँसते मुस्कुराते जीने का मजा ही कुछ और है। रोते बिसूरते जीना, तो जिंदगी को भार बना देता है। यह तो स्वाभविक बात है कि इस संसार में कोई भी अपनी इच्छा से रोते सिसकते जीना नहीं चाहता। इस तरह की जिंदगी जीने के लिये उसे विवश होना पड़ता है, विवश किया जाता है।

इस धरती पर भगवान ने सारे जीव–जन्तुओं के लिये हवा, पानी, वनस्पति, फल, फूल, धूप, चाँदनी की व्यवस्था बनाई है। उनकी नजर में पशु–पक्षी, कीट–पतंगे, नर–नारी सभी बराबर हैं। ये सभी उनकी निधि कृतियाँ है। सब एक दूसरे पर निर्भर हैं। जीने के लिए सबको अपने हिस्से का जरूरी हवा, पानी, आहार मिलना चाहिये। ईश्वर की व्यवस्था में इंसान के अलावा अन्य कोई जीवधारी दखलंदाजी नहीं करता।

इंसान को सबसे बुद्धिमान और समझदार प्राणी माना जाता है। लेकिन इंसान अपनी लालसा और स्वार्थपरता में इतना डूब जाता है कि दूसरे इंसान के जीवनोपयोगी प्राकृतिक वस्तुओं पर अपना अधिकार जमा लेता है। उसका हक छीनकर स्वयं को शक्तिशाली साबित करने के प्रयास में निरंतर लगा रहता है। इससे उसके अहं को संतुष्टि मिलती है, यहीं से शुरू होती है एक अनचाहे जंग की शुरूआत। ऐसी जंग जिससे प्रकृति में असंतुलन तो आता ही है साथ ही अशांति आती है। दुख परेशानियों का सिलसिला प्रारंभ होता है। उगते सूर्य से लेकर, छिटकती चाँदनी के सौंदर्य का आनंद लेने का सबको समान अधिकार है लेकिन ये इंसान उस पर एकाधिकार जमाने का उपक्रम करके अपने आसपास के लोगों को दुख, कष्ट, परेशानी में झोंक देत है।

हम बात कर रहे हैं लड़कियों की। किसी भी देश की आधी आबादी की। लड़कियाँ/नारियाँ यदि संसार में न हों तो जीवन का क्रम ही बाधित हो जायेगा। नई पीढी का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा, विकास की धारा अवरुद्ध हो जायेगी। माँ ही नहीं रहेगी तो बच्चे का जन्म कैसे होगा? विज्ञान चाहे कितनी उन्नति कर लें पर माँ की कोख नहीं बना सकता? जिस दिन कोख बनाने में सफल हो जायेंगे ये वैज्ञानिक उस दिन लैबोरेटरी/प्रयोगशालाएँ/दुकानों में मानव संतान बिकने लगेंगे। दुकान जाकर मनपसंद बेटा, बेटी लेकर खरीदकर लाया जा सकेगा। जैसे दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों में कामकाजी नारियाँ आफिस/कार्यस्थल जाते समय आटा देकर चली जाती हैं वापसी में बनी बनाई रोटियाँ ले आती हैं। चलो जब मन हुआ स्पर्म और ओवम देकर आ गये निश्चित समय के बाद बच्चा/बच्ची लेकर आ गये, बाकी बचे हुये बच्चों को डिस्पोस करवा दिये। कोख बन भी गई तो ममता तो नहीं उपजा सकते। ममता, वात्सल्य, स्नेह, करूणा के बीच का पेटेंट तो विधाता के पास सुरक्षित है।

संभावनाओं पर बात करने के बाद हम हकीकत की धरती पर आते हैं। आने वाले कल पर हमारी संभावनाऐं आधारित हैं लेकिन आज का दिन यानी वर्तमान जो हमारे सामने है हमारे हाथ में है उस पर चिंतन करें उसे बेहतर बनाने का उपाय करें तभी तो हमारा जीवन सुखमय होगा। ईश्वर ने धरती पर जीवन की निरंतरता बनाये रखने के लिये नर और मादा बहुत सोच समझ कर बनाया है। मादा की शारीरिक संरचना ऐसी है कि वह बच्चों को जन्म देना, पालन–पोषण करना जैसे कार्य स्वाभाविक रूप से करती है। मनुष्य के अलावा अन्य प्राणियों में लिंग भेद की परंपरा नहीं है। मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ इसीलिये है क्योंकि इसके पास बौद्धिक क्षमता का वरदान है।

मानव के पास सोचने–समझने, चेंतन करने की शक्ति है अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखने की क्षमता है। अपने अलावा दूसरों के हित में कार्य करने की सुदीर्घ क्षमता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण वह संसार का श्रेष्ठतम प्राणी माना जाता है। यही गुण उसमें इंसानियत का भाव पैदा करता है। मानव में मानवीयता या इंसानियत न हो तो वह निकृष्ट और घृणित बन जाता है। इसान में भी नर और मादा दोनों तरह की कृतियां ईश्वर ने बनाई हैं ताकि जीवन के क्रम को आगे बढ़ाना है लेकिन इंसानी शिशु केवल दोपाया प्राणी नहीं होता उसको तन के पोषण के अलावा मन–भावनाओं के पोषण की जरूरत है। मन–मस्तिष्क की क्षमता का विकास करने के लिये मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण इंसानियत के गुणों से भरपूर नारी देहधारी मानवी की जरूरत है इसका कोई विकल्प नहीं है।

नारी केवल देहधारी प्राणी नहीं है मन–मस्तिष्क और संवेदना से युक्त इंसान है। वह अपने प्राकृतिक और स्वाभाविक दायित्वों का निर्वहन तो करती ही है साथ ही मानव होने के नाते उसे भी सपने देखने का जन्मसिद्ध अधिकार है। उन सपनों को पूरा करने में सहयोग और सुविधा देना परिवार, समाज और देश का मूलभूत कर्तव्य है। प्रकृतिदत्त हवा, पानी, धूप, प्रकाश, फल, अन्न के सेवन का उतना ही अधिकार है जितना की पुरूषों को होता है। पूरे विश्व में भारत की सभ्यता और संस्कृति की दुहाई दी जाती थी। यहां के लोगों में इंसानियत की भावना अन्य देशों के लोगों के लिये विशेष अनुकरणीय रही है। भारतीय लोगों के आचार–व्यवहार, खान–पान, रहन–सहन, मर्यादा–परंपरा, दुनिया में बहुप्रशंसित और बहुचर्चित रही है।

स्वतंत्रता के 66 वर्षों में उसी भारत के लोगों में हैवानियत का विसतार होता जा रहा है। बुनियादी शिक्षा, चारित्रिक शिक्षा के अभाव में भोगवाद और भ्रष्टाचार इतना ज्यादा बढ़ गया कि मान मर्यादा, दहेज, स्वार्थपरता की आड़ में लड़कियों को पैदा होने के पहले ही खत्म कर देते हैं। जो लडकियाँ पैदा हो चुकी है उन्हें पास–पडोस वाले, समाज वाले, धर्म के ठेकेदार यहां तक कि परिवार के लोग ही चैन सुकून से जीने नहीं दे रहे हैं। अपनी पूरी उमर जीने के लिये हर रोज एक नई लड़ाई लड़ती हैं लड़कियाँ।

कहने को हमारा भारतीय संविधान स्त्री–पुरुष को शिक्षा, संपति, रोजगार में बिना लैंगिक भेदभाव के व्यक्तित्व विकास के लिये समान अधिकार दे रखा है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज हर कदम पर नारियों के व्यक्तित्व विकास की राह में रोड़ा अटकाता रहता है। कहने को तो भारतीय समाज के हर जाति वर्ग के पुरुष पढ़े–लिखे आधुनिक पहनावे, आधुनिक रहन–सहन वाले सभ्यता का नकाब धारण कर रखे हैं, पर उनकी घटिया सोच नहीं बदल पाई है। सब नहीं पर अधिकांश पुरुष नारी को आगे बढ़ता देख सहन नहीं कर पाते। चाहे लड़कियाँ शादीशुदा हों या कुंवारी हर रोज

एक अघोषित लडाई लडती ही है।

आर्थिक स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ाती नारी ने उसे आत्मबल दिया है उसे एक मुकम्मल पहचान दी है। यही स्वतंत्र पहचान हर रोज उससे कुछ न कुछ या बहुत कुछ छीनती रहती है। पांच साल से पचास साल तक की नारियों के साथ घट रही लगातार शर्मनांक घटनाएँ इसी बात का प्रमाण है कि पुरूषों में नारियों के प्रति दुर्भावना, आक्रोश भरा हुआ है। परिवार, समाज के लोगों की चुप्पी और उदासीनता हमारी इंसानियत का सरेआम माखौल बना रही है। नौकरी पर, व्यवसाय करने वाली नारियों ने अपनी प्रतिभा, क्षमता, काबिलियत के बल पर एक नया इतिहास रचा है, पर इस इतिहास के हर अक्षर की उन्हें बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। लड़की होने के कारण विपरीत परिस्थितियों, चुनौतियों विरोध लगातार झेलने पड़ते हैं।

रोजमर्रा की जिंदगी में आसपास की घटनाओं से मन में क्रोध, क्षोभ जागता है पर इन लड़कियों को जज्ब करना पड़ता है। जो माता पिता अपनी बेटियों को शिक्षित, आत्मनिर्भर और काबिलियत देना चाहते हैं, उन्हें ऐसी घटनाएडराती हैं। भयमुक्त समाज की रचना के लिये पहल आप और हम सबको मिल कर करनी होगी। पुरूष वर्ग हमारा दुश्मन कदापि नहीं है, वह पति, पिता और भाई के रूप में हमारा हितैषी, सहयोगी और शुभचिंतक है।

नारी तो मानव गढ़ने का साँचा है। इस साँचे में ढलकर ही पुरूष का तन–मन आकार लेता है। बचपन से माँ ही ये संस्कार डाल सकती है कि तुम्हारी बहन, बेटी, पत्नी तुम्हारी प्रतिस्पर्धी, विरोधी, दासी, सेविका नहीं वरन् तुम्हारी सहयोगी, हितैषी और मित्र की तरह है, वह भी इंसान है, उसकी भी भावनाऐं, संवेदनायें, कल्पनायें हैं उसे मान–सम्मान देना, उसे सहयोग देना पुरूषों का कर्तव्य है। कोई माँ ये कदापि नहीं चाहती कि उसका बेटा अनाचारी या दुराचारी हो लेकिन चाहने से कुछ नहीं होता, उसे अमली जामा पहनाने के लिये सतत प्रयास करते रहना जरूरी होता है।

(पृष्ठ 40 का शेष)

भारतीय नारियों के लिए श्वसुरगृह में सदाचार की शिक्षा से संबद्ध अन्य मंत्र भी ऋग्वेद में हैं। गुणवती नारी का गुण ही सबसे बड़ा दहेज है। अतः गुण की महत्ता एवं नारी के आदर की भावना प्रत्येक मंत्र में अभिव्यक्त होती है।

अति महर्षि की वंशजा विदुषी विश्वतारा आत्रेयी ने तपस्या से ऋषि पद प्राप्त किया। अपने द्वारा दृष्ट सूक्त में उन्होंने नारियों को विश्वासपूर्ण दाम्पत्य जीवन का संदेश देती है।

अग्नि की आहुति प्रदान कर अतिथि सेवा द्वारा अपने मंगल की कामना तथा घृताहुति प्रदान के फलस्वरूप ज्ञान का विस्तार विश्वतारा चाहती है। कामनादिनी सूर्या की ही भाँति विश्वतारा भी शत्रु विनाश के साथ प्रगाढ़ दाम्पत्य प्रेम के बंधन को सुदृढ़ करना चाहती हैं, जिससे जीवन में कभी विच्छेद की संभावना न रहे।

वेदकालीन नारियाँ आहार व्यवहार तथा विद्या विनय से अलंकृत थीं। साधना तथा तप से ऋत्विक पद भी नारियों ने प्राप्त किया था। वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी ज्ञान, विज्ञान और सदाचार सम्पन्न दार्शनिक नारियाँ प्रतिष्ठित हुई। ये नारियाँ मात्र आदर्श का देवता नही थीं बल्कि विपत्ति आने पर देश के रक्षार्थ युद्ध के लिए तत्परता भी तद्ययुगीन नारी की विशेषता रही।

इस युग की नारियों द्वारा रचित सूक्तों से यह स्पष्ट होता है कि इस काल की स्त्री सहधर्मचारिणी थीं। पति के जीवन के साथ उनका गहरा नाता था। वह उनके सारे धार्मिक कार्यों की अनुगामिनी थी। पति एवं पत्नी के बीच समानता, मित्रता, अपनत्व एवं सहचार्यता की भावना थी।

आफ़ताब बना गया कोई

–बुशरा रहमान सिद्दीकी, खुर्जा

ज़र्रा थी मैं महज़,
आफ़ताब बना गया कोई।
अनकही सी बात थी मैं,
कहने को कितने अल्फाज़ बना गया कोई
ज़मी का एक टुकड़ा थी,
आसमां बना गया कोई।
बेसुरी सी कोई तान थी,
उभरता हुआ मुझे साज़ बना गया कोई।
नटखट सा बचपन गया भी न था,
इश्क का मुझे मोहताज़ बना गया कोई।
आईना कहते थे लोग मुझे,
अब राज़ बना गया कोई।
निगाहें मिला कर चला गया और,
अजीब मेरे अंदाज़ बना गया कोई।
खुद से भी मुखातिब हुई न थी मैं,
बुलंद मेरी आवाज़ बना गया कोई।
ज़र्रा थी मैं महज़,
आफ़ताब बना गया कोई।

सच

–नायाब ज़ेहरा ज़ैदी, मेरठ

वो
देर से
सदा लगा रहा था
कमज़ोर हूँ
बीमार हूँ
बेघर हूँ
बेसहारा हूँ
तन पर कपड़ा नहीं
सर पर साया नहीं
कोई बताए
मैं कहाँ जाऊँ
दूर से
आवाज़ आई
भारत चले जाओ
वहाँ सब तुम जैसे हैं।

नेत्रहीनों के लिए आँखे जुटाते अशोक जैन

जिस शख्स ने पी.जी.आई चण्डीगढ को आई बैंक बनाने का प्रस्ताव भेजा था, उसे पी.जी.आई के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ० आई.एस.जैन ने पत्र द्वारा डा० अशोक कुमार जैन को प्रशंसा के साथ –साथ उनके प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। लेकिन क्या पता था कि इस व्यक्ति की इच्छा शक्ति, निष्ठा और लगन के आगे असम्भव कुछ भी नही था। डॉ० जैन ने अंहकार को खत्म कर अपने जीवन को नेत्रहीन लोगों की दुनियाँ रोशन करने के लिए समर्पित किया है। इन्होंने अपनी भैतिक सुविधाओं के लिए कभी खुद्दारी के आगे किसी से समझौता नहीं किया, और न ही किसी के आगे झुकें ।

मृत्यु के बाद नेत्रदान जरूर करें, ताकि आँखें हमेशा जीवित रहें और उनसे कोई व्यक्ति इस हसीन दुनिया को देख सके । नीली बत्ती लगी **TVS** मोटर साइंकिल पर इसी तरह से लोगों को प्रेरित करते आ रहे डॉ० अशोक कुमार जैन आज दुनिया के लिए मिसाल बन गयें हैं। 42 साल से अंधता के खिलाफ जंग लड़ रहें डॉ० जैन के रोशनी आई बैंक को अभी तक 294 आखें मिल चुकी हैं। वे अर्से तक अपनी कर्मठ तथा सहयोगी पत्नी कुसुम जैन के साथ जुड़कर के यह नेक मुहिम चलाते रहे । लेकिन 24 अगस्त 2011 को एक हादसे में पत्नी कुसुम जी की मृत्यु होने से इस मिशन को बहुत बड़ा धक्का लगा। इसके बावजूद डॉ० जैन साहब ने हिम्मत नहीं हारी और पूरे जी जान से अपने मिशन को आगे बढ़ाने में जुटे हैं।

ब्रिटिश रॉयल नेवी के प्रथम भारतीय ऑफिसर व तबला वादक सुशील कुमार के परिवार में श्रीमती प्रकाश की कोख से मोगा (पजाब) में जन्मे 62 वर्षीय डॉ० जैन पंजाब विश्वविद्यालय के परास्नातक व ऑल इन्डिया इंटरयूनिवर्सिटी बाक्सिंग चैम्पीयन भी रहे हैं बॉक्सिंग के एक मुकाबले में उनकी एक आँख चली गई, फिर वे कॉर्निया प्रत्यारोपण के बाद ही उस आँख से देख सके। यहीं से उन्हे नेत्रहीनों की दुनिया रोशन करने की प्रेरणा मिली। तत्कालीन जिलाधिकारी श्रीमती आराधना शुक्ला के बुलावे पर कुछ समय पूर्व वे सहारनपुर आए और रोशनी आई बैंक नामक कॉर्निया कलेक्शन सेन्टर स्थापित किया। जिला प्रशासन से अनुबन्ध के बाद डॉ० जैन अपनी पत्नी, माता–पिता, पुत्र एवं पुत्रवधु संग नेत्रहीनता उन्मूलन में जुट गए। कॉर्निया संरक्षित करने वाला मीडिया कैमिकल भी वे अपने बूते अमेरिका से मंगाते हैं। मुहिम के लिए इतना ही नहीं, पैसा नहीं था, तो उन्होंने बूट पॉलिश की और रिक्शा तक चलाकर धन जुटाया। बेटे का जूनून देखकर माता–पिता ने अपनी पैतृक संम्पत्ति बेची और इस पुनीत कार्य में सहयोग किया।

बकौल डॉ० जैन 'मैने जिन्दगी में कभी हार नहीं मानी और मुझे खुद पर भरोसा है। मेरा कार्य ही मेरी पूजा है, और उसी से मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है, अब मुझे किसी सम्मान की चाहत नहीं, मुझे नेत्रहीनो के प्रति किये कार्यों से अधिक संतुष्टि मिलती है। मुझे पत्नी की कमी जरूर महसूस होती है, क्योंकि उसने हमेशा मेरा साथ दिया। जब भी मैं कॉर्निया निकालने जाता तो मेरे साथ सिर्फ मेरी पत्नी ही जाती थी, अब मुझे अकेले ही कॉर्निया निकालने जाना पडता है।

डॉ० जैन अपने अभियान के सहयोगियों से प्रति सदस्य 20 व 50 रूपये प्रतिमाह लेते है, और प्रबुद्धजनों से भी उनके मिशन को मदद मिल रही है। रोशनी आई बैंक को स्थापित करने में आई०ए०एस० आलोक कुनार का बहुत योगदान है। डॉ० जैन बताते हैं कि एक कॉर्निया संरक्षित करने और उसे मेरठ मेडिकल कॉलेज तक पहुँचाने में करीब 5000 रूपये खर्च होते थे, जिसके चलते हिमालय इन्स्टीट्यूट के अनुरोध पर अब जॉलीग्रांट अस्पताल देहरादून में भी आँखे भेजी जा रही है। अब तक जॉलीग्रांट अस्पताल को 22 आँखे भेजी जा चुकी हैं। रोशनी आई बैंक को 15 लाख रूपये के स्पेक्युलर माइक्रोस्कोप की जरूरत है।

डॉ० जैन ने विश्व शान्ति एवं नेत्रदान के लिए 1976 में मोगा (पंजाब) से नॅर्थ अमेरिका तक 1 लाख 36 हजार किलोमीटर तक साईकिल से यात्रा की, इसमें पानी जहाज से समुन्द्री मार्ग तक का सफर शामिल नहीं हैं। गिनीज बुक ऑफ द वर्ल्ड में अपनी यात्रा को दर्ज कराने के लिए डॉ० जैन को साढ़े चार किलो प्रमाणपत्र लंदन में अर्ल ऑफ ईश के यहाँ जमा कराने पड़े। यात्रा के दौरान अमेरिका के शिकागों के एक जंगल से गुजरते वक्त उन्हें बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उन्ही के अनुसार – जब मैं जंगल से गुजर रहा था, उस समय मेरी जेब अमेरिकी डॉलरों से भरी हुई थी। मेरे सभी सूखे मेवे भी खत्म हो चुके थे। खाने के लिए पास में कुछ भी नहीं था। उस वक्त ऐसी स्थिति थी कि एक रोटी के लिए अपने सारे अमेरिकी डॉलर देने को तैयार था, कि किसी तरह से एक रोटी खाने को मिल जाऐ, लेकिन रोटी नसीब नहीं हुई, जिसके अभाव में पेडों से पत्तें तोड़कर खायें और जब प्यास लगी तो ओस की बूदों को पत्तों से उतार कर बोतल में इकट्ठा करके अपनी प्यास बुझाई । यात्रा में डॉ० जैन ने अपनी डॉयरी में लिखा कि 'मेन मेक्स द ननी, नॉट मनी मेक्स द मैन', डॉ० जैन के अनुसार – मुझे पैसे से कोई लगाव नही रहा। लोग लक्ष्मी को बहुत महत्त्व देते हैं तथा उनकी पूजा करते हैं, लेकिन मैं रूपये जेब की बजाय अपने पैर की जुराबो में रखता था, जिससे मेरी सास मुझसे खफा रहती थी।

21 देशों की विश्व शान्ति, प्रेम, भाईचारा व नेत्रदान के उद्देश्य से की गई साईकिल यात्रा एवं सामाजिक कार्यो के लिए 1977 में डॉ० अशोक कुमार जैन को उपराष्ट्रपति महामहिम बी.डी. जत्ती द्वारा 'अशोक चक्र' प्रदान किया गया। 13 अक्टूबर 1992 में पूर्व उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवानी 15 मार्च 1996 को पूर्व प्रधाननंत्री अटल बिहारी वाजपेयी 11 सितम्बर 1980 में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने पत्र द्वारा डॉ० जैन के कार्यों की सराहना की। 28.08.1986 को डॉ० अशोक कुमार जैन से प्रेरित होकर डॉ० पी० के० माथुर के सहयोग से प्रधानमंत्री राजीव गाँधी एवं श्रीमती सोनिया गाँधी ने नेशनल आई बैंक के लिए अपनी आँखे दान की थी, लेकिन राजीव गाँधी के बम्ब ब्लास्ट की वजह से उनका कार्निया नही मिल सका।

डॉ० अशोक कुमार जैन 1972 से 2000 तक रोटरी क्लब के भी सीनियर एक्टिव मेम्बर रहें। वर्तमान में रोशनी आई बैंक एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर सदस्य भी है। डॉ० जैन उ०प्र० सरकार, जैन मिलन , भारत विकास परिषद श्रमजीवी पत्रकार एकता परिषद, रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, द एडीटर्स गिल्ड सोसायटी, अपराध नेरोधक ब्यूरो, नगर शान्ति समिति आदि संस्थाओं द्वारा भी विभिन्न पुरस्कार व सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं। डॉ० अशोक जैन की पत्नी कुसुम को भी डिप्टी कमिश्नर लेबर आर०बी० लाल एवं सी०एम०एस० डॉ० सुधीर सिंह द्वारा सम्मानित किया गया था।

बकौल डॉ० जैन जब मैं अमेरिका में था, तब वहाँ के प्रवासी भारतीयो, टी.वी. चैनलें, समाचार, पत्रों ने साक्षात्कार देने के लिए मुझें अमेरिकी डॉलर से मेरी बहुत मदद की थी। लोग कहते हैं कि सब भाई–भाई का खून का रिश्ता होता हैं। मैं इस बात पर कहता हूँ कि हम सब भाई–भाई हैं और खून का रिश्ता है। इस बात को सुनकर लोग आश्चर्य चकित होते थे। यात्रा के दौरान जब मैं मुज़्ज़फरनगर से गुज़रा तो वहाँ के डॉ० अयूब हसन मर्शल ने मुझसे मेरा मस्तिष्क मांगा था। मै जीरो से हीरो बनने की ताकत रखता हूँ। डॉ० अशोक कुमार जैन का मानना है की ईमानदारी इंसान को हमेशा इज्ज़त दिलाती है, तथा व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देते हैं, हराम रोजी ज्यादा दिन घर में नही ठहरती हैं वह किसी न किसी रूप में अवश्य ही निकल जाती है और गलत तरीके से कमाये हुऐ धन से लोगों की मनोवृत्तियाँ दूषित हो जाती हैं और परेशानी का कारण बनती है।

आज रोशनी आई बैंक नित–निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं, जिसे समाज के हर वर्ग का भरपूर सहयोग मिल रहा है। वह दिन दूर नही जब हम सभी विश्व में सहारनपुर की एक नई पहचान रोशनी आई बैंक के रूप में कराने में सफल होगें लेकिन इसके लिए एक जागरुक नागरिक के रूप में इस कम्यूनिटी प्रोजैक्ट एवं परोपकारी मिशन में सभी से सहयोग की कामना हैं तभी यह सपना साकार हो सकेगा। डॉ० अशोक जैन ने उत्तराखण्ड को अलग राज्य बनाने की दिशा में भी केन्द्र सरकार से पहल की थी। डॉ० जैन ने मुझे भी सलाहकार के रूप में जोड़ा है, धीरे धीरे रोशनी आई बैंक का परिवार जैन साहब के प्रयासों से प्रगति की ओर अग्रसर है।

प्रस्तुति – इशाक अली सुन्दर, भटौना

जीवन का उद्भव : वैज्ञानिकों की सोच

-मो. असलम लारी, देवरिया

यह साधारण अनुभव की बात है कि हमें इस संसार में केवल दो प्रकार की वस्तुयें दिखायी देती हैं, प्रथम वे जो भौतिक अर्थात् निर्जीव हैं, और द्वितीय वे जो जीवित हैं। ये दोनों वस्तुऐं एक ही प्रकृति की वस्तुऐं होते हुए भी एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न हैं। क्योंकि जीवित वस्तुओं में एक अद्भुत लक्षण जीवन है, जब कि निर्जीवों में ऐसी कोई बात नहीं। जीवन शब्द के आते ही प्रत्येक मानव मस्तिष्क यह जानने की इच्छा करता है कि आखिर यह क्या है कब और कैसे इस दुनिया में आई है। चूँकि जीवन एक ऐसी वस्तु है जो प्यार, घृणा एवं इच्छा की भांति अमूर्त वस्तु है जिसको हम न तो छू सकते हैं और न देख सकते हैं, परन्तु अनुभव कर सकते हैं। इसीलिए अभी तक वैज्ञानिक इसकी पूर्ण परिभाषा नहीं दे पाये यद्यपि उनके अनुसार जीवन "वह संगठित भूत द्रव्य है जो सदैव क्रियाशील एवं परिवर्तनशील रहता है और उसकी यह क्रियाशीलता और परिवर्तनशीलता ही जैविक क्रियाएँ कहलाती हैं जैसे – प्रचलन पोषण, वृद्धि, श्वसन, उत्सर्जन, उत्तेजनशीलता, अनुकूलन, मेटाबालिज्म एवं प्रजनन।"

अब आइये इसके उद्भव पर, जिसकी कहानी अत्यन्त ही रोचक एवं आकर्षक है। कुछ लोग जो भगवान् में विश्वास रखते हैं, उनका कहना है कि जीवों का उद्भव भगवान् ने किया है। एक मत के अनुसार प्रथम दिन भगवान् ने आकाश और पृथ्वी बनाए, दूसरे दिन जल, तीसरे दिन शुष्क भूमि और पौधे, चौथे दिन चाँद सितारे, सूर्य, पांचवे दिन चिड़ियाँ एवं मछलियां तथा छठे दिन जानवर, आदमी और औरतों को बनाया। इस प्रकार सृष्टि की रचना कुल छः दिन में हुई और इस सिद्धान्त को विशेष निर्माण सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। प्राचीन एवं मध्य युग के भगवान् में कम आस्था रखने वाले लोग इस सिद्धांत से संतुष्ट न हो पाये। उनके अनुसार जीवित– जैसे कीट, और चूहे आदि अपने जैसे जीवित प्राणियों से ही तो उत्पन्न होते ही हैं, बल्कि ये जीव, कीचड़ गोबरमिया इसी प्रकार वान 'हेलमेंट' ने बताया कि पसीने तथा गेहूँ दोनों से जीवन का उद्भव हो जाता है। उन्होंने एक प्रयोग में पसीने से भीगी एक कमीज तथा इसके साथ कुछ गेहूँ का चोकर एक खुले सन्दूक में रख दिया। इक्कीस दिन बाद जब सड़ना बन्द हुआ तो गेहूँ और कमीज से चूहे उत्पन्न हो गये जो वास्तविक चूहों की ही भाँति थे। इस प्रयोग से स्वतः जनन सिद्धांत को भ्रम में अवश्य प्रोत्साहन तो मिला परन्तु वैज्ञानिको को सन्तोष न हुआ। फलस्वरूप कुछ ही दिन बाद रेडी और स्पेलेंजानी के प्रयोगों ने स्वतः जनन सिद्धान्त को घात–अघात पहुँचा कर यह सिद्ध कर दिया कि जीव से ही उत्पन्न होते हैं। हेलमेंट के प्रयोग मे सन्दूक खुले रहने के कारण चूहे कही से आ टपके थे, स्वतः पैदा नहीं हुए थे। ऐसे समय में स्वतः जनन सिद्धांत दुर्बल पड़ने लगा और यदि एक आध इसके समर्थक रह भी गये थे तो 'लुइ पाश्चर' के सरल और साधारण प्रयोग ने उनके दिल को सदा के लिए तोड़ दिया। फ्रांस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने एक फ्लास्क लिया और उसमें चीनी तथा यीस्ट डालकर पानी से आधा भर दिया। फ्लास्क को गर्म करके उसकी गर्दन को खींचकर

S आकृति में पतला कर दिया। तब उस फ्लास्क को आग पर रखकर घोल को उबाल लिया। जब घोल से वाष्प बनकर बगल की S नली के मुंह से निकलने लगी तब उबालना बन्द कर दिया और ठंडा होने दिया। इस प्रयोग से उसने देखा कि फ्लास्क में रखे घोल में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यह केवल इसलिए हुआ क्योंकि बाहर की वायु विद्यमान धूल के कण तथा सूक्ष्म जीव S आकृति वाली भुजा में ही रोक दिये गये थे जिससे घोल शुद्ध रूप में बना रहा। लेकिन जब फ्लास्क की गर्दन तोड़ी गयी तो वायुमण्डल स्थित सुक्ष्म जीव घोल में प्रविष्ट होकर प्रकट हो गये। इससे प्रमाणित होता है कि स्वतः जीव उत्पत्ति सम्भव नहीं।

विशेष निर्माण सिद्धांत और स्वतः जीव जनन की धारणाएं अस्वीकृत होने के पश्चात् कई वर्षों तक कोई वैज्ञानिक प्रारम्भिक जीवन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई गम्भीर विचार प्रस्तुत न कर सका। सन् 1811 में 'लिबिग', 'केलविन', 'अरहिनियस' इत्यादि वैज्ञानिकों ने कहा कि पृथ्वी पर जीवन दूसरे नक्षत्रों से आया है, परन्तु यह विचार भी समस्या का समाधान न कर सका। कुछ ही वर्ष पूर्व रूस के वैज्ञानिक 'ओपेरिन' के क्रान्तिकारी विचारों ने इस रहस्यमय प्रश्न का बहुत दृढ़तर हल खोल दिया है। इनके अनुसार आदिकाल के समुद्रों में अत्यधिक कार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति में प्रथम जीवों की उत्पत्ति जीवन इकाई 'कोशिका' (छोटी कोठरी) के रूप में स्वतः जनन सिद्धात द्वारा हुई होगी परन्तु कैसे? तो इसका उत्तर जानने के पूर्व हमें कोशिका के बारे में कुछ जान लेना आवश्यक होगा।

जिस प्रकार प्रत्येक मकान ईंट रूपी रचनात्मक इकाई का बना होता है उसी प्रकार छोटे से लेकर बड़े सभी जीवों (पौधे एवं जन्तु) का शरीर भी सूक्ष्म कोठरियों रूपी जीवन इकाइयों 'कोशिकाओं' का बना होता है। उदाहरणार्थ एक पूर्ण विकसित मनुष्य जिसका वजन लगभग 75 किग्रा. होता है। लगभग 60000 करोड़ कोशिकाओं का बना होता है। कोशिकाओं को सर्वप्रथन अंग्रेज वैज्ञानिक राबर्ट हुक ने 1665 में कार्क के सेक्सशनस में देखा तथा 1938–39 में जर्मन वैज्ञानिक शीलडेन एवं श्वान ने जन्तुओं के शरीर में देखा। समस्त कोशिकायें 'जीवद्रव्य' की बनी होती हैं जो विभिन्न कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थों जैसे कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, प्रोटीन, वसा, स्टार्च, न्यूक्लीक एसिड एवं न्यूक्लीक प्रोटीन इत्यादि का जल में कोलायडल इमल्सन है। चूँकि यह जीवित होता है इसलिए वैज्ञानिकों का कहना है कि यह अणुओं का संग्रह है जो एक निश्चित सीमा पर निर्जीव रासायनिक मिश्रण न रह कर जीवित जीवद्रव्य बन जाता है। प्रत्येक कोशिकायें कोशिका–कलाओं द्वारा घिरी रहती हैं, और उनके केन्द्र में केन्द्रक पाया जाता है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होता है तथा विभिन्न जीवन कियाओं का संचालन करता है। कोशिकाओं के भीतर केन्द्रक के अतिरिक्त विभिन्न जीवित एवं निर्जीव रचनायें अन्तस्त होती हैं। एक कोशीय जन्तुओं में जिनका शरीर केवल एक ही कोशिका का बना होता है, एक ही कोशिका सभी जीवन कियाओं को संचालित करती है, परन्तु बहुकोशिका जन्तुओं में प्रायः बहुत सी कोशिकायें मिलकर ऊतकों का निर्माण करते हैं और ये ही संस्थान एवं अंग विभिन्न जीवन कियाओं को संचालित करते हैं।

कोशिकाओं की उत्पत्ति कब और कैसे हुई यह प्रश्न उठता है। वैज्ञानिकों के अनुसार आज से करीब छः अरब साल पूर्व अंतरिक्षीय गैसों तथा धूल कणों के विशाल मेघ से सूर्य–तारों का जन्म हुआ तथा पांच अरब पूर्व सूर्य से पृथ्वी का जन्म हुआ और तीन अरब साल पहले पृथ्वी पर प्राथमिक जीवों का प्रादुर्भाव हुआ। अब 'ओपेरिन' के अनुसार प्रारम्भ में पृथ्वी विभिन्न तत्त्वों के वाष्पों और गैसों से बनी आग के गोले के रूप में थी जिसका तापक्रम लगभग 5000 से 6000 डिग्री सेन्टीग्रेट था। कुछ समय के बाद धीरे–धीरे पृथ्वी ठंडी होने लगी। ऐसे समय भारी तत्व लोहा, गिलट इत्यादि केन्द्र में डूब गये तथा हलके तत्व जैसे कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन इत्यादि धरातल पर तैरने लगे और धीरे–धीरे इन्हीं तत्त्वों के परमाणु अधिक ताप की उपस्थिति में परस्पर मिलकर अणुओं का निर्माण करने लगे। फलस्वरूप पृथ्वी पर मिथेन, जल और अमोनिया का निर्माण हुआ। ऐसे ही समय जल ने पृथ्वी के

सतह के यत्र तत्र उदगारों द्वारा फटने से बने विशाल खण्डों में वर्षा के रूप में बरस कर नदियों, झीलों, सागुद्रों और सागरों का निर्माण किया जिनके जल में मेथेने अनोनिया और चट्टाने (खनिज लवण) घुल गये। कालान्तर में सूक्ष्म तत्व विभिन्न परिस्थितियों एवं तूफानों के कारण तथा बादलों की कड़क से उत्पन्न बिजली की ऊष्मा और 'अल्ट्रावायलेट' किरणों इत्यादि की उपस्थिति में परस्पर संयोग कर इथेन, प्रोपेन, एलकोइल्स, गिल्सेराल, फैटी अम्ल, शर्करा, बैन्जीन एवं अमीनो एसिड, पाइरिमिडिन प्यूरिन जैसे कार्बनिक यौगिकों को जन्म दिया और यही कार्बनिक यौगिक विभिन्न रासायनिक क्रियाओं जैसे बहुलीकरण एवं संवर्धन के फलस्वरूप स्टार्च, वसा तथा प्रोटीन इत्यादि यौगिकों को बनाए जिसमें प्रोटीन के कुछ अणु जैसे एन्जाईम इत्यादि रासायनिक क्रियाओं को बढ़ावा देने के काम आए। फास्फोरस, शर्करा और प्यूरिन एवं पाइरिमिडिन जब परस्पर मिले तो युक्लियोटाइडस के अणु पुनः बहुलीकरण के फलस्वरूप केन्द्रकीय अम्लों को बनाए जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इनमें अपने आपको निर्माण करने का ही नहीं बल्कि अपनी जैसी अनेक वस्तुऐं बना देने की अद्भुत क्षमता है और इस प्रकार की अद्भुत क्षमता वाले इन तत्वों में केन्द्रकीय अम्ल प्रोटीन से मिलकर केन्द्रक प्रोटीन का निर्माण किए। ऐसी दशा में यह कहना कि केन्द्रीय प्रोटीन का निर्माण जीवन के उद्भव की ओर प्रथम चरण है अनुचित न होगा क्योंकि 'वाइरस' जो विश्व का सरलतम तथा सम्भवतः प्रथम जीव जो जीवित एवं निर्जीव दोनों ही वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है केन्द्रकीय प्रोटीन का बना होता है। इसके अतिरिक्त कोशोरोग्रा भी इन्हीं के बने होते हैं। पुनः जब कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, पानी अमीनो अम्ल, वसा, प्रोटीन, केन्द्रकीय (न्यूक्लिक) एसिड, केन्द्रकीय प्रोटीन इत्यादि बन गये तो इन्हीं पदार्थों से जीवन इकाई कोशिका तथा उसके अवयवों (जीवद्रव्य, कोशिका भित्ति एवं केन्द्रक) का निर्माण हुआ, परन्तु कैसे, तो इसको अभी समझना है।

इस प्रकार एक अत्यन्त साधारण एवं सूक्ष्म कोशिका का निर्माण हुआ और यही वह कोशिका थी जिसने हमारे इस विशाल एवं विस्तृत जीव–जगत की नींव डाली थी। प्राथमिक कोशिका जो बनी थी उसमें कोई विशेष प्रकार का केन्द्रक नहीं था। जिसका प्रमाण हम आज भी बहुत से जीवाणुओं एवं नीले हरे शैवालों में देख सकते हैं जिनमें स्पष्ट केन्द्रक नहीं होता है।

जीवन के अद्भव के सम्बन्ध में ओपेरिन के ये विचार वास्तव में बहुत हद तक सत्य थे क्योंकि हेरोल्ड यूरी के शिष्य स्टैनले मिलर ने 60से.मी. ऊचे एक उपकरण में मेथेन, अमोनिया, हाइड्रोजन और जल वाष्प के मिश्रण में 60000 वोल्ट पर आठ दिन तक विद्युत धारा प्रवाहित कर कृत्रिम अमीनों अम्ल ग्लाइसीन, ऐलेनान, तथा ऐसपारतिक अम्ल प्राप्त किया। उसके इस प्रयोग की आश्चर्यजनक सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि वास्तव में तीन या चार अरब वर्ष पूर्व ओपेरिन के अनुसार ही जल में जीवन का उद्भव हुआ था।

अब तो वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में टेस्ट ट्यूब में भी जीवित कोशिकाएँ बना डाली हैं जो प्राकृतिक कोशिकाओं से कुछ भिन्न (अरगेनेल्स के अनुपस्थिति के कारण) है। वैज्ञानिकों के इस दिशा में सतत् प्रयत्न से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब वैज्ञानिक प्रयोगशाला में निर्जीव पदार्थों से जीवित पदार्थों को पैदा कर सकें।

अब कोशिका तो किसी न किसी प्रकार बन गयी और जीवन का उद्भव भी हो चुका, परन्तु इस कोशिका से इस विशाल जन्तु एवं वनस्पति जगत् का विकास कैसे हुआ, तो इसकी भी एक कथा है जो परियों एवं भूत प्रेतों की कथाओं से कम रहस्यपूर्ण एव थोड़ा रोचक नहीं है, बल्कि उनसे कहीं बहुत अधिक गूढ़ एवं जटिल है जिसको यहाँ दो चार पृष्ठों में वर्णित करना असम्भव ही है, क्योंकि केवल इसी विषय पर बड़े–बड़े वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों ने बड़ी–बड़ी पुस्तकें रच डाली हैं। अपनी वृद्धता एवं विशेषता के कारण ही यह विषय जीव विज्ञान की पृथक शाखा विकास के नाम से प्रचलित है। वैसे संक्षिप्त में इसका सारांश इस प्रकार है कि जब प्राथमिक कोशिका बन गयी तो इसने विभाजन के फलस्वरूप बहुत सी कोशिकाएँ (अपनी जैसी) बनाई, जिनमें से कुछ सूर्य के प्रकाश का लाभ उठाने के लिये अपने भीतर एक विशेष प्रकार के रसायनिक पदार्थ क्लोरोफिल को पैदा कर हरे शैवालों में परिवर्तित हो गये और ये ही शैवाल धीरे–धीरे समय एवं परिस्थितियों तथा वातावरण के परिवर्तन के साथ–साथ सरलता से जटिलता के पथ पर अग्रसर हुए और इसी सफर के दौरान इन्होंने सरलतम पौधों (थैलोफाइट्स एवं ब्रायोफाइट्स) से लेकर जटिलतम पौधों (टेरिडोफाइट्स जेम्नोस्पर्म और एन्जियोस्पर्म) को जन्म दिया। इस प्रकार वनस्पति जगत् की स्थापना हुई। अब जन्तु जगत की स्थापना कैसे हुई तो सुनिए– उन्हीं प्राथमिक कोशिकाओं में से कुछ एक कोशीय जन्तु में परिवर्तित हो गयीं, और ऐसे ही बहुत से एक कोशीय जन्तु बाद में परस्पर मिलकर बहुकोशीय जन्तुओं इत्यादि को जन्म दिया। बाद में प्रोटोजोआ शैवालों की भांति सरलतम से जटिलतम की ओर विकास किये, जिसके फलस्वरूप विभिन्न अकशेरूकी एवं कशेरूकी जन्तुओं को जन्मते हुए आज से बीस लाख वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों अर्थात् आदिम मानवों को जन्म दिया। इस समय संसार में जन्तु जगत् में सबसे जटिल और बुद्धिमान जीव हम साढ़े तीन हाथ के मानव तथा वनस्पति जगत् में सबसे अधिक विकसित एन्जिओस्पर्म हैं। जन्तु एवं वनस्पति जगत् दोनों का एक साथ विकास हुआ है।

यद्यपि हम अपने समय के जटिलतम जीव है, फिर भी हमारी जाति पृथ्वी के उम्र भर तक स्थिर रहे आवश्यक नहीं क्योंकि जब–जब प्राकृतिक वातावरण और परिस्थिति में परिवर्तन हुआ है तब–तब किसी न किसी नये जाति का विकास हुआ है; और चूँकि भविष्य में इस पृथ्वी पर एक बार नहीं बल्कि अनगिनत बार इस प्रकार के परिवर्तन होंगे (क्योंकि प्राकृतिक वातावरण परिवर्तनशील है) इसलिए भविष्य में निश्चित ही हम मानवों से भी अधिक विकसित और बुद्धिमान जीव आने वाले हैं और जन्तु ही नहीं वनस्पतियाँ भी जिनका स्वरूप एवं स्वभाव अपने समय के वातावरण के अनुकूल होगा।

अन्त में हम कह सकते हैं कि पृथ्वी कब बनी इस पर जीवन का उद्भव कब और कैसे हुआ तथा मानव का विकास कैसे हुआ, यह सब एक रहस्यपूर्ण और रोचक तथ्य है जिसको वैज्ञानिकों ने कुछ हद तक स्पष्ट करने का प्रयत्न तो अवश्य किया है फिर भी अभी बहुत शेष है। वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी पर तीन या चार अरब वर्ष पूर्व जीव जगत् का प्रारम्भ जितने शुभ कामनाओं के साथ हुआ है उतने ही दुख के साथ आज से छः अरब वर्ष बाद इसका अन्त हो जायगा, क्योंकि खगोलवादियों के अनुसार आज से 6 अरब वर्ष बाद विभिन्न कारणों से सूर्य का आकार और तापमान बढ़ेगा और इतना बढ़ेगा कि पृथ्वी ही नहीं बल्कि बुद्ध, शुक्र, मंगल सभी उसके उदर में समा कर जहाँ से निकले थे उसी में मिल जायेंगे।

ए.आई.पी.सी.दर्शन:

21वीं सदी की नारी

बबिता जैन, नलबाड़ी

जब एक नारी के बारे में कुछ कहने के लिए कहा जाता है तो सबसे पहले एक ही बात जेहन में आती है और वो यह कि चर्चा नारी पर ही क्यों की जाए ? कभी ऐसा नहीं होता कि 21वीं सदी में पुरुषों की भूमिका पर कुछ कहा जाए। बस यही से पता चल जाता है कि वो एक चर्चा के लायक विषय है। उस पर कोई ना कोई विषय लेकर चर्चा की जा सकती है। पूरी दुनिया को जन्म देने वाली, इस संसार के निर्माण में अपनी अहम् भूमिका रखने वाली, विश्व की जनसंख्या में अपनी आधी भागीदारी निभाने वाली नारी आज भी दया की पात्रा है और कल भी थी। सुनने में थोड़ा बुरा लग सकता है पर यह एक कटु सत्य है। विश्व स्तर पर नारी को एक वस्तु की तरह काम में लिया जाता है। यहाँ तक कि अपनी पसंद के परिधान पहनने का भी उसको हक नहीं होता है। क्या कभी सोचा है कि यह संभव कैसे हो पाता है ? उसी की तरह दो हाथ और दो पैर रखने वाला, उसी की तरह दिमाग रखने वाला और यहाँ तक कि उससे कम सहनशीलता रखने वाला पुरुष कैसे सदियों से उस पर जुल्म ढाने की हिम्मत करता आया है ?

प्रकृति प्रदत्त हर वस्तु और हर सोच के पीछे बहुत बड़ी दार्शनिकता छिपी हुई है जिससे हम इनकार नहीं कर सकते। एक नारी और पुरुष को एक दूसरे से भिन्न बनाने के पीछे भी वो ही दर्शन काम करता है। एक को शारीरिक बल दिया और एक को मानसिक बल , एक को संवेदनशील बनाया तो एक को संवेदनशून्य, एक को भावुक बनाया तो एक को सख्त। क्योंकि दुनिया को चलने के लिए यह अति आवश्यक था। पर यह समय की विडंबना रही कि पुरुष के शारीरिक बल ने शनैः शनैः ताकत का और नारी के मानसिक बल ने शनैः शनैः कमजोरी का रूप धारण कर लिया। भुजाओं की ताकत के दम पर सदियों से मर्द नारी को दबाता आ रहा है। स्त्री की मानसिक शक्ति इतनी प्रबल है कि वो सदियों से अपने आप को कमजोर मानकर जुल्म और अपमान सहती आ रही है।

कहते हैं कि वर्षों से अगर एक ही बात को दोहराया जाए तो वो झूठ के काँटों से झुलसी होने के उपरांत भी सच की खुशबू से भर उठती है। किसी घर में जब एक संतान पैदा होती है तो वह घर उस संतान के लिए उसकी दुनिया होता है और उसी समय लगभग उसके दिमाग के 75% हिस्से का बेकार हो जाता है। बस यही वह दौर होता है जब एक लड़की अपने आप को कमजोर और एक लड़का अपने आप को ताकतवर समझने लगते हैं । अपने आसपास के वातावरण से वो जो सीखते हैं उससे यह बात उनके दिमाग में कहीं गहरे तक बैठ जाती है कि नियति ने उनको ऐसा ही बना कर भेजा है।

नारी शक्ति को लेकर बड़े बड़े कार्यक्रम किये जाते हैं, जुल्मों के खिलाफ आवाज उठाने में कई संगठन काम करते हैं, आंकड़ों के तथ्यों को सच मान लिया जाए तो नारी की स्थिति में सुधार भी हुआ है। मैं भी इस बात से इनकार नहीं करती। लेकिन कुछ बिन्दुओं की तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहती हूँ। कला , वाणिज्य , सामाजिक , आर्थिक , विज्ञान , मनोरंजन , स्वास्थ्य , शिक्षा और भी ऐसे क्षेत्र जिन्हें हम तरक्की के सोपान मानते हैं और यह दावा करते हैं कि की अगर उपरोक्त वर्णित क्षेत्रों में कोई देश तरक्की कर रहा है तो वो समय के साथ आगे बढ़ रहा है। चूँकि हम इन सभी बिन्दुओं की तरह नारी शसक्तीकरण को भी देश की तरक्की से जुड़ा, एकमुद्दा मानते हैं (जो मेरी नजर में है नहीं क्योंकि वो तो खुद देश बनाती है) तो आज के सौ साल पहले और आज नारी की स्थिति और बाकी सभी क्षेत्रों की स्थिति की तुलनात्मक विवेचना निकालेंगे तो सच अक्षरशः हमारे सामने आ जायेगा। आज बाकी सभी क्षेत्रों में हमने वो पाया है जिसकी पहले के आदमी ने कल्पना भी नहीं की थी। लेकिन कहते हुए बड़ी तकलीफ होती है कि एक नारी तो इस दुनिया में बनकर आई एक जीवात्मा के हकों से भी महरूम है।

हो सकता है यहाँ कई प्रश्न खड़े हों। पहला प्रश्न – " नारी को समृद्धि से क्यों जोड़ा जाए "–मैंने पहले ही जबाब दे दिया कि मैं ऐसा नहीं मानती पर समाज के मापदंडो के आधार पर मैंने यह आकलन किया है। दूसरा प्रश्न :" आज कौन सा ऐसा काम है जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई है "– यह सही है पर कितनी महिलाओं ने ? विश्व का सबसे अमीर आदमी भारत का रहने वाला होने से भारत विश्व का सबसे अमीर देश नहीं बन जाएगा उसी तरह कुछ गिने चुने नामों को इज्जत और शोहरत की ऊँचाइयां मिलने से यह तात्पर्य तो कदापि नहीं है कि नारी की स्थिति बहुत अच्छे स्तर पर पहुँच गई है। चलती हवाओं के खिलाफ जाकर जिन्होंने जो भी हासिल किया है वो सभी वंदनीय है, फिर भले वो रानी लक्ष्मी बाई हो , पन्नाधाय हो, मीरा हो, सुभद्रा कुमारी चौहान हों, महादेवी वर्मा हों, इंदिरा गाँधी, लता मंगेशकर हों, किरण बेदी हों, अमृता प्रीतम हों, चंदा कोचर हों सायना नेहवाल हों, सानिया मिर्जा हो, मेरी कोम हों, पीटी उषा हों, सरोज खान हों, स्मृति ईरानी हों या फिर ए आई पी सी की कोई भी सदस्या हों। लेकिन हम अगर हमारे देश में महिलाओं की संख्या 50 करोड़ भी माने (हकीकत में इससे कहीं ज्यादा है) तो उन में यह आंकड़ा कितने तक आकर रुकता है।

उच्च वर्ग से लेकर मध्यम वर्ग के बीच से गुजरते हुए निम्न वर्ग तक के विश्लेषण में हर वर्ग की महिलायें शोषण की शिकार हैं। दिन भर में हजारों रुपये खर्च करने वाली महिलाओं से लेकर महीने भर में हजार रुपये स्वयं कमाने वाली महिलायें भी शोषण का शिकार होती हैं। विडंबना तो यह है कि उन्हें इस बात का अहसास भी नहीं है। वो इसी को अपनी नियति मानकर सदियों से जीती आ रही हैं और अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी सौगात में यह ही देती आ रही हैं, क्योंकि उन्हें इस बात का अहसास ही नही है कि वो क्या हैं और क्या कर सकती हैं। बचपन से ही शरीर के सौन्दर्य को खुद की पहचान मानकर मन के सौन्दर्य और मन की ताकत को ये महिलायें कभी जानने का प्रयास ही नहीं करतीं। इसलिए जब कोई लीक से हटकर अपनी पहचान बनाने की कोशिश करती हैं तो

उनकी टांग खींचने को आगे आने वाली भी सबसे पहले एक महिला ही होती है।

कोख में ही जिंदगी को विराम मिलने की अवस्था में भारत का प्रति 1000 पुरुष पर स्त्री का आंकड़ा 2011 की जनगणना के अनुसार 940 है। यह तो आप सभी जानते है पर मैं एक चौंकाने वाला तथ्य बताती हूँ। भारत में अगर हर वर्ष अगर 1000 तलाक होते हैं तो इनमें लगभग ६०० पुरुषों की और ३०० महिलाओं की शादी फिर से हो पाती है। पुरुष तलाकशुदा है इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता पर महिला तलाकशुदा है यह बात नाक भौंह सिकोड़ने का कारण बन जाती है। इन महिलाओं को जिंदगी के हक से महरूम करने मे जितना हाथ पुरुषों का होता है उतना ही महिलाओं का होता है। एक अकेला पुरुष बेचारा और अकेली स्त्री कुलटा कहलाती है। क्यों ? इस सवाल का जबाब कोई दे सकता है ?

मैंने अपनी जिंदगी के अनुभव से एक बात सीखी है। बने बनाये ढर्रे पर चलना नए रास्तों पर चलने से कही ज्यादा आसान होता है। भले इसमें चलने के लिए जिल्लतों का ही सामना क्यों नहीं करना पडे। क्योंकि उसमें जिंदगी में कोई रोमांचक पल नहीं आते। ज्यादा से ज्यादा खुद के जमीर से ही तो समझौता करना पड़ता है वो कौनसा मुश्किल काम है ? पुरुषों को अपने से श्रेष्ठ मानने की परम्परा ही जमीर से समझौता करने का ही तो दूसरा नाम है।

मैं जिस कुल या समाज मे पली बढी हूँ वो अपने आप को बड़ा उच्च कुल मानता है। मानने में कोई बुराई भी नहीं है पर बुराई इस बात में है कि इस समाज में बेटी आज भी अफ़सोस की ही तरह आती है जिसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि यहाँ बेटी के पैदा होने पर उत्सव नहीं मनाया जाता भले वर्षों बाद परिवार में बेटी का जन्म हुआ हो, पर बेटे भले उस परिवार में पांच सात या दस ही क्यों ना हों सबके आने पर उत्सव मनाया जाता है। बेटों के आने पर खुशियाँ मनाने के खिलाफ में नहीं हूँ पर बेटियां भी तो जन्म लेकर कई नए रिश्तों को जन्म देती हैं फिर यह भेदभाव क्यों ? पर बड़े दुःख के साथ कहना चाहती हूँ कि यह दिखने मे छोटी लगने वाली और हर बेटी के जन्म पर मेरे दिल को छलनी करने वाली परंपरा को महिलाओं ने ही पनाह दे रखी है। यह तो एक छोटा सा उदहारण है जो मेरी आँखों के सामने घटित होता है। ऐसा कितना कुछ होगा जो हर दिन एक नारी के आत्म सम्मान को तार तार करता होगा।

मेरा मानना है कि जुल्म करने वाले से ज्यादा बड़ा गुनाहगार जुल्म सहने वाला होता है। और इस बात का विरोध करने वले घटिया धारावाहिकों की दूरदर्शन पर बाढ़ आई हुई रहती है, जिसमें जो बहू जितना ज्यादा ज़ुल्म सहती है वो उतनी ही आदर्श दिखाई जाती है। इन तथाकथित नायिकाओं का सच से कोई वास्ता नहीं रहता इन्हें अपनी कमाई से मतलब होता है पर इन्हें देखकर कितने भारतीय घरों मे सास का बहू के प्रति और पति का पत्नी के प्रति नजरिया बदला है यह सोचनीय प्रश्न है।

महिलाओं की जब तक अपने बारे में सोच नहीं बदलेगी तब तक महिलाओं के ऊपर होने वाले जुल्मों में भी कमी नहीं आएगी। दिन प्रतिदिन ये जुल्म बढ़ते ही जायेंगे। कोई हमें मिठाई तो कोई हमें सजावट का सामान बताकर हमें गाली देकर आगे बढ़ जाएगा। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हमारा पुरुषों से कोई मुकाबला नहीं है। और हमें मुकाबला करना भी क्यों है ? जगत जननी के रूप में नियति ने बहुत बड़ा भार हमें दिया है, उसका निर्वाह हमें बड़े गर्व के साथ करना है आत्म सम्मान की रक्षा करते हुए इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाना है। ना हम किसी का अपमान करेंगे ना कोई हमारा अपमान करे, यदि विश्व की हर महिला यह सोच अपने अन्दर ले आये तो मैं यह पूर्ण विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि फिर ना तो किसी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की जरुरत पड़ेगी और ना ही नारी सशक्तिकरण के नाम पर होने वाले अनेक तरह के कार्यक्रमो की .....

ग़ज़ल

-तहव्वर बदायूँनी, बदायूँ

खुली आब–ओ–हवा में भी घुटन महसूस होती है,
अब उसकी याद की चादर कफ़न महसूस होती है।

किया था वादा जिसने जिंदगी भर साथ चलने का,
उसे अब दो क़दम चलकर थकान महसूस होती है।

सवेरा होते ही दम तोड़ देती है तमन्नाऐं,
मेरी हसरत बस एक शब की दुल्हन महसूस होती है।

हमारी माँ का आँचल जब हमारे सर पे होता है,
हमें उस वक्त यह धरती गगन नहसूस होती है।

मैं अपने जख्मों का आखिर लगाऊँ कैसे अंदाज़ा,
जहां भी हाथ रखता हूँ दुखन महसूस होती है।

जहां दुनिया में हिन्दी और उर्दू बोली जाती है,
तेरी तहज़ीब ऐ गन्गा–ओ–जमन महसूस होती है।

ग़ज़ल

-महेश मित्र, बदायूँ

देख कर ये बेरुखी संसार की।
अब नहीं भाती हैं बातें प्यार की।।

पाँव में लगकर जो लाया होश में।
याद है हमको चुभन उस खार की।।

उनकी नज़रें शर्म से झुकने लगीं।
जब पढ़ी हमने गज़ल श्रृंगार की।।

पाप अब दुनिया मे इतने बढ़ गये।
है ज़रूरत अब किसी अवतार की।।

कत्ल करते वो नज़र से इस तरह।
जैसे उसमें धार हो तलवार की।।

ज़र जमीं के सब पुजारी हो गये।
बात अब होती नहीं किरदार की।।

'मित्र' जाते हैं उस महफ़िल में हम।
क़द्र होती है जहाँ फ़नकार की।।

साक्षात्कार :

रूप की रानी की लम्बी छलांग

हमारे सामने बैठी थीं 'मिसेज साउथ एशिया यूनिवर्स 2015' प्रतियोगिता बेलारूस में मोस्ट इंटेलिजेंट चुनी गयी ऋचा सिंह। चाय का आग्रह करती ऋचा ने सहज भाव से नयी पुरानी ढेर सी बातें हमें बतायीं। इससे पहले ऋचा ने मिसेज इण्डिया 2013–14 में भी हिस्सा लिया था। वो बताती हैं 24 फरवरी 2012 में जितेन्द्र से उनकी शादी हुई और वे अपने काम के सिलसिले में दक्षिण कोरिया और फिर पेरिस में रहने लगे। द0 कोरिया प्रवास के दौरान ही ऋचा मिसेज इण्डिया प्रतियोगिता की ओर आकर्षित हुईं।

ऋचा पटना की रहने वाली हैं ओर इनकी शादी शहरे इल्म अलीगढ़ में हुई। 2003 से 2009 तक पुणे के माइर्त्स एम.आई.टी. में जब वे सॉफ्टवेयर इन्जिनियरिंग पढ़ रही थी तभी उन्हें मिस फ्रेशर चुना गया 6 सालों तक वे पुणे में एच.आर.ट्रेनी मैनेजर रही फिर उन्होंने नौकरी छोड़ दी। जब क्राउन प्लाजा गुड़गांव में उन्हें मिसेज इण्डिया फर्स्ट रनर चुना गया तो पति ने उन्हें बढ़ावा दिया।

ऋचा को कविता का भी शौक था; उसने कोरिया में योगा व कुकिंग की कक्षाएं भी चलाई। उसे पेंटिंग, डिबेट और यात्राओं का भी शौक है। परिवार में उसके सपनों को पंख दिया बास्केटबाल की वो स्टेट प्लेयर भी रही हैं। टी. वी. पर वह अभिनय भी करना चाहती है। मिसेज यूनिवर्स के सात प्रतियोगितायों को जब तीन मिनट का वीडियो प्रजेन्टेशन करना था तो अपनी इन्जिनियरिंग बैकग्राउण्ड का इस्तेमाल करते हुए ऋचा ने एक गरीब बच्चों के बैग में सोलरपैनल लगाकर उसे रात में लैम्प बैग का रूप दे देया। वह बच्चो को सर्व करने वाली एक फाउन्डेशन से जुड़ी हैं और घरेलू हिंसा के लिए कुछ करना चाहती हैं। बिहारी होने के नाते वह नीतिश कुमार की घोर प्रशंसक हैं। महावीर कैरेयर इन्सटीटयूट की लघु योजनाओं की वह ब्रांड एंबेसडर भी हैं। वह नारियों द्वारा नारियों की एक संस्था भी बनाना चाहती हैं आई.आई.टी. दिल्ली के पुष्प चावला से मिलकर उसने बच्चों की स्वयं सुरक्षा के लिए एक ऐप आधारित कंपनी क्विक सीक टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड की शुरूआत की है जिसमें स्कूल बस के बच्चें के बैग में एक सूक्ष्म नेवीगेटर लगाकर तथा दिल्ली में कार्यरत महिलओं के कैब्स में चलते समय ये नेवीगेटर प्रणाली उनके परिजनों को उनकी क्षण प्रतिक्षण सूचना देती रहेगी

ऋचा ने कालजयी के पाठकों को संदेश देते हुए कहा कि हमें मानवता को अपने धर्म के रूप में शपथ लेना चाहिए तभी इतनी विभिन्नताओं के बावजूद हम उतनी ही एकता कायम कर सकेंगे।

उनके हमसफर उत्साही जितेन्द्र ने जोड़ा कि हमें ईश्वरभीरू के बजाय ईश्वरप्रेमी होना चाहिए।

(प्रस्तुति : रोशन आरा)

गंगा से वोल्गा की साहित्यिक यात्रा

मैं जब ए.आइ.पी.सी. के बारे में सोचती हूँ, मेरे जेहन में मेरे देश की कल कल प्रवाहिनी सदा नीरा पावनी गंगा की तस्वीर उभर आती है। गंगा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। संस्कृति की यह धारा सभ्यता और साहित्य के दो किनारों के बीच प्रवाहित होते हुई उन्हें पल्लवित और पुष्पित करती है। इस देश की सभ्यता और साहित्य ने मानवता का शंखनाद करते हुए विश्व बंधुत्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की कल्पना में रंग भरते हुए सप्त सागर तक पहुंचने वाली सरिताओं की निर्मल जल धाराओं में अंजुरी भर भर कर अपनी संवेदना का अर्घ्य अर्पित किया है।

ए.आई.पी.सी. भी उस सागर की तरह है जिसमें हजारों छोटी–बड़ी नदियां आकर ठहराव पाती हैं, उनके इस ठहराव में भी अन्तर्मन की तरंगे साहित्यिक सतह पर तरंगित होती हुई अभिव्यक्ति के तट पर बिखरती हैं। जहाँ कविताओं के रंग बिरंगे शंख, कहानियों के अनमोल सीप, संस्मरणों के अनमोल खजाने पुस्तकों के पन्नों पर सजकर अजेय काल चक्र के गतिमय पहिये को अपनी ऊर्जा से चलायमान बनाते हैं। कालजयी त्रैमासिक पत्रिका उसकी एक मिसाल है। देश की अनेक भाषाओं की नदियाँ अपनी अतुल साहित्य संपदा का सृजन करने, अपने विचारों, भावनाओं, कल्पनाओं की उर्वरा का निवेश करने इस विशाल सिंधु में एकत्रित होकर एकरूप हो जाती हैं। इस सागर का जल नमकीन न होकर मिठास भरा है। इसके तट पर आकर प्यासे तृप्ति की अनुभूति पाते हैं।

ए.आई.पी.सी. वादा ही नहीं दावा भी करती है– नारियों को उड़ान भरने के लिये उनके हिस्से का आसमान जरूर देगी। उन नारियों को जिन्हे अपनत्व ममत्व और पांव धरने को जमीन नहीं मिलती है, यदि इससे जुड़ें तो

उन्हें हवाई अड्डे के टेक ऑफ प्वाइंट की मजबूत धरती देगी, जहां से सरपट दौड़ते हुए उस छोर तक नारी पहुंच सकती है कि अपनी कल्पना के आसमान में विचरण करे। सद्भाव और सौहार्द के पंखों को फैला कर नारी सुदूर देशों की यात्रा करते हुए जहां मन करे वहां की सभ्यता की जननी नदियों के जल में अपनी अंजुरी से जल अर्पित करती हुई अमन, शांति, स्नेह की कामना करती है।

जिस तरह अनेक नदियों का जल सागर में मिलकर वाष्पित हो आसमान में मेघ रूप ले हरियाली से आकर्षित हो धरती पर बरसता है पुनः जल धारा उमड़ घुमड़ कर नदी बनती हुई आगे को बढ़ती है। उसी तरह हम भी देश के उत्तर दक्षिण, पूरब पश्चिम के सरिता तट पर बसे विभिन्न शहरों से देश के दिल दिल्ली की ओर चल पड़े 27 सितम्बर की पूर्व संध्या पर। कोई गंगा तट से, कोई जमुना तट से, कोई कृष्णा से, कोई कावेरी से, कोई तिस्ता ब्रह्मपुत्रा से कोई रावी, चिनाब, सिंध तट से, कोई नर्मदा से, कोई हसदेव, खारून, शिवनाथ तट के शहर से। 40 बहनों की टोली चतुर्दश अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने संसार की दूसरी महाशक्ति कहे जानेवाले देश रूस की धरती पर वोल्गा और नीवा तट पर बसे मास्को एवं सेंट पीट्सबर्ग शहर की ओर उड़ान भरने, सांस्कृतिक और साहित्यिक आदान प्रदान की चाह लिये।

26 सितंबर को हम रात 10 बजे दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एकत्रित हुए। वहां संस्थापक द्वारा सबको पासपोर्ट, वीजा, प्रोग्राम की

जानकारी, टिकिट, ए.आई.पी.सी. का पहचान–पत्र और बैग दिया गया। हम चेक इन की औपचारिकता पूरी करते हुए नियत स्थल पर कतारबद्ध हो गये। हमारी फ्लाईट ब्रह्ममुहूर्त्त यानी प्रातः 4.40 पर थी।

एअर अरेबिया से हम उडचले शारजाह की ओर जहां से 3 घंटे बाद हमें कनेक्टिंग विमान से मास्को की ओर कूच करना था। दिनांक 28 की शाम लगभग 6 बजे हम वोल्गा के तट पर बसे रूस की राजधानी मास्को के हवाई अड्डे पर उतरे। चेक आउट के बाद अपने सामान सहित बाहर निकले तो स्वेतलाना हमारी गाईड हमारा स्वागत करने ए.आई.पी.सी. की पटिटका लिये खड़ी थी। बस में बैठकर हम खजुराहो होटल गये जहाँ की साज सज्जा में खजुराहो की झलक के साथ भारतीय भोजन भी उपलब्ध कराया गया। रात्रि भोजन के पश्चात् हम शानदार होटल अजमत गये जहाँ हमें रूकना था। सफर की थकान से पस्त हम अपने कमरे में जाकर घोड़े बेच कर सो गये। दूसरे दिन सुबह नाश्ते के बाद हमें साइट सीन देखने जाना था।

29 सितंबर की सुबह हम वोल्गा तट पर बसे सुंदर शहर मास्को के दर्शनीय स्थलों की सैर करने गये। रेड स्केवर, रूसी क्रांति के जनक कार्ल मार्क्स की प्रस्तर मूर्ति, वोल्गा नदी के तट पर बनी आकर्षक बिल्डिंग एनकी एकरूपता, नदी पर तैरते विशालकाय जलपोत, पुल, क्रेमलिन का राजगहल देखा, प्रेरीडेंट भवन की भव्यता का दिव्यदर्शन किया, गाल, चर्च

देखे। जार ज़ारीना के महल का वैभव देखा। जहां पीटर महान और अनुपम सुंदरी रानी कैथरीना के तैल चित्र, उपयोग की गई वस्तुएँ प्रदर्शनी के लिये रखी हुई हैं। बुद्धे को देवी मिनर्वा की मूर्ति देखी। अनेक यादगार फोटो लिये।

कैसे पूरी दुनिया का महादेश यूरोप का बहुत बड़ा हिस्सा मार्क्सवादी बना। धर्मांधता में डूबे रूस की चर्चेज नष्ट कर दी गई। यह सब हमारी गाईड (श्वेता) स्वेतलना ने बताया। पूरे विश्व में अमेरिका यदि किसी से भय खाता था तो वह था सोवियत रूस। वही रूस में सन् 1992 में एक बार पुनः महापरिवर्तन आया और साम्यवाद का अंत हुआ रूस अनेक टुकड़ों में बंट गया। चर्चों का पुनरूद्धार हुआ।

30 सितंबर को हम लंच के बाद मास्को से रूस की सांस्कृतिक राजधानी पीट्र्सबर्ग जाने वाले थे। 29 की रात पुनः खजुराहो होटल में रात्रिभोज के लिये गये जहां भारतीय दूतावास के श्री संजय जैन, दूतावास की पुस्तकालय प्रभारी डॉ. मिताली सरकार, वहां की सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. बार्नो एवेज़ोवा व अन्य हम सब से सौजन्य भेंट करने आये। हमारे संस्थापक महोदय डॉ लारी आजाद जी ने गर्मजोशी से स्वागत किया सबका। आपसी परिचय दूतावास प्रतिनिधि का संबोधन हुआ; सुनीता खोखा, डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर व अन्य ने अपनी कुछ पुस्तकें उन्हें भेंट कीं।

30 की सुबह पुनः घूमने निकले म्यूजियम देखने गये फिर लन्च किया तंदूरी नाइट होटल में। सप्सान फास्ट ट्रेन से मास्को से पीट्र्सबर्ग को रवाना हुए। रास्ते में रेल लाईन के किनारे बसे गांव एवं दूर तक फैले खेत तथा हरे भरे वनों के विहंगम दृश्य का आनंद लेते हुए शाम को पीट्र्सबर्ग पहुंचे। नमस्ते होटल में रात्रि भोज लिया और फिर विशाल होटल पार्क इन में हमें ठहराया गया।

पीट्र्सबर्ग में हमारी गाइड थी प्यारी सी एलिना जिसके आकर्षक चेहरे की मुस्कान देखते ही दिल खुश हो जाता था। सुबह नाश्ते के बाद 1 अक्टूबर को हमारा मुख्य कार्यक्रम पार्क इन होटल के दूसरी मंजिल के रेड नाइट हॉल में अंतर्राष्ट्रीय कवयित्री सम्मेलन एव सांस्कृतिक कार्यक्रम होना था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम अरूण कुमार शर्मा, काउन्सुल जनरल ऑफ इण्डिया, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पूनम शर्मा के साथ निश्चित समय पर आये। विशिष्ट अतिथि रोयरिच फांउडेशन के एडवर्ड तोमशा दंपत्ति मंच पर विराजमान हुए। हमारी सस्था ए.आई.पी.सी. के संस्थापक डॉ. आजाद जी भी मंचासीन हुए। दीप प्रज्वलन एवं स्वागत कार्यक्रम के पश्चात् पंजाब की कनुप्रिया, दक्षिण भारत की डॉ. राजस्वी, आसाम की बहनों ने अपने पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किये। इस तरह सांस्कृतिक कार्यक्रम

के साथ साहित्यिक कार्यक्रम की कड़ी में पांच पुस्तकों का विमोचन हुआ सर्व प्रथम 'ए.आई.पी.सी. सोविनियर', डॉ. संध्या मेरिया की पुस्तक 'संध्या का क्षितिज', स्निग्धा रानी गोगोई की 'मलेशियार मधुर स्मृति', रंजु भट्टाचार्य की 'आकाशी गंगा', सिमरत सुमेरा की 'गुस्ताख हवा', डॉ. नीलम जुल्का की 'सूर्य सारथी संग संग'।

फिर काव्य पाठ के बाद सम्मान समारोह में सभी आगन्तुक बहनों को 'मिनर्वा आफ द इस्ट' का सम्मान पत्र मुख्य अतिथि के कर कमलों से दिया गया। 'कालजयी हिन्दी सेवी प्रशस्ति' पत्र भी दिया गया। आमंत्रित अतिथियों एवं डॉ. लारी आज़ाद जी के संबोधन के बाद हर राज्य के प्रतिनिधियों द्वारा महानहिम को स्मृति चिन्ह एवं पुस्तकें भेंट की गईं। अन्त में छत्तीसगढ़ की डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर सह सचिव ए.आई.पी.सी. द्वारा आभार ज्ञापन हुआ। यादगार समूह चित्र खींचे गये।

भोजनोपरांत नीवा नदी के पानी में मोटरबोट द्वारा सैर, म्यूजियम, चर्च आदि दर्शनीय स्थल की सैर के बाद दूसरे दिन यानी 2 अक्टूबर को हम मास्को, शारजाह होते हुए दिल्ली वापस आ गये।

प्रस्तुतिः डॉ. चन्द्रावती नागेश्वर, कोरबा

फहराये तिरंगा

डॉ. रामबहादुर 'व्यथित'
बदायूँ

स्वतंत्रता की बलि–वेदी पर,
आओ फिर हम शीश चढ़ाये।
जो देहरी बरसों से सूनी,
आओ, उन पर दीप जलायें।।
फाँसी के तख्ते पर झूले,
उनकी बेवा सिसक रही हैं।
दीवारों में चुने गये जो,
बिटियाँ उनकी सुबक रहीं है।।
सील भरी पगडन्डी पर,
आओ, तिरंगा हम लहरायें।
देश प्रेम की चिनगारी बन,
घी के दीपक पुनः जलायें।।
लोकतंत्र के महाकुम्भ में
'आजादी' बिटिसा है खोई।
झोपड़ में अधनगे बच्चे,
धनिया की किस्मत है रोई।।
झोपड़ में भी दीप जला दो,
कान्हा बन के रास रचायें।
वृन्दावन बन जाये धरा यह,
माखन–मिश्री भोग लगायें।।
आजादी का पुण्य पर्व यह,
मंगलमय दर्पण बन जाये।
मिटे निशा का सघन अंधेरा
दिशा–दिशा दुल्हन बन जाये।।
भेद–भाव का गरल मिटाकर,
हम घट–घट अमृत सरसायें
फहर–फहर फहराये तिरंगा,
इस उपवन में कमल खिलायें।।

विदेश से :

सुरीला संसार स्वेतलाना अग्रवाल का

आजकल बेलारूसी लोग जो अंग्रेजी फ्रांसीसी या इतालवी भाषा में गाते हैं कोई आश्चर्य की बात नहीं है लेकिन अगर बेलारूसी लड़की हिंदी में गाए तो? वाह आप कहेंगे। यही तो सुनाया करती है सुंदरी स्वतेलाना अग्रवाल बेलारूस में एक ही गायिका जो हिन्दी गीत गाती है हमेशा समान ढंग से सुन्दर और सुरीली आवाज में और हमेशा अलग अलग ढग से लोगों को मोहित और आश्चर्यचकित करते हुए।

स्वेतलाना कहती है कि कभी कभी उसे लगता है कि वह संगीत के साथ पैदा हुई थी। वह अपने जीवन के किसी चरण पर संगीत के बिना खुद को ही पहचान नहीं सकती। संगीत ही गायिका को शक्ति देता है उसके नसों को ऊर्जा से भर देता है ओर वह जैसी है संगीत ही उसे ऐसी करता है।

स्वेतलाना के स्कूल के दिनों में बेलारूस में भारतीय फिल्में बहुत लोकप्रिय थी सभी लड़कियाँ उन्हें पसंद करती थी और स्वेतलाना कोई अपवाद नहीं थी लेकिन इससे भी ज्यादा उन फिल्मों का संगीत उसे मोहित करता था जादूमय आवाजें असामान्य धुन। सबसे ज्यादा उसे 'डिस्को डांसर' पसंद आई। पहली बार 'जिमी जिमी जिमी आजा' सुनकर उसने उन सुरीली धुनों को बहुत पसंद, किया मियानों पर संगीत बजाना तथा गाना शुरू किया जैसे सुनती थी वैसे ही गाती थी शब्दों का अनुकरण करते हुए।

फिर भारतीय संगीत में उसकी रूचि थोड़ी कम हो गई हालांकि स्वेतलाना का कलात्मक काम खत्म नहीं हुआ। वह मुखर वाद्य यंत्र कलाकारों की टुकड़ी की सोलों गायिका थी, संगीत कार्यक्रमों में भाग लेती थी, विदेशी भाषओं में गाती थी। लेकिन उसकी भाग्य में लिखा था कि भारत उसके जीवन में वापस आए। तभी भाग्य ने हस्तक्षेप किया, यकीनन, कि अपने विद्यार्थी काल में अपने भावी पति से उसकी मुलाकात हुई जो भारतीय था। उसके पति की बदौलत भारतीय संगीत के प्रति प्रेम नई ताकत लेकर जाग गया। वह हिंदी सीखने लगी ताकि अच्छी तरह से गीतों को समझते हुए उन्हें गा सके। उसके पति का परिवार अब भी हैरान है कि एक स्लाव लड़की उनकी भाषा में कैसे गा सकती है बस ऐसे बड़ी आसानी से– दिल से।

2010 में ग्रोदनी नगर में आयोजित राष्ट्रीय संस्कृतियों के महोत्सव में बेलारूसी लोगों ने गायिका से निकट परिचय प्राप्त किया। और 2 साल बाद वह इस महोत्सव की पुरस्कार विजेता बन गई। फिर 2011 में विटेब्स्क नगर में 'स्लाव बाजार' समारोह के दर्शकों ने स्वेतलाना का स्वागत किया। 2012 में स्वेतलाना अग्रवाल ने पूर्वी बाजार महोत्सव में भारत के पक्ष से भाग लिया था और उसकी फाइनलिस्ट भी बन गई। स्वेतलाना द्वारा हिंदी में तीन गीत गाए गए थे जो भारत में बहुत लोकप्रिय हैं और अब बेलारूस में भी। "मैंने कभी नहीं सोचा था कि किसी दिन मैं किसी प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करूंगी। और वैसे 'पूर्वी बाजार' तो प्रतियोगिता कम राष्ट्रीय संस्कृतियों के महोत्सव ज्यादा लगता है"– स्वेतलाना कहती है। 2013 में स्वेतलाना अग्रवाल ने मुखर वाद्य यंत्र कलाकारों की टुकड़ी 'पेस्न्यारी' के साथ एक युगल गीत रिकॉर्ड किया। बेलारूसी और भारतीय दोनों संगीतों का रागंजस्यपूर्ण सांयोजन ने 'एक कजाक चल रहा था' नाग के लोकगोत को नहीं आवाज दी।

आजकल स्वेतलाना अग्रवाल कॉन्सर्ट, घटनाओं तथा टीवी और रेडियो शो की स्वागत योग्य अतिथि हैं। लाइव प्रसारणों, शूटिंग और इंटरव्यूओं के बीच गायिका ने सफलतापूर्वक बेलारूसी राज्य संस्कृति और कला के विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वहाँ उसने पॉप मुखर के विभाग में दूसरी उच्च शिक्षा प्राप्त किया। पढ़ाई, संगीत समारोहो और प्रस्तुतियों के साथ–साथ वह दो एलबमों पर काम कर रही हैं। हिन्दी भाषा में मुंबई में और रूसी भाषा में मिन्स्क में।

भारतीय संगीत आलोचकों का दावा है कि यदि आंखें बंद करें तो ऐसा लगता है कि यह कोई भारतीय लड़की गाती है और आप इस बात से सहमत होंगे कि यह एक गायिका का बहुत ऊँचा मूल्यांकन है।

प्रस्तुति : इरिना वाविस्चेविच

(अनुवाद : एलीसिया माकोव्स्काया, बेलारूस)

हिन्दी सिनेमा की सबसे खूबसूरत अदाकारा जिसने अपनी अपूर्व सुन्दरता से करोड़ों लोगों के दिलों को जीत लिया। साक्षात सुन्दरता की प्रतिमूर्ति मधुबाला का जन्म 14 फरवरी 1933 को दिल्ली के एक पठान मुस्लिम परिवार में हुआ था। मधुबाला अपने माता–पिता की पांचवी सन्तान थी। मधुबाला के बचपन का नाम मुमताज बेगम जहाँ देहवली था ऐसा कहा जाता है कि एक भविष्यवक्ता ने उसके माता–पिता से ये कहा था कि मुमताज अत्यधिक ख्याति तथा सम्पत्ति अर्जित करेगी परन्तु उसका जीवन दुःखमय होगा। उसके पिता दिल्ली से मुम्बई एक बेहतर जिन्दगी की तलाश में आ गये। बॉलीवुड में उसका प्रवेश बेबी मुमताज के नाम से हुआ। बॉलीवुड में अभिनय के साथ–साथ अन्य तरह के प्रशिक्षण भी दिये गये। (12 वर्ष की उम्र में उन्हें वाहन चलाने आते थे) उन्हें मुख्य भूमिका निभाने का पहल मौका केदार शर्मा ने अपनी फिल्म 'नीलकमल' 1947 में दिया। उस समय उनकी उम्र 14 साल थी। इस फिल्म में उन्होंने राजकुमार के साथ अभिनय लिया। इस फिल्म में अभिनय के बाद उन्हें 'सिनेमा की सौन्दर्य देवी' कहा जाने लगा।

पत्नी की मृत्यु के बाद केदार शर्मा अन्दर ही अन्दर मधुबाला को चाहने लगे थे लेकिन मधु उन्हें टीचर के तौर पर मानती थी जब उन्हें एक तरफा प्यार का एहसास हुआ तो वह सिमट गये। 1949 में 'महल' फिल्म बनकर बाक्स ऑफिस पर हिट हुई। कमाल अमरोही और मधुबाला के प्यार का नतीजा था 'महल'। फिल्म का गाना 'आयेगा आने वाला' लोगों ने बहुत पसन्द किया। 'महल' फिल्म की सफलता के बाद उन्होंने पीछे मुडकर नहीं देखा। उस समय के स्थापित नायको के साथ उनकी एक के बाद एक फिल्में आती गयीं तथा सफल होती गयीं। उसने अशोक कुमार, रहमान, दिलीप कुमार, देवानन्द आदि के साथ काम किया।

1950 के दशक में उसकी कुछ फिल्में असफल भी हुई। जब उसकी फिल्में असफल हो रही थीं तो आलोचक ये कहने लगे कि मधुबाला में प्रतिभा नहीं है तथा उनकी कुछ फिल्में उनकी सुन्दरता की वजह से हिट हुई हैं न कि उनके अभिनय से। लेकिन ऐसा नहीं था; उनकी फिल्में फ्लाप होने का कारण राही फिल्मों का चुनाव न कर पाना था। मधुबाला के पिता ही उनके मैनेजर थे; वही फिल्मों का चुनाव करते थे। मधुबाला के आय पर उसका परिवार टिका था अतः उनके पिता परिवार के परिवरिश के लिए किसी भी तरह की फिल्मों का चुनाव कर लेते थे चाहे भले ही उस फिल्म में मधुबाला को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिले या न मिले और यही उनकी कुछ फिल्में असफल होने का कारण बनी। इस सब के बावजूद वह कभी निराश नहीं हुई। 1957 में उन्होंने अपनी प्रतिभा को पुन साबित किया। इस साल 4 फिल्में आईं 'फागुन', 'हावड़ा ब्रिज', 'कालापानी', और चलती का नाम गाड़ी' सुपर हिट हुई। अभिनेता प्रेम नाथ के साथ भी मधुबाला का रिश्ता जुड़ा।

फिल्म 'ज्वारभाटा' के सेट पर पहली बार मधुबाला दिलीप कुमार से मिली। उसके मन में दिलीप कुनार के प्रति आकर्षण पैदा हुआ तथा उनसे प्रेम करने लगी उस समय वह 18साल की थी तब दिलीप कुमार 29साल के थे। 1951 में फिल्म 'तराना' में पुनः साथ–साथ काम किया उनका प्रेम मुगल–ए–आजम की 9 साल की शूटिंग होने के समय और भी गहरा हो गया था। वह दिलीप कुमार से विवाह करना चाहती थीं पर दिलीप कुमार ने शर्त रख दिया कि शादी के बाद पिता से रिश्ता खत्म करना होगा, इसके अलावा पिता अताउल्लाह खाँ भी दिलीप कुमार को पसन्द नहीं करते थे। दिलीप कुमार की शर्त की वजह से मधुबाला ने खामोशी अख्तियार कर लिया। इस शर्त की वजह से दिलीप कुमार उसकी जिन्दगी से हमेशा–हमेशा के लिये चले गये।

मधुबाला को उसकी पूरी जिन्दगी में कभी मुहब्बत में कामयाबी नही मिली मधुबाला की जिन्दगी मे दिलीप कुमार की जगह कोई नहीं ले सका। अपनी जिन्दगी के आखिरी दिनों में दिलीप कुमार से बातें होने लगी थीं, कभी–कभी दिलीप कुमार उसके पास आते थे, बैठते थे, वो उनसे कहती कि मैं अभी मरना नहीं चाहती।

मधुबाला का कई लोगों से रिश्ता जुड़ा लेकिन अंत में 1960 मे मधुबाला ने किशोर कुनार से विवाह किया।

'मुगले–आज़म' में उसका अभिनय विशेष उल्लेखनीय है। इस फिल्म में सिर्फ उसका अभिनय ही नहीं बल्कि 'कला के प्रति समर्पण' भी देखने को मिलता है। इसमें 'अनारकली' की भूमिका उसके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही। उसका लगातार गिरता हुआ स्वास्थ्य उन्हें अभिनय करने से रोक रहा था लेकिन वो नहीं रूकी। उन्होंने इस फिल्म को पूरा करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। फिल्म के निर्देशक के. आसिफ फिल्म में वास्तविकता लाना चाहते थे; वे मधुबाला की बीमारी से भी अनजान थे। उन्होंने शूटिंग के लिए असली जंजीरों का प्रयोग किया। मधुबाला ने स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद भारी जंजीरों के साथ अभिनय किया। इन जंजीरो से उनकी हाथ की त्वचा छिल गई लेकिन फिर भी उन्होंने अभिनय जारी रखा। मधुबाला को उस समय न केवल शारीरिक अपितु मानसिक कष्ट भी थे। दिलीप कुमार से विवाह न होने की वजह से वह डिप्रेशन से पीड़ित हो गयी थी। इतनी तकलीफ होने के बाद भी फिल्मों में इतना समर्पण बहुत ही कम कलाकारों मे देखने को मिलता है।

5 अगस्त 1960 को जब 'मुगल–ए–आजम' प्रदर्शित हुई तो फिल्म समीक्षकों तथा दर्शकों को भी ये मेहनत और लगन साफ–साफ दिखाई पड़ी। असल में यह मधुबाला की मेहनत और लगन थी जिसने इस फिल्म को सफलता के चरम तक पहुँचाया। इस फिल्म के लिए उन्हें फिल्म फेयर अवार्ड के लिए नामित किया गया था लेकिन यह अवार्ड उसे नहीं मिल पाया। इस फिल्म की पापुलैरिटी की वजह से इस फिल्म को पुनः रंगीन करके पूरी दुनिया में प्रदर्शित किया गया। यह भारतीय सिनेमा की अब तक की सर्वश्रेष्ट फिल्म मानी जाती है।

मधुबाला हृदय रोग से पीड़ित थी जिसका पता 1950 मे नियमित होने वाले स्वास्थ्य चेकअप से पता चल चुका था परन्तु इस सच्चाई को फिल्म जगत में छुपाये रखा गया। लेकिन जब हाल बिगड़ गई तो ये छुप न सका। कभी–कभी फिल्मों के सैट पर ही उसकी तबियत बुरी तरह खराब हो जाती थी। इलाज के लिए जब वह लंदन गई तो डाक्टरों ने उनकी सर्जरी करने से मना कर दिया क्योंकि उन्हें डर था कि वो सर्जरी के दौरान ही मर सकती हैं। जिन्दगी के अन्तिम 9 साल उन्हें बिस्तर पर ही बिताने पड़े।

उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी में यानि 36 साल की उम्र में करीब 70 फिल्मों में काम किया। मधुबाला पर फिल्माये गये कालजयी गीतों में – "जब प्यार किया तो डरना क्या" (मुगल–ए–आजम) / "आयेगा आने वाला" (महल) / "हाल कैसा है जनाब का" (चलती का नाम गाड़ी) / "आइये मेहबाँन" (हावड़ा ब्रिज) / "पिया, पिया ना लागे मोरा जिया" (फागुन) / "चाँद सा मुखड़ा" (जाग उठा इंसान) / "जिंदगी भर नहीं भूलेगी ये बरसात

की रात" (बरसात की रात)

मधुबाला को उसकी पूरी जिन्दगी में मुहब्बत में कामयाबी नहीं मिली। पिता की निगरानी उस पर हमेशा रहती थी। मधुबाला अपने जीवन काल में एक डायरी लिखती रही। उस डायरी में उस समय की विभिन्न फिल्मी हस्तियों के साथ उनके रोमांटिक भागीदारी का पूरा लेखा जोखा था। उस डायरी से उसके प्रेम सम्बन्धों के रहस्यों के बारे में पता चल सकता था लेकिन दुर्भाग्य से उसके पिता ने उसकी डायरी को उसके साथ ही कब्र में दफनाने का फैसला किया; इस वजह से उसके अंदरूनी विचारों से हम कभी नहीं अवगत हो पायेंगे।

उसे आज भी पुरानी हीरोइन के रूप में नही देखा जाता। आज भी लोगों के दिलों में वह भोली–भाली शरारती, सुन्दर मोहिनी तरूणी जैसी शख्सियत के रूप में जिंदा है। कई बा उसके लुक को हालीवुड मेगा स्टार सेक्सी मार्लिन मुनरो से तुलना किया जाता है।

राज के पर्तों में छुपी हिन्दोस्तां की सबसे खूबसूरत हिरोइन मधुबाला की प्यार के रंग में डूबी सात कहानियाँ :–

एक ऐसी हीरोइन जिनके दिवानों में पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो का भी नाम शामिल है; जिसे बॉलीवुड की अब तक की सबसे खूबसूरत हिरोइन कहा जाता है।

मधुबाला एक ऐसा नाम एक ऐसी प्रेम पुजारन जिने जिस–जिस ने जितना देखा वो उतना तरसता गया। एक ऐसी हीरेइन जिसकी सुन्दरता स्वर्ग की किसी अप्सरा से कम नहीं थी; नीली आँखें, सांचे में ढला चेहरा, लंबी खड़ी नाक, मरमरी हाथ, दिलकश मुस्कान, तराशा हुआ संगमरमरी बदन यही पैमाना था मधुबाला के हुस्न का जिसकी दीवानगी हर उम्र पर किसी नशे की तरह हावी रही। किसी पर मधुबाला का दिल आया, कोई प्रेम के चरम पर पहुँचने के बाद मधुबाला का दिल तोड़ गया जिससे मुहब्बत की 9 साल वो भी छूट गया जिसको शौहर बनाया शादी की वह भी दूर चल गया।

मधुबाला के नजदीकी मानते हैं सबसे हसीन हिरोइन के प्रेम पुजारन बनने का सफर शुरू हुआ था 8 बरस की उम्र में। तबकी मुमताज दिल्ली छोड़ अपने पिता अताउल्लाह खाँ के साथ मुम्बई पर परचम लहराने रवाना हो रही थी, उस वक्त कोई था जिसने नन्हीं मुमताज के कदम कुछ पल के लिए थाम लिया था : नाम – लतीफ। जो मधुबाला का बेहद प्यारा दोस्त था तब मुमताज ने लाल गुलाब देकर लतीफ को चुप कराया और वापस लौटने का वादा भी किया। मुमताज तो कभी नहीं लौटी मगर उस गुलाब को लतीफ ने हमेशा अपने पास सम्भाल कर रखा। अब भी मधु की मौत के बाद हर साल उसकी मज़ार पर आते हैं। मुमताज मुम्बई आकर मधुबाला बन गई मगर पहला प्यार दिल्ली ही छोड़ आयी।

1942 में 'बसंत' रिलीज हुई तो नन्हीं मुमताज रातों रात स्टार हो गई। बाम्बे टाकीज की मालकिन देविका रानी और केदार शर्मा जैसे बड़े डायरेक्टर उनके मुरीद हो गये।कहते हैं देविका रानी ने ही मुमताज को मधुबाला नाम दिया। मधुबाला बड़ी हो रही थी, परदे पर नायिका बनने के लिए तैयार थी। मधु की उम्र 13 साल की हुई तो केदार शर्मा ने अपनी फिल्म 'नील कमल' में हिरोइन बना दिया। जानकार मानते हैं कि 'नील कमल' में राजकपूर जैसे नये हीरो की वजह से फॉयनेन्सर ने अपने हाथ खींच लिये तब केदार शर्मा ने अपना बंगला बेचकर 'नीलकमल' पूरी की। पत्नी की मृत्यु के बाद केदार शर्मा मधुबाला को मन ही मन चाहने भी लगे थे लेकिन मुहब्बत में मधुबाला की मंजिल केदार नहीं थे। मधुबाला ने केदार शर्मा के प्यार का जवाब कभी नहीं दिया बल्कि हमेशा गुरू के तौर पर उनकी इज्जत की। मधु की न हाँ न ना से केदार शर्मा समझ गये कि अब कुछ नहीं हो सकता; इसी के साथ ही उनकी दूसरी एक तरफा प्रेम कहानी का अंत हो गया।

1948 में कमाल अमरोही पूर्व जन्म पर फिल्म 'महल' बनाने जा रहे थे। हिरोइन के रूप में अमरोही की पहली और आखिरी पसन्द मधुबाला ही थी। लेकिन बाम्बे टाकीज के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने सुरैया पर दांव लगाने को कहा मगर कमाल अमरोही अड़े रहे। अमरोही को अपनी पसन्द पर पूरा भरोसा था। उन्हें 'महल' फिल्म के लिए ऐसी अदाकारा चाहिए थी जो बिना आत्मा की प्रेत आत्मा की तरह नजर आये। 1949 में 'महल' फिल्म बनकर रिलीज हुई और सुपर हिट भी हुई। उस वक्त के जानकार मानते हैं कि 'महल' की मिली कामयाबी असल में कमाल अमरोही और मधुबाला के प्यार का नतीजा थी। मधुबाला के पिता अताउल्ला खाँ को भी दोनों के बारे में पता चल चुका था। मधुबाला चाहती थी कि अमरोही अपनी बीबी को तलाक दे दें तभी वो उनसे निकाह करेंगी मगर कमाल अमरोही अपनी पहली बीबी से बेइन्तहा मुहब्बत करते थे और वे उसे छोड़ने को राजी नहीं हुए; मजबूरी में मधुबाला को ये रिश्ता भी तोड़ना पड़ा।

साल 1951; गठीले बदन वाले प्रेमनाथ फिल्म 'बादल' की शूटिंग कर रहे थे। इसी दौरान मधुबाला और प्रेमनाथ एक दूसरे के करीब आये। ये मुहब्बत मधुबाला की तरफ से कम और प्रेमनाथ की तरफ से ज्यादा थी। मधुबाला की बहन मधुर भूषण के कहेनुसार प्रेमनाथ और मधुबाला के बीच प्यार जरूर हुआ लेकन ज्यादा दिन तक चला नहीं। अलग–अलग मजहब होने की वजह से ये रिश्ता खत्म हो गया। यहां चौथी प्रेम कहानी का अंत हो गया।

साल 1952; 21 साल के शम्मी कपूर मधुबाला के साथ फिल्म 'रेल का डिब्बा' की शूटिंग कर रहे थे। पहले दिन सेट पर आते ही शम्मी अपने डायलॉग भूलकर उन पर फिदा हो गये। शम्मी ने मधुबाला को शादी का प्रस्ताव दिया मगर कोई दीवार इस रिश्ते के बीच आ गई।

साल 1951: फिल्म तराना की शूटिंग पर ही मधुबाला ने यूसुफ खाँ यानि दिलीप कुमार से अपने प्यार का इजहार कर दिया। जानकार मानते हैं कि 'मुगल–ए–आजम' में अनारकली का किरदार भी दिलीप कुमार ने ही उन्हें दिलाया था। 1951 मे 'मुगल–ए–आजम' की शूटिंग शुरू हो चुकी थी, तब दिलीप कुमार की बात मानते हुए के. आसिफ ने मधुबाला को अनारकली बनाया।

1951 में 'अमर' की रिलीज के बाद मधुबाला के मुहब्बत की भनक पिता अताउल्लाह खाँ को लग चुकी थी। दिलीप कुमार मधु से निगाह कर उसे पिता अताउल्लाह खाँ की बंदिशों से हमेशा हमेशा के लिए आजाद कराना चाहते थे लेकिन मधुबाला अपने पिता को राजी न कर सकी। साल 1956, मधुबाला और किशोर कुमार फिल्म 'हाफिये के गलगल' की शूटिंग कर रहे थे। दिलीप कुमार मधुबाला के मेक–अप रूप में पहुचे और कहा कि तुम चाहती हो तो हम आज ही निकाह कर लेंगे। मधुबाला पिता के खिलाफ जाने की हिम्मत नही जुटा पाई। दिलीप कुमार गुस्से में पाव पटकते हुए हमेशा–हमेशा के लिए मधुबाला की ज़िन्दगी से दूर चले गये। मधुबाला की सबसे बड़ी प्रेम कहानी का अंत हो गया। इसके बाद 1956 में बी.आर. चोपड़ा ने दिलीप कुमार को फिल्म नया दौर ऑफर किया, उन्हें हिरोइन के रूप में मधुबाला को याद आई। मधुबाला काम करने को फौरन राजी हो गई। लेकिन 10 दिन की शूटिंग के बाद अताउल्लाह खां ने शर्त रख दी कि मधु शूटिंग के लिए बम्बई से बाहर नहीं जायेगी। बी.आर चौपड़ा मधुबाला के 30 हजार रूपये बतौर मेहनताना दे चुके थे; मजबूरी में मामला कोर्ट तक जा पहुँचा मधुबाला चाहती थी कि दिलीप उनके खिलाफ गवाही न दे मगर दिलीप खुद को सच्चाई के साथ बताते थे वहीं दूसरी तरफ मुगल–ए–आजम की आधी शूटिंग बाकी थी मगर रिश्तों में आई तल्खी और अदालती तना तनी के बीच मुहब्बत के सीन मधुबाला पर भारी पड़ने लगे। इस दौरान दिल के सूराख की बीमारी बढ़ने लगी। लोहे के जंजीरों के साथ खिसकने के सीन उन पर भारी पड़ने लगे मगर इस अदाकार ने अकेलेपन और बीमारी के बावजूद हर सीन में जान डाल दी। (शेष पृष्ठ 55 पर)

टेनिस की शहज़ादी मारिया शेरापोवा

-नूर सफ़िया लारी

टेनिस की दुनिया की शहज़ादी मारिया शेरापोवा का जन्म 19 अप्रैल 1987 को न्यागन, रूस में हुआ था। मारिया के माता–पिता यूरी और येलेना गोमेल, बेलारूस के हैं। मारिया रूस की खिलाड़ी है। आज इसकी विश्व में रैंकिंग 'सातवीं' है।

सन् 1989 में जब शेरापोवा दो साल की थी तब उसका परिवार सोची, क्रासनोदर क्राई, रूस में पलायन कर गया। शेरापोवा जब चार वर्ष की हुई तब अलेक्ज़ैंडर ने उन्हें पहला टेनिस रैकिट पकड़ाया। अलेक्ज़ैंडर मारिया के पिता के दोस्त थे जिनके बेटे येवजेनी उस समय के सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ी थे। उनके बाद से ही मारिया रोज अपने पिता के साथ एक पार्क में प्रैक्टिस करने लगी। मारिया ने अपना पहला टेनिस अध्याय जाने माने रूस के कोच यूरी युटकिन से लिया। यूरी युटकिन मारिया के हाथ और आँख के अद्भुत संतुलन से बहुत प्रसन्न हुए।

वर्ष 1993 में छह साल की उम्र में शेरापोवा मॉस्को में मार्टिना नवरातिलोवा द्वारा चलाए जाने वाले एक टेनिस क्लीनिक से जुड़ीं, जिसमें उसे आई एम जी अकादमी ब्रांडेनटन, फ्लोरिडा से प्रोफेशनल ट्रेनिंग का सुझाव दिया।

पैसों का अभाव होने के कारण मारिया के पिता ने पैसे उधार लिए जिससे वो और उनकी बेटी मारिया वर्ष 1994 में अमेरिका का सफर तय कर पाए। उस समय मारिया और उनके पिता दोनों ही अंग्रेज़ी नहीं जानते थे। वीजा प्रतिबंध के कारण दो साल तक मारिया की माँ अमेरिका नहीं जा सकी। फ्लोरिडा में आने के बाद पिता यूरी ने बहुत संघर्ष किया। मारिया का अकादमी में नाम दर्ज कराने के लिए पिता ने बर्तन धोने जैसी नौकरियों को भी किया।

शेरापोवा ने तेरह साल की उम्र में टेनिस की दुनिया में जीत की दस्तक दी। नवम्बर 2000 में एडी इंटरनेशनल जूनियर टेनिस चैम्पियनशिप लड़कियों में 16 डिविज़न को जीता था। तब उसे राईज़िंग स्टार अवार्ड से सम्मानित किया गया। मारिया ने अपने जीवन का पहला डब्ल्यु टी ए टूर्नामेंट पैसिफिक लाईफ ओपन में 2002 में खेला। मारिया 14 साल 9 महीने की सबसे कम उम्र की लड़की बनी जो आस्ट्रेलियन ओपन जूनियर चैंपियनशिप के फिनाले तक पहुँची। वर्ष 2003 तक वो तीन जूनियर एकल टूर्नामेंट जीती और पाँच में रनर अप रहीं।

2003 में मारिया ने बहुत अधिक परिश्रम किया और इसलिए उन्हें डब्ल्यु टी ए न्यूकमर ऑफ़ द ईयर से सम्मानित किया गया। टेनिस की दुनिया में मारिया ने तब तहलका मचाया जब वे मात्र 17 साल की थी तब उस समय की सबसे मज़बूत खिलाड़ी सेरेना विलियम्स को हराकर उन्होंने अपना पहला एकल विम्बलिडन ग्रैंड स्लैम टाईटिल जीता और इसके साथ ही ग्रैंड स्लैम सिंगल टाईटिल जीतने वाली शेरापोवा दूसरी रूसी औरत थी। इस जीत के कारण वो 10 श्रेष्ठ टेनिस खिलाडियों की सूची में आ गई। विम्बल्डन की जीत के बाद से ही मीडिया शेरापोवा में ज्यादा ही रूचि लेने लगा जिसे 'मारिया मैनिया' कहा जाता था।

वर्ष 2005 मारिया के लिए बहुत ही सुखद रहा। इसी वर्ष वो पहली रूसी महिला रही जिसने विश्व का नं. 1 स्थान को प्राप्त किया। वर्ष 2006 में मारिया ने यू.एस.ए ओपन जीतकर अपने जीवन का दूसरा ग्रैंड स्लैम सिंगल टाईटिल जीता। साल के अंत में वे दूसरे नंबर पर रही

वर्तमान समय में वे विश्व रैंकिंग में सातवें नम्बर पर हैं। मारिया अकेली रूसी महिला हैं जिसने करियर ग्रैंड स्लैम जीता है। वह ओलंपिक पदक विजेता भी हैं। 2012 लंदन ओलंपिक में महिला एकल में रूस के लिए रजत पदक जीता था। शेरापोवा विश्व नं. 1 पाँच बार रह चुकी हैं। वो भी अलग–अलग मौकों पर। पहली बार 22 अगस्त 2005 में 18 वर्ष की आयु में और आखिरी बार चार हफ्तों के लिए 11 जून 2012 से 8 जुलाई 2012 तक। टेनिस के कई दिग्गजों ने शेरापोवा को टेनिस जगत में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों की सूची में रखा है।

शेरापोवा एक खिलाड़ी होने के साथ–साथ मॉडल भी हैं। उन्होंने कई मॉडलिंग असाईन्मेंट्स भी किए हैं। वो नाईक, प्रेस और कैनन जैसी बड़ी ब्रांड का विज्ञापन भी कर चुकी हैं। फरवरी 2007 से ही वह यूनाईटिड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम की गुडविल एम्बेसडर हैं। वह टाइम पत्रिका द्वारा वर्ष 2011 में 30 महिला टेनिस लिजेंडस : भूत, वर्तमान, भविष्य' की सूची में भी सम्मिलित थीं। फोर्ब्स के अनुसार मारिया सर्वाधिक कमाने वाली महिला खिलाड़ी लगातार 11 वर्षों तक रह चुकी हैं। हालांकि मार्च 2016 में शेरापोवा ने सनसनी भरा खुलासा किया कि वो 2016 के आस्ट्रेलियन ओपन के ड्रग टेस्ट में फेल हो गई थीं। शेरापोवा मेल्डोनियम के टेस्ट से पॉज़िटिव पाई गईं। मेल्डोनियम दवा के प्रतिबंधित पदार्थ की सूची में 1 जनवरी 2016 को शामिल किया गया।

मारिया ने अभी कुछ दिन पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी जिसमें उसने यह बताया कि बीते दस साल से वह माईलड्रोनेट नाम की एक दवा खा रही है जिसे उनके पारिवारिक चिकित्सक देते आ रहे हैं। वो कहती हैं कि कुछ

दिन पहले आई.टी.एफ. की ओर से मुझे एक पत्र आया जिससे मुझे पता चला कि माईल्ड्रोनेट का दूसरा नाम मेलडोनियम है जिसे मैं पहले नहीं जानती थी। यह जानना आप लोगों के लिए बहुत ज़रूरी है कि बीते दस सालों से यह दवा वाडा के प्रतिबंधित पदार्थ की सूची में नहीं थी और मैं इस दवा को कानूनन बीते दस साल से लेती आ रही हूँ। लेकिन 1 जनवरी 2016 को नियम बदल गये और मेल्डोनियम को प्रतिबंधित पदार्थ में शामिल किया गया जिसे मैं नहीं जानती थी।

मेलडोनियम अमेरिका में प्रतिबंधित है परन्तु रूस में संवैधानिक तौर पर इस्तेमाल होता है। फिलहाल शेरापोवा पे आई.टी.एफ. ने प्रतिबंध लगाया हुआ है। हालाँकि रशियन टेनिस फेडरेशन ने शेरापोवा का समर्थन किया है और पॉज़िटिव ड्रग टेस्ट को 'नॉनसेंस' कहा है और उम्मीद की है कि शेरापोवा 2016 ओलंपिक खेलों में खेलेंगी। हाल ही में यूनाईटिड नेशन्स डेवलपमेंट प्रोग्राम ने 16 मार्च को मारिया को गुडविल एम्बेसडर के पद से निलंबित कर दिया है।

मारिया ने शुगरपोवा नाम की एक कैंडी बनाई है शुगरपोवा की वेबसाईट के अनुसार 'शुगरपोवा' वो कैंडी है जो शेरापोवा के मस्ती, फेशनेबल और मीठे के रूप को दर्शाती है। शुगरपोवा वर्ष 2013 में पूरी दुनिया में लॉन्च किया गया था।

(पृष्ठ 53 का शेष)

साल 1957–58 मधुबाला और किशोर 'चलती का नाम गाड़ी' की शूटिंग कर रहे थे। अब मधुबाला को एक अजीज हमसफ़र के रूप में किशोर नजर आये 1960 में किशोर और मधुबाला का विवाह हो गया। उस वक्त कई लोगो ने कहा कि मधु ने दिलीप को नीचा दिखाने के लिए किशोर से शादी की। बेटी की बीमारी की वजह से मधुबाला के पिता ने इन्कार नहीं किया। इसके बाद किशोर मधुबाला को इलाज के लिए लंदन ले गये और वहाँ डॉक्टरों ने कहा कि मधुबाला की मौत एक साल के अंदर कभी भी हो सकती है। ये वही किशोर थे जिन्होंने 'चलती का नाम गाड़ी' की शूटिंग पर मधुबाला से शादी की, हाँ के लिए अपना हाथ टेबल फैन के पास रख दिया था। अब मधुबाला को बेहद अफसोस था उन पर न दवा असर कर रही थी न दुआ। वह खामोश हो गई, रोती रहती। आखिरी दिनों में चांद सा दमकता हुआ चेहरा पीला पड़ गया था, शरीर सूख कर कॉटा हो गया था। जो मधुबाला खूबसूरती का पैमाना मानी जाती थी वो अपने अक्स से भी डरने लगीं। 23 फरवरी 1969 काली रात में जब पूरी मुम्बई नींद में सोई थी बेचैन मधुबाला के दिल की धड़कनें भी खामोश हो गईं। 36 साल की उम्र में अधूरी ख्वाहिशों और टूटे हुए अरमानों को समेटे हुए वो दुनिया से रूखसत हो गई।

ग़ज़ल

— आकांक्षा अवस्थी
कानपुर

बरहना ख्वाहिशों को लेके यूँ घूमा नहीं करते
निगाहों से सरे–महफिल उसे चूमा नहीं करते।
सुनो जब वो तलफ्फुज में सुनाई देने लग जाये
अमाँ जज्बे–जिगर लफ्जों से यूँ अफशा नहीं करते।
सदायें उस तलक जब चाहेगा वो तबही पहुचेंगी
बड़े नादान हो जाओ..सुनो! भटका नहीं करते।
नही हैं तेरे आँसू अब किसी गंगा से पाकीजा
कि फारिग हो चुका है तू अभी रोया नहीं करते।
मुहब्बत तो लबे–चुप से निबाही का सलीका है
यहाँ बोला नहीं करते, यहाँ दावा नहीं करते।

डर ले तूँ इंसान!

सपना मांगलिक
आगरा

धरती दुल्हन लागती, हरित चुनरिया ओढ़
काट पेड़ लगाओ क्यों, सुन्दरता में कोढ़।

काह बाकी रह जायगो, दोगे जल जब खोय
प्राण तरसें बूँदन कू, त्राहि त्राहि जग होय।

धरा आग सी तप रही, जापे रहो न जाय
घर खाट चंद्रमा पे, या फिर खोज उपाय।

बहुमंज़िला भवन बने, धरती सीने बोझ
हो जाऊं जलमग्न मैं, करती मन में सोच।

गंगा तरसे वारे कू, सांस न वायु लेत
वरुण रुष्ट होकर कहें, क्यों बरसाऊं मेघ।

नाप आती प्रलय को, बन न खुद में महान
अब भी उस भगवान से, डर ले तू इंसान।

पर्यावरण नष्ट कियो, जा मनुज कू बनाय
मूढ़ पकड़ परमेसरो, अब रोवे पछताय।

करते दोहन खनिज का, लूट संपदा लेत
माता से सब लेत हैं, कछु न बाकू देत।

बाढ़ तो भूकंप कभी, प्रकृति कुपित जान
छेड़े पर्यावरण जो, नहीं बचे इंसान।

विज्ञान का उखाड़ेगो, मनुज समय पर चेत
अब प्रलय जो आ गयी, मनू बचौगो न एक।

माहिया

—0—

देखो चाँद तके है
तुम पास खड़ी हो
वैरी हाथ मले है।

—0—

ये दिल भर आने दो
दुःख का गीत सही
मुझको तुम गाने दो।

—0—

हाँ ख्वाब कलाई से
बुनती हूँ सायें
मैं धून सलाई से।

—0—

प्यार कभी रार हुआ
घर मेरा अब तो
दैनिक अखबार हुआ।

—0—

आग कभी पानी है
आँखों में उसके
इक दर्द निशानी है।

अलसी (तीसी) तेरे गुण अपार

–रोशन आरा

अलसी, तीसी या फ्लैक्स सीड्स के नाम से भी जानी जाती है। यह दिखने मे काले भूरे रंग का छोटा सा बीज होता है। लेकिन इस बीज में कई बड़े–बड़े गुण छिपे हैं। इसमें एल्फा लिनोलेनिक एसिड, ओमेगा 3 फैटी एसिड, मिनरल्स मौजूद होने के करण यह आदमी को कई बीमारियों से बचाती है। एक चम्मच अलसी के बीज में कम से कम 1.8 ग्राम ओम्ेगा थ्री फैटी ऐसिड होता है। फ्लैक्स सीड्य यानि अल्सी के बीज में घुलनशील और अघुल्नशील फाइबर हमारे शरीर में पानी में डिजाल्व हो जाता है जिससे हमारा पेट काफी लम्बे समय तक भर रहता है जिससे खाने के बीच में एकस्ट्रा स्नैक्स खाने की इच्छा ही नहीं होती। अगर आप मोटापे से परेशान है तो खाने के बाद 1–2 चम्मच फ्लेक्स सीड्य अच्छे से चबाकर खा लीजिए; अगर चाहे तो रोस्ट करके खायें। इसमें सबसे अच्छा फायदा ग्राइन्ड करके ही मिलता है।

हाई ब्लडप्रेशर होने की स्थिति में 2 चम्मच अलसी का बीज ज़रूर खाये, इसमें मौजूद ओमेगा थ्री फैटी एसिड, एमिनो एसिड ब्लड प्रेशर को कम करने में कारगर होता है। अलसी के बीज हमारे हार्ट आर्टरीज को हार्डन होने और उनमें क्लाट होने से रोकते हैं। फ्लेक्स सीड्स इररेगुलर हाईबीट को संतुलित करते हैं इससे दिल हमेशा स्वस्थ रहता है शोधों से पता चला है कि फ्लेक्स सीड्स गुड कोलेस्ट्राल एच.डी.एल. को बढ़ाते हैं और बैड कोलेस्ट्राल एल.डी.एल. को कम करते हैं। अगर दो महीने लगातार 10–15 ग्राम अलसी का बीज रोजाना आहार में शामिल करें तो ब्लड शुगर स्तर में काफी सुधार देखा गया है अगर आप डायबिटिक नहीं हैं तो कभी डायबिटीज की बिमारी ही नहीं होगी। फ्लैक्स सीड्स में मौजूद एंटी आक्सीडेन्ट ब्रेस्ट कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर और कोलेन कैंसर से भी हमारी सुरक्षा करती है। अलसी में मौजूद एंटी आक्सीडेंट्स और फाइटो कैमिकल्स बढती उम्र के लक्षणों को कम करते हैं जिससे त्वचा पर झुर्रिया नहीं होती और कसाव बना रहता है इससे त्वचा स्वस्थ्य व चमकदार रहती है।

अलसी में लिनोलेनिक एसिड पाया जाता है। जो आर्थाइटिस डाइबिटिज, अस्थमा और कैंसर से लड़ने में मदद करता है। खास तौर से कोलोन कैंसर से लड़ने में सहायक होता है। इसमें उपस्थित लाइमन नामक तत्व आंतों में सक्रिय होकर ऐसे तत्व का निर्माण करते हैं जो फीमेल हार्मोन्स के संतुलन को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अलसी के बीज में मौजूद ओमेगा–3 धमनियों के अन्दर ब्लड क्लाट या कोलेस्ट्राल को जमने नहीं देता जिससे शरीर का रक्त संचार हमेशा सही रहता है। जोड़ों के दर्द में अलसी के तेल से मालिश करने से आराम मिलता है इस तेल से चेहरे पर मसाज करे तो त्वचा में चमक आ जाती है। खॉसी में अलसी का पाउडर बहुत फायदेमंद होता है एक चम्मच अल्सी के पाउडर को पनी मे उबालकर चाय की तरह हर रोज पीने से खांसी ख़त्म हो जाती है।

अलसी के बीज में हार्डफाइबर और लो कार्बोहाइड्रेट होते हैं जो कि वजन घटाने में कारगर साबित होता है। अल्सी वास्तव में गुणों की खान है यह बात दिगर है कि लोग इसके प्रति अधिक सजग नहीं हैं। हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को आसान बनाने में अहम किरदार निभाती है। इसके छोटे से बीजों में सेहत के लिए फायदेमंद हजारों गुण होते हैं बस इसके प्रति जागरूक होने की ज़रूरत है।

ओमेगा 3 फैटी एसिड हमारे शरीर के अन्दर नहीं बनता इसे भोजन द्वारा ही ग्रहण किया जा सकता है। शाकाहारियों के लिए अलसी ओमेगा 3 का बहुत ही अच्छा स्रोत है।
अगर आप स्वयं को निरोग और चुस्त दुरुस्त रखना चाहते हैं तो रोज कम से कम 10–15 ग्राम अलसी को अपने खाने में शामिल करें। पेट साफ रखने का घरेलू व आसान नुस्खा है त्वचा के रूखापन को दूर करती है तथा एग्जिमा आदि से बचाती है तथा लीवर को भी स्वस्थ रखती है।

बीमारी के अनुसार अलसी का इस्तेमालः–

1. खांसी में अलसी के बीज का पाउडर बनाकर उसकी चाय पीने से लाभ होता है। इसका सेवन दिन में 2–3 बार करें।
2. डाइबिटीज के मरीज को 10–15 ग्राम अलसी रोज खाना चाहिए। इसे हल्का भूनकर पीसकर इसके पाउडर को आटे मैं मिलाकर या दूध में डालकर या पानी में घोलकर पीना चाहिए।
3. अलसी सेवन के दौरान खूब पानी पीना चाहिए इसमें अधिक फाइबर होता है जिससे प्यास ज्यादा लगती है।

अगर आप स्वस्थ हैं तो हर रोज सुबह–शाम एक चम्मच अलसी का पाउडर पानी के साथ सब्जी, दाल या सलाद में मिलाकर लें।

अलसी का तेल भी है गुणकारीः–

अलसी का तेल भी गुणों से भरपूर होता है अगर त्वचा जल जाये तोअलसी का तेल लगाने से दर्द व जलन में राहत मिलती है। इसमें विटामिन 'ई' होता है इसका कुष्ठ रोगियों को सेवन करना चाहिए त्वचा पर लाभ होगा।

कुछ लोगों का मानना है कि अलसी गर्म होती है इसलिए गर्मी के मौसम में इसका सेवन कम कर देना चाहिए। लेकिन इस पर मतांतर है। कुछ लोगों का मानना है कि अलसी का सेवनकिसी भी मौसम में किया जा सकता है जबकि कुछ ऐसा नहीं सोचते। हालांकि अल्सी मे कई गुण होते हैं और इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है फिर भी आपको किसी विशेषज्ञ से सलाह जरूर लेना चाहिए वरना कई बार असंतुलित मात्रा आपकी सेहत के लिए कुछ परेशानियां भी पैदा कर सकती है।

अलसी का सेवन किस रोग में कैसे करें?

डब्ल्यू.एच.ओ. ने इसे सुपर फूड माना है यह रोगों के उपचार में लाभप्रद है। लेकिन इसका सेवन अलग–अलग बीमारी में अलग–अलग तरह से किया जाता है।

1. स्वस्थ्य व्यक्ति को रोज सुबह शाम एक चम्मच अलसी का पाउडर पानी के साथ या रोटी के आटे में मिलाकर या बेसन के चीले में मिलाकर या

सलाद के ऊपर छिडक कर लेना चाहिए।

2. अलसी के पाउडर को जूस, दूध या दही में मिलाकर भी लिया जा सकता है। इसकी मात्रा 15–20 ग्राम तक प्रतिदिन ली जा सकती है। 100–500 ग्राम अलसी को मिक्सर में दरदरा पीस कर किसी एअर टाइट डिब्बे में भरकर रख लें। अलसी को अधिक मात्रा में पीसकर एक साथ न रखें यह पाउडर के रूप में खराब होने लगती है। हफ्ते दस दिन से ज्यादा पुराना पीसा हुआ पाउडर प्रयोग न करें। इसको एक साथ पीसने से तिलहन होने के कारण खराब हो जाता है।
3. खांसी होने पर अलसी की चाय पीयें। पानी को उबाल कर उसमें अलसी पाउडर मिलाकर झाग तैयार करें। एक चम्मच अलसी पाउडर को दो कप 360 मिली. पानी में तब तक धीमी आंच पर पकाएं जब तक के यह पानी एक कप न रह जाये। थोड़ा ठंडा होने पर शहद, गुड़, या शक्कर मिलाकर पीयें। सर्दी, खांसी, दमा, जुकाम आदि में यह दिन में दो–तीन बार सेवन करें।
4. दमा रोगी एक चम्मच अलसी पाउडर को आधा गिलास पानी में 12 घंटे तक भिगो दें और सुबह शाम छानकर सेवन करें तो काफी लाभ होता है। गिलास कांच का होना चाहिए।
5. डायबिटिस के मरीज को अलसी पाउडर को अटे में मिलकर इसका सेवन करना चाहिए। प्रति व्यक्ति 15–20 ग्राम पाउडर को आटे में मिलाकर रोटियां बनायें। बेसन में मिलाकर चीला भी बनाया जा सकता है।

अलसी को धीमीं आंच पर तिल की तरह भूनकर मुखवाश की इसका इस्तेमाल किया जा सकता है ज्यादा पूरानी भूनी हुई अलसी इस्तेमाल में न लें। अलसी सेवन के दौरान खूब पानी पीना चाहिए।

अलसी के रेसिपी :

अलसी के लड्डू

सामग्री :– अलसी 1 कप, आटा 1 कप, चीनी 1 कप, घी 3/4 कप, बादाम 2 टेबल स्पून, काजू 2 टेबल स्पून, अखरोट 2 टेबल स्पून, गोंद 2 टेबल स्पून,

विधि – कढाई को गर्म करके अलसी को भून लेंगे। थोडा ठंडा होने पर दरदरा पीस लेंगे। अब कढ़ाई में एक चम्मच घी डालकर आटे को हल्का ब्राउन होने तक भूनेंगे। बचे घी को कढाई में डालकर गोंद को तलेंगे। बादाम, काजू, अखरोट को काट लेंगे गोंद को बेलन सेदरदरा कूट लेंगे। बची घी में दरदरी अलसी को महक आने तक भून लेंगे। लगातार चलाते हुए सिर्फ 5 मिनट भूनेंगे। अब कढ़ाई में 1 कप चीनी डालकर 1/2 कप पानी डालकर पकायेंगे 2–3 मिनट तक पकायेंगे 1 तार की चाशनी बनाकर चाशनी को थोड़ा ठण्डा करके सारी चीजें चाशनी में डालकर अच्छी तरह मिक्स करके लड्डू बनाकर रख लेंगे।

समीक्षा :

जनगीतों के नए तेवर : 'घाव नदी के'

कवि हृदय की मार्मिक अनुभूतियों की सशक्त एवं काव्यात्मक अभिव्यक्ति का नाम गीत है। विपरीत परिस्थितियों में भी गीत कभी मरता नहीं है। गीत शाश्वत व कालजयी है। गीत तपते हुए रेगिस्तान में पानी की एक बूँद की भाँति तृप्ति दायक है। गीत के अनेक रूप हैं। यथा – नवगीत, अनुगीत, प्रगीत, जनगीत आदि।

समीक्ष्य गीत कृति 'घाव नदी के' के अन्त कथ्य में कवि ने इन गीतों को जनगीत का नाम दिया है। परन्तु मैं इसे गीत, नवगीत और जनगीत की त्रिवेणी मानता हूँ।

गीतों में जहाँ कवि की वैयक्तिक अनुभूतियों के स्वर होते हैं, वहीं नवगीतों में टटके बिम्बों, उपमानों और मिथकों के माध्यम से दुनिया–जहान की बात कही जाती है। जनगीतों में जन–जन की पीड़ाओं, समस्याओं एवं व्यथाओं को वाणी दी जाती है।

प्रस्तुत कृति में कवि श्री यादराम शर्मा के 57 गीत संग्रहीत हैं। शर्मा जी इस क्षेत्र में बहुआयामी छवि रखते हैं। अब तक गजल, दोहा, व्यंग्य, हाइकू आदि विधाओं में उनकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित और चर्चित हो चुकी हैं। गीत विधा में उनकी यह प्रथम कृति है। इन गीतों में प्रेम, पर्यावरण, राष्ट्रीय चेतना एवं जीवन के प्रति आस्थावादी दृष्टिकोण मिलता है।

प्रेम जीवन का सत्य है। बाइबिल भी प्रेम को ही परमेश्वर मानती है। प्रेम और सौन्दर्य जीवन को आकर्षण और जीवन्त बना देते हैं। यथा – 'दिल से/दिलबर की बाहों में/कर सोलह शृंगार/प्यार का/कर दिल से इकरार।'

पेड़–पौधे हमारे पर्यावरण को सजाते–सँवारते और सन्तुलित बनाते हैं। इनका संरक्षण अति आवश्यक है। कवि के शब्दों में – 'पर्यावरण न बिगड़े जिससे / मौसम मुस्काये / हम में से हर एक / पेड़ का रक्षक बन जाए।' अथवा – 'मौसम हँसता है हम से ही / पर्यावरण बने / फल देते हम देते छाया/ है/हम वृक्ष बने।'

इसी प्रकार खेतों में नीलों तक फूली हुई सरसों का एक शब्द चित्र प्राकृतिक परिवेश को कितनी सहजता से प्रस्तुत करता है?जरा देखिए – 'नई नवेली/दुल्हन जैसी / सरसों जब फूली / नेहसिक्त हो /यौवन की / खुश्बू में सब भूली / इतराई खुद देख जवानी / मन के दरपन में।'

'जल ही जीवन है' की तर्ज पर आज चारों ओर जल की महिमा एवं सुरक्षा के गीत गाए जा रहे हैं। इस पूरे परिदृश्य को कवि ने दो पंक्तियों में कितनी सहजता से प्रस्तुत किया है। यथा – "हम रहे धर में कि हो जंगल / है जरूरी जिंदगी में जल।'

इतना ही नहीं 'विघटन की बातें भूलो तुम' शीर्षक गीत में कवि का राष्ट्रवादी एव आशावादी स्वर फूटा है। आज गिरते हुए नैतिक मूल्यों के इस युग में अपनापन जैसे खो सा गया है। इस अपनेपन के बिखराव को एक शब्द चित्र प्रस्तुत करते हुए कवि ने सर्वथा नई अछूती और टटकी उपमा के माध्यम से अपनी बात कही है। यथा – छितरा–छितरा/फटे दूध–सा/बिखरा अपनापन।'

सामाजिक सरोकारों का वर्णन करते हुए कवि के कुछ गीतों में उनका दार्शनिक दृष्टिकोण भी प्रकट हुआ है।

कुल मिलाकर कृति के सभी गीत पढ़ने, गुनगुनाने एवं आनन्दित करने योग्य है। इन गीतों में जहाँ कथ्य का कौशल दर्शनीय है, वही शिल्प सौष्ठव भी प्रशंसनीय है। निश्चय ही प्रस्तुत कृति कवि को गीत के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्रदान करने वाली है। गीतों की स्तरीयता एवं मुद्रण का आकर्षण पाठकों को निश्चय ही प्रभावित करने वाला है। कृति पठनीय एवं संग्रहणीय है?

समीक्षक–डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, हरदोई

'घाव नदी के' : कविः यादराम शर्मा

प्रकाशक : संवेदना प्रकाशन, अलीगढ़ **मूल्य : 150/– रु.**

(कृपया यहाँ से काटें)

'कालजयी' की
आजीवन सदस्यता हेतु प्रपत्र

नाम : .....

संस्था : .....

मंगाने का पता : .....

.....

..... पिन कोड :.....

फोन नं :

ई–मेल :

सदस्यता राशि ₹ 1500/– + डाक खर्च ₹ 500/– का

बैंक ड्राफ्ट नं.

"KALJAYEE" नाम से **अलीगढ़ शाखा** पर देय ही बनवायें।

इसे कटकर /स्केन कर डी.डी. के साथ प्रबंध सम्पादक के पंजीकृत डाक से भेजें।

यात्रा वृत्तांत :

भूटान दर्शन एक सुखद अनुभूति

बबिता जैन
नलबाड़ी

प्रकृति की अनुपम छटा से सराबोर भारत का अजीज पड़ोसी मित्र भूटान भले ही कहने मे छोटा सा देश हो मगर हिमालय की गोद में होने के कारण इसका महत्व अपने आप में बेशुमार है। मैं जिस जिले में रहती हूँ, उसकी जितनी जनसंख्या है, उससे भी कम लोग भूटान में रहते हैं, यानि भारत के मुकाबले ऊँट के मुँह में जीरा। लेकिन जितने भी लोग वहाँ रहते हैं उनका आतिथ्य भाव और समर्पण देखने लायक है। कुछ दिन पहले मुझे मेरे पति बच्चों और दीदी के परिवार के साथ भूटान दर्शन का मौका मिला जो कि अविस्मरणीय यात्रा के रुप में हमेशा हमेशा के लिए मेरी जिंदगी का हिस्सा बन गया।

भूटान और भारत के सम्बंध बहुत मित्रवत हैं और भूटान भारत की सीमा पर भी है इसी का परिणाम है कि भूटान जाने के लिए पासपोर्ट की आवश्यकता नहीं है। लेकिन कुछ औपचारिकताएँ पूरी करनी होती है। हमारे देश के भूटान सीमा पर बसे जयगाँव से हम विदेशी जमीन पर पहुँचे जहाँ पहुँचते ही देश की तरह जगह का नाम भी बदलकर फॉलसीलिंग हो गया था। वहीं हमने सभी औपचारिकताएँ पूरी करके 4 दिन के लिए भूटान भ्रमण का अनुमति पत्र प्राप्त किया। अगर किसी ने भारत के स्वर्ग यानि कश्मीर में भ्रमण किया हो तो वो भूटान में प्रवेश के साथ ही यहाँ से प्रस्थान तक, एक पल के लिए भी वहाँ की यादों को विस्मृत नही कर पाएगा क्योंकि भूटान अपने आप में कश्मीर का ही दूसरा रूप है।

फॉलसीलिंग से 5 किलोमीटर आगे जाते ही तो जैसे हम पहाड़ों में गुम ही हो गए। खूबसूरत पहाड़, बादलों के बीच से से गुजरती गाड़ियाँ, झरने, साफ सुथरी सुरक्षित सड़कें, एक साथ कई कई पहाड़ों के एक साथ दिखाई देने के कई सारे खूबसूरत नजारे, बीच बीच में छोटे–छोटे गाँव, खाने पीने के सामान की राह में चलती मोबाइल वैन कुल मिलाकर बेहद रोमांचक नजारों में डूबते निकलते हम कब 6 घंटे का सफर तय करके भूटान के खास शहर पारो में दाखिल हो गए हमें पता ही नहीं चला ।

भूटान के एक मात्र हवाई अड्डे के गौरव का साक्षी यह शहर राह के प्राकृतिक दृश्यों से भी ज्यादा खूबसूरत है। रात को हमने शहर की चहल पहल से दूर पहाड़ी पर बने एक रिजोर्ट में विश्राम किया और फिर नाश्ता करके निकल पड़े। वैसे तो यहाँ जो भी है सभी कुछ इतना खूबसूरत है कि एक एक पर कई कई पन्ने लिखे जा सकते हैं पर फिर भी यहाँ स्थित टाइगर नेस्ट का कोई मुकाबला नहीं है। हमें अफसोस रह गया कि हम पहाड़ पर जाकर इसे नहीं देख पाए, क्योंकि यहाँ जाने के लिए एक दिन और चाहिए था और हमारे पास समय की कमी थी।

दोपहर तक हमने वहाँ के सभी स्थानों का भ्रमण किया जिनमें मोनेस्टरी यहाँ विशेष रुप से आकर्षण का केंद्र है। वहाँ खाना खाकर हम भूटान की राजधानी थिम्फू के लिए निकल गए जो कि वहां से लगभग 1 घंटे की दूरी पर है। रास्ते में बहती थिम्फू नदी के संग में हम भी बहते हुए ही जा रहे थे। वाकई में क्या नजारे थे मानो कि वहीं पर रुक जाए और घंटों उनमें ही डूबे रहे।

थिम्फू पहुँचे तो यहाँ का दृश्य हमारी राजधानियों को देखने की अभ्यस्त आँखों से एकदम अलग था। हमारे देश की राजधानी या प्रदेशों की राजधानियों जैसा शोरगुल यहाँ पर बिल्कुल नहीं था। एकदम शांति, करीने से चलती गाड़ियाँ, कहीं भी हार्न की आवाज नहीं, कचरे की गाड़ियों को पूरे तकनीक से कचरे को लेकर जाना जहाँ सुखद अनुभूति के साथ हमारे यहाँ से अलग प्रतीत हो रहा था वहीं हर किसी के द्वारा हिंदी भाषा बोला और समझा जाना, हर एक जगह रुपए का इस्तेमाल, होटलों आदि में हिंदी चैनल और गानों का चलना आदि से एक पल के लिए भी नहीं लग रहा था कि अभी कदम किसी पराई धरती पर है।

भूटान की सीमा चीन से लगती है पर यह भी हमारे लिए आश्चर्यचकित करने वाला था कि इन सीमाओं की रक्षा भारतीय सेना भी करती है। अभी तो वहाँ प्रजातांत्रिक शासन है पर वहाँ आज भी राजा का बहुत अधिक महत्त्व है। यह भी वहाँ हमारे लिए अचरज के जैसा था कि वहाँ पर हमें एक भी छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी दुकान और होटल ऐसा नहीं मिला जहाँ पर वहाँ के राजा और रानी की फोटो न हो। और हमने वहाँ पर यह भी सुना कि वहाँ की प्रथा के अनुसार राजा की जिस लड़की से शादी होती है उसकी सारी बहनें राजा की साली कहलाती है। जहाँ देखो वहीं बने सेब के बगीचे मानो हमें ही बुला रहे थे पर उस समय सेब के अनुकूल मौसम न होने से खट्टी सेब ही हमें खाने के लिए मिल पाई। सड़कें पर लगी कसरत करने की खुलेआम मशीनें, लाजवाब यातायात व्यवस्था, हार्न बजाने के साथ साथ चालान, भारतीय खाने के लिए कई रेस्टोरेंट आदि कई बातें ऐसी थी जो अपने आप में उस छोटे से देश की समृद्धि की कहानी अपने मुँह से ही कह रही थी ।

लेकिन एक सम्पूर्ण देश का एक पहाड़ पर ही बसे होने के कई नुकसान भी है जो कि वहाँ साफ नजर आ रहे थे। आम आदमी का जीवन जो दूर दराज में रहते हैं यहाँ भी बहुत तकलीफदेह है। खासकर पीने के पानी के लिए बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन आबादी कम होने और भारत द्वारा सतत मदद मिलने से यह देश स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ रहा है।

अनेक मोनेस्टरी से सुसज्जित यह धरती गौतम बुद्ध की विश्व में सबसे बड़ी प्रतिमा को अपने अंदर समाहित करने के गौरव से भी अलंकृत है। एक ऊँची पहाड़ी पर बनाई गई यह प्रतिमा, कई किलोमीटर दूर से ही अपनी भव्यता की कहानी कहती नजर आती है। मैं तो कहना चाहुंगी कि हर किसी को वहाँ जाना चाहिए। वहाँ पलती भारतीयता को देखकर वहाँ भारत का अहसास होगा और वहाँ की व्यवस्था को देखकर किसी पाश्चात्य देश की कल्पना साकार हो जाएगी।

सबसे खास यहाँ के लोग जो अपनी टूटी फूटी हिंदी भाषा से कुछ यूँ दिलों पर जादू चलाने में सक्षम हो गए कि उनसे बातें ही बातें करते रहने को मन हो रहा था। सीधे सादे और सच्चे लोगों का भूटान देश न केवल प्राकृतिक सौन्दर्य का खजाना है बल्कि शालीनता और मेहमाननवाजी का भी अनुकरणीय उदाहरण है। बहुत कुछ वहाँ ऐसा है जो हम सीख सकते हैं। और अनुसरण करके हमारे देश को भी बेहतर बनाने में अपना सहयोग दे सकते हैं।

तमन्नाओं के रास्ते.....
शिलांग में ए.आई.पी.सी. का सोलहवाँ सम्मेलन

मन का दीया बुझा कर / वो लड़की / खामोशी के समन्दर में / उतर रही थी / ठहर गई / अचानक / ठिठक कर / घोर अन्धेरे बियाबान में / ये कागज / ये कलम / कौन छोड़ गया है / न जाने क्यू / वो झुकी / उसने कलम उठा ली / कागज को चूम कर / उसने माथे से लगाया / वो सोच रही थी – जीने के लिए / बोलना नहीं रह गया अब जरूरी / उसने / अपने आंचल की गिरह खोल / सारे हर्फ तरतीब से लगाए / चुन–चुन कर कागज के सीने पर धर दिए / रास्ते तिलिस्मी हो गए / मंजिलें चमकदार / उसकी कलम ने सारे अन्धेरे पी लिए और उसके लिए सारे अक्षर सितारे हो गए / दुनियाँ अदब की रोशनी में खिल गई। – सुनीता खोखा

उस लम्हें में जब मैं यह नज्म वक्त को थमा रही थी, नहीं जानती थी कि मैंने किसकी कहानी लिखी है। अब समझ गई हूं ये मेरी कहानी है, तुम्हारी कहानी है और ए.आई.पी.सी. की भी है, उसमें शिरकत करने आई हर महिला की जो अन्धेरों को पीछे छोड़, तमन्नाओं के रास्ते चल पड़ी है। हम सब वाकिफ हैं इस सच से कि डा. लारी आजाद ने ही घनघोर बियाबान में कलम रखी है, जिन्दगी से बेजार होती रुहें का हाथ थाम उन्हें मंच मुहैया करवाया है। कुनबों की सड़ती परम्पराओं के बोझ तले दबती बेनकसद जिन्दगी जीतीं औरतों को अपने ख्वाब याद दिलवाए हैं, वर्जनाओं को तोड़ने का हौसला दिया है, आकाश में उड़ान भरने की ताकीद की है।

रास्ते जब अन्धेरों से लबरेज हों तो जुगनू भी सूरज हो जाया करते हैं। आज कल दुनियां में तमस तारी हो रहा है। हौशमन्दी खत्म हो रही है। जाति, धर्म, लिंग की खाईया खदक बन रही है, बारूद की फसलो पर बहार आई है। रहनुमा आवाम को गुमराह करने पर आमाद हैं, जुबाने चुप रहने को मजबूर हैं – ऐसे में सांस लेने को कुछ तो चाहिए – ए.आई.पी.सी. हमारें इन्सान बने रहने की इसी चाहत को पूरा करती है क्योंकि इस मंच पर खुलूस की बातें होती हैं, मुहब्बत पनपती है, ख्वाब बंटते हैं, अरजुए तमन्नाओं के गले लगती हैं, हर्फ जुगनू हो जाते हैं, धुने बनती हैं, संगीत बजता है, रंग बेखरते हैं – घुलते हैं, बन्धन टूटते हैं। मैं' खत्म होती है लोग 'हम' होना चाहते हैं। भले ही ए.आई.पी.सी. को जन्म देने की पीड़ा इसके संस्थापक डा. लारी आजाद ने झेली है, पर वस्तुतः ये स्त्री की परिकल्पना का संसार है, जिसे पाने के लिए वो कब से बेचैन थी। यहां आकर तो बेखौफ रहती है, गाती है, लिखती है, कहती है, सुनती है, अपने दिल के कोने में पड़ी हुई सोच को सांझा करती है, सीमा, दुःख, उमर, रिश्ते सब को भुला जीना चाहती है, खिलखिलाती है वो। ये वो जगह है जहां रिटायर्ड चन्द्रावती नागंश्वर खुद को गुड़िया बताना पसन्द करती है यहां आकर सिमरत सुमेरा बेल उठती है – "तुम्हें नहीं पता, मेरे भीतर क्या–क्या दबा पड़ा है", गीता फूलिनकोट व रमनप्रीत यहां हर पल को अपने कैमरे में कैद करना चाहते हैं, रीतु गौड यहां से रंग चुनती है अपने खाली कैनवास पर कालजयी कृति बनाने हेतु। पूजा गुप्ता यहाँ आकर इतनी आनन्दित होती है कि उसके शब्दों से उत्साह टपकने लगता है। यूं लगता है प्रतिक्षण रुपान्तरण घटित हो रहा है यहाँ।

हर साल होने वाला ए.आई.पी.सी. का अधिवेशन बहनों के लिए उत्सव सा होता है। ए.आई.पी.सी. की सभी सदस्याएं व्यग्रता से इन्तजार करती हैं वार्षिक अधिवेशन का, और अपना बेहतरीन समर्पित करती हैं इस यज्ञ में। गुलबर्गा के

अधिवेशन के बाद तय हुआ था कि इस बार अधिवेशन शिलांग में होगा, इसलिए इस अधिवेशन को लेकर हर सदस्या बेहद उत्सुक थी क्योंकि बादलों के घर मेघालय में, आयोजन करने वाली हमारी संयोजिका प्रो. स्ट्रीमलेट दखार बेहद समर्थ एवं उर्जावान महिला हैं। डा. स्ट्रीमलेट से सादर आमन्त्रण पा देश विदेश से प्रतिभागी 24 फरवरी शाम को ही सेंट्रल हाल लाइब्रेरी में एकत्रित होने शुरू हो गए। रात्रि भोज के बाद सब के ठहरने की व्यवस्था की उद्घोषणा मिस एलेफीडेरी ने मंच से की। निर्धारित बसों में बैठ सब डेलीगेट अपने–अपने ठहरने की जगह पहुँचे। हम लोगों के ठहरने की व्यवस्था नेहू के पुराने गेस्ट हाउस में की गई थी। सबने इस रमणीय यूनिवर्सिटी में ठहराए जाने की प्रशंसा की। थक कर आए, सभी लोग निद्रा के आगोश में चले गए।

नेहू के गेस्ट हाउस में हमारी सुबह बेहद सुखद एवं चमकदार बीती। बसों द्वारा सारे डेलीगेट्स को अधिवेशन के लिए 'ऊ सोसो थाम ओडिटोरियम' में पहुँचाया गया। नौ बजते–बजते सारे प्रतिभागी सभागार में अपना स्थान ग्रहण कर चुके थे। विभिन्न प्रान्तों से आई, पारम्परिक परिधानों में सुसज्जित भारतीय कवियत्रियां, फूलो जैसी प्रतीत हो रही थीं। भारत में अनेक धर्म, अनेक जातियां विभिन्न रीति–रिवाज व वेश भूषाएं और अनेक भाषऐं तो हैं लेकिन इस सांस्कृतिक वैविध्य को ए.आई.पी.सी. ने एकता के सूत्र में पिरो दिया। मंच की सज्जा नयनाभिराम थी। खास तौर पर बैनर बेहद खास था क्यूंकि इस बार का स्लोगन था "ऐबल हेन्ड्स वार्म हार्ट" (Able hands warm heart) संयोजिका प्रो. स्ट्रीमलेट दखार ने अति विशिष्ट अतिथियों से आग्रह किया कि वो मंच पर अपना स्थान ग्रहण करें। सम्माननीय गृहमन्त्री रोशन वरजरी ने अपना स्थान ग्रहण किया शिलांग की ए.डी.सी. ईडा माजाव ने उनकी साथ वाली कुर्सी को सुशोभित किया। अन्य अतिथिगण भी मंच पर आसीन हुए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ, गृहमन्त्री रोशन वरजरी, ए.डी.सी. ईडा माजाव, प्रो. लारी आजाद, डा. स्ट्रीमलेट दखार, डॉ. विजयलक्ष्मी कोसगी सभी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर के किया। सब ने विश्व शान्ति की कामना की। डा. स्ट्रीमलेट दखार ने विनम्र व भाव भरे शब्दों में अतिथियों का अभिनन्दन किया। उन्होंने अधिवेशन में सम्मिलित होने आई, भारत के विभिन्न प्रान्तों की सब बहनों का, एवं विदेशों से आई प्रतिनिधियों का गर्मजोशी से स्वागत किया व मंच क्रस्टीना वानिंयाग को प्रस्तुत किया जिन्होंने अंग्रेजी में कार्यक्रम का संचालन किया और उसे अनुवादित किया शुद्ध हिन्दी में डा. जीन. डखार ने। कार्यक्रम के आरम्भ में बहनों ने सस्वर ए.आई.पी.सी. का कुलगीत गाया। मार्टिन लूथर क्रीश्चियन यूनिवर्सिटी शिलांग से आए विद्यार्थियों ने बेहद सुन्दर (खासी भाषा में) स्वागत गीत प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया। डॉ. स्ट्रीमलेट ने औपचारिक संवाद के उपरान्त सादर, इस आन्दोलन के जनक, बहुभाषाविद, समाज सुधारक, ए.आई.पी.सी. के प्रणेता डा. लारी आज़ाद से अनुग्रह किया कि वो अपने अभिभाषण से सभा को अनुग्रहीत करें। डॉ. लारी आज़ाद ने उपस्थित बहनों को इस ज्ञान यज्ञ में आहुति देने पर बधाई देते हुए कहा, "दुनिया भर की सारी बहिनें एक हो जाओ। तुम्हारे पास खोने को बस सदियों पुरानी पुरुष प्रधान समाज की वर्जनाओं की ढहती दीवारे हैं और पाने के लिए स्वच्छन्दता का असीम आकाश। आओ ए.आई.पी.सी. तुम्हें उड़ने को मजबूत पंख और हौसले की विशाल थाती सौंपती है।"

मेघालय सरकार के डायरेक्टर आर्ट एण्ड कल्चर, भारतीय स्टेट बैंक, बैंक ऑफ इण्डिया तथा एपेक्स बैंक इस आयोजन के प्रमुख प्रायोजक थे। इनके प्रतिनिधियों का पुष्प गुच्छ, सम्मान पत्र एवं सम्मान चिन्ह देकर स्वागत किया

गया। श्री पी.एस दखर, डिप्टी कमीश्नर (इस्ट खासी हिल्स) ने दो शब्द कहे। आदरणीय गृहमन्त्री रोशन वरजरी, ए.डी.सी ईडा मजाव, संस्थापक लारी जी एवं अन्य सम्मानित सदस्यों ने बेहद सुन्दर ए.आई.पी.सी. स्मारिका का लोकार्पण किया। इसी अवसर पर ए.आई.पी.सी. की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका 'जे.एच.एस.एच.' का भी विमोचन हुआ। नई सजधज में संवरी वैश्विक त्रैमासिक पत्रिका 'कालजयी'का लोकार्पण भी सभी माननीय अतिथियों ने किया। सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा। तत्पश्चात् ए.आई.पी.सी. के सघः प्रकाशन से दो पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, डा. नन्ध्या पी मेरिया रचित "सन्ध्या का क्षितिज" एवं डा. मोनिका कृत "किशोरों में संवेगात्मक परिपक्वता एवं समायोजन शोलता"

आदरणीय रोशन वरजरी (गृहमंत्री मेघालय) ने अपने उद्‌बोधन में अपनी प्रथम कविता के जन्म की स्मृतियों को सभा में सांझा किया। उन्होंने कहा कि दर्द से ही कविता जन्म लेती है।

मेघालय की अत्यन्त वरिष्ठ सदस्या लक्की खारपुरी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। असम की सदस्य रही हमारी वरिष्ठ सदस्या निरोदा हांडिक, जो अब हमारे बीच नहीं रहीं उनकी स्मृति में मौन रखा गया। इस अवसर पर उन पर केन्द्रित स्मृति संग्रह, जिसका संयोजन सुराजिता हांडिक ने किया था। का लोकार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। सब लोग राष्ट्रीय गान के लिए सावधान खड़े हुए। राष्ट्रीय गान के उपरान्त सभा चाय पानी के लिये विसृजित हो गई।

दूसरे सत्र में बहुभाषीय काव्य गोष्ठी हुई जिसकी अध्यक्षता की शिलांग की वरिष्ट कवयित्री लक्की खारपूरी ने, स्वीटीमोन विशिष्ट अतिथि रहीं। डा. बीकिका ललू व मालविका विशारद ने संयुक्त संचालन किया। काव्य पाठ किया – क्रिस्टीना वानियांग, सुराजिता हांडिक, सनिग्धारानी गोगोई, गिरी जी. डी. भाइली, कल्याणी बरूआ, अरूंधती बेजबरुआ, प्रियंका बरदोई, राजकुमारी गोगोई, शोभा डी. कोलोरी, अनुसुया अरकेरी, सन्ध्या सन्यागावकर, सौदामिनी राव, इन्द्रा पाटिल, रथना नागराज, श्री. चिन्नामा श्यामला कुलकर्णी, डोरथी मरक, जामि मेरी मरक एवं मीरा शर्मा ने।

अपराह्न खासी काव्य धारा के सत्र की अध्यक्षता की डा. एस. लमोर ने, विशेष अतिथि थी – प्रो. लालरीमवाई खियांगटे। मंच का संचालन लुसी मेरी मालनजिआन ने किया। डा. सलोनी बरुह, मीनीमोन ललू, मेरीलिस कुरकलांग, पदीगलीन फानबूह, रोएप्रभा नोन्गखिलम, ईवाकुई खारपूरे, डोरिश मिलेंशी बेरस्त, इंबालिजा खोनगिस्न, खासीमोन फानबुह, डा. स्ट्रीमलेट दखार डाकोमोन मारवोह और इबाडोनडोर सिरोमने ने काव्यपाठ किया।

भोजन के बाद सभी पुनः सभागार में एकत्रित हुए, सत्र था हिन्दी काव्य धारा। यह सत्र निरोद हाण्डिक की स्मृति में आयोजित किया गया। अध्यक्षता की सुलभ के विशेष प्रतिनिधि डा. अशोक कुमार ज्योति ने। सिमरत सुमेरा (पंजाब) सहअध्यक्षा रहीं। सत्र की विशेष अतिथि थी डा. सुप्रिया पी (कालीकट)। सुनीता खोखा ने इस सत्र का संचालन किया। बड़ी श्रद्धा व भाव से सुनीता खोखा ने निरोदा हांड़िक को याद किया व कहा – उनका जाना हमारे लिए बड़ी क्षति है। सुनीता खोखा ने आदरणीय बिन्देश्वर पाठक (सुलभ इन्टरनेशनल) को ए.आई.पी.सी. पर विशेष स्नेह एवं संरक्षण बनाए रखने के लिए धन्यवाद दिया। सत्र आगे बढ़ा – काव्य पठ किया – गुड्डी अठवाल (सुलभ प्रतिनिधि), डा. एन.के. प्रीथा, (गीता फुलयानकोट, गंगला कपरे नन्दरानी हमीलपुरकर (गुलबर्गा) शोभा विजय (मेरठ), प्रो. मधूलिका अग्रवाल (कोरबा), पदमा छेत्री, पदमा प्रधान, एव नोमिका ए. बोर्मन (शिलांग), लक्ष्मी नन्दा ('सुलभ' प्रतिनिधि – अलवर), कमला सुदर्शन (बंगलौर)।

चाय के बाद बहुभाषीय काव्य सत्र आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि बन कर आए काव्य प्रेमी – उत्साह की प्रतिमूर्ति हँसमुख, राज्यपाल मेघालय महामहिम शन्मुघ नाथन। जिनकी उपस्थिति ने इस सत्र को रोचक बना दिया। सत्र प्रारम्भ होने पर संस्थापक ने उनका नागरिक अभिनन्दन किया। सत्र की अध्यक्षता की डा. विजयलक्ष्मी कोसगी, विशेष अतिथि थी डा. सरोजनी चावलार, मंच का संचालन किया मंगला कापरे ने, कविताएँ प्रस्तुत कीं – शान्ता प्रस्तापुर (कन्नड़), नयना करंजगी (मराठी), पोलिमा चेतिया (असमी), मालविका विशारद (बंगला), गीतांजली पाण्डा (उड़िया), शोभा तेजय (इंग्लिश) एस. लल्लरीमुआई (मीजो), सोनिया एस. शाह (कोंकणी), डारधी मरक (गारो), नायाब जोहरा जैदी (उर्दू), सुनीता खोखा (हिन्दी), के.पी. सुधीरा (मलयालम), शकुन्तला शर्मा (छत्तीसगढ़ी), चिन्नमा बलेपूरे, गीता लिम्बू (नेपाली), शकुन्तला दांडगी, विनला विभूति, मधुमती पाटिल (कन्नड़), अनुसुया एक कीटादल, गौरव्या (करकी, गंगया तीरकानवर, सुनन्दा मूले, सुनन्दा बेनूर, सुमन कामत, आशा बी बेनी, शोभा डी. केलूरी, अनुसूया अरेकेरी, चिन्नमा बिरादर, नेलाशवरी, ऊषा शिवशान्त रेड्डी, राजनन्दा गार्गी, नीता एस. वी गुलबर्गा, शोभा रन्जोलकर, ललिता शेखर, डा. विजयलक्ष्मी खाण्डे, डा. शरणम्मा बिरादर, नन्दा पाटिल, कस्तूरी साजन, श्री देवी पाटिल, इन्दू बाई ए श्रीकर, और मन्जुला मालाशेट्टी ने राज्यपाल के कर कमलों से इस सत्र में कुछ पुस्तकों का विमोचन भी हुआ जिनमें से उल्लेखनीय थीं – के.पी. सुधीरा, सरोजनी भद्रापुर, सुनन्दा मूले, सरोजनी चावलर, कालेगौड़ा शान्ता देशमाने द्वारा रचित पुस्तकें।

अपने अभिभाषण में महामहिम राज्यपाल ने हिन्दी बोल कर सबको चकित कर दिया। वे मूलतः तमिल भाषी हैं और एक खासी भाषिय क्षेत्र में बोल रहे थे। सभागार हर्ष एवं करवल ध्वनि से गुंजायमान हो गया जब उन्होंने विभिन्न प्रदेशों से आई कवियत्रियों से, मंच से व्यक्तिगत संवाद किया। मेरे लिए किसी इतने विशिष्ट व्यक्ति का ऐसा विनम्र आचरण आकर्षक था। उन्होंने प्रत्येक कवियत्री को नाम से संबोधित करते हुए आग्रह किया कि वो मेघालय की सशक्त नारी पर चार लाइने लेखें। मंच से ही उन्होंने घोषणा की कि वो फिर से (आने वाले कल) ए.आई.पी.सी. में आना चाहेंगे जिसे अयोजकों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। राष्ट्रीय गान के साथ यह सत्र भी सम्पन्न हुआ।

चाय के बाद सब लोग रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनन्द लेने के लिए अपने–अपने स्थान पर बैठ गए। इस कार्यक्रम का संचालन किया पूजा गुप्ता (नेपाल) ने। विशिष्ट अतिथि थे राजेश कुमार (दिल्ली) एव रमनप्रीत कौर। कई रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत हुए जिनमें से सिमरत सुमेरा का सूफी नृत्य एवं मारलीन लूथर क्रीश्चियन यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों की प्रस्तुति विशेषतः सराही गई।

दिन बहुत व्यस्त रहा लेकिन कोई भी थका नहीं था। हमारी शिलांग टीम बेहद अच्छी थी। प्रत्येक प्रतिभागी को बहुत अच्छा आतिथ्य दे रही थी। अगले दिन के लिए ऊर्जा ग्रहण करने, भोजनोपरान्त सब अपने ठहरने के स्थल पर चले गए। वैसे अधिवेशन में सोता कोई नहीं है छोटी–छोटी टुकड़ियों में काव्य गोष्ठी, गीत संगीत, चर्चा विमर्श रातभर चलता रहता है।

अधिवेशन का दूसरा दिन छब्बीस जनवरी, 2016, पहला सत्र था शोधपत्र प्रस्तुति का। इस सत्र की अध्यक्षता की मेघालय राज्य लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्षा एलवारिन दखार एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती शशीप्रवा ने। सत्र के मुख्य वक्ता थे डा. अशोक कुमार ज्योति। केरल से आई डा. सुप्रिया ने इस सत्र को संचालित किया। प्रो. सुनन्दा होनराव (बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ), मधुमती पाटिल (स्त्री एवं कृषि), सरोजनी चावलार (जंजीरा की सिद्दी महिलाएं), मधुमाला की लेंगड़े (जय देवी जय लिकडे), एवं डा. हिना ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। एकादमिक सत्र प्रो. सुनन्दा होनराव की अध्यक्षता में चला। विशिष्ट अतिथि थीं रमनप्रीत (पंजाब) डा. सुप्रिया (कलीकट) ने संचालन किया। नारी से जुड़े विभिन्न पेषयों पर सार्थक चर्चा हुई। खुले सत्र का संचालन किया डॉ० नेताली जो एन. डींगडोह ने। सिमरत सुमेरा विशिष्ट

अतिथि रही। कविता में स्त्री की छवि, स्त्री के प्रति हिंसा, जैसे गंभीर मुद्दों पर बहस चली।

खासी एवं गारो काव्य धारा का संयुक्त सत्र खासीमोन फ़ानबूह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सत्र की विशेष अतिथि थीं क्लीयोपेट्रा जना। सत्र का संचालन किया रेआना नगवारी ने। कविताएं प्रस्तुत की – वन रहीन, मार थोन, ईवी लिलरी, सीन रेंग, डा. जैकलीन मरक, डा. नीमके मरक, एलफीडेरी खरसीन्टीऊ, दाहुन–आलोन खरसीन्टीऊ, माइनोरा संगमा ने।

दोपहर भोजन के बाद तीन बजे भव्य सम्मान समारोह आयोजित हुआ जो कि लगातार तीन चार घण्टे चला मार्टिन लूथर क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी के कुलपति रबर्ट जी लिंगदोह इस सम्मान समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। महामहिम राज्यपाल जी भी अपने वायदे के अनुसार पुनः पधारे।

सम्मान समारोह में इस बार गार्गी सम्मान डॉ सुप्रिया पी. (केरल), तिलोतमा सम्मान – सुनीता खोखा (नोएडा), कौदे आंडाल सम्मान – डा. पी.के. राधामणी (कालीकट), मीराबाई सम्मान – डा. जीन दखार (शिलांग), महादेवी वर्मा सम्मान – स्निग्धारानी गोगोई (असम), अमृता प्रीतम सम्मान – सिमरत सुमेरा (पंजाब), 'सुलभ साहित्य अकादमी पुरस्कार' – उमा पुरकायस्थ, एस ललरिमवाई (मिजो), शशिप्रेवा देवी (जोरहट), डॉ नताली डींगडोह (शिलांग), ए.आई.पी.सी. विशेष पुरस्कार : कमला सुदर्शन, लक्ष्मी नन्दा, कल्याणी बरूआ, ललिता शेखर, जयशीलता बायकॉड, मीना लाहोन, सुनन्दा मुले तथा नवरत्न नारियाँ उपाधि : लकी खरपुरी, सुनन्दा होनराव, रमनप्रीत कौर, क्रिस्टीना वानियांग इत्यादि को राज्यपाल मेघालय ने अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, नकद राशि, स्मृति चिन्ह व पुष्प गुच्छ अर्पित कर सारस्वत सम्मन किया। शानदार ताजपोशी कार्यक्रम में चुनी गयी मिस इंडिया–स्ट्रीमलेट दखार, मिस ब्यूटी विथ ब्रेन सिमरत सुमेरा, मिस ट्रिप हैट्रिक– मिताली चक्रवती, मिस टीन– वान्या, मिस शिलांग– अलफीडारी और मिस पापुलर– ट्रासिलिन खाइन।

संस्थापक लारी सर की नीति है – नवांकुरों को मंच पर विशेष स्थान देना, इसीलिए किशोरों को विशेष सत्र 'कल हमारा है' का आयोजन किया गया। ऊर्जावान ऐल्फीडेरी ने इस सत्र में संचालन संभाला। विद्युत गति से थिरकती वान्या (दिल्ली) इस सत्र का मुख्य आकर्षण रही, नेपाल से आई यशिका ने अपनी प्रस्तुति दे वाहवाही बटोरी।

इसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का रंगारंग आयोजन हुआ। विशेष अतिथि हीमा खीयारीन एवं विशिष्ट अतिथि थे – कोगोंर अरुण डिंगडोह जो मेघालय के परम्परागत राजघराने के मुखिया हैं। पूजा गुप्ता (नेपाल) ने संचालन किया, साथ दिया क्रिस्टीना वानियान्ग ने। बीहू, गिद्धा, गरबा की प्रस्तुति हुई। सभागार ऊर्जावान हो गया। डा. जेकलिन मरक व उनके ग्रुप ने स्मरणीय प्रस्तुति की। अभिन्या व रीटा घोष ने भी तालियां बटोरीं।

अधिवेशन का आखिरी किन्तु महत्वपूर्ण दिन प्रारम्भ हुआ। हिन्दी उर्दू के गंगा जमुनी सत्र से अनिता पाण्डा अध्यक्षा रहीं। मोनमती कुरमी विशेष अतिथि, शकुन्तला शर्मा एवं सुष्मिता दास ने संयुक्त संचालन किया। शबरी सरकार, रूपा गोगोई, जया गोस्वामी, श्रीदा देवी, हेमापुर्वा देवी, कल्याणी बरुआ, फालगुनी चक्रवर्ती, प्रताशलता, हेमप्रवा तासा, रैतू गौड, नयाब जौहरा जैदी, डा. जीन एस दखार, सोनिया एस. शाह, शाहनवाज़ बानू शाहीन, रीटा घोष एवं गीता लीम्बू ने अपनी बेहतरीन कविताओं का पाठ कर श्रोताओं का मन मोह लिया।

बहुभाषीय काव्य पाठ के सत्र की अध्यक्षता की एस. स्वीटी डींगडोह ने। विशिष्ट अतिथि थी राजकुमारी गोगोई, सत्र का संचालन किया डा. सलोनी बारह ने, सहयोग दिया डा. बीकिका ललू ने। काव्य पाठ किया अनुजा बेगम, गौरी सेथिया, बेजन्ती कौर, मीना लाहोन, कचन बरुआ, जाली गोगोई, प्रताशलता, जुपीता पाटर, अनिमा कोंच गोगोई, देवाज्योति दास, नम्रता गोगोई, लवयाना पुष्कन बारगोहाईन, मिताली चक्रवर्ती, मालविका गोगोई, हीराबाला दास, गीता दास, प्रहरी दास, पुष्पा गोगोई, सबिता दास, मोनीमाला दत्ता, अरुंधती के गोहाइन, धनधा कलित, नेानी बी गोगोइ, फूलज्योति गोस्वामी ने।

भोजन उपरान्त फिर से बहुभाषीय सत्र चला जिसकी अध्यक्षा रही प्रो. स्ट्रीमलेट दखार, विशेष अतिथि उमा पुरकायस्था थी। संचालन किया ट्रोस्लीन खाइन, संचालन में सहयोगी रहीं शबरी सरकार। नयना करजगी, गीतांजली पाडा, मधुमती महापात्रा, रेनूका मिश्रा, सुधा पाटिल, मजुला त्रिपाठी, बीना रानी, मजरीना पटनीक, रोनती साहू, मेघा एम. नाइक, बिन्दा के. नाइक, अनुराधा ए नायक, बीना एव सुरलेकर, बसीरन बीबी, प्रीतीनिचा परोधानी, एस. सी.टी. डींगडोह, डा. श्रिया बारनू, बारबारा संगमा, दोकाची मरक, फेमलाइन मरक एवं मालविका विशारद ने अपनी कविताएं पढ़ीं।

कविताओं, शोध पत्रों, विमर्शों चर्चाओं के विभिन्न सत्रों के पश्चात संस्थापक डा. लारी आज़ाद ने वर्ष 2016 की नवीन कार्यकारिणी को नामित कर शपथ दिलाई। कार्यकारिणी में अध्यक्षा – डॉ. विजयलक्ष्मी कोसगी, महासचिव डॉ. स्ट्रीमलेट दखार, उपाध्यक्षा – रूपा गोगोई, के.पी. सुधीरा, सचिव – डा. सुप्रिया पी, सिमरत सुमेरा, सुनीता खोखा, क्रिस्टीना वानियांग तथा कार्यकारिणी सदस्या रमनप्रीत कौर, डॉ. प्रीथा, मोनोमती कुर्मी, पूजा गुप्ता, कमला सुदर्शन, ललिता शेखर, बबिता जैन, डॉ. मधुलिका अग्रवाल, शोभा विजय, नायाब जेहरा जैदी, मिनिमोन ललू व अलफीडारि को चुना गया।

अंत मे समापन सत्र का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता की नवनिर्वाचित अध्यक्षा डॉ. कोसगी ने। संस्थापक ने संयोजिका प्रो. स्ट्रीमलेट दखार को शाल ओढ़ा कर सम्मान चिन्ह दिया। उनकी लग्न एवं मेहनत की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

उनके हाथों से ए.आई.पी.सी. की ध्वजा अगले अधिवेशन के आयोजन हेतु पंजाब की नामित संयोजिका सिमरत सुमेरा के हाथों में हस्तान्तरण की प्रक्रिया करतल ध्वनि के बीच सम्पन्न कराई। कार्यकारिणी के सदस्यों ने नवनिर्वाचित संयोजिका को शुभकामनायें दीं। डा. विजयलक्ष्मी कोसगी ने औपचारिक रूप से अधिवेशन के समापन की घोषणा की। सभी को धन्यवाद दिया। एलफीडारी ने सब को नृत्य हेतु मंच पर आमंत्रित किया, सभा का माहौल एक दम ही बदल गया। तेज म्यूजिक बजने लगा। सभी उत्साही प्रतिभागी स्टेज पर नाचने लगे मानो आजादी का जश्न मना रहे हों, जिन्हें स्टेज पर जगह नहीं मिल पाई वे अपनी जगहों पर ही थिरकने लगे। जो लोग थोड़ा संकोच कर रहे थे सुनीता खोखा ने उन्हें भी नृत्य में जोड़ लिया यहां तक कि फाउण्डर सर को भी सब ने घेर लिया, सब एक दूसरे का हाथ थाम नृत्य करने लगे। ये सब तो चल ही रहा था साथ में चल रहा था एकदूसरे के मेल एवं फोन नं. लेने व देने का सिलसिला क्योंकि सब जानते थे कि अब बिछुड़ने का समय आ गया है। सब भावपूर्ण दिल से अगले अधिवेशन में उपस्थिति की लालसा लिए अपनी–अपनी तमन्नाओं के रास्ते चल पड़े। मैं नहीं जानती किसने अधिवेशन में क्या पाया क्या खोया, क्या दिया, क्या लिया क्या सीखा, क्या सिखाया फिर भी इतना एतबार के साथ लिख रही हूं कि सबमें कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य आया होगा। अहम की कुछ दीवारें अवश्य गिरी होंगी, कुछ आरज़ुओं की कोंपलें ज़रूर खिली होंगी, कुछ रंग बिखरे होंगे तो कुछ धुले भी होंगे। कुछ ख्वाबों का जन्म अवश्य हुआ होगा।

प्रकृति डा. लारी आज़ाद के प्रयासों को गति दे, बहनों के ख्वाबों की तामीर हो, जाति, धर्म, लिंग, भाषा के भेद मिटें। अमनो–चैन की बहाली हो। हम सब की कलमें अन्धेरों को पी लें। हमारे हर्फ सितारे बन जाएं और नज़रेबद हमें छू न सकें '.......... आमीन'।

प्रस्तुति : सुनीता खोखा, नोएडा

—योगेन्द्र शर्मा, अलीगढ़

भारत भूमि के दो महागुरू द्रोणाचार्य और चाणक्य स्वर्ग में अकस्मात यूं ही मिल गये। वार्तालाप का विवरण प्रस्तुत है :

चाणक्य – आहा..... पधारिये, पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर के परम पूज्य गुरूदेव। देशवासी अब भी आपको बहुत याद करते हैं।

द्रोणाचार्य – बन्धुवर, आप ठहरे राजनीति के पण्डित। आपकी बातें समझना टेढ़ी खीर है। बताइए, प्रशंसा कर रहे हैं, या खिंचाई?

चाणक्य – सत्य कहूं, तो अर्जुन को लेकर प्रशंसा, और एकलव्य के कारण निंदा।

द्रोणाचार्य – क्या करता बन्धु?मेरे साथ मेरा परिवार था। सुदामा की तरह जीवन भर दारिद्रता झेलने का साहस नहीं था सो राजाश्रय में आ गया। आपका क्या, कोई आगे था, न पीछे। मेरे बाल सखा ने मेरा जो अपमान किया, उसका बदला मेरे शिष्य अर्जुन ने ले लिया। सच कहूँ, एकलव्य का धनुर्विद्या का पहला प्रदर्शन देखकर मैं डर गया था।

चाणक्य – आप एकलव्य से डर गये थे?

द्रोणाचार्य – हाँ डर गया था। मेरे अनुपस्थिति में अपने बल पर धनुर्विद्या में ऐसी निपुणता बिना मेरी अनुमति के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन गया था। इसीलिये उसका अंगूठा गुरू दक्षिणा में माँग लिया था, और उस मूर्ख ने दे भी दिया। विधि की विडम्बना देखिये कि जिस शिष्य के लिये यह महापाप किया, वही मेरी मृत्यु का कारण बना।

चाणक्य – सोचिये, आपकी अनुपस्थिति में उसने धनुर्विद्या में इतनी दक्षता प्राप्त कर ली, यदि उसे आपकी छत्रछाया मिलती तो वह कहाँ पहुँचता? शिष्य की उन्नति से, क्या गुरू को यश नहीं मिलता? आपकी विद्या केवल कुलीन क्षत्रियों के लिये थे, परशुराम जी की केवल ब्राह्मणों के लिये। ज्ञान के प्रकाश को आप लोगों ने अपनी मुट्ठियों में कैद करना चाहा। आप जैसे गुरूओं के कारण, समाज में वर्ग भेद बढ़ा, वैमनस्य की खाईयाँ और गहरी हुई। जिस समुदाय में समरसता नहीं होती, उसका इतिहास दूसरे समुदाय लिखते हैं। इसीलिये देश हजार साल तक गुलाम रहा। एक राजा ने मेरा भी अपमान किया और मेरे शिष्य चन्द्रगुप्त ने उसका बदला लिया। शिष्य के चयन में मैंने कुल नहीं, पात्रता देखी। एक गुरू का यही कर्तव्य है। इसलिये चाणक्य की कोई निन्दा नहीं करता। एकलव्य ही नहीं आपने द्रोपदी के साथ भी अन्याय होने दिया।

द्रोणाचार्य – इसका कारण भी राजाश्रय ही था। द्रोपदी के अपमान का मुझे दुख है, परन्तु हमारे राजा धृतराष्ट्र आँखों से ही अन्धे नहीं थे, पुत्र प्रेम में भी अन्धे थे। मैं और पितामह उनके दरबारी थे, अस्तु उनका अन्धत्व कुछ तो हमारे हिस्से आता ही। बन्धुवर, अन्याय तो और भी बहुत से हुए और उन्ही के कारण, इतना बड़ा युद्ध महाभारत हुआ। बड़ी घटनाओं के कारण, तो बड़े ही होते हैं। बन्धुवर, सुना है, ओलम्पिक खेलों में धनुर्विद्या प्रतियोगिता भी होती है, और आजकल अपने देश की राजनीति मे तो अनेक धृतराष्ट्र हैं।

चाणक्य – वह सब तो हैं गुरु देव, परन्तु अप भूल से भी भारतवर्ष में जाने की भी नत सोचियेगा क्योंकि दलित और स्त्री विमर्श का वहाँ जोर चल रहा है। वह कुशल कबड्डी खिलाड़ियों को तरह आपकी दोनों टांगों को खीचनें को तैयार बैठे हैं।

AIPC Proudly declares

17th NATIONAL MEGA CONVENTION

to be held at PUNJAB in 2017

~ Convenor ~

Simrat Sumera, State Incharge
Secretary, AIPC

(ISSN No. Allotted)

JHSS

Journal of Humanities & Social Sciences

(Our Sister Publication)

A Peer Reviewed Refereed International Research Journal from South Asia

(11th Year of Regular Publication)

MULTILINGUAL QUARTERLY

~ Contact ~

A-2 Sami Apartment, Dodhpur, Aligarh-202001 (U.P.) India
0571-2705555, 08791150515
website : www.jhss.weebly.com E-mail : jhss2007@gmail.com

(ISBN No.s Allotted)

AIPC PUBLICATIONS

(Our Sister Publication)

We Publish only Poetry Books Written by AIPC Members in All Indian Languages.

~ Contact ~

A-2, Sami Apartment, Dodhpur, Aligarh-202001 (U.P.) India
0571-2705555, 08791150515
website: www.aipc.weebly.com E-mail: aipckrj@gmail.com

(ISEN No.s Alotted)

माला प्रकाशन

(Our Sister Publication)

We Publish Books of Poetry, Stories, Essays, Research, Dramas, Novels etc.

in All Indian Languages.

~ Contact ~

C-10, Green Park (Main) New Delhi- 110016
Ph. : 08791150515 #
Website : www.malaprakashan.weebly.com
E-mail : roshanara72@yahoo.com

ग़ज़ल

श्यामल सुमन, जमशेदपुर

वे खोजे महबूब चाँद में हाल जहाँ नाकूल है
रोटी में जो चाँद निहारे क्या भूखों की भूल है।

लोग सराहे जाते वैसे जनहित में जो खड़े अभी
अगर साथ चलना तो कहते, रस्ते बहुत बबूल है।

अपने अपने तर्क सभी के खुद की गलती छुप जाए
गलती को आदर्श बनाकर कहते यही उसूल है

सूरत ऐसी अपनी यारों देख नहीं पाया अबतक
समझ न पाया दर्पण पे या चेहरे पर ही धूल है।

माँ की ममता का बँटवारा सन्तानों में सम्भव क्या
कहीं पे रौनक कहीं उदासी, कैसा नियम रसूल है।

किसी के कंधे अर्थी देखी दूजे पर दिखती डोली
रो कर लोग जुदा करते पर दोनों पर ही फूल है।

संघर्षों में चलता जीवन सोच समझकर चला करो
शायद 'सुमन' कहीं मिल जाए बाकी सब तिरशूल है।

ग़ज़ल

उदय प्रताप, 'हयात'
जमशेदपुर

खमोशियों से मिले हाल पर बहुत रोये
हिसाब कर के नए साल पर बहुत रोये।

जुनूनी हाथों ने जंगल न ये ज़मीं बख्शी
नदी पे खूब हँसे ताल पर बहुत रोये।

नशे में सब थे तभी तो मुझे कोई न मिले
सँवारा जुल्फ मगर गाल पर बहुत रोये।

कि हम ज़माने पे आदम पे अर्थ को सोचे
अंदर, मकान, दवा, दाल पर बहुत रोये।

कभी 'हयात' ने जग जानने की फिक्र न की
ये ज़ीस्त पर हुए खुश काल पर बहुत रोये।

हवा चली तो तरु कई ज़मीन से उखड़े
जो काँपी धरती तो इन्सां यकीन से उखड़े।

बहुत ही प्यार था विज्ञान के जुआरी से
गया जो काम तो कितने नशीन से उखड़े।

ये तेरी याद का फोटो है दिल के फाइल में
चिपक गया तो कहाँ आलपीन से उखड़े।

चलो तुझे दिया मौका कि तेरा नाम भी है
पगरना दिल ये तो कितने ज़हीन से उखड़े।

वो दिल का सौदा था औ तुम 'हयात' चेहरे पर
फरेब खाया तो फिर दिल हसीन से उखड़े।

जाग रहा है मेरा भारत

पद्मा मिश्रा, जमशेदपुर

जाग रहा है मेरा भारत
एक नया संकल्प ,नया दम
नए लक्ष्य की ओर चलें हम ,
आदर्शों के दीप जलाकर ,
नए सूर्य को आज गढ़े हम,
जन–मन ने फिर आज चुना है –
विश्वासों का नया मुक्ति–पथ,
जाग रहा है मेरा भारत !
फिर अतीत से वर्तमान तक,
संवर रहा है एक नया पुल ,
नव–विकास के दीप जलेंगे
जो था पथ–दुर्गम,तृण संकुल,
विश्व चकित हो आज देखता ,
भारत का गौरव,नव–जनमत ,
जाग रहा है मेरा भारत !,
सौंप दिया है हमने तुमको,
अपने सपनों ,उम्मीदों को,
देश जगेगा – देश बढ़ेगा
चुनौतियों को विजित करेगा,
धरा–गगन तक गूंज रहा है,
जय भारत माँ,जय प्रिय भारत !
जाग रहा है मेरा भारत

जागो मेरे देश!....

जागो मेरे देश!....
थम जायेगा
वादों –नारों नगाड़ों का शोर ,
खामोश हो जाएगी –
अघोषित महाभारत की दुनिया ,
अब टूट रही हैं खामोशियाँ –
अंतर्मन की –
खामोशियों को टूटना ही होगा,
सुनो –अंतरात्मा की आवाज सुनो ,
कभी तो जागे यह अंतश्चेतना !
नहीं चाहते क्या ?
इस जागरण को मुखर होने दो,
बदल जाने दो सारी तस्वीरें,
तभी बदलेगा –समूचा परिदृश्य ,
उन तस्वीरों के बदले रंग –
उनका मौन रेखाचित्र ,
एक नई इबारत लिखेगा –
संवेदना की लेखनी से ,
मानवता के नाम ––
जागो मेरे देश!,

खंजर

–प्रतिभ प्रसाद
जमशेदपुर

जब बात का खंजर, चलाया था जिगर पे
अंजाम से हो अनजान, ऐसा नहीं लगता था
चाँदनी का एहसास कराया, बातों की चुभन लिए
यही फितरत थी तुम्हारी, घायल करने की अदा थी
मैं प्यार खोजती थी, चाँदनी लिए हुए
जब बात का खंजर, चलाया था जिगर पे
जब चाक–चाक हुआ जिगर बून्द–बून्द रक्त बहा
मुस्कान दूर से फेंकती, तुम व्यंग लिए हुए
अंजाम से हो अनजान, ऐसा नहीं लगता था
तीर चुभाने की अदा पुरानी, खता तुम्हारी ये भी
रो–रो कलप–कलप आँचल में छुपाया था
आह में भी मुस्कुराती मन की तपन लिए
चाँदनी का एहसास कराया, बातों की चुभन लिए।

मैं जानती हूँ

–सविता वर्मा 'ग़जल', मुज़फ्फर नगर

मैं जानती हूँ तुम छिपा रहे हो,
दर्दीले मौसम को मुझसे।
आज तो मन आँगन में आने दो मुझको,
आज तो मन की खिड़की खोलो।
मैं जानती हूँ छिपा रहे हो तुम,
उन पर जमी गर्द को मुझसे।
तुम हँसी के पर्दे डाल रहे हो,
क्यूँ मन के दरवाजे पर।
देखा है मैंने, जिन रिश्तों के लिए,
अनदेखा किया सदा हमारे रिश्ते को।
आज उन्हीं की दी चोट से घायल मन को,
छिपा रहे हो तुम मुझसे।
आज नहीं मैं मौन रहूँगी,
बरसों से कैद भावों के पंछी को।
उड़ने दो मन–क्षितिज पर,
क्यूँ पल दो पल की खुशियाँ छीन रहे हो।
आस दीप जलने दो, मन–देहरी पर,
फैलने दो उजियारा।
उतार फेंको झूठे रिश्तों और
उसूलों की चादर,
बहने दो उन्मत्त सरिता सी
हँसी की लहरों को,
मत छीनो पल दो प्ल की खुशियाँ,

फिर, अकेला मैं खड़ा हूँ

डॉ. अरुण सज्जन, जमशेदपुर

बांध ले जितना जमाना
बालपन के भाग दौड़ में ,
घर घरौंदे भाई जन से
माँ की आँचल पितृ–पल में
पर जीवन के डगर में ,
फिर , अकेला मैं खड़ा हूँ।

शोर –गुल परिवार का हो ,
या कहीं झगड़ा लड़ा हो ,
नाच गाने की हो महफिल ,
प्रेम का अंकुर दिखा हो
आत्म– चेता कह रहा था ,
फिर, अकेला मैं खड़ हूँ।

स्वार्थ पल –पल द्वेष पल –पल ,
देख सुन कर मैं पला हूँ ,
शान शौकत का दिखावा
ढोंग झूठा और छलावा
टूट कर बिखरा शताधिक
फिर ,अकेला मैं खड़ हूँ।

बच्चे पत्नी भीड़ बनकर
बस गए कुछ दिन रहकर
सब घर– घर बस गए अब
दाने चुग– चुग पंख लग कर
दिन –दिन गिन –गिन सूर्यास्त सा हूँ,
फिर, अकेला मैं खड़ हूँ।

स्वार्थ का यह घोर कलियुग
डंस रहा बन व्याल चतुर्दिक
स्याह होते सूर्य चेहरे
श्वेत रंग चढ़ते दिखे हैं
'सज्जन' सरल इंसान बनकर
सौ फसीदी मैं,हूँ ठगा सा
सोंच चौराहे पर रुक –रुक
फिर ,अकेला मैं खड़ हूँ।

भीतर एक नदी

डा. रामसनेही लाल शर्मा,
फिरोज़ाबाद

जैसी बाहर है
वैसी ही
भीतर एक नदी।

कभी धीर–मन्थर गति से
बहती है कल–कल–कल
जल की निर्मलता के भीतर
झाँके अन्तस्तल
तालवाद्य बिटयों के बजते
है समीर के संग
जैसे एक नवोढ़ा
पूरी करती सप्तपदी।

सम्मोहन रचतीं हैं लहरें
बालू के तट पर
तैरे सफरी साअन्तर्मन
जल–भीतर हठ कर
धीरे–धीरे साँसों के
अन्तर्पट खुल जाते
दुश्याचमन निरन्तर होता
बीतीं कई सदी।

कभी विकट हुंकार करें
संयम–तट छोड़ चले
जब–भँवरों का तर्जन
पग–पग पर भय छोंड़ चले
आवेशित, उद्दाम, भयंकर
गर्जन–तर्जन से
रच देती विध्वंस
विकट उत्तेजन
लदी–फदी

चाहे संस्कृति के पुल रच
लो
या विकृति–खण्डहर
नदी उफनती
कभी न उफने
भीतर का सागर
शान्त, विमल
संतुष्ट अचंचल
स्थिर मति एक यही
कभी न जाने क्रोध
न जाने
नेकी और बदी।

भागे न कोई हार के

– राजकुमार जैन 'राजन'

चित्तौड़गढ़

अंधेरे से समझौता
पुरानी बात है
रोशनी अब रोशनी नहीं रही
वह अपना रंग बदलने लगी है।
लेकिन सूरज के ढलने के बाद
भोर भी आती है
अपनी रूह की रोशनी
को पहचानों
दिल में झांको
आत्मा के दर्पण में
अपना दर्प आंको।
लौट जाओ
रात ढल चली है
मन में बुझती आशा की लौ
फिर से जला दो।
मुस्कुराओ
खिल जाए नई सुबह की किरण
जगमगाये चमन
तुम्हारे हास से
ऋतुम्भरा
धरा की सगाई
जुड जाये मधुमास से।
फसल उगें
शांति की, प्यार की
जिंदगी एक संग्राम है
जिससे
भागे न कोई हार के।

चैत की बरसात

–डॉ. शैलबाला अग्रवाल

आगरा

गेहूं तो काफी हुआ
लाहा हुआ बहुत
आलू फैला देखकर
खुश था कृषक बहुत।
कुदरत का कोप चैत में
ऐसा आ गया
सारी खुशी पे उसकी
कहर बनके छा गया।
बर्बाद फसल देख के
उसका दिल गया दहल
रिश्ता जो टूटा बेटी का
तो ढह गये महल।
आगे अंधेरा आंख के
उसके जो छा गय
अक्ल पे पर्दा पड़ा
सब डबडबा गया।
कर्जे की सुध के आते ही
तोते से उड़ गये
आंखें खुली सी रह गई
जबड़े जकड़ गये।
जीने की राह भूल कर
ली मौत की शरण
सांसों की डोर छोड़
किया मृत्यु का वरण।

नानी का ज़माना

–प्रेमा झा, दिल्ली

नानी माँ का जमाना
याद आता है
वो स्कूल की छत
ओल का खेत और
पीपल का पेड़
एक तालाब है यहाँ–
स्कूल के पीछे
एक नदी गुजरती है
पीपल की पत्तियों को छूती हुई
हमें याद आती है वो
दैनन्दिनी की दिन पहली
जब उस तालाब में
अक्सर कमल खिलता और
नदी में तैरती मछलियाँ गिरफ्तार होती
हमारी डंडियों के धागे से
ओल के खेत में
अक्सर टनाटर भी उग आते फिर
कई पौधे साथ–साथ उग जाते
मछलियाँ पकड़कर छोड़ दी जाती थी नदी में
स्कूल की छत जो टपकती रहती थी
अक्सर बारिश में–
याद है हमें
हम वहाँ एक मटका रख दिया करते
याद आ रही है
उस स्कूल की कच्ची दीवारों पर
लिखी हुई कई पुख्ता बातें
हमने सपने सजाये थे
खूबसूरत शक्ल में
कई अच्छी–अच्छी बातें
दैनन्दिनी में शामिल होती
नानी की पतली छड़ी का घूमना
और हमारा पहाड़ा याद रखना
बहुत कुछ जरुरी बातों की तरह
पहाड़ों का अनुशासन
बहुत याद आता है।
बचपन से आज तक
बस! पहाड़े से डरती आई हूँ
नानी माँ की पतली छड़ी
आज भी कँपा सकती है
गाँधी–नेहरू की तस्वीर
इन्दिरा की तासीर
सब स्कूल की दीवारों पर
अब बहुत दिन हुए
स्कूल पुराना था/ बदल गया
नानी माँ चल बसी
मगर, नानी की छड़ी बोलती है–
स्कूल की कच्ची दीवारों पर खड़ी
तस्वीर में।

मिजाज़े यार की बातें

– सुशील सरित, आगरा

कभी इन्कार की बातें, फिर इकरार की बातें
समझ आती नहीं हमको मिजाजे यार की बातें।
महीनों से हुआ करती थी अब तो दिन के दिन भी तो
हुआ करती कहाँ है आजकल त्योहार की बातें।
कभी सुनिये अकेले में तो आंसू से भरीं होंगी
कभी जो हंस के होती थी, नदी की धार की बातें।
है सीधा एक रिश्ता इस तरफ दे उस तरफ ले ले
पुरानी हो चली हैं गिले और मनुहार की बातें।
न लक्ष्मीजी न विघ्नेश्वर न शेव, विष्णु न ब्रह्माजी
वही पुजता है जो करता सनम्दर पार की बातें।

मैसूर – बंगलौर में मिनी ए.आई.पी.सी.

राजदूत–गौरीशरा के हाथों में 'कालजयी'

गुरुदासपुर में विशिष्ट अतिथि डॉ. लारी आज़ाद

अमृतसर – बटाला में ए.आई.पी.सी.

'कालजयी' प्रतिनिधि अनीता पंडा, शिलांग राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित होते हुए

'कालजयी' संपादक ज्योति नारायण 'ए.आई.पी.सी. मिस वर्ल्ड' का ताज माॅरीशस के राष्ट्रपति से ग्रहण करते हुए

ए.आई.पी.सी. सदस्य सतिन्दर कहलों, बटाला 'पंजाब राज्य अध्यापक पुरस्कार' के लिए चयनित

भंगिमा भंगिमा
भंगिमा

कालजयी के लिए विशेष :
नतालिया मोस्कालेवा
सेंट पीटर्सबर्ग

भंगिमा भंगिमा
भंगिमा

कालजयी के लिए विशेष :
शिवांगी बहेटी
गोहाटी

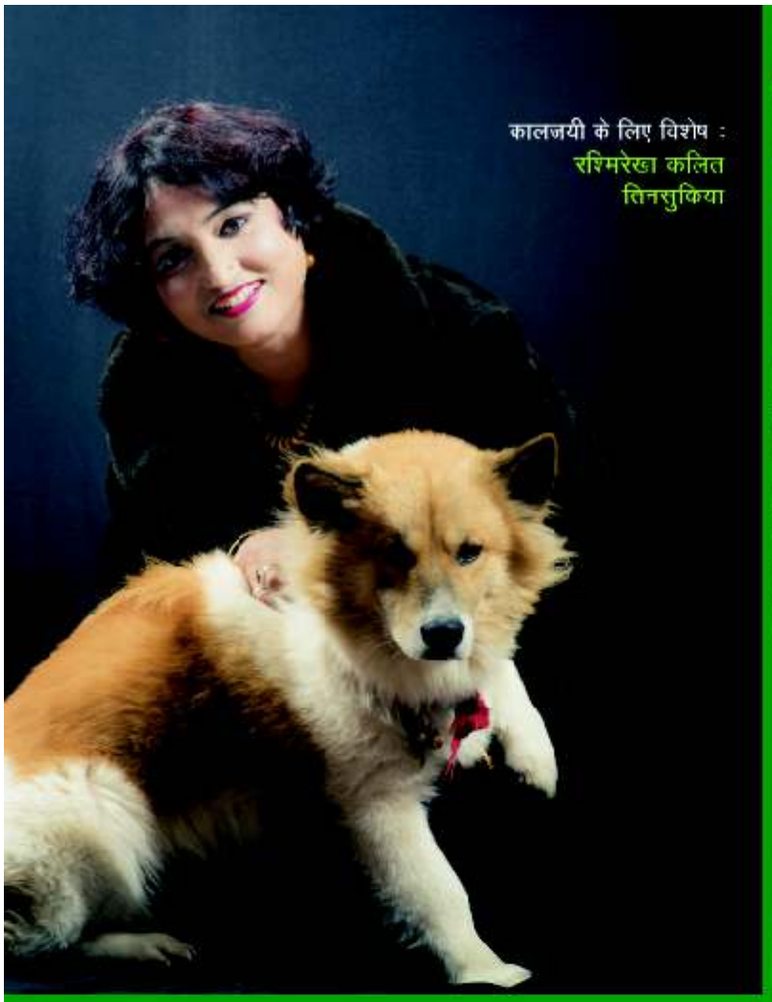
कालजयी के लिए विशेष :
रश्मिरेखा कलित
तिनसुकिया

भंगिमा भंगिमा भंगिमा

कालजयी के लिए विशेष :
श्वेता झा, राजविराज

कालजयी के लिए विशेष :
उर्वशी झा, काठमांडू

कालजयी के लिए विशेष :

कालजयी के लिए विशेष :

कालजयी के लिए विशेष :
मौमिता रॉय, कोलकाता

कालजयी के लिए विशेष :
सोनी सिंह, दिल्ली

कालजयी के लिए विशेष :
पूजा पुप्ता, दुबई

कालजयी के लिए विशेष :
निवांका लाशेल
न्यू यार्क

फरहत रज़ा, दिल्ली

लुइत चलिहा, सिबसागर

प्रभा भार्गव, ऋषिकेश

अफ़रोज़ सुल्ताना, उज़्बेकिस्तान

ऋतु गौड़, बनारस

ए.आई.पी.सी. सदस्या इशानी व 'कालजयी' सदस्य दक्ष, पंचकुला

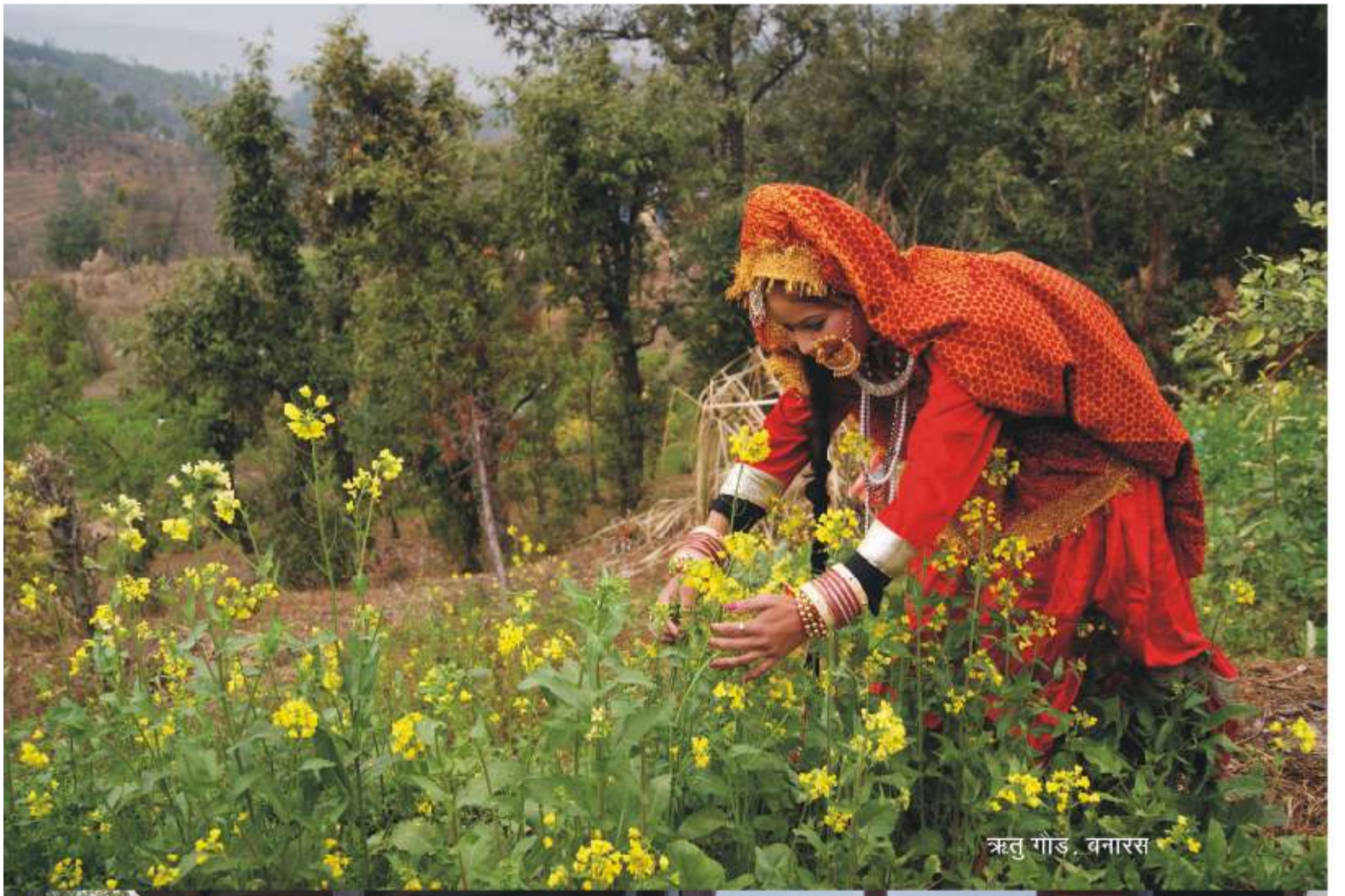

ऋतु गौड़, बनारस

ऋतु गौड़, बनारस